ओरियंट ब्लैकस्वॉन

भारतीय भाषाएँ

INDIAN LANGUAGES

2024–25

ओरियंट ब्लैकस्वॉन

ओरियंट ब्लैकस्वॉन 1948 में संस्थापित भारत का एक विख्यात और सबसे विश्वसनीय प्रकाशन संस्थान है, इसके प्रकाशन कार्यक्रम का मुख्य ध्येय उच्च गुणवत्ता है। हम विदेशी प्रकाशनों की चुनिंदा उत्कृष्ट रचनाओं का सहप्रकाशन और पुन: प्रकाशन भी करते हैं।

ओरियंट ब्लैकस्वॉन निम्न प्रकाशनों का एकमात्र डिस्ट्रीब्यूटर है—

Sangam Books

Universities Press

Permanent Black

Social Science Press

Aurum Books
(An imprint of Social Science Press)

Tata Institute of Social Sciences

Economic and Political Weekly

RCS Publishers

नोट : इस सूची में मुद्रित मूल्य बिना पूर्व जानकारी के बदले जा सकते हैं।

विषयानुक्रम

Bangla / बांग्ला 1

Gujarati / गुजराती 2

Hindi / हिंदी 3-48

Kannada / कन्नड़ 49

Marathi / मराठी 50

Odia / ओडिया 51

Tamil / तमिल 52

Telugu / तेलुगु 53

Author Index / लेखक-अनुक्रमणिका 54

Title Index / पुस्तक-अनुक्रमणिका 55

Forthcoming Hindi E-Books / आगामी हिंदी ई-बुक्स 56

040159

ऑनलाइन कैटलॉग (पुस्तक सूची)

हमारी पुस्तकों के विषय में अधिक जानकारी के लिए हमारा ऑनलाइन कैटलॉग (पुस्तक सूची) देखें – **www.orientblackswan.com**

नई पुस्तकों की जानकारी

हमारी नई प्रकाशित पुस्तकों और कार्यक्रमों की जानकारी हेतु मेल लिखें – **mail@orientblackswan.com**

या नवीनतम प्रकाशित पुस्तकों की अद्यतन जानकारी हेतु देखें – **www.orientblackswan.com**

हमसे जुड़ें

फेसबुक पर – **www.facebook.com/OrientBlackSwan**

लिंक्डइन पर – **www.linkedin.com/company/orientblackswan**

हमें फ़ॉलो करें

@ orientblackswan

पुस्तक प्रकाशन प्रस्ताव की जानकारी

ऑनलाइन पुस्तक प्रकाशन प्रस्ताव हेतु संपर्क करें – **www.orientblackswan.com/publish**

ऑर्डर करने हेतु

पुस्तक ऑर्डर करने के लिए ई-मेल करें – **info@orientblackswan.com**

प्रकाशन संबंधी अधिकार

प्रकाशन संबंधी अधिकारों हेतु लिखें – **rights@orientblackswan.com**

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

বাংলা

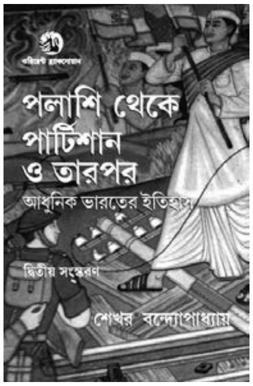

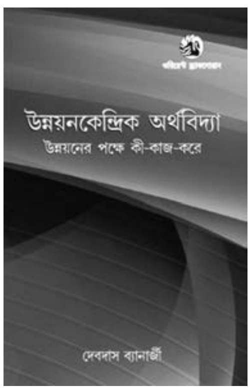

ISBN	Author	Title	Price
978-81-250-2867-3	Aniruddha Ray	Madhyojug er Bharat er Itihas : Sultani Amol	₹ 495
978-81-250-1216-0	B. K. S. Iyengar	Sachitra Yoga Dipika	₹ 90
978-93-5287-915-1	Benoy Ghosh	Vidyasagar o Bangali Samaj	₹ 725
978-81-250-4462-8	Bipan Chandra	Adhunik Bharater Itihash	₹ 495
978-81-250-6251-6	Ganesh Devy (Series Editor), Sankar Singha, Indranil Acharya (Editors)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan : Pashchimbang er Bhasha	₹ 3,980
978-93-86689-59-7	Ganesh Devy	Smritibilop er Pore	₹ 995
978-93-5442-401-4	Krishnendu Ray	Bharatbarsh er Itihas	₹ 550
978-81-250-0954-2	M. A. K. Azad	Bharat Swadhin Holo	₹ 625
978-81-250-1433-1	Ramsharan Sharma	Prachin Bharat e Vastugata Samaskriti o Samaj	₹ 100
978-81-250-0820-0	Ramsharan Sharma	Pracheen Bharat er Samajik o Orthonitik Itihas	₹ 320
978-81-250-3380-6	Ranabir Chakravarti	Bharat Itihash er Adi Parva	₹ 545
978-81-250-6003-1	Sekhar Bandyopadhyay	Palashi Theke Partition O Tarpor: Adhunik Bharater Itihas	₹ 595
978-0-86131-615-1	Vishnu Prabhakar	Chhannachhara Mahapran	₹ 325

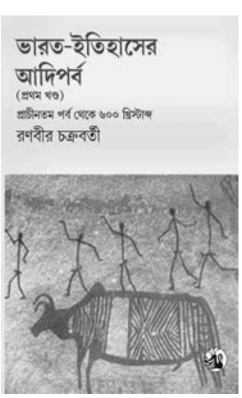

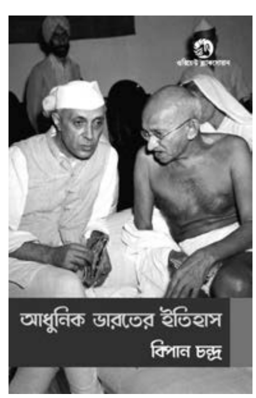

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

गुजराती

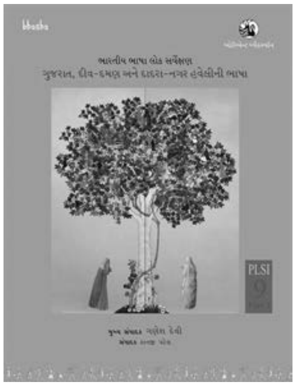

ISBN	Author	Title	Price
978-81-250-3209-0	Erach Bharucha	Paryavaran Adhyayan	₹ 410
978-81-250-6112-0	Ganesh Devy (Series Editor), Kanji Patel (Editor)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan: Gujarat, Daman-Diu ane Dadra-Nagar Havelini Bhasha	₹ 5540

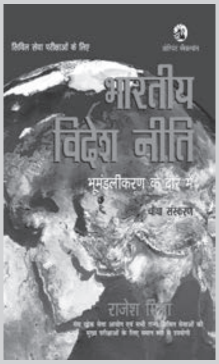

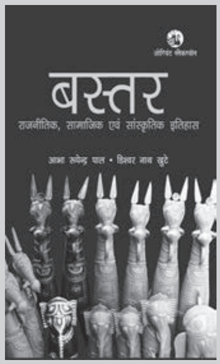

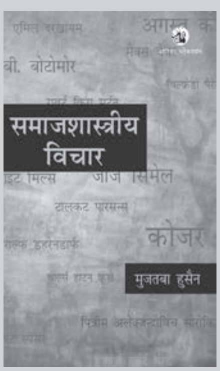

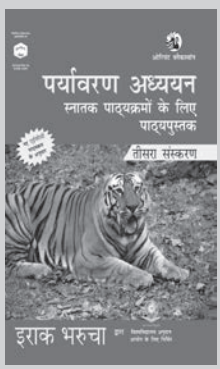

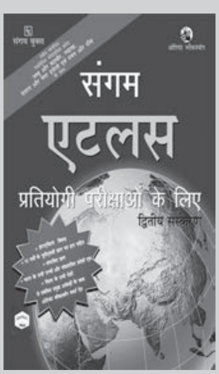

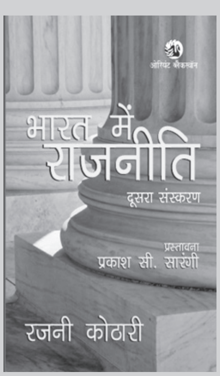

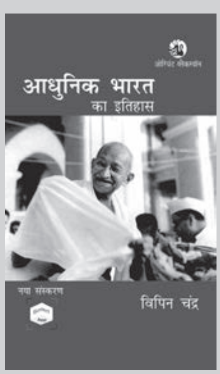

हिंदी

अंतर्राष्ट्रीय संबंध 4
International Relations

इकोनॉमिक्स एवं डेवलपमेंट स्टडीज़ 6
Economics and Development Studies

इतिहास 9
History

द्विभाषा संस्करण 17
Bilingual Edition

नीतिशास्त्र/समाजशास्त्र 19
Ethics/Sociology

पर्यावरण विज्ञान/भूगोल 23
Environmental Science/Geography

भाषा और साहित्य 26
Language and Literature

योग 30
Yoga

राजनीति विज्ञान 31
Political Science

लोक प्रशासन 46
Public Administration

संस्कृत 48
Sanskrit

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

भारतीय विदेश नीति : भूमंडलीकरण के दौर में (चौथा संस्करण)

सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए

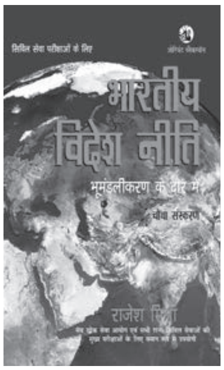

यह पुस्तक संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) एवं विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों (पी.एस.सी.) की सिविल सेवाओं की मुख्य परीक्षाओं के लिए तैयार की गई है। इसके अतिरिक्त यह स्नातक एवं परास्नातक के उन विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी होगी, जो भारतीय विदेश नीति को सरल एवं सटीक रूप में समझना चाहते हैं। पुस्तक के चौथे संस्करण में भारतीय विदेश नीति संबंधी नवीनतम घटनाओं की जानकारी और सूचनाएँ शामिल हैं, जैसे-अफ़गानिस्तान में तालिबान की वापसी, क्वॉड (QUAD), अमेरिका, इंग्लैंड एवं ऑस्ट्रेलिया का सैन्य त्रिकोण, वैक्सीन मैत्री, मोदी-बाइडेन मुलाकात आदि जो परीक्षार्थियों को भारतीय विदेश नीति संबंधी अद्यतन जानकारी से अवगत कराएगी। इस संस्करण में शब्दावली संबंधी परिशिष्ट अकारादि क्रम में जोड़ा गया है, जिससे विद्यार्थियों को विदेश नीति संबंधी शब्दों की तत्काल जानकारी मिल सकेगी।

राजेश मिश्रा दिल्ली स्थित सरस्वती आई.ए.एस. संस्थान के निदेशक हैं। वे पिछले एक दशक से अधिक समय से राजनीति विज्ञान का अध्यापन कर रहे हैं। उनकी लेखन में भी गहन रुचि रही है। उनके द्वारा लिखित अन्य पुस्तकों में *भारतीय राजव्यवस्था* और *राजनीति विज्ञान : एक समग्र अध्ययन* शामिल हैं।

विषयानुक्रम : मानचित्र सूची, आभार, चौथे संस्करण की भूमिका, पारिभाषिक शब्दावली। **भाग-1 : भारतीय विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास** 1. विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास, 2. विदेश नीति के निर्धारक तत्त्व, 3. विदेश नीति-निर्माण की संस्थाएं, 4. भारत, एन.पी.टी. (NPT) / सी.टी.बी.टी. (CTBT) परमाणु नीति, 5. गुटनिरपेक्ष आंदोलन और भारत; **भाग-2 : भारत-दक्षिण एशिया** 1. भारत-पाकिस्तान, 2. भारत-बांग्लादेश, 3. भारत-श्रीलंका, 4. भारत-नेपाल, 5. भारत-भूटान, 6. भारत-मालदीव, 7. भारत-अफ़गानिस्तान, 8. भारत की पड़ोसी देशों के प्रति नीति; **भाग-3 : हिंद महासागर** 1. हिंद महासागर; **भाग-4 : दक्षिण-पूर्व एशिया** 1. भारत, दक्षिण-पूर्व एशिया, 2. भारत-म्यांमार; **भाग-5 : पूर्व एशिया एवं एशिया प्रशांत** 1. भारत-दक्षिण कोरिया, 2. भारत-ऑस्ट्रेलिया; **भाग-6 : पश्चिम एशिया** 1. भारत-पश्चिम एशिया, 2. भारत-ईरान, 3. भारत-सऊदी अरब, 4. भारत-संयुक्त अरब अमीरात, 5. भारत-इजरायल, 6. फिलीस्तीन समस्या, 7. इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड सीरिया; **भाग-7 : मध्य एशिया** 1. भारत और मध्य एशिया; **भाग-8 : भारत और महाशक्तियां** 1. भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका, 2. भारत-चीन, 3. भारत-रूस, 4. भारत-जापान, 5. भारत-यूरोपीय यूनियन, 6. भारत-चीन-रूस त्रिकोण; **भाग-9 : वैश्विक संस्थाएं** 1. संयुक्त राष्ट्र संघ, 2. भारत-संयुक्त राष्ट्र संघ, 3. विश्व व्यापार संगठन, 4. भारत-विश्व व्यापार संगठन; **भाग-10 : भारत एवं विकासशील देश** 1. भारत-अफ्रीका, 2. भारत-लैटिन अमेरिका; **भाग-11 : क्षेत्रीय आर्थिक संगठन एवं समूह** 1. यूरोपीय यूनियन, 2. दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों का क्षेत्रीय सहयोग संगठन (आसियान), 3. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस), 4. उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौता (नाफ्टा), 5. एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग संगठन (एपेक), 6. क्षेत्रीय समूह; **भाग-12 : प्रवासी (डायस्पोरा)** 1. प्रवासी (डायस्पोरा)। संदर्भ-ग्रंथ सूची।

978 93 5442 175 4 2022 400 पृष्ठ ₹ 575.00

संयुक्त राष्ट्र एवं वैश्विक संघर्ष

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में कोई भी देश अलगाव में नहीं रह सकता, उसके हर कदम, हर प्रयास से अन्य देश प्रभावित हो सकते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जो विश्व के सभी छोटे-बड़े देशों को संवाद के माध्यम से अपने विवादों को सुलझाने का मंच प्रदान करती है। इसी के प्रयासों ने कई बार दुनिया में कोरिया संकट, क्यूबा संकट, वियतनाम युद्ध, अरब-इजराइल संघर्ष, ईरान व इराक युद्ध एवं कोसोवो संकट से पैदा हो सकने वाले गहन दुष्परिणामों से बचाया है। प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था के न केवल सभी अंगों और इनकी कार्यप्रणाली से परिचित करवाना है, बल्कि वैश्विक संघर्षों के समाधान में इस संगठन की भूमिका पर भी प्रकाश डालना है। इसमें मानवाधिकार, महिला अधिकार और वैश्विक पर्यावरण जैसे समसामयिक मुद्दों पर चर्चा की गई है। साथ ही सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था, नाभिकीय प्रसार, आतंकवाद, निरस्त्रीकरण और शांति अनुरक्षण कार्यवाहियों का विश्लेषण इस पुस्तक को संपूर्ण बनाता है।

यह पुस्तक पाँच भागों में विभाजित है- संयुक्त राष्ट्रसंघ : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सिद्धांत एवं उद्देश्य, प्रमुख अंग, संरचना एवं कार्य; वैश्विक संघर्ष; सामाजिक और आर्थिक मुद्दे; संयुक्त राष्ट्रसंघ का मूल्यांकन; परिशिष्ट। इस पुस्तक में संयुक्त राष्ट्रसंघ घोषणा पत्र (चार्टर) और अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की संविधि परिशिष्ट के रूप में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में दी गई है। पुस्तक की भाषा सरल और सहज है।

यह पुस्तक बी.ए. और एम.ए. के विद्यार्थियों और प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करती है।

विजय कुमार वर्मा दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका, विषय प्रवेश। **भाग 1 : संयुक्त राष्ट्र, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सिद्धांत एवं उद्देश्य, प्रमुख अंग, संरचना एवं कार्य** 1. राष्ट्रसंघ, 2. संयुक्त राष्ट्र के गठन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, 3. संयुक्त राष्ट्र : सिद्धांत एवं उद्देश्य; संरचना एवं कार्य, 4. महासभा, 5. सुरक्षा परिषद, 6. आर्थिक और सामाजिक परिषद, 7. न्यास परिषद, 8. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, 9. सचिवालय, 10. संयुक्त राष्ट्रसंघ के विशिष्ट अभिकरण, 11. गैर-सरकारी संगठन एवं संयुक्त राष्ट्र, 12. संयुक्त राष्ट्र चार्टर में संशोधन; **भाग 2 : वैश्विक संघर्ष** 13. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के प्रमुख वैश्विक संघर्ष, 14. क्यूबा संकट, 15. वियतनाम युद्ध, 16. अरब-इजराइल संघर्ष, 17. ईरान-इराक युद्ध एवं अफ़गानिस्तान में रूसी हस्तक्षेप, 18. बाल्कन समस्या एवं कोसोवो संकट, 19. कुछ प्रमुख संकट, 20. खाड़ी संकट, 21. कश्मीर विवाद; **भाग 3 : सामाजिक और आर्थिक मुद्दे** 22. मानवाधिकार, 23. महिला अधिकार, 24. वैश्विक पर्यावरण, 25. शांति और विकास, 26. संयुक्त राष्ट्र एवं तीसरी दुनिया, 27. सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था एवं क्षेत्रवाद; **भाग 4 : संयुक्त राष्ट्र का मूल्यांकन** 28. नाभिकीय प्रसार, 29. आतंकवाद, 30. संयुक्त राष्ट्र और निरस्त्रीकरण, 31. संयुक्त राष्ट्र तथा शांति अनुरक्षण कार्यवाही, 32. संयुक्त राष्ट्रसंघ : एक मूल्यांकन। **परिशिष्ट I-** संयुक्त राष्ट्र का घोषणा-पत्र (चार्टर), **II-** अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की संविधि, **III-** Charter of the United Nations, **IV-** Statute of the International Court of Jusitce, **V-** Universal Declaration of Human Rights, **VI-** Member States of the United Nations, **VII-** उपनिवेशों की स्वाधीनता, **VIII-** शांति अनुरक्षण कार्यवाही : अतीत एवं वर्तमान, अनुक्रमणिका।

978 93 8639 259 6 2017 414 पृष्ठ ₹ 495.00

अंतर्राष्ट्रीय संबंध (द्वितीय संस्करण)

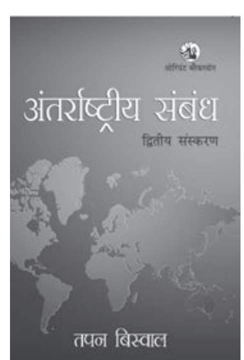

अंतर्राष्ट्रीय संबंध पुस्तक राजनीति शास्त्र के स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए लिखी गई है। यह पुस्तक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी निश्चय ही लाभकारी होगी।

इस पुस्तक में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के उपागम, भारत की

विदेश नीति, बहुपक्षीय आर्थिक संगठन तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा एवं व्यापार व्यवस्थाएं, अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था, वैश्वीकरण, संयुक्त राष्ट्र संघ : राजनीतिक शक्तियां व दुर्बलताएं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का नारीवादी दृष्टिकोण : जे.एन. टिकनर, वैश्वीकरण पर्यावरणीय मुद्दे, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भू-राजनीति तथा भू-आर्थिक दृष्टिकोण आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है। पुस्तक में मोदी काल में भारत की राजनीति में आई नवीन गतिशीलता का भी वर्णन किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक स्वतंत्र अध्ययन के विषय के क्षेत्र के रूप में विकसित अंतर्राष्ट्रीय संबंध के अति विस्तृत निरंतरशील एवं परिवर्तनशील स्वरूप पर अपना गहन ध्यानाकर्षण करती है। यह समसामयिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के केंद्रीय मुद्दों एवं तथ्यगत बौद्धिक बहस को भी उजागर करती है। एक सजग व जागरूक शिक्षार्थी के लिए इस विषय की जटिल प्रकृति को निर्धारित करने वाली संरचनाओं, प्रक्रियाओं एवं कारकों के संदर्भ में जानकारी आवश्यक है।

सरल और सहज भाषा में लिखी यह पुस्तक शिक्षार्थियों की सभी ज़रूरतों को पूरा करती है।

तपन बिस्वाल दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग में राजनीति विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर रहे हैं। पिछले दो दशकों से आप स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय संबंध विषय पढ़ाते रहे हैं। आप एम.फिल. एवं पीएच.डी. के शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी करते रहे हैं। उनके द्वारा संपादित पुस्तकों में *मानवाधिकार, जेंडर एवं पर्यावरण* (अंग्रेज़ी एवं हिंदी में), *इंटरनेशनल रिलेशंस* तथा *कंपेरेटिव पॉलिटिक्स* प्रमुख हैं।

विषयानुक्रम : लेखकों की सूची, आभार, द्वितीय संस्करण की भूमिका, प्रथम संस्करण की भूमिका, शब्द संक्षेप।

भाग-1 : अंतर्राष्ट्रीय संबंध : तथ्य

1. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के उपागम : बदलते विश्व में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का महत्त्व, 2. शीत युद्ध तथा शीत-युद्धोत्तर काल, 3. भारत की विदेश नीति-1, 4. बहुपक्षीय आर्थिक संगठन तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा एवं व्यापार व्यवस्थाएं, 5. अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था : उद्भव एवं विकास, 6. वैश्वीकरण : वैश्वीकरण की विशेषताएं; वैश्वीकरण : एक उपागम के रूप में; आर्थिक परिप्रेक्ष्य; मौजूदा वैश्विक वित्तीय एवं आर्थिक संकट; राजनीतिक परिप्रेक्ष्य; पर्यावरणीय मुद्दे; महिलाएं और वैश्वीकरण; वैश्वीकरण और आतंकवाद; नागरिक समाज और वैश्वीकरण; मानव अधिकार और वैश्वीकरण; उदारवादी लोकतंत्र और वैश्वीकरण; सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य; वैश्वीकरण बनाम क्षेत्रीयता; यूरोपीय संघ; वैश्वीकरण और तृतीय विश्वः विचार और प्रति विचार; वाल्डेन बेलों के विचार; अमर्त्य सेन के विचार; जोसेफ स्टिगलिट्ज के विचार; जगदीश भगवती के विचार; निष्कर्षात्मक अवलोकन; संदर्भ।

भाग-2 : समकालीन विश्व : मुद्दे एवं कर्ता 7. संयुक्त राष्ट्रसंघ : राजनीतिक शक्तियां व दुर्बलताएं, 8. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का नारीवादी दृष्टिकोण : जे.एन. टिकनर, 9. वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दे : अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में पर्यावरणीय समस्याओं का निर्धारण, 10. अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, 11. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भू-राजनीति तथा भू-आर्थिक दृष्टिकोण। पारिभाषिक शब्द-कोश, अनुक्रमणिका।

978 81 250 6139 7 2016 596 पृष्ठ ₹ 650.00

तुलनात्मक राजनीति : संस्थाएं और प्रक्रियाएं

तुलनात्मक राजनीति : संस्थाएं एवं प्रक्रियाएं
पुस्तक की रचना स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखकर की गई है। यह पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक में विकसित एवं विकासशील देशों की शासन प्रणाली में विभिन्न प्रकार की राजनीतिक प्रक्रियाओं एवं संस्थागत व्यवस्था के इतिहास एवं विकास पर प्रकाश डाला गया है। जहां एक ओर यह विकसित और विकासशील देशों की विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं का परस्पर संबंध शासन से किस प्रकार है, इस पर चर्चा करती है, वहीं दूसरी ओर, यह शासन की विभिन्न संस्थाओं और राजनीतिक प्रक्रियाओं के मध्य तुलना और विरोधाभास के बीच एक संतुलन दिखाने का भी दावा करती है। आज विश्व अत्यंत ही अंतर्विरोधी वास्तविकताओं से जूझ रहा है। पश्चिमी दुनिया में जहां उदारवादी मूल्यों का प्रचलन था, वहां अमानवीय दास प्रथा एवं उपनिवेशों के लिए होड़ भी थी। समकालीन वर्षों में जहां कानून का शासन प्रचलन में है वहीं अत्यंत दमनकारी शासन भी परिलक्षित होता है। वैश्वीकरण के तहत जहां सार्वभौमिक आर्थिक विकास के बड़े-बड़े दावे किए जाते रहे हैं, वहां पर आर्थिक व्यवस्था अस्थिर एवं बिखरती हुई प्रतीत हो रही है। और साथ ही एक विशाल जनसमुदाय वंचित एवं हाशिए की तरफ जाता दिख रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक की विषयवस्तु इस प्रकार है - तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की प्रकृति, विषय-क्षेत्र और पद्धतियां, तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के विभिन्न उपागम, राष्ट्र-राज्य की अवधारणा और राज्य के सिद्धांत, राज्य की प्रकृति पर समकालीन वाद-विवाद, राज्य के स्वरूपों और शासन प्रणालियों की तुलना, आधुनिक सरकारों का ऐतिहासिक संदर्भ, तुलनात्मक विश्लेषण की विषयवस्तु, राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्गीकरण, तुलनात्मक दलीय व्यवस्था, निर्वाचन व्यवस्था, संघवाद, लोकतंत्रीकरण, विकास और विभिन्न विश्व प्रसिद्ध सामाजिक आंदोलन और क्रांतियां इत्यादि।

तपन बिस्वाल दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग में राजनीति विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर रहे हैं। पिछले दो दशकों से वे स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं को अंतर्राष्ट्रीय संबंध विषय पढ़ाते रहे हैं। वे एम.फिल. एवं पीएच.डी. के शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी करते रहे हैं।

विषयानुक्रम : 1. तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की प्रकृति, विषय-क्षेत्र और पद्धतियां; 2. तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के विभिन्न उपागम; 3. राष्ट्र-राज्य की अवधारणा और राज्य के सिद्धांत; 4. राज्य की प्रकृति पर समकालीन वाद-विवाद; 5. राज्य के स्वरूपों और शासन प्रणालियों की तुलना; 6. आधुनिक सरकारों का ऐतिहासिक संदर्भ; 7. तुलनात्मक विश्लेषण की विषयवस्तु; 8. राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्गीकरण; 9. तुलनात्मक दलीय व्यवस्था; 10. निर्वाचन व्यवस्था; 11. संघवाद 12. लोकतंत्रीकरण; 13. विकास; 14. सामाजिक आंदोलन; 15. क्रांति।

978 81 250 6140 3 2016 594 पृष्ठ ₹ 575.00

इकोनॉमिक्स एवं डेवलपमेंट स्टडीज़

आधार पर ऐतराज

आलाकमान के हाथ बिग डाटा

आधार भारत का एक विशिष्ट पहचान तंत्र है, जिसकी शुरुआत 2009 में हुई। इसका कथित उद्देश्य था एक अधिक समायोजित और प्रभावी कल्याणकारी व्यवस्था का निर्माण। करोड़ों भारतीयों को बायोमीट्रिक डाटाबेस में पंजीकृत किया गया था और लगातार सरकारों ने सामाजिक लाभों के लिए इसे अपनाना अनिवार्य करने का दबाव बनाया। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के 2018 के निर्णय के बावजूद भी आधार कल्याणकारी योजनाओं के लिए आवश्यक बना हुआ है।

आधार पर ऐतराज किताब का तर्क है कि आधार कभी भी कल्याणकारी योजनाओं के लिए था ही नहीं। किताब में दिए गए लेख बताते हैं कि किस तरह इस परियोजना ने सरकारी निगरानी और व्यावसायिक डाटा माइनिंग के लिए असंख्य अवसर प्रदान किए हैं।

आधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए और दुनिया के अन्य हिस्सों की पहचान परियोजनाओं से सबक लेते हुए, यह किताब पाठकों को इस व्यापक डिजिटल पहचान परियोजना के मंडराते खतरे के प्रति सचेत करती है। उदाहरण के लिए कैसे प्रोफाइलिंग, जिसे आधार ने संभव बनाया है वह निजता के मूलभूत अधिकार पर चोट करती है और कैसे निगरानी खुद की सेंसरशिप को बढ़ाकर स्वतंत्र विचारों और अभिव्यक्ति का गला घोंटती है और कैसे आधार सरकारी कल्याण के दावों के विपरीत, उन हकदारों को कल्याणकारी योजनाओं से बाहर कर रहा है, जब इसे अनिवार्य कर दिया गया। प्रौद्योगिकी पर अभी सवाल हैं। बायोमीट्रिक के इस्तेमाल से क्या संकट उत्पन्न हो सकते हैं और केंद्रीकृत डाटाबेस के जोखिम क्या हो सकते हैं? हमारे समूचे डाटा तक किसकी पहुंच है और कैसे इसे हमारे विरुद्ध इस्तेमाल किया जा सकता है।

अर्थशास्त्र, विधि, प्रौद्योगिकी, पत्रकारिता और नागरिक स्वतंत्रता अभियान के क्षेत्र से जुड़े सहयोगी लेखकों ने इस किताब को हर उस व्यक्ति के लिए आवश्यक बना दिया है जो कि भारत में स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना चाहते हैं। यह उन विद्यार्थियों और शिक्षाविदों के लिए भी रुचिकर होगी, जो लोकनीति और राजनीति के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

रीतिका खेड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद के अर्थशास्त्र और पब्लिक सिस्टम ग्रुप में एसोसिएट प्रोफेसर रह चुकी हैं। वर्तमान में वे आईआईटी दिल्ली के इकोनॉमिक्स व सोशल साइंस विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : चित्र और तालिका सूची, शब्द संक्षेप, प्रस्तावना, आभार, भूमिका। 1. कल्याण कार्यक्रमों में आधार का प्रभाव, 2. आधार के हाशिए पर—जीवित मृत तथा खाद्य 'व्यवधान', 3. विशिष्ट पहचान : एक दुविधा, 4. आधार और निजता, 5. निगरानी परियोजना, 6. आधार—एक पहचान या तबाही, 7. तकनीकी परियोजनाओं की गहन पड़ताल, 8. आधार की बायोमीट्रिक सुनामी क्या यह निजता को बहा ले जाएगी, नागरिक स्वतंत्रताओं को डुबो देगी?, 9. आधार—संवैधानिक चुनौती, 10. निजता से जुड़ा फैसला, 11. अनिवार्य आधार व्यवस्था में बच्चों की सहमति की प्रासंगिकता, 12. आधार : जनहित से लाभ तक, 13. सार्वजनिक निवेश और निजी लाभ, 14. क्या आधार सामाजिक सुरक्षा संख्या जैसा है?, 15. पहचान और विकास—आधार की डिजिटल साख पर सवाल। पुनश्च। लेखक परिचय। **चित्र एवं तालिका सूची**, **चित्र** 7.1 राशन कार्ड पर प्रतिमान; पारदर्शिता की; अधिव्यापन के बाद, 13.1 नामांकन पावती का एक रूप **तालिका** 1.1 पीडीएस में भ्रष्टाचार रोकने में आधार की भूमिका 15.1 पहचान के तीन पहलू 15.2 आधार में सत्यापन के तरीके 15.3 आधार एक डिजिटल पहचान प्रणाली के रूप में

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 5287 634 1 | 2019 | 276 पृष्ठ | ₹ 775.00

साथ से विकास तक—दावे या छलावे?

2014 के आम चुनावों में भाजपा को भारी जीत हासिल हुई। अपने अभियान में भाजपा ने नरेंद्र मोदी को एक मजबूत, निर्णायक नेता के रूप में पेश करते हुए, वादा किया था कि वह कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकारों की तुलना में देश के हालात को पूरी तरह बदल देगी। इसका चुनाव अभियान 'सबका साथ', भ्रष्टाचार से मुक्ति और बेहतर शासन के नारों पर टिका हुआ था। तो क्या मोदी सरकार ने अपने वादे पूरे किए? या जैसा कि अमर्त्य सेन का कहना है, भारत ने 'पीछे की ओर एक लंबी छलांग' लगाई है?

इस किताब में 2014 के चुनाव प्रचार के दौरान किए गए वादों और पिछले पांच वर्षों में उनके नतीजों की तुलना की गई है। किताब के हर अध्याय में सरकार की विभिन्न नीतियों और पहलकदमियों का मूल्यांकन पेश किया गया है। इनमें जिन मुद्दों पर चर्चा की गई है उनमें शामिल हैं- नोटबंदी और जीएसटी जैसी बड़ी आर्थिक नीतियां, रोज़गार संबंधी नीतियां, कृषि, बैंकिंग और विदेश नीति। साथ ही यह किताब स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, लैंगिक सवाल और हाशिए के तबकों के लिए सरकार की पहलकदमियों का जायजा लेती है। किताब में इसकी पड़ताल भी की गई है कि सरकार शासन को सुधारने और भ्रष्टाचार को दूर करने में कितनी कामयाब रही है।

दलगत बहसों में प्रचार पर ज़ोर अधिक होता है, उनसे जवाब नहीं मिलते। इसलिए इस किताब के लेखकों ने ऐसी बहस से अलग हटकर, अपने लेखों के लिए खुद सरकारी आंकड़ों और दूसरे भरोसेमंद स्रोतों की मदद ली है। यहां पेश किए गए तथ्य खुद बोलते हैं।

किताब में सवाल उठाया गया है कि पिछले पांच वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था और राजकाज में क्या कोई तरक्की हुई है, इसमें ठहराव आया है या फिर यह पीछे की ओर गया है। यह एक महत्त्वपूर्ण किताब है, जो देश के इतिहास के इस नाजुक मौके पर नागरिकों को हकीकत से रू-ब-रू कराने की कोशिश करती है। इसे उन सभी भारतीयों को पढ़ना चाहिए जिनका सरोकार इस राष्ट्र के भविष्य से है। साथ ही, अर्थशास्त्र के छात्रों और विशेषज्ञों को भी यह किताब सूचना से भरपूर मिलेगी।

रोहित आज़ाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र पढ़ाते हैं।

शौविक चक्रवर्ती पॉलिटिकल इकोनॉमी रिसर्च इंस्टीट्यूट (पीईआरआई), मैसाचुसेटट्स विश्वविद्यालय में शोधरत हैं।

श्रीनिवासन रमणी 'द हिंदू' में एसोसिएट एडीटर हैं।

दीपा सिन्हा स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज़, अम्बेडकर विश्वविद्यालय में पढ़ाती हैं।

विषयानुक्रम : आकृति और तालिकाओं की सूची, शब्द संक्षेप, प्राक्कथन, आभार, भूमिका। **भाग I : अर्थव्यवस्था** 1. मोदी सरकार : सबका साथ सबका विकास की सच्चाई, 2. भारतीय बैंकों की दुर्दशा : टूटी हुई कमर पर जालसाजियों का बोझ, 3. राजग-II सरकार और कृषि का गहराता संकट, 4. राजग-II सरकार में रोज़गार : हकीकत क्या है? **भाग II : सामाजिक-आर्थिक संकेतक** 5. स्कूली शिक्षा : अनदेखी और छलावे के पांच साल, 6. आज़ादी की कीमत : उच्च शिक्षा में राजग-II सरकार का प्रदर्शन, 7. खस्ताहाल सेहत की तस्वीर, 8. महिलाओं के कल्याण की बड़ी-बड़ी योजनाएं : एक मूल्यांकन, 9. सामाजिक न्याय और सामाजिक समरसता?, 10. आम आदमी से बेगानी पर्यावरण नीतियां : क्या पर्यावरणवादी मुखौटा उतर रहा है?, **भाग III : शासन** 11. सूट-बूट की सरकार और भ्रष्टाचार

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

के खिलाफ लड़ाई 12. आधा(र) अधूरा कल्याण : एक मूल्यांकन, 13. मोदी सरकार की विदेश और सुरक्षा नीति : एक मूल्यांकन, 14. बिगड़ता सामाजिक माहौल : राजग-II सरकार की विषैली विरासत। लेखकों का परिचय, तालिकाएं और आकृतियां।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 5287 628 0 2019 344 पृष्ठ ₹ 725.00

विमुद्रीकरण और काला धन

8 नवंबर 2016 को भारत सरकार ने एक बड़ा कदम उठाते हुए 500 रु. तथा 1, 000 रु. के सभी नोटों का चलन बंद कर दिया। ऐसा देश में फैले भ्रष्टाचार, काले धन, जाली मुद्रा एवं आतंकवादियों को मिलने वाले धन लाभ पर चोट करने के लिए किया गया। इस घोषणा के कुछ दिन बाद नोटबंदी विषयक चर्चा और बहस का सिलसिला शुरू हुआ और अनेक प्रकार की टिप्पणियाँ सामने आईं। यद्यपि विमुद्रीकरण के पक्ष और विपक्ष में विभिन्न तर्क दिए गए, लेकिन किसी एक तर्क पर सहमति नहीं दिख रही थी।

विमुद्रीकरण की घोषणा के बाद प्रकाशित अंग्रेज़ी पुस्तक *डीमोनेटाइजेशन एंड ब्लैक मनी* का यह हिंदी अनुवाद है जो विमुद्रीकरण के विविध पक्षों पर प्रकाश डालता है। विमुद्रीकरण 2016 का तर्क क्या था? क्या इसने काले धन को समाप्त कर दिया जैसा कि वादा किया गया था। अन्य क्या विकल्प थे, जो असंख्य भारतीयों को हुई असुविधाओं से बचा लेते? विमुद्रीकरण के बाद अब आगे क्या?

इस पुस्तक में मौद्रिक लेनदेन के डिजिटलीकरण, जो विमुद्रीकरण के बाद सरकार के महत्त्वपूर्ण एजेंडा के रूप में आया, का भी विश्लेषण किया गया है। यह पुस्तक उन भारतीय नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी होगी जो इस कार्य से मिले संदेश को समझना चाहेंगे और उन विद्वानों के लिए भी जो जानना चाहेंगे कि ऐसा क्यों और किसलिए किया गया। वे आम नागरिक भी इस पुस्तक का लाभ उठा सकेंगे, जो यह जानना चाहते हैं कि विमुद्रीकरण 2016 के कारण उनको हुई असुविधाओं से क्या देश को कोई लाभ होगा।

सी. राममनोहर रेड्डी जाने-माने अर्थशास्त्र विशेषज्ञ और पत्रकार हैं जो भारत की आर्थिक नीतियों पर 1980 से लिखते आए हैं। उन्होंने 2004 से 2016 तक प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी जर्नल *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली* के संपादक के पद पर कार्य किया। संप्रति scroll.in के संपादक हैं।

विषयानुक्रम : तालिका-सूची, शब्द-संक्षेप, प्रस्तावना : वाई.वी. रेड्डी, आमुख, आभार, विमुद्रीकरण 2016 : खुलासा **भाग - I एक -** काला धन तथा काली अर्थव्यवस्था। **दो -** भारत में काली अर्थव्यवस्था का आकार। **तीन -** विश्व में छाया अर्थव्यवस्था का आकार। **चार -** विमुद्रीकरण : भारत और विश्व के अनुभव; **भाग - II पांच -** काले धन पर प्रहार। छह - विमुद्रीकरण 2016 : संदर्भ और विकल्प, परिशिष्ट : जाली मुद्रा का आकलन। **सात -** विमुद्रीकरण 2016 : स्वरूप एवं क्रियान्वयन, परिशिष्ट : उच्च मूल्य वर्ग के नोटों की वृद्धि। **आठ -** 'अल्प नकद' अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन; **भाग-III नौ -** कष्ट और निराशा - **दस -** काला धन एवं राजनीति; **भाग-IV ग्यारह -** नकदी, धन और चलनिधि। **बारह -** बैंकिंग प्रणाली पर प्रभाव। **तेरह -** भारतीय रिजर्व बैंक पर प्रभाव, परिशिष्ट : भारतीय रिजर्व बैंक। **चौदह -** विमुद्रीकरण, काला धन तथा सोना आगे क्या? संदर्भिका। **परिशिष्ट-I.** भारत के प्रधानमंत्री का भाषण; 8 नवंबर 2016 **II.** विमुद्रीकरण पर राजपत्र में अधिसूचना; **III.** डॉ. मनमोहन सिंह का भाषण राज्यसभा में; **IV.** श्वेत पत्र 2012 का सारांश। अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 8639 294 7 2017 272 पृष्ठ ₹ 425.00

भारत ग्रामीण विकास रिपोर्ट 2013 | 14

भारत एक विशाल देश है, अपनी विशेष सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पारिस्थितिकीय विभिन्नता के साथ, जो कि इसके ग्रामीण समाज की वास्तविकता तथा विकास प्रक्रिया में प्रतिबिंबित होती है। स्वतंत्रता से लेकर अब तक आर्थिक नीतियों तथा विकासात्मक पहल ने, बड़े पैमाने पर एक साझा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का अनुसरण किया है, विभिन्न राज्यों तथा क्षेत्रों के राजनीतिक तथा आर्थिक एकीकरण में सहायता की है। पिछले छह दशकों में अंतर्क्षेत्रीय मतभेद पहले की भांति मौजूद हैं लेकिन विषमताओं में परिवर्तन आया है, जो उल्लेखनीय है। क्षेत्रों का रूपांतरण हुआ है तथा विषमताओं के साथ वे और जटिल हो गए हैं जो कि अब उप-क्षेत्रीय स्तर पर दिखाई देता है।

यह रिपोर्ट ग्रामीण रूपांतरण के कुछ निश्चित पहलुओं को, उनके क्षेत्रीय संदर्भ में, उजागर करती है। यह उन प्रख्यात विद्वानों के उपलब्ध शोध को एक साथ लाती है, जिन्होंने क्षेत्रीय विषमताओं के निम्नलिखित विषयों पर व्यापक कार्य किया है : • प्राकृतिक संसाधन निधि तथा भूजल सिंचाई, • क्षेत्रों तथा ज़िलों में पिछड़ापन, • बाज़ार एकीकरण तथा जिन्स बाज़ारों का विकास, • गैर-कृषि रोज़गार, • व्यापार अर्थव्यवस्था में दलितों तथा आदिवासियों का समावेशन, • सामाजिक आंदोलन तथा क्षेत्र।

यह रिपोर्ट क्षेत्रीय विषमताओं के अध्ययन से भी आगे जाती है तथा नीति निर्माण के उद्देश्य से क्षेत्रीय वर्गीकरण का निर्माण करती है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह स्पष्ट हो गया है कि सबके लिए समान नीति कारगार नहीं है। नए क्षेत्रों का उदय, विभिन्न आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के समायोजन के लिए उचित नीति परिवर्तनों की मांग करता है। यह रिपोर्ट पब्लिक डोमेन में, 2013 में पिछली भारत ग्रामीण विकास रिपोर्ट के ज़ारी होने से लेकर अब तक उपलब्ध विभिन्न नए आंकड़ों के आधार पर एक व्यापक अपडेट भी उपलब्ध कराती है। यह केंद्र तथा राज्यों में नीति निर्माताओं, ग्रामीण क्षेत्र के साथ जुड़े स्थानीय निकायों तथा कॉरपोरेटों के लिए एक बहुमूल्य संसाधन बनी रहेगी। छात्र, विद्वान तथा शोधकर्ता भी इसे अत्यंत उपयोगी पाएंगे।

विषयानुक्रम : अनुक्रम : तालिका, आकृति और बॉक्स, आमुख, भूमिका, आभार, संक्षिप्त नाम। भाग 1 **अध्याय 1 : ग्रामीण विकास : उभरते क्षेत्रीय दृष्टिकोण** 1.1 परिचय, 1.2 क्षेत्रीय संदर्भ में 'ग्रामीण' : अवधारणात्मक मुद्दे, 1.3 भारतीय इतिहास में क्षेत्र, 1.4 ज़िलों का वर्गीकरण, 1.5 ग्रामीण रूपांतरण की मुख्य प्रक्रियाएं, 1.6 क्षेत्रीय विषमता और लोक नीति, 1.7 निष्कर्ष एवं नीतिगत सिफारिशें, संदर्भ सूची। **अध्याय 2 : भारत के ग्रामीण विकास में भूजल वर्गीकरण भारत ग्रामीण विकास का औचित्य,** सारांश, 2.1 परिचय, 2.2 भारत में भूजल : उपलब्धता एवं कमी, 2.3 भारत के भूजल संसाधन का वर्गीकरण, 2.4 भूजल संसाधन विकास और निर्भरता 2.5 भूजल सामाजिक-पारिस्थितिकी की विविधताएं, 2.6 क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में विविधता एवं संघर्ष, 2.7 भावी कार्यक्रम, संदर्भ सूची। **अध्याय 3 : भारत में अंतर-क्षेत्रीय असमानताओं की नई प्रवृत्तियां,** सारांश, 3.1 परिचय, 3.2 पिछड़े ज़िलों एवं उप-ज़िलों को पहचानने का नया कार्य, 3.3 अभ्यास का परिणाम, 3.4 संलग्नता के क्षेत्र, 3.5 विकास-स्तंभ या ध्रुवीकृत विकास?, 3.6 एक नए सिद्धांतीकरण की आवश्यकता, 3.7 भावी कार्यक्रम, संदर्भ सूची। **अध्याय 4 : कृषि बाज़ारों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था : यह क्षेत्रों के भीतर और बाहर से प्राप्त सूचना,** सारांश, 4.1 परिचय, 4.2 कृषि बाज़ारों में विविधता : क्षेत्रीय केस अध्ययन, 4.3 भावी कार्यक्रम, संदर्भ सूची। **अध्याय 5 : भारत में ग्रामीण गैर-कृषि रोज़गार : प्रवृत्तियां, पद्धतियां और क्षेत्रीय आयाम,** सारांश, 5.1 परिचय, 5.2 भारत में रोज़गार प्रवृत्ति : एक संक्षिप्त अवलोकन, 5.3 गैर-कृषिगत रोज़गार में अखिल भारतीय प्रवृत्ति, 5.4 गैर-कृषिगत रोज़गार की क्षेत्रीय पद्धति, 5.5 ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोज़गार विकल्प : प्रारंभिक सर्वेक्षण के प्रमाण, 5.6 ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोज़गार के चालक, 5.7 भावी कार्यक्रम, संदर्भ सूची। **अध्याय 6 : भारत की व्यापार अर्थव्यवस्था में दलित और आदिवासी सहभागिता के क्षेत्रीय प्रतिरूप,** सारांश, 6.1 परिचय, 6.2 जाति, उदारीकरण, रोज़गार और उद्यम विकास, 6.3 उद्यमों के स्वामित्व में दलितों और आदिवासियों की भागीदारी का प्रतिमान, 6.4 दलितों और आदिवासियों की क्षेत्र और सेक्टरवार आर्थिक भागीदारी, 6.5 क्यों दलित और आदिवासी निजी व्यवसाय अर्थव्यवस्था में आनुपातिक रूप से भाग नहीं ले रहे हैं?, 6.6 दलित और आदिवासी व्यापार मालिकों के लिए नीति का समर्थन, 6.7 भावी कार्यक्रम, संदर्भ सूची, परिशिष्ट। **अध्याय 7 : भारत में सामाजिक आंदोलनों के क्षेत्रीय आयाम,** सारांश, 7.1 प्रस्तावना, 7.2 सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन के उपागम, 7.3 समकालीन ग्रामीण सामाजिक आंदोलन, 7.4 अंतर-क्षेत्रीय प्रवृत्तियां, 7.5 भावी कार्यक्रम, संदर्भ सूची। **भाग 2 अध्याय 8 : ग्रामीण विकास की स्थिति : एक नवीनतम अध्ययन** 8.1 परिचय, 8.2 गांवों का आकृति विज्ञान, 8.3 बदलता ग्रामीण भू-जनसांख्यिक परिदृश्य और उपभोग-पैटर्न, 8.4 वृद्धि, असमानता और उपभोग में कमी, 8.5 कृषि क्षेत्र, 8.6 ग्रामीण रोज़गार : पैटर्न एवं रुझान, 8.7 ग्रामीण ऋण, 8.8 ग्रामीण संरचना, 8.9 कार्यक्रम कार्यान्वयन/योजना प्रदायन। संदर्भ सूची, परिशिष्ट **परिशिष्ट ए :** पिछड़ेपन के आधार पर अवरोहीक्रम में ज़िलों की सूची, **परिशिष्ट बी :** पिछड़ेपन के आधार पर अवरोहीक्रम में उप-ज़िलों की सूची, सहयोगी लेखक।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 5985 1 2015 300 पृष्ठ ₹ 1950.00

भारत ग्रामीण विकास रिपोर्ट 2012–13

ग्रामीण भारत व्यापक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। यह रिपोर्ट पुनरुत्थान और संघर्ष, गरीबी और संकट से जूझने का विवरण है। इस जटिल बहुस्तरीय संदर्भ में **भारत ग्रामीण विकास रिपोर्ट 2012-13** ग्रामीण विकास के विविध पहलुओं पर खोज करती है। यह रिपोर्ट विशिष्ट है जो ग्रामीण भारत की व्यापक वर्तमान छवि उपलब्ध कराती है और एकखंडीय संकलन में ही निम्न बिंदुओं की समीक्षा और इसका विश्लेषण प्रदान करती है : • विकसित होती ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संबंधों पर इसका प्रभाव; • क्षेत्रीय असमानता, सामाजिक और आर्थिक वंचन की रूपरेखा; • शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और भौतिक संरचना तक पहुंच में असमानताएँ; • बाज़ारीकरण और छोटे खेतों तथा गैर-कृषि अवसरों में वृद्धि के कारण आजीविका की बदलती प्रवृत्ति; • प्राकृतिक संसाधनों का टिकाऊपन, जो ग्रामीण आजीविका के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और संसाधनों के लिए संघर्ष; तथा • राज्य की बदलती भूमिका और स्थानीय स्वशासन।

यह रिपोर्ट केंद्र सरकार की सभी प्रमुख ग्रामीण योजनाओं और कार्यक्रमों तथा विशेष रूप से महत्त्वाकांक्षी ग्रामीण रोज़गार गारंटी कार्यक्रम महात्मा गांधी नरेगा की समीक्षा करती है।

यह रिपोर्ट उपयोगी होगी क्योंकि इसमें

• सामयिक मुद्दों पर बहस को शामिल किया गया है; • आनुभाविक विश्लेषण प्रदान किया गया है; • विभिन्न मुद्दों पर साहित्य का संश्लेषण किया गया है; • प्रेरणाजनक कहानियों और नवीन मॉडल द्वारा दर्शाया गया है कि क्या काम करता है और क्या नहीं; • नीति निर्देशक सुझाए गए हैं; और • व्यापक ग्रामीण डेटाबेस उपलब्ध कराया गया है।

इस रिपोर्ट को आईडीएफसी फाउंडेशन ने नेटवर्क पार्टनर सीईएसएस, आईआरएमए, आईजीआईडीआर के सहयोग तथा अनुसंधानकर्ताओं, विशेषज्ञों और सिविल सोसाइटी संगठनों, जो जमीनी स्तर पर काम करते हैं उनके सहयोग से तैयार किया गया है। यह नीति निर्माताओं, राज्य और स्थानीय निकायों, अनुसंधानकर्ताओं और निजी क्षेत्र के लिए बहुउपयोगी सिद्ध होगी।

विषयानुक्रम : सारणी, आकृति एवं बॉक्स सूची, प्रस्तावना, प्राक्कथन, आभार, संक्षिप्त नाम, शब्दावली। **भाग 1 : अध्याय 1 : ग्रामीण सक्रियता** 1.1 ग्रामीण-शहरी सीमाओं की बढ़ती हुई अस्पष्टता, 1.2 छोटी जोत की खेती ग्रामीण जीवन का आधार बन चुकी है, 1.3 कृषि का बढ़ता वाणिज्यीकरण एवं जोखिम, 1.4 ग्रामीण गैर-कृषि रोज़गार का बढ़ना : संकट या अवसर?, 1.5 कृषि अर्थव्यवस्था की घटती भूमिका : सामाजिक एवं राजनीतिक परिणाम, 1.6 प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, 1.7 क्षेत्रीय असमानताओं की रूपरेखा और सामाजिक वंचन, 1.8 राजनीतिक विकेंद्रीकरण की ओर क्रमिक लेकिन अपरिवर्तनीय आंदोलन, संदर्भ ग्रंथ सूची। **अध्याय 2 : आजीविकाएं** 2.1 ग्रामीण आय एवं रोज़गार : विरोधाभास, चुनौतियां और संभावनाएं, 2.2 कृषि अर्थव्यवस्था की विशेषताएं, 2.3 कृषि आजीविकाओं को टिकाऊ बनाए रखने में प्रमुख मुद्दे, 2.4 बदलती कृषि अर्थव्यवस्था पर प्रतिक्रिया, 2.5 ग्रामीण गैर-कृषि क्षेत्र का महत्व, 2.6 ग्रामीण गैर-कृषि आजीविका की बाधाएं, 2.7 राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका अभियान (एनआरएलएम) : आजीविका, परिशिष्ट, संदर्भ ग्रंथ सूची। **अध्याय 3 : समावेशन** 3.1 विकास, निर्धनता और असमानता, 3.2 मानव विकास, 3.3 शिक्षा, 3.4 खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, 3.5 स्वास्थ्य, 3.6 सामाजिक सुरक्षा, 3.7 भावी कार्यक्रम, परिशिष्ट 3.1 : निर्धनता की माप-सरकारी प्रणाली में समस्याएं, संदर्भ ग्रंथ सूची। **अध्याय 4 : आधारभूत सुविधाएं** 4.1 ग्रामीण आधारभूत ढांचा : एक समीक्षा, 4.2 सड़कें, 4.3 ऊर्जा, 4.4 जल एवं सफाई, 4.5 आवास, 4.6 दूरसंचार, 4.7 भंडारण, 4.8 निष्कर्ष, परिशिष्ट, संदर्भ ग्रंथ सूची। प्रेरक कहानियां, **अध्याय 5 : संवहनीयता** 5.1 आजीविका और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के बीच संतुलन, 5.2 भूमि, 5.3 वन, 5.4 जल, 5.5 मत्स्यपालन, 5.6 जलवायु परिवर्तन, 5.7 भावी योजना, संदर्भ ग्रंथ सूची। **अध्याय 6 : स्थानीय स्वशासन एवं ग्रामीण विकास के लिए पंचायती राज संस्थाएं (पीआरआई)** 6.1 बॉटम-अप गवर्नेंस की आवश्यकता, 6.2 संविधान (73वां संशोधन अधिनियम, 1992) 6.3 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के तहत पंचायती राज संस्थाओं के दो दशकों का आकलन, 6.4 73वें सीएए का सीमांत जनसंख्या तक विस्तार, 6.5 दो दशकों के बाद हमारी स्थिति क्या होगी?, 6.6 भावी योजना, संदर्भ ग्रंथ सूची। **भाग 2 : अध्याय 7: महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना का प्रदर्शन** 7.1 एमजीनरेगा : रोज़गार गारंटी और उससे आगे की दृष्टि, 7.2 अधिनियम को सही अर्थों में लागू करना, 7.3 बॉटम अप कार्यान्वयन कार्यरूप, 7.4 राष्ट्रव्यापी कवरेज और प्रभावशीलता, 7.5 कार्यान्वयन का जमीनी स्तर पर निरीक्षण, 7.6 योजना के व्यापक उद्देश्यों और उसके प्रभाव का आकलन, 7.7 भावी योजना, परिशिष्ट, संदर्भ ग्रंथ सूची।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 5450 4 2014 322 पृष्ठ ₹ 1175.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

इतिहास

प्राचीन भारत : प्रागैतिहासिक काल से 300 ईस्वी तक

इतिहास मानव और समाज के सभी पहलुओं का कालक्रमानुसार वर्णन है। यह समय के साथ होने वाले परिवर्तन के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभाव की विवेचना करता है। यह पुस्तक प्रागैतिहासिक काल से लेकर 300 ईस्वी तक के भारतीय इतिहास का विवरण प्रस्तुत करती है।

प्राचीन भारत : प्रागैतिहासिक काल से 300 ईस्वी तक पुस्तक दिल्ली विश्वविद्यालय के नवीनतम पाठ्यक्रम और नई शिक्षा नीति के अनुरूप बी.ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है। छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विषय के स्तर को बनाए रखते हुए समस्त विषयवस्तु को एक ही स्थान पर संग्रहीत किया गया है। पुस्तक में विषय से संबंधित सभी घटनाओं, तथ्यों और विचारों को सरल भाषा एवं रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। विषय की बेहतर समझ के लिए पुस्तक में मानचित्रों और चित्रों का भी समावेश किया गया है।

ओम प्रकाश सिंह दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : 1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत : साहित्यिक स्रोत, विदेशी वृत्तांत, पुरातात्त्विक स्रोत; 2. प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ : भूवैज्ञानिक युग तथा मानव विकास, भारत में पाषाण काल, पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण; 3. हड़प्पा सभ्यता : उत्पत्ति तथा विस्तार, हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना, हड़प्पा कालीन अर्थव्यवस्था, हड़प्पाई समाज तथा धर्म, पतन एवं निरंतरता, ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ, हड़प्पा सभ्यता के बाहर की ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ; 4. वैदिक काल : इंडो-आर्य, ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था, उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था, ऋग्वैदिक समाज, उत्तर वैदिक समाज, ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था, उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था, ऋग्वैदिक धर्म, उत्तर वैदिक धर्म, लौह युग का आरंभ, महापाषाण संस्कृतियाँ; 5. वैदिकोत्तर काल : भौतिक परिवर्तन, शहरी जनजीवन, सामाजिक परिवर्तन, महाजनपद, मगध का उत्थान, बौद्ध एवं जैन धर्म, महावीर का जीवन और शिक्षण, बुद्ध का जीवन और शिक्षण, बौद्ध एवं जैन धर्म : तुलना और विस्तार; 6. मौर्य काल : राज्य एवं प्रशासन, न्याय व्यवस्था, प्रांतीय प्रशासन, ग्राम प्रशासन, अर्थव्यवस्था और समाज, उद्योग एवं व्यापार, आय के स्रोत, शहरों का विकास, मौर्यकालीन समाज, अशोक का धम्म, मौर्य साम्राज्य का पतन, पतन के कारण, कला एवं स्थापत्य; 7. आरंभिक तमिलकम : संगम साहित्य, संगम कालीन राजनीतिक व्यवस्था, संगमकालीन अर्थव्यवस्था, संगमकालीन समाज; 8. मौर्योत्तर काल— सातवाहन एवं कुषाण : सातवाहन, कुषाण, कनिष्क, मौर्योत्तर राजनीतिक व्यवस्था, सातवाहन राजनीतिक व्यवस्था, कुषाण राजनीतिक व्यवस्था, मौर्योत्तर अर्थव्यवस्था, कृषि, शिल्पकारी एवं श्रेणी, व्यापार, मौर्योत्तर समाज, महिलाओं की स्थिति, मौर्योत्तर कला। संदर्भ ग्रंथ सूची, अनुक्रमणिका।

978 93 5442 992 7 2024 208 पृष्ठ ₹ 345.00

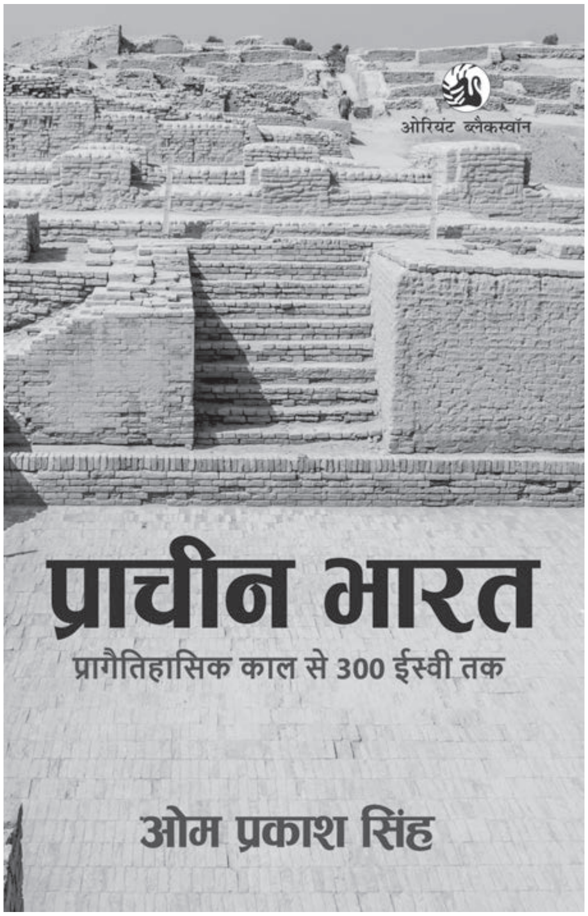

नवीनतम इतिहास

बस्तर : राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास

प्रस्तुत पुस्तक पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तरों में शामिल बस्तर पर पाठ्यक्रम के अनुकूल तैयार की गई है। यह पुस्तक छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के अभ्यर्थियों के लिए भी सहायक सिद्ध होगी। प्रस्तुत पुस्तक में बस्तर का सामान्य परिचय, प्रारंभिक इतिहास, आज़ादी से पहले की राजनीतिक स्थिति, बस्तर में हुए प्रमुख विद्रोह, प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्ष, बस्तर में आए अंग्रेज़ों के यात्रा विवरण, प्रमुख ऐतिहासिक-पर्यटक आकर्षण, वर्तमान भौगोलिक- राजनीतिक-प्रशासनिक स्थिति और नक्सलवाद पर विस्तार से चर्चा की गई है। विद्यार्थियों की सुविधा हेतु विस्तृत संदर्भ-ग्रंथ सूची, बस्तर संभाग एवं इसमें सम्मिलित ज़िलों की प्रमुख जानकारी नक्शों के साथ परिशिष्ट में दी गई है।

आभा रूपेन्द्र पाल इतिहास अध्ययन शाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हैं। साथ ही, वे छत्तीसगढ़ इतिहास परिषद व इस विश्वविद्यालय के इतिहास अध्ययन मंडल की अध्यक्ष भी हैं।

डिश्वर नाथ खुटे इतिहास अध्ययन शाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में सहायक प्राध्यापक हैं।

विषयानुक्रम : 1. बस्तर का सामान्य परिचय : स्थिति, विस्तार एवं सीमाएं; भौगोलिक परिचय; प्रमुख जनजातियां। 2. बस्तर का प्रारंभिक इतिहास : नलवंश; गंगवंश; छिंदक नागवंश; काकतीय वंश। 3. बस्तर की राजनीतिक स्थिति (1800-1947) : बस्तर पर मराठों का प्रभुत्व; बस्तर ब्रिटिश शासन की अधीनता में सामंतीय राज्य के रूप में; शासकों की स्थिति; स्वतंत्रता के उपरांत काकतीय वंशीय उत्तराधिकारी। 4. बस्तर में जनचेतना का विकास एवं विद्रोह (1774-1947) : डोंगर क्षेत्र में हल्बा विद्रोह; भोपालपट्टनम का संघर्ष; परलकोट का विद्रोह; तारापुर का विद्रोह; मेरिया विद्रोह; महान मुक्ति संग्राम; कोई विद्रोह; मुरिया विद्रोह; भूमकाल विद्रोह; बस्तर में स्वाधीनता हेतु प्रयास। 5. बस्तर की प्रशासनिक व्यवस्था (1854-1947) : सामान्य प्रशासन; जमींदारी व्यवस्था; पुलिस एवं सैन्य व्यवस्था; वन एवं आबकारी व्यवस्था; विधि एवं न्याय व्यवस्था; राजस्व व्यवस्था; शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था; स्थानीय तथा ग्राम व्यवस्था; लोक निर्माण, रेल एवं डाक-तार व्यवस्था; सिंचाई व्यवस्था; व्यापार व्यवस्था। 6. बस्तर की सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा धर्म एवं आस्थाएं : आदिवासियों की सामाजिक संरचना— स्त्रियों की दशा, वस्त्राभूषण, मनोरंजन के साधन, मड़ई मेले, तीज-त्यौहार एवं देवी-देवता; आर्थिक स्थिति—कृषि, पशुपालन, शिकार, वनोपज, हाट-बाज़ार, नाप-तोल, उद्योग धंधे, वाणिज्य व्यापार, धर्म एवं आस्थाएं, लोक कला संस्कृति—लोक नृत्य, लोक गीत, लोक साहित्य, शिल्प कला। 7. ब्रिटिश यात्रियों तथा अधिकारियों के विवरण एवं बस्तर के अमर शहीद : ब्रिटिश यात्रियों तथा अधिकारियों के विवरण—जे.टी. ब्लंट, पी. वान्स एगेन्यू, रिचर्ड जेनकिंस, मैकफर्सन, चार्ल्स इलियट, सी. ग्लासफर्ड, ए.आई.आर. ग्लासफर्ड, मैकज़ार्ज, एस.सी.ई. वार्ड, ए.एच.एल. फ्रेजर, फैगन, जी.डब्लू. गेयर, चैपमैन, ई.ए.डी. ब्रेट, रेवरेंड वार्ड, डब्लू.वी. ग्रिम्सन; बस्तर के अमर शहीद— अजमेर सिंह, गेंदा सिंह, धुर्वाराव, बाबूराव, यादोराव, वेंकटराव, नागुल दोर्ला, लाल कालेंद्र सिंह, स्वर्णकुंवर देवी, गुंडाधुर। 8. बस्तर के प्रमुख पर्यटन स्थल : जगदलपुर; दंतेवाड़ा; बारसूर; गढ़धनोरा; नारायणपाल; भोंगापाल; ढोंढरे पाल; बड़े डोंगर; चित्रकोट; तीरथगढ़; कुटुंबसर गुफा; कैलाश गुफा; केशकाल; बैलाडीला। 9. बस्तर के अन्य आकर्षण : घोटुल; बस्तर दशहरा; कांगेर घाटी एवं इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान; भैरमगढ़ एवं पामेड़ अभयारण्य; अबूझमाड़; के.के. रेलवे लाईन। 10. बस्तर में नक्सलवाद एवं सलवा जुडूम। 11. बस्तर—समग्र परिचय : बस्तर संभाग की महत्त्वपूर्ण जानकारी; बस्तर के ज़िलों की महत्त्वपूर्ण जानकारी—बस्तर, नारायणपुर, कोंडागांव, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा एवं कांकेर जिला। संदर्भ-ग्रंथ सूची, परिशिष्ट 1. बस्तर : बिंदुवार महत्त्वपूर्ण जानकारी, परिशिष्ट 2. बस्तर संभाग के अंतर्गत आने वाले ज़िलों की महत्त्वपूर्ण जानकारी। अनुक्रमणिका।

978 93 5442 050 4 2022 208 पृष्ठ ₹ 295.00

आधुनिक भारत का इतिहास
ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित

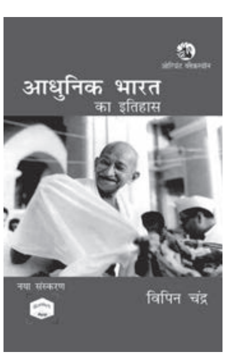

आधुनिक भारत का इतिहास ब्रिटिश राज के रूप में प्रख्यात ऐतिहासिक काल का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करती है। यह मुख्य रूप से राजनीतिक वर्णन से इतर : 1. अठारहवीं सदी के भारत की उन परिस्थितियों का वर्णन करती है, जिसने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में राज स्थापित करने में मदद की; 2. औपनिवेशिक शासन के मूल उद्देश्य पर दृष्टिपात करती है, जो व्यापार और निवेश के द्वारा भारत का आर्थिक शोषण करना था; 3. राष्ट्रवादी आंदोलन का विस्तृत विवरण देती है; 4. महत्त्वपूर्ण स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय देती है। यह समग्र पाठ्यपुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों के लिए और उन सभी पाठकों के लिए अनिवार्य है, जो आधुनिक भारत के इतिहास में रुचि रखते हैं।

विपिन चन्द्र आधुनिक भारतीय इतिहास के प्रख्यात इतिहासकारों में से एक रहे हैं। वे नेशनल बुक ट्रस्ट के चेयरमैन थे। वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र में प्रोफेसर और नेशनल रिसर्च प्रोफेसर थे।

विषयानुक्रम : 1. अठारहवीं सदी : भारत में राज्य और समाज, 2. भारत में यूरोपियों का आगमन, 3. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य : आर्थिक नीतियाँ और प्रशासनिक ढाँचा (1757-1857), 4. ब्रिटिश भारत में प्रशासनिक संगठन; सामाजिक तथा सांस्कृतिक नीति, 5. उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण, 6. 1857 का विद्रोह, 7. 1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन, 8. ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव, 9. भारत में राष्ट्रीय आंदोलन (1858-1905), 10. धार्मिक और सामाजिक सुधार : 1858 के बाद, 11. राष्ट्रवादी आंदोलन : उग्र राष्ट्रवाद का विकास (1905-1918), 12. स्वराज्य के लिए संघर्ष-I, 13. स्वराज्य के लिए संघर्ष-II : नई शक्तियों का आविर्भाव, संदर्भिका, अनुक्रमणिका।

*अंग्रेज़ी, बांग्ला और ओडिया में भी उपलब्ध।

978 93 9012 263 9 2020 376 पृष्ठ ₹ 450.00

मध्यकालीन भारत : राजनीति, समाज और संस्कृति
ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित

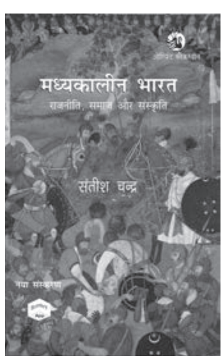

सतीश चन्द्र द्वारा लिखित **मध्यकालीन भारत : राजनीति, समाज और संस्कृति** पुस्तक आठवीं से लेकर अठारहवीं सदी के भारत के इतिहास का समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। यह मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करती है : 1. चोल, बहमनी और विजयनगर के साम्राज्य के इतिहास पर; 2. सूर, लोदी, दिल्ली सल्तनत और मुगलों द्वारा डाले गए प्रभाव पर; 3. राजपूत राजाओं और मराठों के महत्त्व पर; 4. धार्मिक आंदोलनों जैसे सूफ़ी और भक्ति आंदोलनों पर; 5. बदलते राजनीतिक, आर्थिक और कृषि संबंधी परिदृश्य पर। यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों और शिक्षाविदों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

सतीश चन्द्र (1922-2017) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर एवं डीन रहे। वे इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की बारह-खंडीय काम्प्रेहेंसिव हिस्ट्री ऑफ इंडियन स्कीम के अध्यक्ष भी थे, जिसका कार्यान्वयन काम्प्रेहेंसिव हिस्ट्री ऑफ इंडिया सोसायटी कर रहा है। वे सोसाइटी फॉर इंडियन ओशियन स्टडीज़, नई दिल्ली के उपाध्यक्ष रहे।

विषयानुक्रम : 1. भारत और विश्व, 2. उत्तर भारत और दकन : तीन साम्राज्यों का युग (आठवीं से दसवीं सदी तक), 3. चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक), 4. आर्थिक और सामाजिक जीवन, शिक्षा और धार्मिक विश्वास (800-1200), 5. टकराव का युग (1000-1200), 6. दिल्ली सल्तनत : स्थापना एवं सुदृढ़ीकरण (तेरहवीं सदी), 7. दिल्ली सल्तनत : चौदहवीं सदी में प्रसार और पतन (खिलजी और तुगलक), 8. दिल्ली सल्तनत : शासन तथा आर्थिक-सामाजिक जीवन, 9. विजयनगर और बहमनी काल तथा पुर्तगालियों का आगमन (लगभग 1350-1565), 10. उत्तर भारत में साम्राज्य के लिए संघर्ष (लगभग 1400-1525), 11. भारत में धार्मिक आंदोलन और सांस्कृतिक विकास (तेरहवीं से पंद्रहवीं सदी तक), 12. मुगलों का आगमन : बाबर और हुमायूँ, 13. अफगानों का चरमोत्कर्ष, 14. मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण (अकबर का युग), 15. दकन और दक्षिण भारत (1656 तक), 16. मुगलों की विदेश नीति, 17. भारत : सत्रहवीं सदी के पूर्वार्ध में, 18. मुगल काल में आर्थिक और सामाजिक जीवन, 19. सांस्कृतिक और धार्मिक विकासक्रम, 20. औरंगजेब और उसकी आंतरिक समस्याएँ, 21. मुगल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष और विघटन, 22. मूल्यांकन और समीक्षा, संदर्भ-ग्रंथ, अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 901 2264 6 2020 396 पृष्ठ ₹ 495.00

1857 का विद्रोही जगत् : पूरबी उत्तर प्रदेश में

यह पुस्तक एक व्यवस्थित और अपनी तरह के अप्रतिम शोध का परिणाम है। इस पुस्तक का केंद्र पूरबी उत्तर प्रदेश का वह भौगोलिक क्षेत्र है जिसने 1857 की ऐतिहासिक क्रांति में अपना अद्वितीय योगदान तो दिया लेकिन इस पर आज तक कोई सिलसिलेवार अध्ययन नहीं किया गया। पुरबिया सिपाहियों ने, जैसा भारतीय सिपाहियों को बंगाल सेना में विशेषित किया जाता था, स्वयं क्रांति के प्रमुख केंद्रों में संघर्ष तो किया था, परंतु उनके अपने देशज क्षेत्रों जैसे उत्तर में नेपाल, पश्चिम में गोरखपुर/अवध और पूरब में बिहार तो दक्षिण-पश्चिम में इलाहाबाद तक फैले पूरबी उत्तर प्रदेश में वास्तव में क्या हुआ था, लेखक ने पहली बार इससे जुड़े सारे तथ्यों को स्वयं इन इलाकों का दौरा करके पुख़्ता सबूतों के साथ रखने का महती काम किया है।

इस पुस्तक के ज़रिए पूरब के इसी इलाके के 1857 के विद्रोही जगत को समझा गया है। अभिलेखागारों में संरक्षित लेखों, सेटिलमेंट रिपोर्टों, आधिकारिक प्रकाशनों, ब्रिटिश अधिकारियों के संस्मरणों एवं स्वदेशी लेखों के आधार पर किए गए इस शोध से कई नवीन तथ्य सामने आए हैं। विभिन्न आँकड़ों को प्रस्तुत करते हुए लेखक ने दंड, ज़ब्ती, साथ ही वफ़ादारों और जासूसों के पुरस्कार से जुड़े छोटे-छोटे

विवरण भी दिए हैं जिनके ज़रिए पूरबी उत्तर प्रदेश को कहीं बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा। विद्रोह के प्रमुख केंद्रों और विद्रोही नेताओं के ठिकानों को दर्शाया जाने वाला एक नक्शा भी पाठकों की सहूलियत के लिए दिया गया है।

यह पुस्तक भारतीय इतिहास के स्नातक एवं परास्नातक छात्रों सहित शोधार्थियों के लिए भी अत्यंत लाभदायक संदर्भ सामग्री है।

सैयद नजमुल रज़ा रिज़वी 'भारत के इतिहास' के जाने-माने इतिहासकार हैं। वे मध्यकालीन/आधुनिक इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने मध्यकालीन भारतीय इतिहास संबंधी विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन और संपादन किया है। वे विगत कई दशकों से उत्तर प्रदेश हिस्ट्री कांग्रेस से सक्रिय रूप से जुड़े हैं और वहाँ कई वरिष्ठ पदों को सुशोभित कर चुके हैं। वे वर्ष 2017-2018 के लिए इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यकारिणी के चयनित सदस्य थे।

विषयानुक्रम : समर्पण, मानचित्र, चित्र-सूची, अपनी बात (आभार), प्राक्कथन। **अध्याय 1.** आक्रोश एवं विद्रोह; **अध्याय 2.** विद्रोह की प्रकृति; **अध्याय 3.** विद्रोह के शिल्पकार : मौलवी सरफराज अली; **अध्याय 4.** पूरबी उत्तर प्रदेश में विद्रोह की प्रमुख घटनाएँ; **अध्याय 5.** विद्रोही जगत् एवं उसके प्रमुख नायक; (अ) स्वरूप, (ब) गोरखपुर जनपद के प्रमुख नायक, (स) डम्मन खाँ : नेपाल तराई का वासी, (द) आजमगढ़, बनारस, जौनपुर, मिर्ज़ापुर और गाजीपुर जनपद एवं बाह्य भूभाग से संबद्ध विद्रोही नायक; **अध्याय 6.** विद्रोह की सीमाएँ, परिणाम एवं महत्त्व। परिशिष्ट : (अ) समकालीन कृति कश्फ़ुल बगावत, गोरखपुर में उपलब्ध विद्रोहियों के नाम; (ब) कश्फ़ुल बगावत, गोरखपुर के अनुसार कुछ विद्रोहियों को मिले दंड का विवरण; (स) समकालीन अप्रकाशित अंग्रेज़ी अभिलेख में 1857 के विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाने वाले पूरबी उत्तर प्रदेश के विद्रोहियों की सूची; (द) प्रकाशित अभिलेखों में पूरबी उत्तर प्रदेश के विद्रोहियों की सूची; (इ) 1857 के विद्रोह में पूरबी उत्तर प्रदेश के शहीद हुए लोगों की सूची; (ई) पूरबी उत्तर प्रदेश में अंग्रेज़ों के प्रमुख पक्षधर एवं सहयोगियों की सूची; संदर्भिका; विशिष्ट शब्दावली; शब्द अनुक्रमणिका।

978 93 5287 365 4 2018 320 पृष्ठ ₹ 650.00

आज़ादी की कहानी

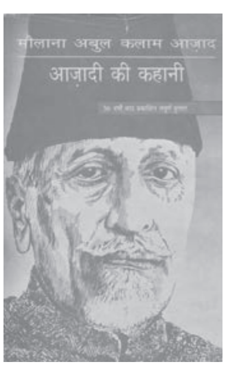

आज़ादी की कहानी का यह संस्करण मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की तीसवीं पुण्यतिथि के बाद प्रकाशित उनकी मूल अंग्रेज़ी पुस्तक *इंडिया विन्स फ्रीडम* के दूसरे और संपूर्ण संस्करण का हिंदी अनुवाद है। यह मौलाना आज़ाद की आत्मकथा मात्र न होकर भारतीय इतिहास का एक अध्याय है। यह कृति मौलाना आज़ाद की देश के प्रति समर्पित भावना एवं राष्ट्रीय संघर्ष की गतिविधियों और परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति है। इस पुस्तक का संक्षिप्त मूल अंग्रेज़ी संस्करण सर्वप्रथम 1959 में प्रकाशित हुआ। उस समय कुछ ऐसे प्रसंग भी आए थे जिन्हें यशस्वी लेखक ने अपनी मृत्यु के बाद 30 वर्षों तक राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता एवं राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में सीलबंद रखवाना अपेक्षाकृत बेहतर समझा और पांडुलिपि का संशोधित एवं संक्षिप्त मसविदा ही प्रकाशन हेतु भेजा। 22 फरवरी 1988 को मौलाना आज़ाद की तीसवीं पुण्यतिथि के बाद 22 सितंबर 1988 को न्यायालय के आदेशानुसार सनसनीखेज सामग्री-युक्त संपूर्ण अंग्रेज़ी ग्रंथ अक्तूबर 1988 में प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत संस्करण इसी संपूर्ण ग्रंथ का हिंदी अनुवाद है। पाठकों की सुविधा के लिए सभी सनसनीखेज वाक्यांशों और लेखांशों के प्रारंभ एवं अंत में तारक-चिह्न लगा दिए गए हैं।

प्रस्तुत कृति का विषय इतना रोचक एवं मनोग्राही है कि प्रत्येक भारतीय इसे पढ़ने को लालायित होगा और जिन पाठकों ने इसका पूर्व संस्करण पढ़ा है वे सुधी पाठक दोनों में परस्पर अंतर खोज सकेंगे एवं जिन पाठकों ने पूर्व संस्करण नहीं पढ़ा है वे इसका आनंद अभिनव पुस्तक के रूप में उठाएँगे।

विषयानुक्रम : 1959 के संस्करण की प्रस्तावना पूर्वपीठिका। 1. कांग्रेस ने शासन की बागडोर संभाली, 2. यूरोप में महायुद्ध, 3. मैं कांग्रेस का अध्यक्ष बना, 4. एक चीनी अंतराल, 5. क्रिप्स-मिशन, 6. बेचैनी का दौर, 7. भारत छोड़ो, 8. अहमदनगर किले की जेल, 9. शिमला-सम्मेलन, 10. आम चुनाव, 11. ब्रिटिश मंत्रिमंडलीय मिशन, 12. विभाजन की भूमिका, 13. अंतरिम सरकार, 14. माउंटबेटन मिशन, 15. एक सपने का अंत, 16. विभाजित हिंदुस्तान। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भिका।

(अंग्रेज़ी, बांग्ला, उर्दू में भी उपलब्ध)

978 81250 5888 5 2015 280 पृष्ठ ₹ 725.00

पलासी से विभाजन तक और उसके बाद : आधुनिक भारत का इतिहास

e-book

दूसरा संस्करण

पलासी से विभाजन तक और उसके बाद : आधुनिक भारत का इतिहास अंग्रेज़ी पुस्तक *फ्रॉम प्लासी टू पार्टिशन एंड आफ़्टर* का हिंदी अनुवाद है। इस पुस्तक में जोड़े गए अंतिम अध्याय में उपनिवेशवाद के पश्चात् के भारत में नेहरू और उनके परवर्ती काल की सभी प्रमुख घटनाओं और ऐतिहासिक प्रवृत्तियों को शामिल किया गया है। इसमें भारतीय राष्ट्र में आए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलावों के साथ एक दल के प्रभुत्व के अंतर्गत नियोजित अर्थव्यवस्था से लेकर गठबंधन सरकारों की बाज़ार अर्थव्यवस्था तक का विवेचन है। यह पुस्तक ब्रिटिश हुकूमत, ब्रिटिश शासकों और उनकी नीतियों की बजाय भारत के लोगों, उनकी आकांक्षाओं, उनके प्रतिरोध और संघर्ष को चित्रित करती है। वास्तव में यह पुस्तक राष्ट्र के रूप में भारत के अभ्युदय का प्रामाणिक विवरण है। इतिहास के इस काल पर लिखी गई बहुत ही कम पुस्तकों में भारतीय राष्ट्रवाद के उतार-चढ़ाव का इतना उत्कृष्ट चित्रण मिलता है। यह पुस्तक एक ओर इतिहास और राजनीति विज्ञान के छात्रों के स्तर के अनुकूल है, तो दूसरी ओर सामान्य तथा जिज्ञासु पाठकों के लिए भी रोचक और पठनीय रही है। यह पिछले दस सालों से इतिहास की एक अत्यधिक पठनीय और महत्त्वपूर्ण पुस्तक के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है।

शेखर बंद्योपाध्याय विक्टोरिया यूनिवर्सिटी ऑफ वेलिंगटन में एशियन हिस्ट्री के एसोसिएट प्रोफ़ेसर और डायरेक्टर हैं। उन्होंने भारत के कलकत्ता तथा कल्याणी विश्वविद्यालयों में भी अध्यापन किया है। उनकी प्रकाशित रचनाओं में *कास्ट, पॉलिटिक्स एंड दि राज : बंगाल, 1872-1937; बंगाल : रीथिंकिग हिस्ट्री : एसेज इन हिस्टोरियोग्राफी; कास्ट एंड कम्युनल पॉलिटिक्स इन साउथ एशिया* व *बंगाल : कम्युनिटीज, डेवलपमेंट एंड स्टेट्स* शामिल हैं।

विषयानुक्रम : मानचित्र-सूची, दूसरे संस्करण की भूमिका, शब्दावली। 1. अठारहवीं सदी का संक्रमण : 1.1 मुगल साम्राज्य का पतन, 1.2 क्षेत्रीय शक्तियों का उदय, 1.3 ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना; 2. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य : 2.1 साम्राज्यवादी विचारधारा, 2.2 संसद और साम्राज्य, 2.3 मालगुज़ारी का दोहन, 2.4 शासन तंत्र, 2.5 साम्राज्य और अर्थव्यवस्था; 3. आरंभिक भारतीय प्रत्युत्तर : सुधार और विद्रोह : 3.1 सामाजिक और धार्मिक सुधार, 3.2 किसान और आदिवासी विद्रोह, 3.3 1857 का विद्रोह; 4. भारतीय राष्ट्रवाद का उदय : 4.1 भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास-लेखन, 4.2 कृषक समाज और कृषक असंतोष, 4.3 नया मध्य वर्ग और राष्ट्रवाद का उदय, 4.4 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना; 5. आरंभिक राष्ट्रवाद : असंतोष और विरोध : 5.1 नरमपंथी नेतृत्व और आर्थिक राष्ट्रवाद, 5.2 हिंदू पुनरुत्थानवाद और राजनीति, 5.3 गरमपंथी राजनीति का उदय और स्वदेशी आंदोलन, 5.4 मुस्लिम राजनीति और मुस्लिम लीग की स्थापना; 6. गांधीवादी राजनीति का युग : 6.1 सीमित स्वशासन के प्रलोभन 1909-19, 6.2 महात्मा गांधी का आगमन, 6.3 खिलाफत और असहयोग आंदोलन, 6.4 सविनय अवज्ञा आंदोलन, 6.5 1935 का अधिनियम, कागज़ी संघ और रजवाड़े; 7. भारतीय राष्ट्र के विविध स्वर : 7.1 मुसलमानों का अलगाव, 7.2 गैर-ब्राह्मण और दलित प्रतिरोध, 7.3 व्यापार और राजनीति, 7.4 मजदूर वर्ग के आंदोलन, 7.5 स्त्रियों की भागीदारी; 8. विभाजन के साथ स्वतंत्रता : 8.1 भारत छोड़ो आंदोलन, 8.2 उथल-पुथल का दशक, 8.3 विभाजन के साथ स्वतंत्रता की दिशा में; 9. स्वतंत्रता और विभाजन के पश्चात् : 9.1 परिवर्तन का काल, 9.2 विभाजन और शरणार्थी, 9.3 कश्मीर, हैदराबाद और साम्यवादी, 9.4 संविधान एवं लोकतंत्र 9.5 नेहरूवादी राष्ट्र और इसकी राजनीति, 9.6 ''कांग्रेस प्रणाली'' का पतन। परिशिष्ट : आधुनिक भारत के इतिहास का काल विवरण, संदर्भिका, अनुक्रमणिका, मानचित्र 1 मुगल साम्राज्य, 1707 में, मानचित्र 2 अठारहवीं सदी की क्षेत्रीय शक्तियाँ, मानचित्र 3 भारत में ब्रिटिश इलाके, 1857 में, मानचित्र 4 ब्रिटिश भारत और रजवाड़े, 1904 के आस-पास, मानचित्र 5 भारत, 1947 में, मानचित्र 6 भारत, 1956 में।

(अंग्रेज़ी और बांग्ला में भी उपलब्ध)

978 81 250 5850 2 2015 612 पृष्ठ ₹ 525.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

सूफ़ीवाद : कुछ महत्त्वपूर्ण लेख

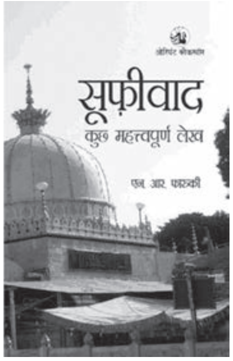

सूफ़ीवाद का इतिहास लगभग चौदह सौ वर्ष पुराना है। हालांकि भारत में आठवीं शताब्दी से सूफ़ियों की उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं, किंतु बारहवीं शताब्दी में तुर्की विजय के पश्चात् बड़ी संख्या में सूफ़ी भारत आए। धीरे-धीरे वह उपमहाद्वीप के कोने-कोने में फैल गए। उन्होंने भारतीय समाज को विशेष रूप से अपनी जीवन शैली और शिक्षाओं से प्रभावित किया। अनेक भारतीय सूफ़ी लोगों की स्मृति में जीवित रहे। आज भी उनके मकबरे उनकी उपस्थिति के प्रतीक के रूप में खड़े हैं जो हमें यह याद दिलाते रहते हैं कि बीता हुआ काल उतना ही सत्य था जितना वर्तमान है।

सूफ़ीवाद : कुछ महत्त्वपूर्ण लेख में सूफ़ीवाद की उत्पत्ति कैसे हुई, इसके प्रारंभिक समर्थक कौन थे, इसके मूल सिद्धांत और शिक्षाएँ क्या थीं—इन विषयों का संक्षिप्त विवरण शामिल किया गया है। इसमें उन सूफ़ियों के जीवन और शिक्षाओं का वर्णन किया गया है जो मुसलमानों की विजय के बाद सिंध और पंजाब में आए। पुस्तक में सूफ़ीवाद की उत्पत्ति से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी तक चिश्ती संप्रदाय का इतिहास दिया गया है और सोलहवीं शताब्दी में उत्तरी भारत में चिश्ती संप्रदाय के पुनरुत्थान की प्रक्रिया का वर्णन उपलब्ध है। इसके साथ ही, दो शताब्दियों में इसके प्रमुख प्रतिपादकों के जीवन और काल का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। भारत में शत्तारी पंथ के सबसे प्रसिद्ध प्रतिपादकों में से एक, मुहम्मद गौस शत्तारी ग्वालियरी के जीवन और कार्यों को दर्शाया गया है। यह पुस्तक भारत के महानतम नक्शबंदी संत, शेख़ अहमद सरहिंदी की धार्मिक और राजनीतिक विचारधारा की व्याख्या करती है।

एन. आर. फारुकी (जन्म 1950) ने इतिहास में एम.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से और पीएच.डी. विस्कोंसिन यूनिवर्सिटी, अमेरिका से प्राप्त की। 1972 से वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापक और मध्यकालीन इतिहास के प्रोफेसर एवं डीन शोध और विकास के पद पर कार्यरत थे। वर्तमान में वे यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद में वाइस चांसलर पद पर कार्यरत हैं। प्रोफेसर फारुकी को कई अंतर्राष्ट्रीय फैलोशिप प्राप्त हैं। वे लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी में भी अध्यापन कार्य कर चुके हैं। 2002 में वे उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 2010 में वे इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के 70वें अधिवेशन में मध्यकालीन भारतीय इतिहास संभाग के अध्यक्ष चुने गए। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में *मुगल-ओटोमन रिलेशंस, कम्यूनलिज्म इन इंडिया* तथा *मीडिवल इंडिया : ऐसेज ऑन सूफ़ीज्म, डिप्लोमेसी एंड हिस्ट्री* शामिल हैं।

विषयानुक्रम : आभार, भूमिका, प्रस्तावना। 1. क्लासिकल सूफ़ीवाद के कुछ रूप, 2. भारत के प्रारंभिक सूफ़ी, 3. चिश्तियों का उद्भव और विकास : उनकी विचारधारा का सारांश और उनके मकबरों की लोकप्रियता का विवरण, 4. चिश्तियों का पुनरुत्थान : मुगलकालीन भारत में सूफ़ी संप्रदाय के विस्तार और संपूर्णता का सर्वेक्षण, 5. मध्य प्रदेश के वरिष्ठ सूफ़ी : मुहम्मद गौस शत्तारी ग्वालियरी, 6. शेख़ अहमद सरहिंदी और उनकी धार्मिक और राजनीतिक विचारधारा, 7. राय बरेली के सैयद अहमद : उनके जीवन और विचारधारा का सारांश और अवध तथा पूर्वी भारत के सूफ़ी केंद्रों पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन। शब्दावली, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5361 3 | 2014 | 220 पृष्ठ | ₹ 395.00

भारत का इतिहास 1707 से 1857 तक

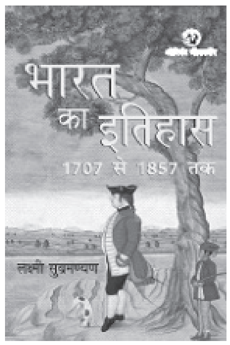

सन् 1707-1857 का भारत नाटकीय घटनाओं से भरा है। जिनका उपमहाद्वीप के इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश उपनिवेशीकरण के प्रभुत्व की प्रक्रिया परंपरागत रूप से जैसी समझी जाती है, यह उससे कहीं अधिक जटिल है। 1910 के दशक से विद्वानों ने इस परिवर्तन काल को अधिक गहन मान्यता प्रदान की है। यह पाठ्यपुस्तक डेढ़ सौ सालों की अवधि में हुए सामाजिक और राजनैतिक बदलावों को पहचान कर उसका परीक्षण करती है। इस अवधि पर दशकों तक किए गए शोध के विश्लेषण और संश्लेषण के द्वारा पुस्तक में विभिन्न बिंदुओं को शामिल किया गया है; मुगल साम्राज्य का पतन, नए राज्यों का उदय और ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना; अठारहवीं शताब्दी के अप्रकाशित रूप से पूँजीवाद में संक्रमण और औपनिवेशिक हस्तक्षेप से जुड़े विचारों का परीक्षण व वे प्रक्रियाएँ जिन्होंने राज्य को सुदृढ़ किया और उसके शासन के तरीके व आर्थिक व्यवस्था का आधार; इस अवधि के दौरान होने वाले सामाजिक और बौद्धिक विकास जिसने औपनिवेशिक प्रभुत्व की स्थापना की और साथ ही साथ इसके विरोध का आधार भी दिया; अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में विकसित संस्कृति, कला, साहित्य, संगीत और विचारों का व्यापक समर्थन; औपनिवेशिक शासन का विरोध और 1857 का विद्रोह।

इस पुस्तक में मानचित्र और संदर्भ ग्रंथ-सूची के साथ-साथ विस्तृत शब्दावली दी गई है जो इस पुस्तक को स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए आवश्यक बनाती है।

लक्ष्मी सुब्रमण्यण कोलकाता के सेंटर फॉर स्टडीज़ इन सोशल साइंसेज में इतिहास की प्रोफेसर हैं। इससे पूर्व वे जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली और कलकत्ता विश्वविद्यालय और विश्व-भारती, शांतिनिकेतन में अध्यापन कर चुकी हैं।

विषयानुक्रम : मानचित्रों की सूची, भूमिका, परिचय, 1. अठारहवीं शताब्दी का संक्रमण काल, 2. कंपनी बहादुर की स्थापना 1757-1857, 3. दृढ़ीकरण एवं अभिशासन : कंपनी राज के उपकरण, 4. कंपनी राज के अंतर्गत आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन, 5. प्रतिरोध और 1857 का महान विद्रोह, उपसंहार : परिवर्तन की शताब्दी में संस्कृति, शब्दावली, अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 4989 0 | 2013 | 304 पृष्ठ | ₹ 495.00

भारतीय इतिहास का आदिकाल
प्राचीनतम पर्व से 600 ईस्वी तक

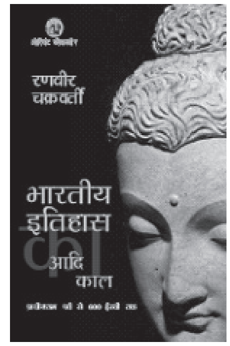

'भारतवर्ष में हमेशा से एक ही कोशिश रही है, विविधता में एकता की स्थापना करना, विभिन्न रास्तों को एक ही लक्ष्य की ओर अभिमुख करना और बहुत के बीच एक को निःसंदेह रूप से अंतरतम में प्राप्त करना, बाहरी अंतरों को बिना मिटाए हुए उनके भीतर की एकता के धागे को मजबूत करना।' रवींद्रनाथ का यही वक्तव्य ***भारतीय इतिहास का आदिकाल*** शीर्षक पुस्तक और लेखक का प्रमुख आधार है। इस पुस्तक में भारतीय इतिहास के प्राचीनतम काल से 600 ई. तक की काल सीमा का विवेचन हुआ है। लेखक ने राजव्यवस्था के साथ-साथ समाज, अर्थनीति, शिल्पकला, धर्मकर्म, दर्शन, भाषा एवं साहित्य के जीवंत रूपों को दर्शाने का प्रयास किया है। स्रोत-सामग्री के आलोक में नगर-निर्माण, राज्य का गठन, नारी की सामाजिक स्थिति, वर्ण-व्यवस्था एवं कौम (समुदाय) का संगठन इत्यादि विषयों की आलोचना हुई है। इतिहास चर्चा की पद्धति-गत भिन्नता और इतिहासकारों के बीच मतभेद जो अतीत के अनुसंधान को सजीव किए रहते हैं, उनके प्रति भी आवश्यकतानुसार ध्यान दिया गया है।

रणवीर चक्रवर्ती नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर हिस्टोरीकल स्टडीज़ में पूर्व प्रोफेसर रह चुके हैं। इससे पूर्व लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग में प्रवक्ता रह चुके हैं। वे दिसंबर 2011 में पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला में आयोजित इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के 72वें सत्र 'प्राचीन भारत' खंड के अध्यक्ष थे।

विषयानुक्रम : 1. प्राचीन इतिहास के स्रोत, 2. भारत में मानव इतिहास का आरंभ काल प्राचीनतम काल से प्रथम नगर-निर्माण तक, 3. भारतीय इतिहास में वैदिक युग अनुमानत : 1500 ई.पू. से 600 ई.पू., 4. षोडश महाजनपदों का काल : राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन छठी शताब्दी ई.पू. से चौथी शताब्दी ई.पू., 5. मौर्यकालीन भारत अनुमानत : 325 ई.पू. से 185 ई.पू., 6. संघात, सम्मिश्रण, समन्वय : राजनीति, समाज एवं संस्कृति अनुमानत : 200 ई.पू. से 300 ई., 7. मानक परिस्थितियों का प्रकाशन अनुमानत : 300 ई. से 600 ई., ग्रंथ-पंजिका, अनुक्रमणिका।

(बांग्ला में भी उपलब्ध)

978 81 250 4705 6 | 2012 | 304 पृष्ठ | ₹ 575.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास

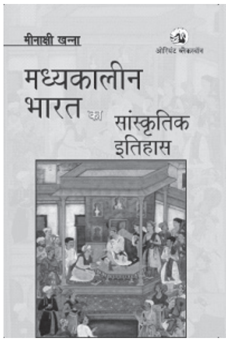

मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास पुस्तक को एक लब्धप्रतिष्ठ इतिहासकार द्वारा इतिहास के विद्यार्थियों के लिए संयोजित किया गया है। इस पुस्तक को कालानुक्रम या परंपरा के आधार पर नहीं विषयों के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। यह पाठक को मध्यकालीन भारत में संस्कृति के विविध पक्षों के पाँच प्रसंगों : राजत्व परंपरा, धार्मिक भक्ति की सामाजिक विधियाँ, अंतर-सांस्कृतिक बोध, अस्मिताओं के प्रकार और सौंदर्य-बोध के द्वारा अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराती है।

इस संकलन के दस निबंध इस उपमहाद्वीप के विविध क्षेत्रीय परिवेश को दर्शाते हैं। इसके लेख बताते हैं कि किसी भी परंपरा में संस्कृति 'बड़े' या 'छोटे' और 'शास्त्रीय' या 'जनसाधारण' के रूप में खंडित नहीं होती। वास्तव में, समय के साथ-साथ एक परंपरा दूसरी परंपरा को प्रभावित करती है और उसकी नई विशेषताओं को अपना लेती है। यह प्रभाव विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों की चारदीवारी के बाहर भी होता है और इस प्रक्रिया में 'स्व' और 'अन्य' के भाव को अर्थ मिलता है। 'अन्य' को पहचानने और 'स्व' की खोज करते हुए यह पुस्तक मध्यकालीन भारत के इतिहास को समझने का एक नया अंतर-विषयक रास्ता सुझाती है जो भारत जैसे विविधता भरे समाज में बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह संकलन इस पाठक वर्ग के अलावा सामान्य पाठकों के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। प्रस्तुत पुस्तक सोशल साइंस प्रेस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित अंग्रेज़ी पुस्तक *कल्चरल हिस्ट्री ऑफ मीडिवल इंडिया* का हिंदी अनुवाद है।

मीनाक्षी खन्ना इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वीमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका, **खंड-प्रथम : राजत्व एवं दरबार अभिजात का लोक से मिश्रण,** 1. मसखरों का राज्य ब्राह्मण, मसखरे और जादूगर, 2. लोकप्रचलित परिहास एवं राजनीतिक इतिहास अकबर, बीरबल एवं मुल्ला दो-पियाजा के उदाहरण; **खंड-द्वितीय : भक्तिवाद** 1. 'पतिकम् पाटुवार' : आरंभिक मध्यकालीन दक्षिण भारत में संवाद-माध्यम के रूप में धार्मिक गायन, 2. लोकप्रचलित शियाधर्म; **खंड-तृतीय : संस्कृतियों का निरीक्षण** 1. आक्रामकों और शासकों की छवियाँ 2. मध्यकालीन दक्कन में इस्लामिक स्थान की अभिव्यक्ति; **खंड-चतुर्थ : पहचानों का समझौता** 1. लिंग की राजनीति तथा उर्दू गजल : रेख्ता बनाम रेख्ती का खोजपरक अवलोकन, 2. मायावी मृगी : एक हिंदवी सूफ़ी प्रेमाख्यान में कामना और आख्यान (1503 ई.); **खंड-पंचम : चित्रकला एवं संगीत** 1. शाहजहानी चित्रकला में श्रेणीबद्धता के सिद्धांत 2. संगीतज्ञों का अदब।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 4698 1 2012 304 पृष्ठ ₹ 525.00

इतिहास-लेख : एक पाठ्यपुस्तक

इतिहास-लेख : एक पाठ्यपुस्तक 500 ई.पू. से 2000 ईस्वी यानि हेरोडोटस के समय से लेकर आधुनिकोत्तर काल तक इतिहास लेख के विकास का वर्णन करती है। इसमें विषय के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक पक्ष शामिल हैं। यह सरल, बोधगम्य, स्पष्ट, संक्षिप्त एवं उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करती है। लेखक ने विरोधी विचारों के संबंध में एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जिससे पाठक इस वृहत् विषय को समझ सकें। इस स्पष्ट विश्लेषणात्मक कार्य में इतिहास लेख के दो हज़ार पाँच सौ वर्षों की जानकारी है। साथ ही इसमें भारतीय इतिहास लेख और इतिहास की रचनात्मकोत्तरवादी (poststructuralist) आलोचना भी शामिल है।

इतिहास-लेख ऐतिहासिक अध्ययन का अपेक्षाकृत एक नया विषय है, जिसे कई भारतीय विश्वविद्यालयों में ग्रेजुएट एवं पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर शामिल किया गया है। इतिहास-लेख पर अध्ययन सामग्री की आवश्यकता सदा से रही है। किसी विश्वसनीय पुस्तक के अभाव में अक्सर देखा जाता है कि पूछे गए प्रश्न और दिए गए उत्तर में भयंकर विसंगति होती थी। इस स्थिति में इस विषय के अध्ययन के लिए एक पाठ्यपुस्तक का होना अत्यंत आवश्यक है।

प्रांजल भाषा में लिखी यह पुस्तक दुरूह शब्दावली से मुक्त है। यह न केवल विद्यार्थियों और कुशाग्र अध्यापकों के लिए उपयोगी है बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए रुचिकर है जो पिछली पीढ़ियों के इतिहास को जानना चाहता है। परिचर्चा की संपूर्णता, तर्कों की स्पष्टता और स्रोतों का विशाल प्रतिबिंब इसके अन्य गुण हैं।

ई. श्रीधरन एक अध्यापक और इतिहास प्रेमी हैं। उनके द्वारा इस पुस्तक में प्रस्तुत दार्शनिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, विचारधाराओं और भाषिक विचारों में इसकी व्यापक झलक मिलती है। इसके आधार पर उन्होंने 2500 वर्षों के इतिहास को समाहित करने की कोशिश की है।

विषयानुक्रम : अध्याय 1 भूमिका; अध्याय 2 I. यूनानी इतिहास-लेख : 1. पूर्व शास्त्रीय काल में इतिहास-लेख; **II. हेलेनिस्टिक काल में इतिहास-लेख** : 1. हेलेनिस्टिक इतिहास-लेख के पीछे प्रभाव, 2. पोलिबियस; **III. रोमन इतिहास-लेख** : 1. (क) केटो (ख) ऐतिहासिक संस्करण, 2. लिवी, 3. टैसिटस, 4. ग्रीक-रोमन इतिहासकार, 5. ग्रीक-रोमन इतिहास-लेखन की विशेषताएँ; **IV. प्राचीन चीनी इतिहास-लेख** : 1. प्राचीन चीन में इतिहास-लेख के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां, 2. कुछ चीनी इतिहासकार, कनफ्यूशियस, स्ज़ूमा चियन, पान कू और स्ज़ूमा क्वांग, चीनी इतिहास-लेख का मानक इतिहास, **अध्याय 3 I. मध्ययुगीन ईसाई इतिहास-लेख** 1. पश्चिम में इतिहास-लेख का पतन, 2. ईसाई ऐतिहासिक चेतना का विकास, 3. सीजेरिया का यूसीबियस और पॉलस ओरोसियस, 4. संत आगस्टीन, 5. टूअर्स का ग्रेगरी, वेनेरेबल बीड, 6. वृत्तांत और इतिवृत्त वृत्तांत, 7. कैरोलिंगियन पुनर्जागरण का इतिहास-लेख, आइनहार्ड, पॉल द डीकन, निथार्ड, 8. द क्रूसेड, 9. ईसाई या मध्ययुगीन यूरोपीय इतिहास-लेख का आकलन; **II. मध्ययुगीन मुस्लिम इतिहास-लेख (पश्चिम एशियाई परंपरा)** : 1. इस्लामी इतिहास-लेख पर पड़े प्रभाव, 2. इस्लामी पूर्व, अलबरूनी, 3. इस्लामी पश्चिम, 4. क्रूसेडों और मंगोल आक्रमणों के मध्ययुगीन मुस्लिम इतिहासकार, 5. भूगोल और यात्रा संबंधी मध्ययुगीन मुस्लिम साहित्य, इब्नबतूता, 6. इब्न खालदून; **अध्याय 4 I. इतिहास-लेख पर पुनर्जागरण का प्रभाव** 1. अर्थ, 2. पुनर्जागरण का इतिहास-लेख पर प्रभाव, 3. पुनर्जागरणकाल के इतिहासविद्, फ्लावियो बियांडो और लियोनार्डो ब्रूनी, निकोलो मैकियावेली, लिवी की प्रथम दस पुस्तकों पर संभाषण, फ्लोरेंस का इतिहास, इतिहास का दर्शन, फ्रांसेस्को गुइशीर्याडनी, जीन बॉडिन और फ्रांसिस बेकन, 4. मानववादी इतिहास-लेख : एक मूल्यांकन; **II. वैज्ञानिक क्रांति का प्रभाव** : बेकन एवं डेस्कारेट्स : 1. वैज्ञानिक क्रांति, 2. आधुनिक दर्शन में पारगमन : फ्रांसिस बेकन एवं रेने डेस्कारेट्स, 3. वैज्ञानिक क्रांति का इतिहास-लेख पर प्रभाव, 4. कार्टेशियन इतिहास-लेख; **III. विको : इतिहास का नया विज्ञान** : 1. कार्टेशियनवाद का विरोध : विको का ज्ञान-सिद्धांत; **अध्याय 5 I. अठारहवीं सदी का ज्ञानोदय एवं इसका इतिहास-लेख पर प्रभाव** 1. ज्ञानोदय, 2. ज्ञानोदय का इतिहास-लेख पर प्रभाव : उन्नति का विचार, धर्म के विरुद्ध विद्रोह, इतिहास में धर्म-निरपेक्षवाद, इतिहास की आवश्यकता पर ज़ोर, मानव इतिहास की एकता, उन्नति का विचार, इतिहास का दर्शन; **II. ज्ञानोदय काल के इतिहासकार** 1. मांटेस्क्यू, 2. वोल्टेयर, 3. डेविड ह्यूम, 4. विलियम राबर्टसन, 5. एडवर्ड गिब्बन, 6. ज्ञानोदय काल के इतिहास-लेख की कमियां; **अध्याय 6 तर्कवाद के विरोध में स्वच्छंदता की प्रतिक्रिया** 1. स्वच्छंदतातावाद, 2. रूसो, 3. हर्डर, 4. हर्डर : कॉलिंगवुड की समीक्षा, 5. इतिहास-लेख पर स्वच्छंदतावाद का प्रभाव, 6. इतिहास का दर्शनशास्त्र, 7. हीगल, 8. हीगल की समालोचना; **अध्याय 7 I. स्वच्छंदतावादी-राष्ट्रीय-साहित्यिक इतिहास-लेख** 1. स्वच्छंदतावाद, 2. स्वच्छंदतावाद-इतिहास एक राष्ट्रीय वीरगाथा के रूप में : थियरे और मिशेले, 3. इतिहास-साहित्य के तौर पर : मैकॉले और कार्लाईल, 'हिस्ट्री' निबंध, ऐस्सेज, इंग्लैंड का इतिहास जेम्स II के राज्य आरोहण से, शैली, समालोचना, ज्ञान की कमी, 4. राष्ट्रवादी इतिहास-लेख : ड्रायसेन, सिबल और ट्रीस्के, जॉन गुस्ताव ड्रायसेन हेनरिक वॉन सिबल, हेनरिक वॉन ट्रीस्के; **II. इतिहास-लेख में बर्लिन क्रांति : नीबुर और रैंक; अध्याय 8 इतिहास में प्रत्यक्षवाद : ऑगस्त कौंत, हेनरी टॉमस बकल और कार्ल मार्क्स** 1. प्रत्यक्षवाद, स्वच्छंदतावाद और प्रत्यक्षवाद, रैंक और कौंत द्वारा प्रवर्तित प्रत्यक्षवाद में अंतर, 2. ऑगस्त कौंत का दर्शन, 3. हेनरी टॉमस बकल, 4. प्रत्यक्षवाद, एक मूल्यांकन, 5. कार्ल मार्क्स, 6. मार्क्सवाद (ऐतिहासिक भौतिकवाद) का इतिहास-लेख पर प्रभाव; **अध्याय 9 बीसवीं शताब्दी - I** 1. वैज्ञानिक इतिहास और संशयवादी स्वर, 2. इतिहास की प्रकृति, प्रकार्य और प्रयोजन : बरी और ट्रेवेलयन, 3. दर्शन में नई रुचि : स्पेंगलर और टॉयनबी, ओस्वाल्ड स्पेंगलर, 4. इतिहास का आदर्शवादी दृष्टिकोण बेनेडेट्टो क्रोश और आर.जी. कॉलिंगवुड; **अध्याय 10 बीसवीं शताब्दी - II भाग I** 1. ऐतिहासिक सापेक्षवाद, जे.एच. रॉबिन्सन, सी.ए. बेयर्ड और कार्ल बेकर, 2. आर्थिक इतिहास, हेनरी पाइरेने, जॉर्ज लेफेब्रे, सिडनी वेब और बिएट्रिस वेब, जे.एच. क्लैपहैम, आर.एच. टाउने, 3. सामाजिक इतिहास, 4. कुछ अग्रणी पेशेवर इतिहासकार, थियोडोर मॉमसेन, एफ.डब्ल्यू. मेटलैंड, एच.ए.एल. फिशर, लेविस बर्नस्टाइन नेमियर, ट्रेवेलयन, 5. आधुनिक अनुभववादी, किट्सन क्लार्क, जी.आर. एल्टन, ए.जे.पी. टेलर इतिहास का दर्शन, ह्यु ट्रेवर-रोपर विवादप्रिय इतिहासकार, यूरोपीय इतिहास की प्रधानता, 6. ब्रिटिश मार्क्सवादी इतिहासकार, क्रिस्टोफर हिल, ई. हॉब्सबॉम, ई.पी. टॉमसन (जन्म 1917), द मेकिंग ऑफ दि इंग्लिश वर्किंग क्लास; **भाग II** 1. समग्र इतिहास की ओर : लूसियन फेब्रे, मार्क ब्लोख और एनालेस स्कूल, 2. फर्नैंड ब्राउडेल, मेडिटेरेनियन को प्रभावित करने वाले कारक, 3. दि मेडिटेरेनियन की आलोचना; **अध्याय 11 इतिहास को आधुनिकोत्तरवाद की चुनौती आधुनिकोत्तरवाद क्या है?** आधुनिकोत्तरवाद एवं इतिहास, **भाग I- दर्शनशास्त्रीय परिवर्तन,** 1. ज्ञानोदय मानववाद की

आधुनिकोत्तरवादी आलोचना, 2. आधुनिकोत्तरवाद का इतिहास पर आक्षेप, 3. मिशेल फॉकाल्ट, फॉकाल्ट का इतिहास दर्शन, 4. फॉकाल्ट के नए प्रकार के इतिहास के गुण, मूल्यांकन, **भाग II- भाषायी बदलाव,** 1. व्याख्यात्मक पद्धति, 2. इतिहास पर आधुनिकोत्तरवादी विचारों के पीछे भाषायी सिद्धांत, जैक्स देरिदा : व्याकरण शास्त्र का उग्र व्याख्यात्मक रूप, ढहाना, अनिर्णयात्मकता और विस्तार, **भाग III- आधुनिकोत्तरवादी ऐतिहासिक सिद्धांत बनाम परंपरागत इतिहास,** 1. आत्म विश्वास का संकट, 2. आधुनिकोत्तरवादी भाषायी सिद्धांत और इसका इतिहास पर प्रभाव, 3. आधुनिकोत्तरवादी ऐतिहासिक सिद्धांत की समालोचना, 4. आधुनिकोत्तरवाद का इतिहास-लेख पर प्रभाव; **अध्याय 12 प्राचीन भारतीय इतिहास-लेख** 1. इतिहास बोध का अभाव, 2. इतिहास बोध अभाव की व्याख्या, 3. कालक्रम निर्धारण की समस्या, घटनाओं की कालक्रम व्यवस्था और क्रियाओं के क्रम की हिंदू अवधारणा, 4. भारतीय ऐतिहासिक परंपरा का आरंभ, 5. वंश और चरित, ऐतिहासिक काव्य या चरित या अलंकृत जीवनियां, बाण भट्ट : हर्षचरित, 6. वाकपतिराज, पद्मगुप्त, अतुल, बिल्हण, भूलोकमल्ल और जयनक, अतुल : मूषिकवंश, बिल्हण : विक्रमांकदेवचरित, 7. कल्हण : राजतरंगिणी, 8. प्राचीन भारतीय इतिहास-लेख : एक समालोचना; **अध्याय 13 मध्यकालीन इंडो-मुस्लिम इतिहास-लेख I सल्तनत काल** : 1. सल्तनत काल के सामान्य सार्वभौमिक इतिहास (1200-1526), 2. विशिष्ट इतिहास, इतिहास-लेख के कलात्मक रूप, 3. मुगल-पूर्व इंडो-मुस्लिम इतिहास-लेख की मुख्य विशेषताएं **II मुगल काल** : 1. राजसी या राजसत्ता केंद्रित आत्मकथाएं, 2. अकबर के शासनकाल में इतिहास-लेख (1556-1605), 3. जहांगीर से औरंगजेब तक इतिहास-लेख (1606-1707), 4. अठारहवीं शताब्दी में भारत में इतिहास-लेख; **अध्याय 14 I. भारत शास्त्र और भारतीय इतिहास का पुनरोद्धार** 1. प्राचीन भारत पर ऐतिहासिक साहित्य का अभाव, 2. प्राच्यवादी या प्राचीन भारतीय इतिहास की भारत शास्त्रीय पुनर्स्थापना; **II. भारत पर ब्रिटिश साम्राज्यवादी (औपनिवेशिक) इतिहास-लेख** 1. जेम्स मिल, 2. माउंट स्टुअर्ट एल्फिंस्टन; **अध्याय 15 I. भारतीय राष्ट्रवादी इतिहास-लेख** 1. राष्ट्रीय अस्मिता की खोज, 2. भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर साम्राज्यवादी हमला; **II. कुछ आधुनिक भारतीय इतिहासकार** 1. आर.जी. भंडारकर, 2. रोमेश चंद्र दत्त, 3. के.पी. जायसवाल, 4. राधा कुमुद मुखर्जी, 5. एच.सी. रायचौधुरी, 6. जी.एस. सरदेसाई, 7. जदुनाथ सरकार, 8 एस. कृष्णास्वामी आयंगर, 9. शफात अहमद खां, 10. मध्यकालीन मुस्लिम भारत पर मुसलमानों की ऐतिहासिक कृतियों के अभाव की एक व्याख्या, 11. सुरेन्द्रनाथ सेन, 12. सरदार के.एम. पनिक्कर, 13. के.ए. नीलकांत शास्त्री, 14. आर.सी. मजूमदार; **अध्याय 16 I. मार्क्सवादी चरण** 1. अभिनव इतिहास, डी.डी. कौशाम्बी (1907-1966), 2.1 आर.एस. शर्मा (जन्म 1920), 3. रोमिला थापर (जन्म 1930), 4. विपिन चंद्र, 5. इरफान हबीब (जन्म 1931), **II. 'सबॉल्टर्न' या अवर अध्ययन।**

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 4280 8 2011 520 पृष्ठ ₹ 550.00

आधुनिक भारत का सांस्कृतिक इतिहास

आधुनिक भारत का सांस्कृतिक इतिहास सामान्यतया राष्ट्रीय आंदोलन, बड़े व्यक्तियों और राजनीति में महत्त्व रखने वाली चीज़ों के रूप में लिखा गया है। हाल ही में इतिहास लेखन के रूप में आए बदलाव ने क्षेत्रों और वहाँ के लोगों के सहायक इतिहास को प्रमुखता प्रदान की है। इस संग्रह के लेख देशों के परंपरागत इतिहास और राजनीति की बजाय इतिहास को अलग तरीके से प्रस्तुत करते हैं। पुस्तक के छह लेख जो क्रिकेट, मौखिक इतिहास, जेंडर स्टडीज़,

फिल्म, पॉपुलर कल्चर और भारतीय शास्त्रीय संगीत से संबंधित हैं, मौलिक और अग्रणी लेख हैं। चाहे बीसवीं शताब्दी में क्रिकेट के मैदान में जातिवाद का मुद्दा हो या उन्नीसवीं शताब्दी में किसी भारतीय गृहिणी द्वारा पहली बार अपनी आत्मकथा लिखने की बात; या फिर किस तरह कैलेंडर आर्ट धर्म और समाज के जटिल ताने-बाने को सहज रूप से प्रकट करता है या टेक्नोलॉजी शुद्ध शास्त्रीय संगीत को किस तरह से चुनौती दे रही है। इन पर आधारित निबंध यह दर्शाते हैं कि समाज और कला के विचार किस तरह स्वतः व्यापक राजनीति में निर्मित होते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि संस्कृति राजनीति की शरण में रहने से अलग एक ऐसी जगह है जहाँ राजनीति भी अपना काम कर जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक सोशल साइंस प्रेस द्वारा प्रकाशित अंग्रेज़ी पुस्तक *कल्चरल हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया* का हिंदी अनुवाद है।

दिलीप एम. मेनन दिल्ली विश्वविद्यालय में आधुनिक इतिहास के एसोसिएट प्रोफेसर थे। वर्तमान में वे सेंटर फॉर इंडियन स्टडीज़ इन साउथ अफ्रीका, यूनिवर्सिटी ऑफ विटवाटर्सलैंड, जोहान्सबर्ग में अध्यापनरत हैं। उन्होंने *कास्ट, नेशनलिज्म एंड कम्युनिज्म इन साउथ इंडिया; मालाबार 1900-48* तथा *दि ब्लाइंडनेस ऑफ इनसाइट : एस्सेज ऑन कास्ट इन मॉडर्न इंडिया* नामक पुस्तकें लिखी हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका एवं आभार, परिचय, 1. क्रिकेट और जाति : पावलंकर बंधुओं का शौर्यपूर्ण संघर्ष; 2. अपनी किताब, अपनी जिंदगी : उन्नीसवीं सदी की एक महिला की आत्मकथा; 3. वर्तमान में अतीत; 4. राष्ट्रीय पहचान और यथार्थवादी सौंदर्य बोध; 5. अनेकता में एकता? भारतीय कैलेंडर आर्ट में राष्ट्रीयता की दुविधा; 6. गुरु और ग्रामोफोन : निष्ठा और आधुनिक टेक्नोलॉजी की कहानी; अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 3427 8 2010 196 पृष्ठ ₹ 395.00

दिल्ली : प्राचीन इतिहास

e-book

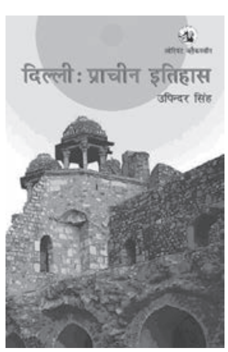

कम ही लोगों को पता होगा कि शोरगुल भरे व्यस्त दिल्ली शहर और आस-पास के इलाकों का हज़ारों वर्ष पुराना अतीत रहा है। यहाँ खेतों की जुताई और व्यवस्थित उत्खनन के क्रम में प्रागैतिहासिक काल के पत्थर के औज़ार और अन्य प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। **दिल्ली : प्राचीन इतिहास** एक संकलन है। इस संकलन के लेखों में दिल्ली क्षेत्र में सदियों से रहते आए लोगों की झलक मिलेगी और इनके अध्ययन से यह भी ज्ञात होगा कि इतिहासकारों ने किस प्रकार ऐतिहासिक तथ्यों को जोड़कर इतिहास लेखन किया है। इससे इतिहासकारों की कार्यविधि भी दृष्टि केन्द्र में आती है। प्राचीन लेखों से प्राप्त जानकारियाँ, पुरातत्त्व, किंवदंतियाँ एवं लोकगाथाओं से जो कभी-कभी इतिहास के अत्यल्प विवरणों पर ही आधारित होती हैं, इन लेखों में उल्लिखित और चर्चित होकर महत्त्वपूर्ण हो गई हैं।

उपिंदर सिंह वर्तमान में अशोका यूनिवर्सिटी के एंशियंट हिस्ट्री व कल्चर डिपार्टमेंट में डीन ऑफ फैकल्टी हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रोफेसर रह चुकी हैं। इतिहास पर लिखी उनकी अनेक पुस्तकों में प्रमुख हैं : *किंग्स, ब्राह्मणाज एंड टेम्पल्स इन ओडिसा : एन एपिग्राफिक स्टडी 300 ई.-1147 ई.; दि डिस्कवरी ऑफ एंशियंट इंडिया : अर्ली आर्कियोलॉजिस्ट्स एंड दि बिगनिंग्स ऑफ आर्कियोलॉजी, एंशियंट डेल्ही* और *हिस्ट्री ऑफ एंशियंट एंड अर्ली मीडिवल इंडिया*।

विषयानुक्रम : भाग 1 दिल्ली क्षेत्र के पाषाणकालीन स्थल : नदी प्रवाह-मार्ग परिवर्तन और बाढ़ : यमुना नदी के एक हिस्से का उपग्रहीय छायांकन द्वारा अध्ययन; केंद्रशासित क्षेत्र दिल्ली एवं हरियाणा के पाषाण युग पर एक प्रारंभिक रिपोर्ट; प्रागैतिहासिक दिल्ली और उसके आस-पास का क्षेत्र : भौगोलिक विशेषताएँ; **भाग 2** आद्य-ऐतिहासिक बस्तियाँ : भोरगढ़ एवं मंडोली के परवर्ती हड़प्पाई अवशेष : मंडोली : दिल्ली स्थित परवर्ती हड़प्पाकालीन बस्ती; भोरगढ़ में खुदाई; भोरगढ़ और मंडोली; केंद्रशासित क्षेत्र दिल्ली के आद्य-ऐतिहासिक पुरातात्त्विक अवशेष; **भाग 3** पुरातत्त्व एवं किंवदंती : नई दिल्ली के पुराना किला में उत्खनन; सभा-भवन का निर्माण; भारतीय पुरातत्त्व एवं महाकाव्य परंपराएँ, महाभारत : मिथक एवं यथार्थ; **भाग 4** आद्य-इतिहास काल : श्रीनिवासपुरी/ बाहापुर के अशोकीय शिलालेख; दो स्तंभों की कहानी; बाहापुर, दिल्ली में अशोक का नव-अन्वेषित अभिलेख; **भाग 5** महरौली लौह स्तंभ का अभिलेख : महरौली का लौह स्तंभ, चंद्र का महरौली लौह स्तंभ अभिलेख; **भाग 6** पूर्व-मध्यकाल : लालकोट और अनंगपुर : सन् 1991-92 में लालकोट का उत्खनन एवं दिल्ली क्षेत्र की अन्य पुरातात्त्विक खोजें; **भाग 7** प्राचीनकाल के अवशेषों का मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास, अशोक तथा महरौली के स्तंभों का परवर्ती इतिहास दिल्ली के प्रभाव-क्षेत्र में : भू-दृश्यों को समझने की एक लोक-दृष्टि।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 3387 5 2010 296 पृष्ठ ₹ 725.00

मध्यकालीन भारत : प्रशासन, समाज एवं संस्कृति

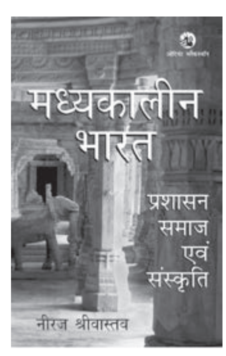

यह पुस्तक एक विशाल काल खंड—पूर्व मध्यकाल से लेकर पूर्व आधुनिक/औपनिवेशिक काल को चिह्नित करती है। यह पुस्तक उन विद्यार्थियों के हित को केंद्र में रख कर लिखी गई है जो बी.ए. और एम.ए. स्तरों पर भारत के इतिहास के विभिन्न पहलुओं

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

का अध्ययन कर रहे हैं। यह पुस्तक उन विद्यार्थियों के लिए भी अत्यंत उपयोगी साबित होगी जो सिविल सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रयासरत हैं।

मध्यकालीन भारत के आठ सौ बरस के लंबे इतिहास का शायद ही कोई ऐसा पहलू है जिसे पुस्तक में सम्मिलित न किया गया हो। पुस्तक में मध्यकाल के प्रशासन, साहित्य, संगीत, दर्शन तथा कला-संबंधी गतिविधियों को यथोचित स्थान देने का प्रयास किया गया है। पुस्तक की अन्य विशेषता यह है कि यह भारत के निकटस्थ इतिहास के दो स्थूल संक्रमणों—प्राचीन से मध्य तथा मध्य से आधुनिक कालखंडों को संबोधित करती है।

नीरज श्रीवास्तव इतिहास में डॉक्टरेट हैं। बारह वर्ष ईश्वर सरन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद में अध्यापन के पश्चात् संप्रति वे इतिहास बोध संस्थान, इलाहाबाद में अध्यापनरत हैं।

विषयानुक्रम : 1. परवर्ती गुप्त, 2. गुप्तोत्तर नारी की स्थिति एवं धार्मिक अधिकार, 3. गुप्त-गुप्तोत्तर शिक्षा पद्धति, 4. गुप्त-गुप्तोत्तरकालीन विज्ञान, 5. वैदिक धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य, 6. सनातन धर्म, 7. गुप्त-गुप्तोत्तर : संस्कृत साहित्य, 8. भारतीय धर्म-दर्शन, 9. तमिल भक्ति आंदोलन, 10. अरबों की सिंध विजय व उसका प्रभाव, 11. मुहम्मद गोरी के भारतीय अभियान, 12 दिल्ली सल्तनत की स्थापना, 13. रुक्नुद्दीन फिरोजशाह से नासिरुद्दीन महमूद, 14. बल्बन : प्रशासनिक कार्य व राजत्व सिद्धांत, 15. खिलजी क्रांति, 16. मुहम्मद बिन तुगलक, 17. फिरोज तुगलक : राजनीतिक-प्रशासनिक नीतियां, 18. लोदी वंश, 19. दिल्ली सल्तनत की दक्षिण नीति, 20. सल्तनत का राजस्व सिद्धांत एवं प्रशासन, 21. सल्तनत कालीन स्थापत्य : शैली एवं विशेषताएं, 22. मुगल वास्तुकला, 23. मध्यकालीन इतिहास लेखन, 24. कल्हण की राजतरंगिणी और इतिहास ग्रंथ के रूप में इसकी प्रासंगिकता, 25. अलबरूनी का इतिहास लेखन 26. जियाउद्दीन बरनी, 27. इब्नबतूता का यात्रा वृत्तांत, 28. अमीर खुसरो का इतिहास लेखन, 29. अबुल फजल का इतिहास लेखन व दर्शन, 30. सल्तनत कालीन भू-राजस्व संकलन प्रशासन, 31. भारत में सूफ़ीवाद का विकास, 32. भक्ति आंदोलन का स्वरूप व विकास, 33. सल्तनत कालीन शिक्षा तथा साहित्य, 34. शेरशाह, 35. कश्मीरी शासक जैनुल अबादीन, 36. मुगल राजत्व, 37. मुगल मनसबदारी व्यवस्था, 38. सुलह-ए.कुल का सिद्धांत, 39. मुगल राजपूत नीति, 40. मुगल दक्षिण नीति, 41. मुगल चित्रकला, 42. मुगलकालीन संगीत, 43. जयसिंह के खगोल संबंधी अनुसंधान, 44. भारतीय व्यापार तंत्र पर पुर्तगालियों का अधिकार, 45. डच कंपनी, 46. बंगाल में ब्रिटिश शक्ति का उदय और उसका विस्तार, 47. मराठा : राजनीतिक आंदोलन की सामाजिक पृष्ठभूमि, 48. शिवाजी का साम्राज्य विस्तार व मराठा प्रशासन, 49. पेशवाओं का काल, 50. मुगल-मराठा संधि, 51. संगमकालीन प्रशासन, समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था, 52. चोल : केंद्रीय व स्थानीय प्रशासन 53. विजयनगर : राजनीतिक उत्कर्ष, 54. विजयनगर प्रशासन, 55. विजयनगर : समाज, अर्थव्यवस्था व संस्कृति, 56. पल्लव स्थापत्य शैली, 57.पांड्य : स्थापत्य शैली एवं विशेषताएँ, 58. चोल कला, 59. कल्याणी के परवर्ती चालुक्य एवं होयसला।

978 81 250 4067 5	2010	332 पृष्ठ	₹ 495.00

समकालीन विश्व का इतिहास 1890-2008

दो प्रमुख भारतीय इतिहासकारों द्वारा लिखित इस पुस्तक में विस्तृत कालविभाजन अपनाते हुए लगभग हर काल में दुनिया के हर क्षेत्र में घटित प्रमुख घटनाओं का वर्णन व्यापक ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में किया गया है। पुस्तक समकालीन इतिहास का वर्णन बिना किसी पूर्वाग्रह के करती है। यह विश्व इतिहास की प्रमुख घटनाओं के बारे में बेहतर जानकारी और समझ विकसित करने में सहायक है। ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत वर्णन इसे समकालीन इतिहास की एक परिपूर्ण पुस्तक बनाता है।

यह पुस्तक विश्वविद्यालयों में इतिहास विषय पढ़ रहे छात्रों के लिए और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

अर्जुन देव भारत सरकार की पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन संबंधी राष्ट्रीय संचालन समिति और समकालीन भारत पर राष्ट्रीय परामर्श समिति के सदस्य सचिव रहे हैं। वे 1963 से 2000 तक एनसीईआरटी से जुड़े रहे तथा इतिहास के प्रोफेसर और एनसीईआरटी के तत्कालीन समाज विज्ञान और मानविकी विभाग के प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त हुए। **इंदिरा अर्जुन देव** एनसीईआरटी में इतिहास की प्रोफेसर रही हैं। एनसीईआरटी में रहते हुए वे पाठ्यचर्या और मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रमों से जुड़ी रहीं।

विषयानुक्रम : 1. इतिहास में काल विभाजन, 2. 1890 से प्रथम विश्व युद्ध तक की दुनिया; यूरोप : उपनिवेशवाद, सैन्यीकरण और युद्ध, संयुक्त राज्य अमरीका और जापान : संयुक्त राज्य अमरीका साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में, समानता के लिए काले लोगों का संघर्ष; जापान : आधुनिक जापान का उदय; एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका : प्रथम विश्व युद्ध : तात्कालिक कारण; युद्ध का विस्तार; युद्ध के दौर का घटनाक्रम : रूसी क्रांति : रूस में क्रांतिकारी आंदोलन, फरवरी क्रांति, अक्तूबर क्रांति, 3. दो विश्व युद्धों के बीच की दुनिया; इस काल की सामान्य विशेषताएँ; शांति संधियाँ : राष्ट्र संघ की स्थापना; वर्साय की संधि; आस्ट्रिया, हंगरी और तुर्की के साथ संधियाँ; दो विश्व युद्धों के बीच संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत संघ तथा जापान : 1929 का घोर संकट; नई नीति; संयुक्त राज्य अमरीका और विश्व; सोवियत संघ : युद्ध साम्यवाद और नवीन आर्थिक नीति; सोवियत समाजवादी गणतंत्र संघ; एकदलीय शासन से तानाशाही की ओर; जापान : विस्तारवादी नीति; एशिया : भारत : चीन : साम्राज्यवाद विरोधी लहर; चीन में गृहयुद्ध; कोरिया; दक्षिण-पूर्व एशियाई देश : 1919 और 1923 के बीच का यूरोप; यूरोप पर महामंदी का प्रभाव; ब्रिटेन का घटनाचक्र; फ्रांस में राजनीतिक अस्थिरता; पुर्तगाल तथा स्पेन; जर्मनी में नाजीवाद की विजय; राष्ट्र संघ; स्पेन का गृहयुद्ध; म्यूनिख समझौता; पोलैंड का प्रश्न और सोवियत संघ के साथ वार्ता, 4. द्वितीय विश्व युद्ध 1939-1945; युद्ध का आरंभ; पूर्वी पोलैंड और बाल्टिक राज्यों पर सोवियत कब्जा; अटलांटिक चार्टर; पर्ल हारबर पर आक्रमण; विश्व युद्ध; स्टालिनग्राड की लड़ाई; उत्तर अफ्रीका और प्रशांत क्षेत्र की लड़ाई; यूरोप में मित्र-राष्ट्रों की विजय; जर्मनी का आत्मसमर्पण; जापान का आत्मसमर्पण; फासीवादी बर्बरता; मित्र-राष्ट्रों के हवाई हमले और परमाणु बमों का उपयोग; तेहरान सम्मेलन; डंबर्टन ओक्स सम्मेलन; याल्टा सम्मेलन; संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र; पोट्सडम सम्मेलन, 5. 1945 के बाद की दुनिया; शीतयुद्ध : पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारें; जर्मनी का घटनाक्रम, यूनान का गृहयुद्ध; ट्रूमैन सिद्धांत; बर्लिन संकट और जर्मनी का विभाजन : सोवियत संघ का परमाणु शक्ति के रूप में उदय; चीन में साम्यवाद की विजय; शीतयुद्ध में तेजी : एशिया में सैनिक संधियाँ; सी.आई.ए. की भूमिका; वियतनाम युद्ध : क्यूबा में प्रक्षेपास्त्र संकट; शीतयुद्ध का अंत; संयुक्त राज्य अमरीका; आर्थिक प्रभुत्व; साम्यवाद विरोधी जुनून; नवीन घटनाचक्र : संयुक्त राज्य में आत्मघाती हमले; अफगाानिस्तान में लड़ाई; इराक युद्ध।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 3696 8	2009	304 पृष्ठ	₹ 450.00

प्रारंभिक भारत का परिचय

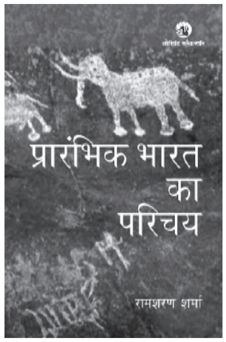

प्रारंभिक भारत का परिचय, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त इतिहासकार रामशरण शर्मा की क्लासिक रचना है। यह प्रारंभ से सातवीं सदी तक के भारतीय इतिहास का सुव्यवस्थित सर्वेक्षण है। इसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों का प्रतिपादन है। प्रारंभिक भारत में सभ्यता और संस्कृति के उदय, विकास और प्रसार के पीछे सक्रिय कारकों एवं शक्तियों का भी गहन विश्लेषण किया गया है। साथ ही, राज्यव्यवस्था, साहित्य, दर्शन, धर्म और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्रारंभिक भारत की विरासत दर्शाई गई है। वस्तुतः यह प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक पठन सामग्री है। पुस्तक की भाषा प्रांजल है और विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण विलक्षण।

रामशरण शर्मा पटना, दिल्ली और टोरंटो विश्वविद्यालयों में इतिहास के प्रोफेसर रह चुके हैं। वे भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के संस्थापक अध्यक्ष भी थे। प्रोफेसर शर्मा की विभिन्न भाषाओं में लगभग 115 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

विषयानुक्रम : 1. प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्त्व, 2. प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक, 3. स्रोतों के प्रकार और इतिहास निर्माण, 4. भौगोलिक ढांचा, 5. पारिस्थितिकी और पर्यावरण, 6. भाषाई ढांचा, 7. मानव का उद्भव और विकास; मध्यपाषाण युग, 8. नवपाषाण युग, 9. ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियां, 10. हड़प्पा संस्कृति, 11. आर्य संस्कृति की पहचान, 12. ऋग्वैदिक युग, 13. उत्तर वैदिक अवस्था, 14. जैन और बौद्ध धर्म, 15. जनपद राज्य और प्रथम मगध साम्राज्य, 16. ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण, 17. बुद्धकाल में राज्य और वर्ण-समाज, 18. मौर्य युग : चंद्रगुप्त-मौर्य-साम्राज्य का संगठन-अशोक (273.232 ई.पू.), 19. मौर्य शासन का महत्त्व, 20. मध्य एशिया से संपर्क और उनके परिणाम, 21. सातवाहन युग, 22. सुदूर दक्षिण में इतिहास का प्रारंभ, 23. शिल्प, व्यापार और नगरों का विकास, 24. गुप्त साम्राज्य का उद्भव और विकास, 25. गुप्तकालीन जीवन, 26. पूर्वी भारत में सभ्यता का प्रसार, 27. हर्ष और उसका काल, 28. प्रायद्वीप

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

में नए राज्यों के गठन और ग्राम-विस्तार, 29. दर्शन का विकास, 30. भारत का एशियाई देशों से सांस्कृतिक संपर्क, 31. प्राचीन से मध्यकाल की ओर, 32. प्राचीन काल में सामाजिक बदलाव का सिलसिला, 33. प्राचीन भारत की विरासत। मानचित्र : 1. भारत प्राकृतिक, 2. भारत वार्षिक वर्षा, 3. भारत में तांबे, लौह, अयस्क और सोने के निक्षेप, 4. नवपाषाणयुग स्थल, 5. हड़प्पा सभ्यता का विस्तार, 6. भारत में चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति का वितरण, 7. महाजनपद, 8. उत्तरी काले मृद्भांडों का विवरण, 9. अशोक का साम्राज्य, 10. मध्य एशियाई संपर्क, 11. भारत (150 ई. के लगभग), 12. भारत (लगभग 200 ई.पू. से 300 ई. तक), 13. प्राचीन व्यापार मार्ग, 14. गुप्त साम्राज्य चौथी शताब्दी के अंत में, 15. दकन और दक्षिण भारत।

(बांग्ला में भी उपलब्ध)

978 81 250 2651 8 2004 384 पृष्ठ ₹ 475.00

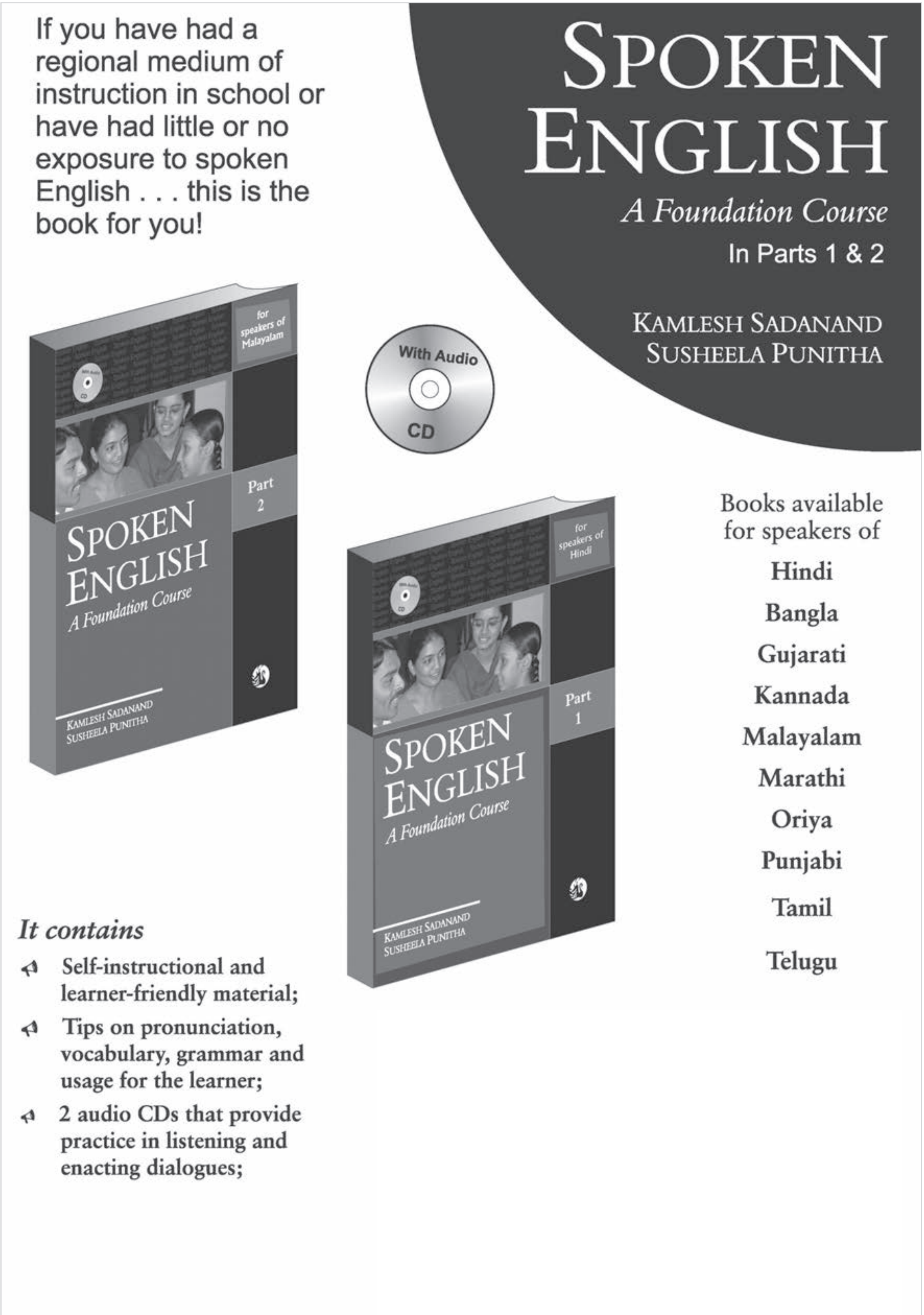

द्विभाषा संस्करण

फ्रेंच-हिंदी शब्दकोश

e-book

यह **फ्रेंच-हिंदी शब्दकोश** अपनी तरह का पहला व्यापक कोश है। यह सही मायनों में एक विश्वकोश है, इसमें लगभग 50000 फ्रेंच शब्दों को शामिल किया गया है। जिसमें ऐतिहासिक, तकनीकी और अन्य शब्दों की व्याख्या अनेक समानार्थी शब्दों के साथ प्रस्तुत की गई है। इस महाकोश की उपयोगिता को इससे समझा जा सकता है कि इसमें भूगोल, इतिहास, दंत कथाओं, दर्शन, साहित्य और व्याकरण संबंधी महत्त्वपूर्ण शब्दों का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस शब्दकोश के प्रयोगकर्ताओं के लिए सहायक हर तरह की जानकारी को इसमें शामिल किया गया है।

एस. सदाशिवन भारतीय विदेश सेवा के सेवानिवृत्त कूटनीतिज्ञ हैं, जिन्होंने अपना अधिकांश समय विदेशों विशेषकर फ्रेंकोफोन देशों में बिताया और सन् 1973 में कैंप्यूचिया में भारतीय दूतावास के कल्चरल अताशे के पद से सेवानिवृत्त हुए।

विषयानुक्रम : Preface, Livres Consults, Pronounciation Table, Vowles, Key to Pronunciation, Abbreviations, Dictionary A to Z

978 81 250 3677 7 2009 1660 पृष्ठ ₹ 2700.00

अनुवाद एवं भाषांतरण : पाठ और अभ्यास

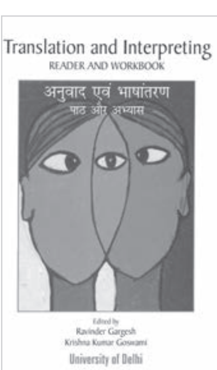

अनुवाद का महत्त्व तथा उसकी प्रासंगिकता हमारे दैनिक जीवन में गंभीरतर होती जा रही है। अतः विविध प्रकार के अनुवादों द्वारा प्रस्तुत संभावनाओं तथा चुनौतियों के प्रति जागरूकता वांछनीय है : चुनौतियाँ, द्विभाषिक तथा बहुसांस्कृतिक प्रसंगों में, भाषा-वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक अंतरों के रूप में प्रस्तुत हुई हैं। एक **द्वि-भाषा पाठ्यपुस्तक** के रूप में प्रस्तुत पुस्तक एक रीडर के साथ-साथ एक अभ्यास पुस्तिका भी है। इस रीडर में अनुवाद के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्षों से संबद्ध सामान्य समस्याओं तथा दृष्टिकोणों पर लेख अंग्रेज़ी और हिंदी, दोनों में दिए गए हैं। पुस्तक का उद्देश्य अनुवाद के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पहलुओं से छात्रों को अवगत कराना है। पुस्तक दिल्ली विश्वविद्यालय के निर्धारित प्रोग्राम के एक व्यावहारिक पाठ्यक्रम के अनुरूप संरचित है।

रविंदर गर्गेश इस पुस्तक के संपादक मंडल के समन्वयक रहे हैं और वे दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग में अध्यापनरत हैं। कृष्ण कुमार गोस्वामी प्रख्यात भाषाविद् हैं।

विषयानुक्रम : Hindi Reader 1. अनुवाद का स्वरूप और क्षेत्र; 2. अनुवाद के गुण एवं दायित्व; 3. अनुवाद प्रक्रिया; 4. अनुवाद में पर्याय-निर्धारण; 5. अनुवाद के विविध रूप; 6. लिप्यंतरण; 7 अनुवाद : महत्त्व और प्रासंगिकता; 8. स्रोत भाषा बनाम लक्ष्य भाषा; 9. काव्यानुवाद की समस्याएँ; 10. कार्यालयी अनुवाद; 11. विज्ञापन की भाषा और उसका अनुवाद; 12. अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य; 13. मशीनी अनुवाद : संभावनाएँ और सीमाएँ; 14. तत्काल भाषांतरण के विविध आयाम; 15. हिंदी-अंग्रेज़ी संरचना का अध्ययन; 16. प्रश्नावली

English Reader 1. What is Translation?; 2. The Process of Translation; 3. The Qualities of a Translator; 4. Language Varieties in Translation; 5. On Equivalence (Text and Culture), 6. Types of Translation; 7. Transliteration; 8. The Significance and Relevance of Translation; 9. Translation of Poetry; 10. Translation Dynamics and Language Development with Special Reference to Hindi Translation; 11. Communication, Mass Media and the Challenges of Translation; 12. Translation and Advertisement; 13. Translating Advertisements : Some Problems; 14. Translation and Comparative Literature; 15. Machine Translation (Possibilities and Limitations); 16. Interpretation; 17. Study of the Structures of English and Hindi; 18. Discussion Points.

Workbook 1. Technical Terms/पारिभाषिक शब्दावली; 2. Phrases/वाक्यांश; 3. Idioms and Proverbs/ मुहावरे और लोकोक्तियाँ; 4. Sentence/वाक्य; 5. Translation/अनुवाद; 6. Oral Translation/मौखिक अनुवाद; 7. One Text Many Translations/मूल एक अनुवाद अनेक; Bibliography/संदर्भिका

978 81 250 3207 6 2007 284 पृष्ठ ₹ 485.00

एक्स्प्रेसवे टु इंग्लिश

एक्स्प्रेसवे टु इंग्लिश हिंदी माध्यम से अंग्रेज़ी बोलचाल सीखने-बोलने की पुस्तक है जिसमें जिंदगी के हर पहलू पर आधारित अनेक औपचारिक-अनौपचारिक संवाद दिए हुए हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संवादों के हिंदी रूपांतर भी दे दिए गए हैं। पुस्तक के अंत में एक आवश्यक और उपयोगी सचित्र शब्दावली शामिल की गई है। पुस्तक के साथ एक ऑडियो.सी.डी. भी संलग्न है।

बिक्रम के. दास अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षण के एक प्रख्यात विशेषज्ञ हैं। उन्होंने कई वर्षों तक सीआईईएफएल हैदराबाद, आरआईई बंगलौर और इएलटीआई, भुवनेश्वर में अध्यापन कार्य किया है।

विषयानुक्रम : भाग 1 इकाई 1 : मिलने पर अभिवादन करना; इकाई 2 : किसी से मिलने के बाद विदाई; इकाई 3 : किसी से मिलने पर अपना परिचय देना; इकाई 4 : दो व्यक्तियों का परिचय एक-दूसरे से कराना; इकाई 5 : किसी समूह को अपना परिचय देना; इकाई 6 : एक समूह से किसी व्यक्ति का परिचय कराना; इकाई 7 : अनुरोध करना; इकाई 8 : निमंत्रण देना तथा स्वीकार/अस्वीकार करना; इकाई 9 : किसी बात के लिए क्षमा माँगना अथवा अफसोस प्रगट करना; इकाई 10ए : शिकायत करना; इकाई 10बी : किसी की आलोचना करने की व्यवहार कुशलता; इकाई 11 : सहानुभूति अथवा संवेदना जताना; इकाई 12ए : बधाई देना; इकाई 12बी : किसी की प्रशंसा करना; इकाई 13 : सुझाव देना या सलाह देना; इकाई 14 : किसी को अपनी बात मानने के लिए राजी करना; इकाई 15 : किसी से सहमत अथवा असहमत होना; भाग 2 व्यावसायिक अथवा व्यवसाय संबंधी स्थितियों में अंग्रेज़ी का व्यवहार : खंड 1ए नौकरी के लिए आवेदन : इकाई 1 : नौकरी के लिए, विज्ञापन तथा साक्षात्कार; इकाई 2 : सामूहिक चर्चा; खंड 1बी कार्यस्थल में विचारों का आदान-प्रदान; इकाई 3 : उच्च पदाधिकारी से मातहत कर्मी के साथ आदान-प्रदान : इकाई 4 : मातहत कर्मचारी का उच्च पदाधिकारी से; इकाई 5 : बराबरी के स्तर पर आदान-प्रदान; खंड 2 व्यापार से संबंधित स्थितियों में अंग्रेज़ी का व्यवहार इकाई 6 : खरीद तथा बिक्री; इकाई 7 : ग्राहक का व्यापारी से शिकायत करना; इकाई 8 : भोजनालय में खाने की फरमाइश करना; इकाई 9 : अपने चिकित्सक से परामर्श परिशिष्ट : अंग्रेज़ी उच्चारण का परिचय; अंग्रेज़ी की ध्वनियां; अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि सूचक वर्णमाला; उपयोगी शब्दावली; विभिन्न सामाजिक स्थितियों में संवाद के तरीके, कुछ उपयोगी, और अंग्रेज़ी में अक्सर होने वाली साधारण अशुद्धियां।

(मराठी में भी उपलब्ध)

978 81 7370 288 4 2007 224 पृष्ठ ₹ 195.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

संस्कृत-हिंदी-इंग्लिश शब्दकोश

इस अद्वितीय विपुलकाय त्रिभाषा कोश में शब्दों का संचयन विभिन्न कोशों से न किया जाकर प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों से किया गया है और दुरूह शब्दों के अर्थ-विवरण में प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों एवं टीकाकारों की उक्तियों को उद्धरणस्वरूप दिया गया है।

भारत के वरिष्ठ विश्वविद्यालयों में संस्कृत-पाली-प्राकृत भाषाओं के विभागाध्यक्ष पद पर आसीन हो सतत अध्यापन एवं शोधकार्य करते रहने के फलस्वरूप लेखक ने भारत के छात्रों एवं अध्यापकों की आवश्यकताओं का अतुलगहन परिज्ञान प्राप्त किया था। प्रस्तुत इतिहास इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अनेक विश्वविद्यालयों एवं सरकारी समितियों के उन्नायक सभासद होने के नाते उनका स्कूलों, विद्यालयों, एवं विश्वविद्यालयों की संस्कृत पाठावलि के निर्माण में महत्त्वपूर्ण अंशदान रहता था। पंजाब सरकार एवं पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से शोधार्थ, ऑक्सफोर्ड भेजे जाने पर उन्होंने 1937 में उस विश्वविद्यालय से अत्यंत सम्मान के साथ डी.फिल. की उपाधि प्राप्त की थी। संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में उनकी पचहत्तर के लगभग रचनाएं भारत एवं विदेशों में प्रचलित हैं - उनका, *भारतीय संविधान का हिंदी अनुवाद* इन्हीं रचनाओं में से एक है - जिसे उन्होंने स्वयं महात्मा गांधी एवं पं. जवाहरलाल नेहरू के सम्मिलित आदेश पर किया था।

978 81 250 0647 3   1975   708 पृष्ठ   ₹ 1150.00

WordMaster वर्डमास्टर

इंग्लिश डिक्शनरी के भारतीय भाषा संस्करण

KEY FEATURES

- over 35,000 words, phrases and derivatives from modern English
- meaning in clear simple English, further explained by illustrative sentences
- includes words and phrases which have recently come into use
- guidance on formal and informal usage, with further guidance on appropriacy, and on attitudes embedded in language
- special guidance-alert on language which is not respectful, taboo language, gender sensitive words and words which may cause offence
- key words from science and humanities, technology, computers, medicine and the world of business
- of special use to South Asian learners with examples, contexts and concerns which are familiar

978 81 250 3240 3
110x215mm 1026 पृष्ठ
₹ 395.00

978 81 250 3234 2
110x215mm 1128 पृष्ठ
₹ 425.00

978 81 250 3672 2
110x215mm 944 पृष्ठ
₹ 695.00

E-book

WordMaster

Learner's Dictionary of Modern English

WordMaster is the key to modern English. It is more than a book of words, it is more than a meaning-finder. **WordMaster** moves beyond words and phrases, to understanding real English and using it appropriately and effectively. By providing users with clear and accurate meanings and illustrative sentences, **WordMaster** leads learners from knowing to using and from words to whole language.

नीतिशास्त्र/समाजशास्त्र

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिरुचि

यह पुस्तक संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) और राज्य सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी है। यू.पी.एस.सी. की मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-IV के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप लिखी यह पुस्तक सिविल सेवा के अभ्यर्थियों को व्यवस्थित, गुणवत्तापूर्ण एवं प्रासंगिक सामग्री प्रदान करती है। इसमें नीतिशास्त्र जैसे जटिल विषय को चित्र और तालिकाओं के माध्यम से सरल एवं बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में नीतिशास्त्र के विभिन्न आयामों और सिद्धांतों, निजी और लोक संबंधों में नैतिकता, मानवीय मूल्य, अभिवृत्ति, अभिरुचि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सिविल सेवकों के लिए बुनियादी मूल्य, लोक प्रशासन में नैतिकता, नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत, जवाबदेही, नैतिक दुविधा, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिक मुद्दे, कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था, लोक सेवाएं, शासन व्यवस्था में ईमानदारी, कार्य संस्कृति, महान नेताओं, प्रशासकों, सुधारकों और दार्शनिकों की शिक्षाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। 2022 तक की केस स्टडीज़ के माध्यम से पुस्तक उन नैतिक दुविधाओं की एक तस्वीर प्रदान करती है, जिनका एक प्रशासक अपने कार्यकाल में सामना करता है। इसके लिए लेखक ने यथासंभव समाधान भी दिए हैं। अध्याय के अंत में विगत वर्षों के प्रश्न और मॉडल प्रश्न दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तक में दिए गए शब्द-संक्षेप, पारिभाषिक शब्दावली और संदर्भ-ग्रंथ सूची पुस्तक को और प्रामाणिक बनाते हैं।

एस. एस. बरेडिया रेल मंत्रालय में भारतीय रेलवे यातायात सेवा (IRTS) अधिकारी हैं। इससे पूर्व वे मध्य प्रदेश राज्य सिविल सेवा में मुख्य कार्यपालन अधिकारी (CEO) जनपद पंचायत रहे हैं। उन्हें रेल यातायात अधोसंरचना, सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP), PM गति शक्ति, लॉजिस्टिक क्षेत्र के अनुभव के साथ-साथ भारत सरकार की महत्त्वपूर्ण लोकप्रिय योजनाओं, जैसे - मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन, वाटरशेड आदि को लागू करने का वृहत् अनुभव प्राप्त है।

अजब लाल लिल्हारे एक शिक्षाविद हैं। उन्हें संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग और अन्य परीक्षाओं के अभ्यर्थियों को पढ़ाने का एक दशक से अधिक का अनुभव है।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, प्रस्तावना, पारिभाषिक शब्दावली, शब्द संक्षेप। **अध्याय 1** : नीतिशास्त्र एवं मानवीय सहसंबंध नैतिकता : सारतत्त्व, निर्धारक एवं परिणाम, नीतिशास्त्र और नैतिकता में अंतर, नीतिशास्त्र का विकास, धर्म और नैतिकता, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 2** : नीतिशास्त्र के आयाम प्रस्तावना, नियमात्मक नीतिशास्त्र, कर्तव्यवाद/परिणाम निरपेक्षी सिद्धांत, सद्गुण आधारित नीतिशास्त्र, परवाह आधारित नीतिशास्त्र, मेटा-नीतिशास्त्र, संज्ञानात्मक मेटा-नीतिशास्त्र, गैर-संज्ञानात्मक मेटा-नीतिशास्त्र, प्रायोगिक नीतिशास्त्र, धर्मसंकट मीमांसा, व्यवसाय नीतिशास्त्र, विधायी नीतिशास्त्र, पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, चिकित्सा नीतिशास्त्र और जैव नीतिशास्त्र, झूठ तथा नैतिकता, नैतिक स्वहितवाद, नैतिक सापेक्षतावाद, नैतिक आत्मनिष्ठतावाद, नैतिकता के संबंध में स्वर्णिम नियम, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 3** : निजी और लोक संबंधों में नैतिकता प्रस्तावना, लोक संबंध और निजी संबंध, नैतिकता का मानकीकरण, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 4** : मानवीय मूल्य प्रस्तावना, मूल्य तंत्र, अंतिम मूल्य और सहायक मूल्य, कोर मूल्य, ग्रेव का मूल्य तंत्र, रॉकीस : मानवीय मूल्यों की प्रकृति, मूल्यों के विकास में परिवार की भूमिका, मूल्यों के विकास में समाज की भूमिका, मूल्यों के समावेशन में शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 5** : महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन एवं उनके उपदेशों से शिक्षा प्रस्तावना, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर, नेपोलियन बोनापार्ट, अब्राहम लिंकन, स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय, नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, जॉर्ज वाशिंगटन, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राम मनोहर लोहिया, स्वामी दयानंद सरस्वती, गोस्वामी तुलसीदास, कबीर, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, रबींद्रनाथ टैगोर, मदर टेरेसा, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 6** : अभिवृत्ति प्रस्तावना, अंतर्निहित और सुस्पष्ट अभिवृत्ति, अभिवृत्ति की संरचना/अभिवृत्ति का त्रिस्तरीय मॉडल, अभिवृत्ति की विषयवस्तु, नैतिक अभिवृत्ति, अभिवृत्ति मापन, अभिवृत्ति के कार्य, अभिवृत्ति और व्यवहार, लेपियर का अध्ययन, अभिवृत्ति कब व्यवहार का मार्गदर्शन करती है?, अभिवृत्ति किस प्रकार व्यवहार को निर्देशित करती है, अभिवृत्ति निर्माण और अभिवृत्ति परिवर्तन, अभिवृत्ति परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक, अभिवृत्ति परिवर्तन की विधियां, नैतिक, राजनीतिक और नौकरशाही अभिवृत्ति, अभिवृत्ति परिवर्तन के लिए विश्वास संवर्धन के मॉडल के रूप में अनुनय, सामाजिक प्रभाव, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 7** : अभिरुचि प्रस्तावना, बुद्धिमत्ता, सीखने की प्रक्रिया में व्यक्तित्व की भूमिका, अभिरुचि और मनोवृत्ति, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 8** : भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रस्तावना, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का वर्गीकरण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता को कैसे प्राप्त करें?, सरकार में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग, भावनात्मक बुद्धिमत्ता की उपयोगिता, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 9** : सिविल सेवकों के लिए बुनियादी मूल्य प्रस्तावना, लोक सेवाओं के लिए प्रतिबद्धता, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 10** : भारत और विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों का योगदान प्रस्तावना, भारतीय विचारक और दार्शनिक, कौटिल्य, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, श्री अरविंद, तिरुवल्लुवर, धर्म में नैतिकता, बौद्ध नीतिशास्त्र, जैन नीतिशास्त्र, हिंदू नीतिशास्त्र, पाश्चात्य एवं ग्रीक दार्शनिक, सोफिस्ट, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, स्टोइक नीतिशास्त्र, एपिक्यूरस, ईसाई दर्शनशास्त्री, थॉमस एक्विनास, सामाजिक प्रसंविदा सिद्धांत, हॉब्स, जॉन लॉक, नीत्शे, चीनी दर्शनशास्त्री, कन्फ्यूसियस, ताओवाद, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 11** : लोक प्रशासन में नैतिकता स्थिति और समस्या, लोक प्रशासन का विकास, सरकार में नैतिक सरोकार, लोक सेवा एथोस, नैतिक दुविधा, सरकार में नैतिक दुविधा, निजी संस्थानों में नैतिक दुविधा, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 12** : नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत प्रस्तावना, कानून, नियम और विनियम नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में, नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में अंतःकरण, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 13** : जवाबदेही प्रस्तावना, राजनीतिक जवाबदेही, प्रशासनिक जवाबदेही, पेशेवर जवाबदेही, लोकतांत्रिक जवाबदेही, नव लोक प्रबंधन में जवाबदेही, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 14** : शासन व्यवस्था में नीतिपरक और नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण प्रस्तावना, लोक सेवकों के लिए नैतिक प्रशिक्षण, भारत में नैतिक प्रशिक्षण हेतु उठाए गए कदम, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 15** : नैतिक दुविधा प्रस्तावना, ट्रॉली समस्या, नैतिक दुविधा से कैसे निपटें, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 16** : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिक मुद्दे प्रस्तावना, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए नैतिक सिद्धांत, जॉन राल्स का अंतर्राष्ट्रीय न्याय का सिद्धांत, सिंगर का विश्व न्याय का सिद्धांत, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की विभिन्न वैचारिकताएं, यथार्थवाद, आदर्शवाद, सैद्धांतिक यथार्थवाद, अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण में नैतिकता, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 17** : कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था प्रस्तावना, कॉर्पोरेट शासन का नीतिशास्त्र, भारत में कॉर्पोरेट शासन, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 18** : लोक सेवाएं प्रस्तावना, लोक हित, लोक सेवा मूल्य, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 19** : शासन व्यवस्था में ईमानदारी शासन का दार्शनिक आधार, सुशासन, नीतिशास्त्रीय संहिता और आचरण संहिता, सिटीजन चार्टर, लोक निधि का उपयोग, शासन में ईमानदारी और भ्रष्टाचार की चुनौतियां, भ्रष्टाचार के नियंत्रण और सरकार में ईमानदारी सुनिश्चित करने के उपाय, दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग की चौथी रिपोर्ट : सरकार में नैतिकता, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 20** : कार्य संस्कृति प्रस्तावना, कार्य संस्कृति, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 21** : सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता प्रस्तावना, गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदाय हेतु कार्य आयोजना, अभ्यास प्रश्न। **अध्याय 22** : केस अध्ययन। संदर्भ ग्रंथ सूची।

978 93 9530 828 1 | 2023 | 336 पृष्ठ | ₹ 475.00

घुमन्तू है, चोर नहीं
आदिवासी मौन पर विमर्श

प्रस्तुत पुस्तक आधुनिक भारत में आदिवासी और घुमन्तू समुदायों के अस्तित्व और अस्मिता से जुड़े अनेक मुद्दों पर गहरी और गंभीर पड़ताल है जो लेखक के आदिवासी संस्कृति, साहित्य और कला के प्रति लगभग तीन दशकों के सार्थक और रचनात्मक जुड़ावों की अभिव्यक्ति है। इसके अतिरिक्त आज के तथाकथित सभ्य और आधुनिक समाज में आदिवासियों को किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस पर सारगर्भित चर्चा है।

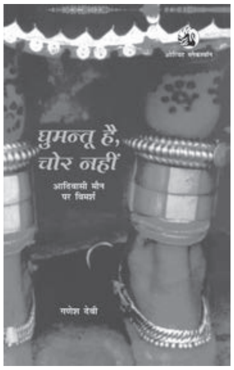

इन लेखों में आदिवासी जीवन से जुड़े कई गंभीर और ज्वलंत मुद्दों पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जैसे आदिवासी स्मृतिलोप व ख़ामोशी जो उनके प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश तथा ज्ञान पद्धतियों के सतत ह्रास का परिणाम है। एक संवेदनशील समाजकर्मी के रूप में गणेश देवी ने आदिवासियों की सामाजिक, आर्थिक तथा स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी समस्याओं को उनकी सहभागिता से सुलझाने का प्रयास किया।

इन लेखों में उनके नेतृत्व में प्रारंभ किए गए विकास कार्यक्रम, आदिवासी संस्कृति, भाषा तथा वाचिक परंपरा के संरक्षण के लिए स्थापित तेजगढ़ की ''आदिवासी अकादमी'' तथा ''वाचा'' संग्रहालय; आदिवासी साहित्य, संस्कृति और कला की अभिव्यक्ति के लिए ''भाषा'' ट्रस्ट; *ढोल पत्रिका* तथा आदिवासी कला और हस्तशिल्प के प्रोत्साहन के लिए ''ट्राइबल फर्स्ट'' जैसे सराहनीय प्रयासों का वर्णन है।

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. गणेश देवी की प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक *A Nomad Called Thief* का हिंदी अनुवाद है।

गणेश देवी ने बड़ौदा में ''भाषा रिसर्च सेंटर'' व तेजगढ़ में ''आदिवासी अकादमी'' का गठन करने से पूर्व 1996 तक महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में अध्यापन कार्य किया। उन्होंने इन संस्थानों के माध्यम से आदिवासी एवं यायावर समूहों की संस्कृति, कला व भाषा के संरक्षण व विकास पर कार्य किया। उनको साहित्य, आदिवासी शिल्प एवं भाषा संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु पद्मश्री सहित विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

विषयानुक्रम : 1. एक अपूर्ण रक्तबीज, 2. घुमंतू पर इलज़ाम चोरी का, 3. किकियारियों : आदिवासी आवाज़ और हिंसा, 4. आदिवासी बोली और अस्तित्व का संघर्ष, 5. भाषा और यथार्थ, 6. आदिवासी ज्ञान और वाक्हीनता, 7. विकास, 8. करुणा, 9. ओरफियस का गीत, 10. फिर एक बार गाँधी या शायद कभी नहीं।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 8668 942 9 2017 224 पृष्ठ ₹ 775.00

ग्रामीण-नगरीय समाजशास्त्र

यह पुस्तक विश्वविद्यालय में पढ़ रहे स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है। इसमें भारत के ग्रामीण-नगरीय समाज के सभी पहलुओं पर विस्तृत वर्णन-विश्लेषण दिया गया है।

इस पुस्तक में ग्रामीण समाज की विशेषताएं, ग्रामीण समुदाय के संस्थानों जैसे परिवार, जजमानी व्यवस्था, कृषक समाज, भू-निर्धारण व्यवस्था, कृषक समाज की संरचना तथा ग्रामीण सामाजिक संरचना के बदलते आयामों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें भूमि सुधार एवं हरित क्रांति

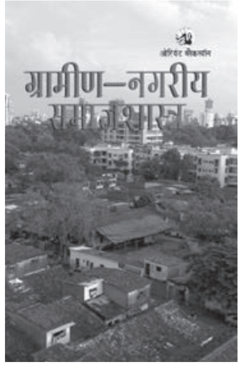

के सामाजिक प्रभावों; बदलती ग्रामीण शक्ति संरचना, सामुदायिक विकास, जवाहर रोज़गार योजना, पंचायती राज, ग्रामीण गरीबी, कृषक आत्महत्याएं तथा समकालीन कृषि विद्रोहों पर चर्चा है।

पुस्तक में शहरी समाज की विशेषताओं, शहरी सामाजिक संरचना, वर्ग और औपचारिक संगठनों का वर्णन किया गया है। साथ ही, भारत में शहरी विकास एवं शहरीकरण, कारण और प्रभाव, शहरी गरीबी, शहरी सुशासन; शहरी नियोजन एवं विकास के साथ-साथ शहरी हिंसा जैसे ज्वलंत विषय पर भी गंभीरता से चर्चा की गई है।

यह पुस्तक शहरी एवं ग्रामीण समाज के हर पहलू पर दृष्टि डालती है और इससे जुड़े सभी मुद्दों और समस्याओं की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करती है।

विषयानुक्रम : भूमिका, आभार। 1. ग्रामीण संस्थाएं : परिवार, जाति और जजमानी व्यवस्था, 2. कृषक समाज, 3. भारत में भूमि व्यवस्था, 4. कृषक वर्ग संरचना, 5. ग्रामीण भारत की शक्ति संरचना, 6. समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, 7. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, 2005, 8. पंचायती राज व्यवस्था, 9. ग्रामीण गरीबी, 10. किसान आत्महत्या, 13. ग्रामीण भारत की स्वास्थ्य समस्याएं—एक समीक्षा, 14. भारत में ग्रामीण-नगरीय सातत्य एवं ग्रामीण-नगरीकरण, 15. शहरी-सामाजिक संरचना : वर्ग परिवार, पड़ोस, 17. भारत में नगरीय वृद्धि एवं नगरीकरण : प्रकृति, कारण एवं परिणाम, 20. शहरी सुशासन।

978 81 250 5544 0 2014 358 पृष्ठ ₹ 295.00

भारतीय समाज

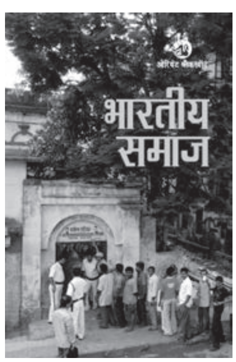

यह पुस्तक पूरे भारतवर्ष की एक समग्र तस्वीर प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में भारतीय समाज के प्रत्येक पक्ष का विस्तृत विवेचन किया गया है।

यह पुस्तक मूल रूप से चार इकाइयों में है– प्रथम इकाई में भारतीय समाज के क्षेत्रपरक एवं तथ्यपरक दृष्टिकोण की चर्चा के साथ-साथ परंपरागत भारतीय समाज व्यवस्था तथा भारतीय समाज की एकता और विविधता का वर्णन है। दूसरी इकाई भारत का जनसंख्या परिदृश्य प्रस्तुत करती है। इसमें आयु, जाति, भाषा व लिंग के आधार पर जनसंख्या की विशेषताओं का वर्णन है। इनके अलावा इसमें भारत के जनजातीय समुदाय, भारत में धार्मिक और क्षेत्रीय विविधता पर चर्चा की गई है। तीसरी इकाई में भारत में विवाह, परिवार एवं नातेदारी पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, जाति व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न विद्वानों के विचार दिए गए हैं। चौथी इकाई में भारतीय गाँव और उनकी सामाजिक संरचना तथा ग्रामीण-शहरी अंतर्क्रिया का उल्लेख है। इसके साथ ही भारत में सामाजिक वर्ग तथा समावेशन बनाम बहिर्वेशन को लेकर दलित, अल्पसंख्यकों और महिलाओं की स्थिति पर चर्चा की गई है। प्रस्तुत पुस्तक भारतीय समाज के हर पक्ष पर प्रकाश डालती है। यह विश्वविद्यालयों के स्नातक विद्यार्थियों तथा यूपीएससी के अभ्यर्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी।

विषयानुक्रम : इकाई 1 : 1. भारतीय समाज के पाठ-परक एवं क्षेत्र-परक दृष्टिकोण, 2. अतीत और वर्तमान में अंतर्संबंध, 3. परंपरागत भारतीय समाज व्यवस्था के आधारभूत तत्त्व, 4. भारतीय समाज में अनेकता और एकता। **इकाई 2 :** 5. भारत में जनसंख्या परिदृश्य, 6. भारतीय जनजातीय समुदाय, 7. भारत में धर्म I : जनजातीय समाज, 8. भारत में धर्म II : हिंदू धर्म, 9. भारत में धर्म III : बौद्ध धर्म, 10. भारत में धर्म IV : इस्लाम एवं ईसाई धर्म, 11. क्षेत्रीय विविधता। **इकाई 3 :** 12. भारत में विवाह : जनजातीय, हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, 13. भारत में परिवार, 14. भारत में नातेदारी व्यवस्था एवं वंश समूह। **इकाई 4 :** 15. जाति- व्यवस्था का परिप्रेक्ष्य, 16. भारतीय गाँव : सामाजिक संरचना एवं विशेषताएं, 17. नगर : सामाजिक संरचनाएं एवं ग्रामीण-नगरीय अंतर्क्रिया, 18. भारत में सामाजिक वर्ग : कृषि आधारित ग्रामीण और औद्योगिक-शहरी, 19. बहिष्करण तथा समावेशन I : दलित, 20. बहिष्करण तथा समावेशन II : महिलाएं, 21. बहिष्करण तथा समावेशन III : अल्पसंख्यक, 22. बहिष्करण एवं समावेशन IV : अन्य पिछड़ा वर्ग।

978 81 250 5539 6 2014 312 पृष्ठ ₹ 275.00

भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

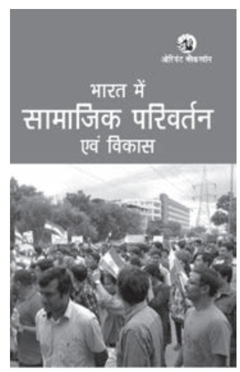

इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों एवं विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना है।

पुस्तक की चार इकाइयाँ हैं—पहली इकाई अवधारणा के अंतर्गत सामाजिक संरचना में सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक व मानवीय विकास, धारणीय विकास, परिस्थितिकी एवं समाज पर विस्तृत चर्चा की गई है। दूसरी इकाई सैद्धांतिक उपागम से संबंधित है जिसमें विकास के सिद्धांत (स्मेल्सर, लर्नर, रोस्टोव) दिए गए हैं। निर्भरता : केंद्र-परिधि पर (फ्रैंक) और असमान विकास (समीर अमीन), वैश्वीकरण पर (गिडेंस) के विचार प्रस्तुत किए गए हैं। तीसरी इकाई सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं से संबंधित है। इसमें संस्कृतिकरण, धर्मनिरपेक्षीकरण, पश्चिमीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण पर चर्चा की गई है। चौथी एवं अंतिम इकाई समस्याओं एवं मुद्दों से संबंधित है। इसमें असमानता : जाति, वर्ग, लिंग और जातीयता, विकास एवं सीमांतीकरण; सूचना क्रांति एवं सामाजिक परिवर्तन; पारिस्थितिकी क्षय, पर्यावरण प्रदूषण;

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

विकास एवं विस्थापन, संस्कृति एवं विकास जैसे समीचीन मुद्दों पर व्यापक विश्लेषण एवं चर्चा प्रस्तुत की गई है।

यह पुस्तक बी.ए. एवं एम.ए. के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। किंतु, प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह पुस्तक अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी। इसमें सभी ज्वलंत समकालीन विषयों पर चर्चा है।

विषयानुक्रम : भूमिका। 1. संरचना में परिवर्तन एवं संरचना का सामाजिक परिवर्तन, 2. मानव विकास आर्थिक प्रगति, संवृद्धि और विकास, 3. सामाजिक विकास, 4. धारणीय विकास, 5. विकास के सिद्धांत : रोस्टोव व लर्नर, 6. केंद्र-परिधि : आंद्रे गुंडर फ्रैंक, 7. समीर अमीन का सिद्धांत : निर्भरता- असमान विकास, 8. संस्कृतिकरण, 9.आवाज़धर्मनिरपेक्षीकरण/ लौकिकवाद, 10. पश्चिमीकरण, 11.आवाज़नगरीकरण, 12. आधुनिकीकरण, 13. भूमंडलीकरण, 14. विषमता की समस्या, 15. लैंगिक असमानता, 16. जाति असमानता, 17. विकास एवं सीमांतीकरण, 18. सूचना क्रांति एवं सामाजिक परिवर्तन, 19. विकास एवं विस्थापन, 20 सामाजिक संरचना, 21. संस्कृति एवं विकास। संदर्भ ग्रंथ-सूची।

978 81 250 5541 9 2014 224 पृष्ठ ₹ 325.00

भारतीय समाजशास्त्र के अग्रणी चिंतक

प्रस्तुत पुस्तक में अग्रणी भारतीय समाजशास्त्रियों के जीवन, रचनाओं और उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का वर्णन किया गया है। एक ही स्थान पर बारह भारतीय समाजशास्त्रियों के सिद्धांतों का मिलना अन्यथा बहुत ही कठिन है। पुस्तक में जिन बारह चिंतकों के सिद्धांतों पर चर्चा की गई है, वे हैं— राधाकमल मुखर्जी, डी.पी. मुखर्जी, डी.एन. मजूमदार, जी.एस. घुर्ये, इरावती कर्वे, आई.पी. देसाई, एम.एन. श्रीनिवास, एस.सी. दुबे, बी.आर. चौहान, ए.आर. देसाई, रामकृष्ण मुखर्जी एवं आंद्रे बैते।

यह पुस्तक उपरोक्त समाजशास्त्रियों के अध्ययन पर विस्तार से विश्लेषण प्रस्तुत करती है जो विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए अत्यधिक उपयोगी जानकारी सिद्ध होगी।

विषयानुक्रम : भूमिका, आभार। 1. मूल्यों की सामाजिक संरचना; सामाजिक पारिस्थितिकी; 2. सांस्कृतिक विविधताएं; 3. जाति एवं जनजातीय एकीकरण; 4. जाति व्यवस्था एवं भारतीय साधु; 5. भारत में स्वजन संबंध व्यवस्था; 6. भारतीय संयुक्त परिवार एवं अभिजन; 7. संस्कृतिकरण, प्रभुजाति; 8. भारतीय ग्राम : परंपरा, आधुनिकीकरण एवं विकास; 9. लघु समाज के रूप में राजस्थान का एक गाँव एवं 'वर्धित संस्कार'।

978 81 250 5542 6 2014 208 पृष्ठ ₹ 225.00

समाजशास्त्र परिचय

यह पुस्तक विश्वविद्यालय के स्नातक के विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर लिखी गई है। यह पुस्तक विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं स्नातकोत्तर अभ्यर्थियों के लिए भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रस्तुत पुस्तक चार इकाइयों में विभाजित है। प्रथम इकाई में समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों की चर्चा है। इसमें समाजशास्त्र के व्यावहारिक महत्त्व का विश्लेषण किया गया है। दूसरी इकाई में समाजशास्त्र की मूल अवधारणाओं पर प्रकाश डाला गया है जिसमें सामाजिक क्रिया एवं संबंध, प्रस्थिति एवं भूमिका, सामाजिक संस्थान : परिवार, शिक्षा, राज्य और प्रज़ा के बारे में बताया गया है। तीसरी इकाई में जनरीति, दंड एवं मूल्य, सामाजिक नियंत्रण एवं समाजीकरण तथा संस्कृति, सभ्यता और व्यक्तित्व पर चर्चा की गई है। चौथी और अंतिम इकाई सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आंदोलनों पर केंद्रित है। पुस्तक को सरल और सहज भाषा में लिखा गया है, जिससे समाजशास्त्र के सभी तथ्यों को आसानी से समझा जा सके।

विषयानुक्रम : 1. समाजशास्त्र और सामान्य बोध, 2. समाजशास्त्र विज्ञान के रूप में, 3. समाजशास्त्र व अन्य सामाजिक विज्ञान, 4. समाजशास्त्रीय कल्पना, 5. समाजशास्त्र मानविकी उपागम के रूप में, 6. सामाजिक क्रिया एवं सामाजिक संबंध, 7. प्रस्थिति एवं भूमिका, 8. सामाजिक समूह, 9. समुदाय, समिति और संस्था, 10. समाज, एक समाज और समाज, 11. सामाजिक संरचना, 12. सामाजिक संगठन, 13. सामाजिक व्यवस्था, 14. परिवार, 15. शिक्षा, 16. राज्य और धर्म, 17. प्रतिबंध अथवा दंड विधान एवं मूल्य, 18. सामाजिक प्रतिमान, 19. सामाजिक प्रक्रियाएं, 20. सामाजिक नियंत्रण, 21. समाजीकरण, 22. संस्कृति, सभ्यता और व्यक्तित्व, 23. बहुसंस्कृति, बहुलता एवं सांस्कृतिक सापेक्षवाद, 24. सामाजिक स्तरीकरण, 25. सामाजिक गतिशीलता, 26. सामाजिक परिवर्तन : अर्थ, प्रकार और कारक, 27. सामाजिक आंदोलन। अनुक्रमणिका।

978 81 250 5538 9 2014 352 पृष्ठ ₹ 275.00

समाजशास्त्रीय चिंतन के आधार

प्रस्तुत पुस्तक विश्वविद्यालय के बी.ए. एवं एम.ए. के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है। यह प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी समान रूप से सहायक सिद्ध होगी।

समाजशास्त्रीय चिंतन के आधार पुस्तक में पश्चिमी देशों में हुए समाजशास्त्र और आधुनिकता के उदय का वर्णन है। इसमें औद्योगिक क्रांति एवं फ्रांस की क्रांति के साथ-साथ सामाजिक और राजनीति सुधार आंदोलनों तथा जैविकीय उद्विकास का वर्णन है। इस पुस्तक में नौ प्रमुख समाजशास्त्रीय चिंतकों—1 ऑगस्ट कौंत, हरबर्ट स्पेंसर, एमिल दर्खाइम, कार्ल मार्क्स, मैक्स वेबर, विल्फ्रेडो पैरेटो, टालकट पारसंस, जॉर्ज सिमेल तथा जॉर्ज हरबर्ट मीड के व्यक्तिगत जीवन, पृष्ठभूमि और रचनाओं के साथ-साथ उनके द्वारा प्रतिपादित विभिन्न सिद्धांतों और अवधारणाओं पर चर्चा की गई है। पुस्तक में वर्णित सभी चिंतकों के प्रमुख सिद्धांतों का विस्तृत विवरण प्रदान किया गया है।

पुस्तक सरल और सहज शैली में लिखी गई है इसलिए आसानी से बोधगम्य है।

विषयानुक्रम : भूमिका। 1. समाजशास्त्र का उद्भव एवं विकास, 2. ऑगस्ट कौंत, 3. हरबर्ट स्पेंसर, 4. डेविड एमिल दर्खाइम, 5. कार्ल मार्क्स, 6. मैक्स वेबर, 7. विल्फ्रेडो पैरेटो, 8. टालकट पारसंस, 9. जॉर्ज सिमेल, 10. जॉर्ज हरबर्ट मीड। संदर्भ ग्रंथ-सूची।

978 81 250 5540 2 2014 172 पृष्ठ ₹ 225.00

सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियां

प्रस्तुत पुस्तक अनुसंधान पद्धतियों जैसे जटिल विषय को अत्यंत सरल और बोधगम्य तरीके से प्रस्तुत करती है।

यह पुस्तक चार इकाइयों में विभाजित है—**पहली इकाई :** सामाजिक अनुसंधान का अर्थ एवं महत्त्व है, इसमें वैज्ञानिक अनुसंधान के विभिन्न चरणों, प्राकल्पना, अनुसंधान और वस्तुनिष्ठता की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। **दूसरी इकाई :** अनुसंधान के प्रकार है; इसमें ऐतिहासिक, तुलनात्मक, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, मौलिक, अनुप्रयुक्त एवं निदानात्मक प्रकारों पर चर्चा की गई है। **तीसरी इकाई :** आंकड़ा संग्रहण है, इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों, जनगणना, अवलोकन, वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी), अंतर्वस्तु विश्लेषण पर विस्तार से जानकारी दी गई है। **चौथी एवं अंतिम इकाई :** आंकड़ा संग्रहण सर्वेक्षण है। इसमें सामाजिक सर्वेक्षण, दैव निदर्शन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची, आंकड़ों का वर्गीकरण एवं प्रस्तुतीकरण, प्रतिवेदन लेखन, कोडिंग, ग्राफ, डायग्राम, बार चार्ट इत्यादि के अनुसंधान में प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।

यह पुस्तक विश्वविद्यालय में अध्यापनरत बी.ए. एवं एम.ए. के छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। सरल एवं सहज भाषा में लिखी होने के कारण यह पुस्तक विद्यार्थियों के अध्ययन में अत्यंत सहायक होगी।

विषयानुक्रम : भूमिका, आभार। 1. सामाजिक अनुसंधान का अर्थ एवं उपयोगिता, 2. वैज्ञानिक अनुसंधान के विभिन्न चरण, 3. अनुसंधान की समस्या का प्रतिपादन, 4. प्राक्कल्पना, 5. वस्तुनिष्ठता की समस्या, 6. तथ्य, सिद्धांत एवं अवधारणा, 7. सामाजिक अनुसंधान के गुण, 8. वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रकार : विशुद्ध एवं व्यावहारिक, 9. अनुसंधान अभिकल्प : अन्वेषणात्मक; वर्णनात्मक; निदानात्मक; परीक्षणात्मक; व्याख्यात्मक, 10. सामाजिक अनुसंधान में तथ्य संकलन : प्राथमिक एवं द्वितीयक, 11. संगणना, 12. अवलोकन (निरीक्षण/पर्यवेक्षण), 13. वैयक्तिक अध्ययन, 14. अंतर्वस्तु विश्लेषण, 15. निदर्शन : प्रायिकता और गैर-प्रायिकता, 16. साक्षात्कार, 17. प्रश्नावली, 18. साक्षात्कार अनुसूची, 19. वर्गीकरण, 20. प्रतिवेदन लेखन, 21. सामाजिक शोध में कंप्यूटर तथा इंटरनेट, 22. सामाजिक सर्वेक्षण, अनुक्रमणिका

978 81 250 5543 3 2014 236 पृष्ठ ₹ 275.00

राजनीतिक समाजशास्त्र
21वीं सदी के बदलते संदर्भ में

राजनीतिक समाजशास्त्र : 21वीं सदी के बदलते संदर्भ में पुस्तक लंबे और गहन अध्ययन और शोध का परिणाम है। हिंदी भाषा-भाषी छात्रों के बीच हिंदी में राजनीतिक समाजशास्त्र जैसे अपेक्षित नए विषय पर एक स्तरीय पुस्तक की कमी लंबे समय से अनुभव की जा रही थी। यह पुस्तक उसी दिशा में किया गया एक प्रयास है।

पुस्तक में व्यवहारवाद, संरचनावाद, व्यवस्था विश्लेषण, प्रकार्यात्मक उपागम एवं मार्क्सवाद और अंततः विज्ञान एवं इतिहास के विकल्प या उनके एकीकरण की विशद व्याख्या प्रस्तुत की गई है। पुस्तक में फ्रांस की क्रांति से लेकर उन्नीसवीं सदी की क्रांतियों और सतत चलते संघर्षों में संघर्ष और स्थैर्य की संभावनाओं पर आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण, विशेषतः आसियान और सार्क के योगदान और भारत एवं चीन के एशिया के विकास में योगदान पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। ये चार अध्याय बहुधा राजनीतिक समाजशास्त्र की पुस्तकों में नहीं मिलते, पुस्तक में इनका समावेश राजनीतिक समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को विषय का समग्र ज्ञान एक जगह उपलब्ध कराने में सहायक होगा। राजनीतिक विकास, राजनीतिक संस्कृति, नौकरशाही, राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिक संचार, जनमत और यहाँ तक कि चुनावी व्यवहार की अवधारणाएँ और इनके अंतर्संबंधों पर भी चर्चा की गई है।

एल. एन. शर्मा निवर्तमान, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर और पटना विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष रह चुके हैं। उनके द्वारा लिखित और प्रकाशित पुस्तकों में शामिल हैं : *ए न्यू ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स* एवं *इंडियन प्राइम मिनिस्टर : ऑफिस एंड पावर*। **कृष्ण मुरारी** दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापनरत हैं। वे *शासन : मुद्दे और चुनौतियां* पुस्तक के सह-लेखक हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका। 1. विषय-प्रवेश : 1.1 दार्शनिक पृष्ठभूमि, 1.2 समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, 1.3 राजनीतिक समाजशास्त्र के उद्भव की पृष्ठभूमि, 1.4 राजनीतिक समाजशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र और इसका विकास, 1.5 राजनीतिक समाजशास्त्र एवं राजनीति के समाजशास्त्रीय अध्ययन में अंतर, 1.6 राजनीतिक समाजशास्त्र की चुनौतियाँ एवं प्रासंगिकता; 2. राजनीतिक समाजशास्त्र के विभिन्न उपागम : 2.1 व्यवहारवाद बनाम संरचनावाद, 2.2 व्यवस्था उपागम एवं संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण, 2.3 मार्क्सवादी उपागम, 2.4 विज्ञान एवं इतिहास; 3. शक्ति, प्रभाव, सत्ता और औचित्य की अवधारणाएँ : 3.1 प्रभाव, 3.2 शक्ति, 3.3 सत्ता, 3.4 औचित्य, राजनीतिक समाजशास्त्र; 4. सामाजिक स्तरों (शक्तियों) का राजनीतिकरण : 4.1 जाति, 4.2 वर्ग, 4.3 धर्म और सांप्रदायिकता, 4.4 भारतीय राजनीति और नस्ल समस्या, 4.5 भारतीय राजनीति और भाषा; 5. राजनीतिक शक्ति का अभिजनवादी सिद्धांत एवं वंचित वर्ग की स्थिति : 5.1 अभिजनवादी सिद्धांत का विश्लेषण 5.2 अभिजन एवं लोकतंत्र, 5.3 अभिजनवादी सिद्धांत का मूल्यांकन; 6. राजनीति का समूह सिद्धांत : 6.1 समूह सिद्धांत का विश्लेषण, 6.2 भारत में हित समूह; 7. राजनीतिक दल और राजनीतिक व्यवस्था : 7.1 राजनीतिक दल : विचारधारा एवं शक्ति, 7.2 राजनीतिक दलों का समाजशास्त्र, 7.3 दल के संसदीय बनाम गैर-संसदीय भाग, 7.4 अल्पतंत्र और समर्थक-अन्वेषी तंत्र, 7.5 दलीय व्यवस्था प्रकार एवं कार्य, 7.6 भारत में दलीय व्यवस्थाएँ; 8. आधुनिकीकरण, राजनीतिक विकास और राजनीतिक संस्कृति : अंतर्संबंध : 8.1 आधुनिकीकरण के प्रतिमान, 8.2 आधुनिकीकरण की विशेषताएँ, 8.3 राजनीतिक विकास, 8.4 आधुनिकीकरण एवं राजनीतिक विकास का अंतर्संबंध, 8.5 राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा; 9. नौकरशाही, लोकतंत्र एवं समाज : इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियों के संदर्भ में : 9.1 नौकरशाही : मैक्स वेबर के आदर्श प्रतिमान, 9.2 वेबर के नौकरशाही के आदर्श प्रतिमान का मूल्यांकन, 9.3 नौकरशाही की बुद्धिमत्तावान निरपेक्षता, 9.4 नौकरशाही और समाज; 10. नवीन सामाजिक आंदोलन : 10.1 नारीवाद, 10.2 बाल विकास आंदोलन, 10.3 बुजुर्ग और समाज, 10.4 दलितवाद, 10.5 अल्पसंख्यकों के विकास के लिए आंदोलन, 10.6 पर्यावरणवाद, अनुक्रम, राजनीतिक समाजशास्त्र; 11. जनमत, राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक सहभागिता तथा मतदान प्रक्रिया : 11.1 जनमत : अर्थ, 11.2 राजनीतिक समाजीकरण तथा जनमत निर्माण, 11.3 राजनीतिक सहभागिता, 11.4 चुनाव प्रक्रिया तथा सुधार, 11.5 भारत में चुनाव सुधार; 12. राजनीतिक संचार : 12.1 राजनीतिक संचार : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य; 13. दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण और भारत तथा चीन की भूमिका : 13.1 भारत-पाकिस्तान, चीन और भारत की भूमिका; 14. वैश्वीकरण, असमानता, अस्थिरता, राजनीतिक-सामाजिक परिवर्तनों और क्रांति के बीच सहमति की खोज : 14.1 राजनीतिक परिवर्तन एवं क्रांति, 14.2 राजनीतिक परिवर्तन और क्रांति में अंतर, 14.3 सहमति प्राप्ति के उपाय। शब्दावली, परिशिष्ट, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5483 2 2014 344 पृष्ठ ₹ 450.00

समाजशास्त्रीय विचार

समाजशास्त्रीय विचार पुस्तक बी.ए. एवं एम.ए. पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है। यह पुस्तक यूजीसी नेट और सिविल सेवा परीक्षा की दृष्टि से भी उपयोगी है। इस पुस्तक से वे सभी इच्छुक पाठक भी लाभान्वित हो सकते हैं जिनकी समाजशास्त्र में रुचि है। इस पुस्तक में समाजशास्त्र के उदय एवं विकास की विस्तृत चर्चा है। पुस्तक में अठारह प्रमुख चिंतकों जैसे—अगस्त कौंत, हर्बर्ट स्पेंसर, कार्ल मार्क्स, एमिल दरखायम, मैक्स वेबर, हर्बर्ट ब्लूमर, चार्ल्स राइट मिल्स इत्यादि के विचारों का विस्तृत विवेचन है। पुस्तक में इन चिंतकों के व्यक्तिगत जीवन, पृष्ठभूमि और रचनाओं के अतिरिक्त उनके द्वारा प्रतिपादित प्रमुख धारणाओं और सिद्धांतों की चर्चा है। इसके साथ ही इन धारणाओं की वर्तमान समय में प्रासंगिकता, समाजशास्त्र में इनके योगदान का मूल्यांकन एवं समकालीन चिंतकों के विचारों में तुलना के माध्यम से विषय की संपूर्ण जानकारी देने की कोशिश की गई है।

सरल एवं सुबोध भाषा में लिखी गई यह पुस्तक विषय की पूरी जानकारी प्रदान करती है। पुस्तक में "सार एवं संवाद" नामक अध्याय विशेष रूप से पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखा गया है।

मुजतबा हुसैन समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के बीच एक बहुचर्चित नाम है। वे पटना विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर थे। पढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में उनकी गहरी रुचि है। उनकी प्रमुख पुस्तकें : *समाजशास्त्र परिचय* और *प्रारंभिक समाजशास्त्र* हैं। संप्रति वे समाज सेवा के साथ-साथ शोध कार्यों और पुस्तक लेखन में व्यस्त हैं।

विषयानुक्रम : 1. समाजशास्त्र का उदय एवं विकास, 2. अगस्त कौंत, 3. हर्बर्ट स्पेंसर, 4. कार्ल मार्क्स, 5. एमिल दरखायम, 6. मैक्स वेबर, 7. ज्ञार्ज सिमेल, 8. विल्फ्रेडो पैरेटो, 9. फर्डिनेंड टानीज, 10. पित्रीम अलेक्जन्ड्रोविच सोरोकिन, 11. टालकट पारसन्स, 12. राबर्ट किंग मर्टन, 13. लेविस कोजर, 14. चार्ल्स हाटन कूले, 15. ज्ञार्ज हर्बर्ट मीड, 16. हर्बर्ट ब्लूमर, 17. टाम बी. बोटोमोर, 18. चार्ल्स राइट मिल्स, 19. राल्फ डहरेनडार्फ, 20. सार एवं संवाद। संदर्भिका।

978 81 250 4014 9 2010 476 पृष्ठ ₹ 595.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

पर्यावरण विज्ञान/भूगोल

पर्यावरण अध्ययन : स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यपुस्तक
ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित
(तीसरा संस्करण)

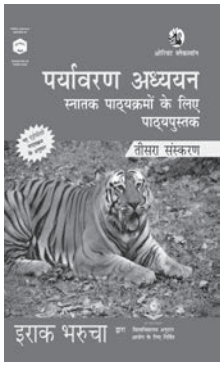

गत डेढ़ दशक से **पर्यावरण अध्ययन** पुस्तक को सभी स्नातक छात्रों के लिए इस विषय पर सबसे विश्वसनीय पाठ्यपुस्तक माना गया है। तीसरे संस्करण को यूजीसी द्वारा निर्धारित नए एईसीसी पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार किया गया है और इसे उपयोगकर्ताओं के अनुकूल बनाया गया है। पुस्तक का उद्देश्य न केवल पर्यावरण के विषय में जागरूकता पैदा करना है, बल्कि पर्यावरण के संवर्द्धन हेतु कार्य करने के प्रति प्रेरित करना भी है। पुस्तक का नया संस्करण छात्रों के लिए आकर्षक और लाभदायक होगा। इस पाठ्यपुस्तक की विशेषता है— स्मार्ट ऐप, जिसमें पुस्तक से अतिरिक्त प्रश्न और अध्ययन सामग्री दी गई है।

इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं—यूजीसी द्वारा निर्धारित नए एईसीसी पाठ्यक्रम के अनुरूप। संगत केस अध्ययन, उदाहरण और चित्र पाठकों में रुचि उत्पन्न करेंगे। इकाई 4 में जोड़ी गई रंगीन प्लेटें जैवभौगोलिक क्षेत्रों और विभिन्न वनस्पतियों और प्राणियों को दर्शाती हैं। ऐसे प्रश्न जो विचारों और अनुवर्ती कार्रवाई को प्रेरित करते हैं, उन्हें हाइलाइट किया गया है, जो विचारोत्तेजक विशेषता प्रदान करते हैं। पूरी पुस्तक को "संधारणीय जीवनशैली" के सूत्र में पिरोया गया है, जो छात्रों को वास्तविकता से परिचित कराएगा और रोज़मर्रा के जीवन में आने वाली पर्यावरणीय समस्याओं के मुद्दे पर समाधान भी प्रस्तुत करेगा। स्मार्ट ऐप में शामिल हैं— बहु विकल्पी अभ्यास प्रश्न; अतिरिक्त सामग्री, जो छात्रों को पढ़ने के साथ-साथ दोहराने का अवसर भी देंगे।

इराक भरुचा, भारती विद्यापीठ इंस्टिट्यूट ऑफ एनवायरनमेंट एजुकेशन एंड रिसर्च, पुणे के निदेशक हैं। डॉ. भरुचा एक प्रख्यात पर्यावरणविद् हैं। वे स्कूलों और कॉलेजों के लिए विभिन्न पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करने में सक्रिय हैं। वे औपचारिक पर्यावरण शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए एनसीईआरटी, एससीईआरटी और यूजीसी के साथ निरंतर जुड़े रहे हैं।

विषयानुक्रम : उच्च शिक्षा की सभी शाखाओं के स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए, पर्यावरण अध्ययन के क्षमता संवर्द्धन अनिवार्य कोर्स (एईसीसी) के अनुरूप, आमुख, तीसरे संस्करण की भूमिका, आभार, रोडमैप, शिक्षण प्रविधियां। **इकाई 1 : पर्यावरण अध्ययन : एक परिचय** 1.1 परिचय। 1.2 पर्यावरण अध्ययन की बहुविषयी प्रकृति 1.2.1 जन-जागरूकता की आवश्यकता; 1.2.2 पर्यावरण और उसके हितधारक; 1.2.3 पर्यावरण और वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। 1.3 पर्यावरण के घटक-तत्त्व; 1.3.1 वायुमंडल; 1.3.2 जलमंडल; 1.3.3 स्थलमंडल; 1.3.4 जैवमंडल; 1.3.5 मंडलों के बीच विभिन्न चक्र। 1.4 पर्यावरण अध्ययन का दायरा और महत्त्व; 1.4.1 दायरा और महत्त्व; 1.4.2 जनसंख्या-वृद्धि और हमारे संसाधन; 1.4.3 पर्यावरणीय पदचिह्न; 1.4.4 पर्यावरण प्रबंधन का महत्त्व। 1.5 असंधारणीय एवं संधारणीय विकास की अवधारणा; 1.5.1 संधारणीय विकास को कॉलेज पाठ्यक्रम में शामिल करने के नए आयाम; 1.5.2 संधारणीय जीवनशैली की आवश्यकता; 1.5.3 संधारणीय जीवनशैली के लिए संसाधनों का समतामूलक उपयोग; 1.5.4 पर्यावरण शिक्षा और संधारणीय विकास के लिए शिक्षा — विभिन्न दृष्टिकोण; 1.5.5 लैंगिक समानता की आवश्यकता। **इकाई 2 : पारितंत्र** 2.1 पारितंत्र क्या है?; 2.2 पारितंत्रों की संरचना और कार्य; 2.2.1 पारितंत्रों की संरचना; 2.2.2 पारितंत्र के प्रकार्य; 2.2.3 प्रकृति में अंतर्संयोजन — मानव एवं पारितंत्र संसाधन; 2.2.4 पारितंत्र की वस्तुएं एवं सेवाएं; 2.3 पारितंत्र में ऊर्जा का प्रवाह; 2.4 खाद्य- श्रृंखला, खाद्य-जाल और पारितंत्र अनुक्रमण; 2.4.1 पारितंत्रीय अनुक्रमण; 2.5 पारितंत्रों का केस अध्ययन; 2.5.1 वन्य पारितंत्रों; 2.5.2 चरागाही पारितंत्र; 2.5.3 मरुस्थलीय पारितंत्र; 2.5.4 जलीय पारितंत्र; 2.5.5 मुहाना/नदमुख पारितंत्र; 2.6 पारितंत्रों का विनाश। **इकाई 3 : प्राकृतिक संसाधन : नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय संसाधन** 3.1 प्राकृतिक संसाधन; 3.1.1 नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय संसाधन 3.2 भूमि संसाधन और उपयोग में परिवर्तन; 3.2.1 भूमि का अवकर्षण; 3.2.2 मृदा ह्रास; 3.2.3 मरुस्थलीकरण; 3.3 वनों की कटाई; 3.3.1 वनों की कटाई के कारण और प्रभाव; 3.4 जल; 3.4.1 सतही और भूजल का उपयोग और अत्यधिक दोहन; 3.4.2 बाढ़; 3.4.3 सूखा; 3.4.4 जल संरक्षण, वर्षाजल संचय, जल प्रबंध; 3.4.5 जल-संघर्ष — अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर्राज्यीय; 3.5 ऊर्जा के संसाधन; 3.5.1 नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय ऊर्जा-स्रोत; 3.5.2 वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग; 3.5.3 ऊर्जा की बढ़ती आवश्यकताएं; 3.6 प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में व्यक्ति की भूमिका। **इकाई 4 : जैव-विविधता और संरक्षण** 4.1 जैविक विविधता के स्तर; 4.1.1 जननिक विविधता; 4.1.2 प्रजातीय विविधता; 4.1.3 पारितंत्रीय की विविधता; 4.2 भारत के जैवभौगोलिक क्षेत्र; 4.2.1 जैव-विविधता पैटर्न और वैश्विक जैव-विविधता के मुख्य स्थल; 4.3 विराट विविधता वाले देश के रूप में भारत; 4.3.1 भारत की संकटग्रस्त एवं स्थानिक प्रजातियां; 4.3.2 कीस्टोन प्रजातियां और पारितंत्र; 4.3.3 कीस्टोन संसाधन और पारिस्थितिक कड़ियां; 4.4 जैव-विविधता के सामने चुनौतियां; 4.4.1 आवासों का विनाश; 4.4.2 वन्य जीवों का अवैध शिकार; 4.4.3 मानव और वन्य जीवों में टकराव; 4.4.4 जैविक आक्रमण; 4.4.5 जैव-विविधता का संरक्षण : यथा स्थल और बहिःस्थल; 4.5 पारितंत्र और जैव-विविधता सेवाएं; 4.5.1 पारितंत्रीय सेवाएं; 4.5.2 आर्थिक मूल्य; 4.5.3 जैव विविधता के सामाजिक मूल्य; 4.5.4 जैव विविधता के नैतिक एवं आचारिक मूल्य; 4.5.5 सौंदर्यात्मक मूल्य; 4.5.6 सूचनात्मक मूल्य, संचार शिक्षा एवं जन जागरूकता; 4.5.7 वैकल्पिक मूल्य। **इकाई 5 : पर्यावरणीय प्रदूषण** 5.1 पर्यावरणीय प्रदूषण; 5.1.1 प्रदूषण के प्रकार; 5.1.2 प्रदूषण के कारण; 5.1.3 प्रदूषण के प्रभाव; 5.1.4 प्रदूषण-नियंत्रण; 5.2 वायु प्रदूषण; 5.2.1 वायु प्रदूषण के प्रकार; 5.2.2 वायु प्रदूषण के कारण; 5.2.3 वायु प्रदूषण पर स्थलाकृति का प्रभाव; 5.2.4 वायु प्रदूषण पर मौसम संबंधी स्थितियों का प्रभाव; 5.2.5 जीवित प्राणियों पर वायु प्रदूषण के प्रभाव; 5.2.6 पदार्थों पर वायु प्रदूषण के प्रभाव; 5.2.7 समतापमंडल पर वायु प्रदूषण के प्रभाव; 5.2.8 वायु प्रदूषण पर नियंत्रण के उपाय; 5.2.9 भारत में वायु प्रदूषण; 5.3 जल प्रदूषण; 5.3.1 जल-प्रदूषण के प्रकार; 5.3.2 जल प्रदूषण के कारण; 5.3.3 रोगकारक एजेंट के प्रभाव; 5.3.4 भारत की नदियों में पानी की गुणवत्ता और प्रदूषण; 5.3.5 जल-प्रदूषण के नियंत्रण के उपाय; 5.3.6 जल-स्रोतों पर तापीय प्रदूषण के प्रभाव; 5.3.7 समुद्री पर्यावरण पर प्रदूषण के प्रभाव; 5.4 मृदा प्रदूषण; 5.4.1 मृदा प्रदूषण के प्रकार; 5.4.2 मृदा ह्रास के कारण; 5.4.3 मृदा ह्रास के प्रभाव; 5.4.4 मृदा ह्रास के नियंत्रण; 5.5 रासायनिक प्रदूषण; 5.5.1 रासायनिक प्रदूषकों के प्रकार; 5.5.2 रासायनिक प्रदूषण के कारण; 5.5.3 रासायनिक प्रदूषण के प्रभाव; 5.5.4 रासायनिक प्रदूषण पर नियंत्रण; 5.5.5 जैविक संकेंद्रण और जैव-आवर्धन; 5.6 ध्वनि प्रदूषण; 5.6.1 ध्वनि-प्रदूषण के प्रकार; 5.6.2 ध्वनि-प्रदूषण के कारण; 5.6.3 ध्वनि-प्रदूषण के प्रभाव; 5.6.4 ध्वनि प्रदूषण के नियंत्रण के उपाय; 5.7 नाभिकीय खतरे एवं मानव स्वास्थ्य के जोखिम; 5.8 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन; 5.8.1 नगरपालिकीय ठोस अपशिष्ट के निपटान में समस्याएं; 5.8.2 नगरीय एवं औद्योगिक ठोस अपशिष्ट के लिए नियंत्रक उपाय; 5.8.3 ठोस अपशिष्ट का संग्रह और परिवहन; 5.8.4 नगरपालिकीय सफाई भू-भराव क्षेत्र; 5.9 अपशिष्ट से ऊर्जा : विधियां; 5.9.1 अपशिष्ट के प्रकार; 5.10 प्रदूषण संबंधी केस-अध्ययन; 5.10.1 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन : क्या करें, क्या न करें; 5.11 उपभोक्तावाद और अपशिष्ट उत्पाद; 5.11.1 प्रदूषण की रोकथाम में व्यक्ति की भूमिका। **इकाई 6 : पर्यावरण नीतियां और कार्यप्रणालियां** 6.1 पर्यावरण नीतियां और कार्यप्रणालियां; 6.2 जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन, ओजोन परत का क्षरण, अम्ल-वर्षा तथा मानव-समुदाय और कृषि पर उनका प्रभाव; 6.2.1 जलवायु परिवर्तन; 6.2.2 वैश्विक तापन; 6.2.3 ओजोन परत का ह्रास; 6.6.4 अम्ल वर्षा; 6.2.5 मानव-समुदायों और कृषि पर प्रभाव; 6.3 पर्यावरण कानून; 6.3.1 पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986); 6.3.2 वायु (प्रदूषण निरोध और नियंत्रण) अधिनियम, 1981; 6.3.3 जल (प्रदूषण निरोध एवं नियंत्रण) अधिनियम (1974); 6.3.4 वन्यजीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972; 6.3.5 वन संरक्षण अधिनियम (1980); 6.3.6 अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध; 6.3.7 वियना कनवेंशन और मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल; 6.3.8 क्योटो प्रोटोकॉल; 6.3.9 जैव-विविधता कंवेंशन; 6.3.10 रासायनिक हथियार अधिवेशन; 6.4 प्राकृतिक भंडार; 6.4.1 आदिवासी जनसंख्या एवं उनके अधिकार; 6.4.2 भारत के संदर्भ में मनुष्य—वन्य जीवन टकराव। **इकाई 7 : मानव समुदाय और पर्यावरण** 7.1 मानव-जनसंख्या और वृद्धि; 7.1.1 पर्यावरण, मानव-स्वास्थ्य और कल्याण पर पड़ने वाले प्रभाव; 7.2 कार्बन पदचिह्न; 7.3 परियोजना से प्रभावित लोगों का पुनर्वास; 7.4 आपदा प्रबंधन; 7.4.1 बाढ़; 7.4.2 भूकंप;

7.4.3 चक्रवात; 7.4.4 भूस्खलन; 7.5 पर्यावरणीय आंदोलन; 7.5.1 चिपको आंदोलन; 7.5.2 साइलेंट वैली; 7.5.3 राजस्थान के बिश्नोई; 7.6 पर्यावरणीय नैतिकता : पर्यावरण संरक्षण में भारतीय एवं अन्य धर्मों और संस्कृतियों की भूमिका; 7.7 पर्यावरणीय संवाद एवं जन-जागरूकता। **इकाई 8 : क्षेत्रकार्य** 8.1 पर्यावरणीय संपदा के प्रलेखन के लिए स्थानीय क्षेत्र का भ्रमण : नदी, वन, चरागाह, पहाड़ी या पहाड़; 8.2 एक स्थानीय प्रदूषित स्थल का भ्रमण; 8.2.1 ठोस अपशिष्ट के अध्ययन का स्थल; 8.2.2 जल प्रदूषण का स्थल; 8.2.3 वायु प्रदूषण का स्थल; 8.3 सामान्य पौधों, कीड़ों व पक्षियों का अध्ययन; 8.4 सरल पारितंत्रों का अध्ययन; 8.4.1 वन क्षेत्र का अध्ययन; 8.4.2 घास के मैदान/चरागाह का क्षेत्र अध्ययन; 8.4.3 मरुस्थल और अर्धशुष्क क्षेत्र का भ्रमण; 8.4.4 जलीय पारितंत्र का क्षेत्र अध्ययन; 8.4.5 पहाड़ी/पहाड़ का भ्रमण; 8.4.6 दिल्ली रिज का भ्रमण। अनुक्रमणिका

(अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती में भी उपलब्ध)

978 93 5442 600 1 2023 316 पृष्ठ ₹ 425.00

संगम एटलस प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

(द्वितीय संस्करण)

ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित

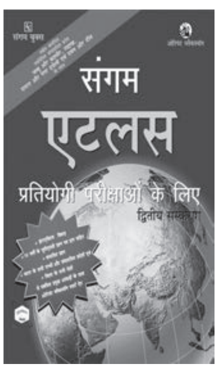

यह एटलस अपने पूर्णतया नवीकृत मानचित्रों और तथ्यों के पाई चार्ट एवं आयतचित्रों के आलेखीय प्रस्तुतीकरण द्वारा विश्व को हमारे करीब लाती है। इन प्रामाणिक मानचित्रों में भारत एवं विश्व के महाद्वीपों के विविध प्राकृतिक और राजनीतिक विषयों को सम्मिलित किया गया है। यह एटलस विशेष रूप से संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है।

प्रमुख विशेषताएँ : भारत—विशिष्ट विशेषताएँ
• भारत के सभी राज्यों और संघ राज्यों के जानकारीयुक्त एवं अत्याधुनिक मानचित्र। • भारत के दो विशेष मानचित्र : पहला दर्शाता है प्राकृतिक आपदाएँ, बाढ़ और सूखा प्रवण क्षेत्र, चक्रवाती तूफ़ान का पथ; और दूसरा समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थलों को दर्शाता है। • त्रिविमीय स्तंभ आलेख और पाई चार्ट द्वारा भारत के विविध राज्यों तथा संघ राज्यों की दर्शाई गई नवीनतम सांख्यिकीय आंकड़ेवारी। • भारत के मानचित्रों में दर्शाए गए मृदा अपकर्षण, भू-जल गुणवत्ता और नदी-जल गुणवत्ता, अंतर्देशीय जलमार्ग, जल की उपलब्धता, दूध-उत्पादन, स्वास्थ्य एवं धर्म। • भारत के मानचित्रों में 2011 जनगणना की आंकड़ेवारी पर आधारित जनसंख्या, जनसंख्या का घनत्व, साक्षरता और लिंग अनुपात। • भारत के मानचित्र में दर्शाए गए देश के विविध प्रकार के विश्वविद्यालय एवं संस्थाएँ। • भारत का अनोखा अंतरिक्ष विज्ञान मानचित्र, 1975 से प्रक्षेपित उपग्रहों की सूची के साथ।

विश्व मानचित्र—विशेषताएँ • भारत और विश्व की भौगोलिक चरम सीमाएँ दर्शाता एक अनोखा मानचित्र। • सार्क राष्ट्रों का विशेष मानचित्र। • ऐतिहासिक मानचित्रों में विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी भारत और विश्व के सामाजिक परिवर्तनों का विशेष चित्रण। • विश्व के मानचित्रों में दर्शाए गए जलनिकास द्रोणी, वन-क्षेत्र, कृषि-उत्पाद क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र और भाषाएँ। • विश्व के मानचित्र में विशिष्ट रूप से पृथ्वी का भूपृष्ठ, विवर्तनिकी, सुनामी, भूकम्प एवं ज्वालामुखीय विस्फोट इन सबकी विस्तृत जानकारी। अन्य विशेषताएँ • संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए वृहत् संदर्भ सामग्री। • अनुक्रमणिका में लगभग 7500 नामों की सूची और भारत एवं विश्व में हुए आधुनिक बदलाव भी शामिल। • ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप, इंटरएक्टिव क्विजिंग टूल से अभ्यास और दोहराने में मदद मिलेगी। ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप या इनसाइड कवर पर दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें और एक्सेस करें : भारत और विश्व भूगोल संबंधी विगत वर्षों के प्रश्न बैंक; 300 से अधिक बहुविकल्पी प्रश्न; विजुअल गाइड और मैप-पॉइन्टिंग टूल की सहायता से उत्तर देखें; एक्सेस करें भारत और विश्व संबंधी प्रमुख आंकड़े।

विषयानुक्रम : सांकेतिक चिह्न और विश्व की भौगोलिक चरम सीमाएँ; मानचित्र और मानचित्र पठन; पृथ्वी, वायुमंडल, ज्वालामुखी और भौगोलिक तुलनाएँ; खगोलीय भूगोल। **भारत :** भारत - प्राकृतिक; भारत - राजनैतिक; जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, चंडीगढ़, हरियाणा और दिल्ली; राजस्थान, गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमण और दीव; उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश; बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और ओडीशा; महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल, लक्षद्वीप, अंदमान और निकोबार द्वीपसमूह; सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम; भारत - भू-आकृतिक प्रभाग और नदी द्रोणी; भारत - प्राकृतिक आपदाएँ; भारत - जलवायु प्रदेश, वार्षिक वर्षा और वार्षिक तापमान; भारत - वर्षा, हवाएँ, तापमान और दबाव; भारत - सिंचाई और विद्युत शक्ति; भारत - खाद्य फसलें; भारत - अन्य फसलें; भारत - कृषि-उत्पाद क्षेत्र, प्राकृतिक वनस्पति, भूमि उपयोग और दूध उत्पादन; भारत - भू-विज्ञान, भू-संरचना और मृदा; भारत - धात्विक खनिज और अधात्विक खनिज; भारत - खनिज ईंधन, मृदा अपकर्षण, भू-जल गुणवत्ता और नदी-जल गुणवत्ता; भारत - औद्योगिक क्षेत्र और धात्विक उद्योग; भारत - अधात्विक उद्योग; भारत - विश्वविद्यालय और अंतरिक्ष विज्ञान; भारत - सड़कें; भारत - रेलमार्ग; भारत - हवाई मार्ग, अंतर्देशीय जलमार्ग और समुद्री मार्ग; भारत - वन और वन्यजीव; भारत - पर्यटन; भारत - विरासत; भारत - जनसंख्या, जनसंख्या का घनत्व, साक्षरता और लिंग अनुपात; भारत - भाषाएँ और जनसंपर्क माध्यम; भारत - धर्म, स्वास्थ्य और जल की उपलब्धता; भारत - इतिहास I; भारत - इतिहास II; भारत-इतिहास III। **एशिया :** सार्क राष्ट्र; एशिया - प्राकृतिक; एशिया - राजनैतिक; एशिया - जलवायु, जलवायु प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति और जनसंख्या का घनत्व; एशिया - अर्थव्यवस्था; नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और श्रीलंका; पश्चिम एशिया; अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान और मालदीव; रूस और निकटवर्ती देश; चीन, मंगोलिया, कोरिया, जापान और ताइवान; दक्षिण पूर्व एशिया। **यूरोप :** यूरोप - प्राकृतिक; यूरोप - राजनैतिक; यूरोप - जलवायु, जलवायु प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति और जनसंख्या का घनत्व; यूरोप - अर्थव्यवस्था। **अफ्रीका :** अफ्रीका - प्राकृतिक; अफ्रीका - राजनैतिक; अफ्रीका - जलवायु, जलवायु प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति और जनसंख्या का घनत्व; अफ्रीका - अर्थव्यवस्था। **ऑस्ट्रेलिया और ओशियानिया :** ऑस्ट्रेलिया और ओशियानिया - प्राकृतिक और राजनैतिक; ऑस्ट्रेलिया - जलवायु, जलवायु प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति, जनसंख्या का घनत्व और अर्थव्यवस्था। **उत्तर अमेरिका :** उत्तर अमेरिका - प्राकृतिक; उत्तर अमेरिका - राजनैतिक; उत्तर अमेरिका - जलवायु, जलवायु प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति और जनसंख्या का घनत्व; उत्तर अमेरिका - अर्थव्यवस्था। **दक्षिण अमेरिका :** दक्षिण अमेरिका - प्राकृतिक; दक्षिण अमेरिका - राजनैतिक; दक्षिण अमेरिका - जलवायु, जलवायु प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति और जनसंख्या का घनत्व; दक्षिण अमेरिका - अर्थव्यवस्था। **ध्रुवीय प्रदेश :** उत्तर ध्रुवीय और दक्षिण ध्रुवीय प्रदेश; **विश्व :** विश्व - प्राकृतिक; विश्व - राजनैतिक; विश्व - प्राकृतिक प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति और पर्यावरण ख़तरे में; विश्व - तापमान, हवाएँ, वायुदाब, वर्षा, महासागरीय धाराएँ और जलवायु प्रदेश; विश्व - भू-विज्ञान, मृदा और अर्थव्यवस्था; विश्व - जलनिकास द्रोणी, वन क्षेत्र और कृषि-उत्पाद क्षेत्र; विश्व - औद्योगिक क्षेत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र और भाषाएँ; विश्व - जनसंख्या का घनत्व, हवाई मार्ग, समुद्री मार्ग, पर्यटन स्थल और विरासत ख़तरे में; विश्व - विवर्तनिकी, प्राकृतिक आपदाएँ और खोज; विश्व - इतिहास I; विश्व — इतिहास II; विश्व - इतिहास III; विश्व - इतिहास IV; विश्व - महत्त्वपूर्ण सांख्यिकी; अनुक्रमणिका; भारत — महत्त्वपूर्ण सांख्यिकी और भौगोलिक चरम सीमाएँ।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 8818 921 7 2020 112 पृष्ठ ₹ 350.00

ओरियंट ब्लैकस्वॉन विश्व एटलस

(लघु संस्करण)

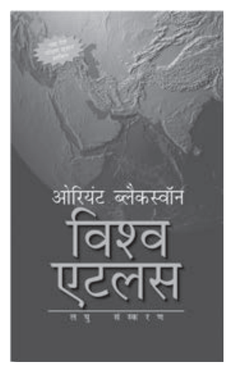

यह **ओरियंट ब्लैकस्वॉन विश्व एटलस** का लघु संस्करण है। यह रंगीन एटलस छात्र-छात्राओं की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसके मानचित्र प्रामाणिक, सरल और आकर्षक हैं।

विश्व एटलस के प्रमुख बिंदु : • सभी महाद्वीपों के भौतिक व राजनैतिक मानचित्र सम्मिलित। • समय-क्षेत्र सारणी, अंतर्राष्ट्रीय संचार माध्यम, परिवहन मार्ग एवं पर्यटन स्थलों पर आधारित मानचित्र। • प्रमुख देशों के नाम, उनके झंडे, राजधानी, जनसंख्या, मुद्रा व साक्षरता प्रतिशत के नवीनतम आंकड़ों की जानकारी। • आर्कटिक व अंटार्कटिक प्रदेशों के मानचित्र व उनके विभिन्न स्थानों के नामों के साथ उनके खोजकर्त्ताओं की सूची शामिल। • प्रत्येक मानचित्र पर अध्ययन की सुविधा हेतु प्रयुक्त संयुक्त चिह्न, मापक और प्रक्षेप का नाम अंकित। • सभी मानचित्र विश्वस्त सूत्रों एवं संबंधित देशों की सरकारों द्वारा प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों पर आधारित। • पाठकों की सुविधा हेतु पुस्तक के अंत में लगभग 8000 नामों की अनुक्रमणिका (Index) शामिल, ताकि पाठक को किसी

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

भी स्थल को खोजने में कठिनाई न हो। • पुस्तक के अंत में आठ पृष्ठों का विस्तृत मानचित्र भी है जिसे दीवार पर टांगा जा सकता है। • मानचित्रों के सभी लेबल काले रंग से तथा रेलमार्ग, नदियां व सीमाएं आदि उससे भिन्न रंग में प्रदर्शित की गई हैं ताकि समझने में आसानी हो।

विषयानुक्रम : सांकेतिक चिह्न। विश्व-महत्त्वपूर्ण सांख्यिकी। विश्व-प्राकृतिक; विश्व राजनैतिक; विश्व-भौगोलिक चरम सीमाएँ; विश्व-हवाई मार्ग समुद्री मार्ग और पर्यटन स्थल; एशिया-प्राकृतिक; एशिया-राजनैतिक; भारत-प्राकृतिक; भारत-राजनैतिक, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और श्रीलंका; पश्चिम एशिया; अफगानिस्तान, पाकिस्तान और मालदीव; रूस और निकटवर्ती देश; चीन, मंगोलिया और ताइवान; उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया और जापान; म्यांमार, लाओस, वियतनाम, कंबोडिया और थाइलैंड; फिलिपीन्स, मलेशिया, ब्रुनेई, इंडोनेशिया, पूर्व तिमोर, और सिंगापुर; यूरोप-प्राकृतिक; यूरोप-राजनैतिक; संयुक्त राज्य और आयरलैंड; अफ्रीका-प्राकृतिक; अफ्रीका-राजनैतिक; ऑस्ट्रेलिया और ओशियानिया; ऑस्ट्रेलिया; न्यूज़ीलैंड; उत्तर अमेरिका-प्राकृतिक; उत्तर अमेरिका-राजनैतिक; संयुक्त राज्य अमेरिका; मध्य अमेरिका और वेस्ट इंडीज; दक्षिण अमेरिका-प्राकृतिक; दक्षिण अमेरिका-राजनैतिक; उत्तर ध्रुवीय और दक्षिण ध्रुवीय प्रदेश; विश्व - समय क्षेत्र; अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 5113 8 2015 100 पृष्ठ ₹ 150.00

पर्यावरण संबंधी चेतना और नगर नियोजन

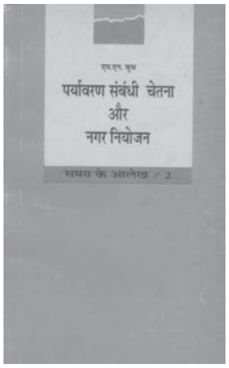

प्रस्तुत पुस्तक पाठक को विकास संबंधी रणनीतियों के मानवीय और पर्यावरण संबंधी निहित अर्थों से अवगत कराती है। इस पुस्तक में उन मानकों पर उंगली उठाई गई है जिनसे हम सामाजिक विकास को मापते हैं। इस आलेख में भारत के शहरीकरण के बारे में भूमंडलीय संदर्भ में चर्चा की गई है। शहरी आबादी में तेजी से वृद्धि और कृषि योग्य भूमि की कीमत पर शहरी विस्तार से पर्यावरण संबंधी समस्याएँ पैदा होती हैं, मानव-जीवन की गुणवत्ता में गिरावट आने लगती है। शहरी नियोजन की वर्तमान पद्धतियों के गंभीर विवेचन और विश्लेषण के जरिये लेखक ने भारत में शहरी नियोजन के प्रति एक वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाने का तर्क प्रस्तुत किया है जो कहीं अधिक व्यावहारिक, तर्कपूर्ण और पर्यावरण की दृष्टि से युक्तिसंगत और सुरुचिपूर्णता की दृष्टि से कहीं अधिक सुखदायी होगा।

एम. एन. बुच भारतीय प्रशासनिक सेवा से संबद्ध थे। वे भोपाल स्थित नेशनल सेंटर फॉर सेटिलमेंट्स एंड एन्वायरनमेंट के अध्यक्ष रहे। सृजनशील लेखक के रूप में उनकी रचनाओं में *मैन हिज सेटिलमेंट्स* और *प्लैनिंग दि इंडियन सिटी* प्रमुख रूप से जानी जाती है। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

विषयानुक्रम : संपादक की ओर से। 1. परिचय, 2. वास्तविक स्थिति, 3. सेवाएं 4. नियोजन संबंधी दृष्टिकोण, 5. शहर के रिहायशी इलाकों में उपलब्ध सेवाएं, 6. निष्कर्ष।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 0073 0 1993 94 पृष्ठ ₹ 35.00

भाषा और साहित्य

कहानी संकलन तथा व्यावहारिक हिंदी

कहानी संकलन तथा व्यावहारिक हिंदी पाठ्यपुस्तक केरल विश्वविद्यालय के सेमेस्टर 1 एवं 2 के लिए तैयार की गई है।

विषयानुक्रम : कहानियाँ 1. ठाकुर का कुआँ (प्रेमचंद); 2. बिसाती (जयशंकर प्रसाद); 3. हीली-बोन् की बत्तखें (अज्ञेय); 4. उमस (ममता कालिया); 5. अपराध (उदय प्रकाश); 6. पिता (ज्ञान रंजन); 7. यही सच है (मन्नू भंडारी); 8. नेलकटर (उदय प्रकाश)।

व्यावहारिक भाषा

1. सामान्य वार्तालाप; 2. पत्र-लेखन; 3. अनुवाद; 4. बहु प्रयुक्त हिन्दी पदनाम।

978 93 86689 31 3 2017 112 पृष्ठ ₹ 95.00

अभिनव हिंदी पाठ्यपुस्तक

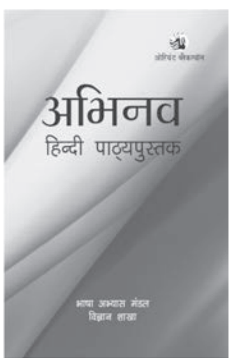

यह पाठ्यपुस्तक संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती के विज्ञान स्नातक भाग 1, प्रथम व द्वितीय सत्र के लिए तैयार की गई है। इसमें गद्य-पद्य की विविध विधाओं की प्रतिनिधि रचनाएँ एवं व्यावहारिक भाषा और व्याकरण संकलित हैं।

विषयानुक्रम : प्रथम इकाई : गद्य खंड 1. यज्ञ (निबंध) महात्मा गाँधी; 2. बड़े घर की बेटी (कहानी) प्रेमचंद; 3. बुधिया (रेखाचित्र) रामवृक्ष बेनीपुरी; 4. समय काटने वाले (निबंध) हरिशंकर परसाई; 5. शिवाजी का सच्चा स्वरूप (एकांकी) सेठ गोविन्ददास; 6. हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (व्यंग्य) शरद जोशी।

द्वितीय इकाई : पद्य खंड

1. रहीम के दोहे (दोहे) 2. एकता (कविता)/ मैथिलीशरण गुप्त; 3. ताज (कविता)/ सुमित्रनंदन पंत; 4. जनता जगी हुई है (कविता)/ रामधारी सिह 'दिनकर'।

तृतीय इकाई : व्यावहारिक भाषा और व्याकरण

1. अंग्रेज़ी का हिन्दी में अनुवाद; 2. मुहावरे का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग; 3. शब्द शुद्धि।

चतुर्थ इकाई : गद्य खंड

7. आचरण की सभ्यता (निबंध)/ सरदार पूर्ण सिह; 8. उधार माँगना भी एक कला है (व्यंग्य)/ बरसानेलाल चतुर्वेदी; 9. बकुल! फिर आना (कहानी)/ मालती जोशी; 10. सबिया (संस्मरण)/ महादेवी वर्मा; 11. खून का रिश्ता (कहानी)/ भीष्म साहनी; 12. पृथ्वीराज की आँखें (एकांकी)/ डॉ. रामकुमार वर्मा।

पंचम इकाई : पद्य खंड

5. वात्सल्य वर्णन (पद)/ सूरदास; 6. जाग तुझको दूर जाना (कविता)/ महादेवी वर्मा; 7. दान (कविता)/ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'; 8. नया तूर्य (कविता)/ भवानी प्रसाद मिश्र।

षष्ठम इकाई : व्यावहारिक भाषा और व्याकरण

1. पत्र-लेखन (कार्यालयीन); 2. लोकोक्तियाँ; 3. वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ। परिशिष्ट : लेखक-परिचय।

978 81 250 5917 2 2015 144 पृष्ठ ₹ 125.00

हिंदी गद्य-पद्य संग्रह 1

हिंदी गद्य-पद्य संग्रह 2

प्रस्तुत दोनों संकलन अहिंदी भाषी छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इन संकलनों के अध्ययन से उनमें हिंदी के प्रति रुचि बढ़ेगी और साहित्य की विविध विधाओं से उनका परिचय हो सकेगा। **हिंदी गद्य-पद्य संग्रह भाग-1** में साहित्य की विविध विधाओं तथा मध्यकालीन पद्यात्मक रचनाओं का संकलन किया गया है।

भाग-2 में हिंदी की कहानियों का संकलन किया गया है तथा पद्य भाग में आधुनिक काल के कवियों की रचनाएँ हैं।

विषयानुक्रम : भाग 1 गद्य : 1. सद्गति, 2. नाखून क्यों बढ़ते हैं, 3. बाबर की ममता, 4. ठेले पर हिमालय, 5. रूपा की आजी; **पद्य :** 1. साखी, 2. पद, 3. बाल वर्णन, 4. विनय, 5. दोहे, 6. दोहे, 7. भाषा महत्त्व।

विषयानुक्रम : भाग 2 गद्य : 1. एक टोकरी भर मिट्टी, 2. दुलाईवाली, 3. बड़े घर की बेटी, 4. खून का रिश्ता, 5. बयान, 6. इमाम साहब, 7. तिरिछ, 8. बकुल! फिर आना; **पद्य :** 1. दोनों ओर प्रेम पलता है, 2. ले चल वहाँ भुलावा देकर, 3. मुरझाया फूल 4. बेटी की विदा, 5. समर शेष है, 6. इस पार, उस पार, 7. जीवन का झरना, 8. बहुत दिनों के बाद, 9. कमल के फूल।

978 81 250 3539 8 2014 80 पृष्ठ ₹ 150.00 (भाग 1)
978 81 250 3540 4 2014 120 पृष्ठ ₹ 160.00 (भाग 2)

गद्य तरंग

गद्य तरंग नामक संकलन में आधुनिक गद्य की दो प्रमुख विधाओं — कहानी एवं निबंध को सम्मिलित किया गया है। इसमें पाँच महत्त्वपूर्ण कहानियों एवं तीन निबंधों को रखा गया है। इसमें मगध विश्वविद्यालय बोधगया के बी.ए. हिंदी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष के पत्र 2 के हिंदी पढ़ने वाले छात्रों को ध्यान में रखते हुए निम्न रचनाओं को संकलित किया गया है।

विषयानुक्रम : भूमिका। **कहानी :** 1. प्रेमचंद : सद्गति, 2. राधिकारमण प्रसाद सिंह : कानों में कँगना, 3. सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : शरणदाता, 4. मोहन राकेश : मलबे का मालिक, 5. भीष्म साहनी : चीफ की दावत; **निबंध :** 6. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी : हंस का नीर-क्षीर-विवेक, 7. सरदार पूर्ण सिंह : आचरण की सभ्यता, 8. विद्यानिवास मिश्र : आँगन का पंछी।

978 81 250 4563 2 2012 80 पृष्ठ ₹ 125.00

साहित्य धारा

यह संकलन सोलापुर विश्वविद्यालय के बी.ए. भाग एक के 'आवश्यक हिंदी' पाठ्यक्रम पर आधारित है। इसे यू.जी.सी. के निर्देशानुसार तैयार किया गया है। प्रस्तुत संकलन में गद्य एवं पद्य की विविध विधाओं का समावेश हुआ है तथा प्रतिष्ठित साहित्यकारों की प्रतिनिधि रचनाओं को स्थान दिया गया है। ये रचनाएँ विद्यार्थियों को भाषिक तथा साहित्यिक सौंदर्य का परिचय कराती हैं। प्रस्तुत संकलन विद्यार्थियों की क्षमता और उनके स्तर के अनुकूल है।

विषयानुक्रम : पद्य विभाग 1. कबीर : दोहे, 2. रहीम : दोहे, 3. बिहारी : दोहे, 4. मैथिलीशरण गुप्त : सखी वे मुझसे कहकर जाते, 5. सुमित्रानंदन पंत : ताज, 6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : प्रियतम, 7. सुभद्राकुमारी चौहान : प्रियतम से, 8. रामधारीसिंह 'दिनकर' : परदेशी, 9. हरिवंशराय बच्चन : बीते दिन कब आने वाले। **गद्य विभाग** : 1. प्रेमचंद : पूस की रात, 2. चिरंजीत : अखबारी विज्ञापन, 3. हरिशंकर परसाई : समय काटने वाले, 4. रामवृक्ष बेनीपुरी : बुधिया, 5. महादेवी वर्मा : सबिया।

978 81 250 3372 1 2011 72 पृष्ठ ₹ 125.00

साहित्य सरिता

साहित्य सरिता दस कहानियों तथा दस कविताओं का संकलन है। साहित्य मनुष्य के भीतर अंधकार को मिटाकर ज्ञान की रोशनी प्रदान करता है। जीवन को सत्योन्मुखी स्फूर्ति प्रदान कर मनुष्यता की अभिव्यक्ति में सक्षम बनाता है।

विषयानुक्रम : भूमिका, **कहानी 1.** ईदगाह (प्रेमचंद), 2. गुंडा (जयशंकर प्रसाद), 3. परदा (यशपाल), 4. जिंदगी और जोंक (अमरकान्त), 5. मैं हार गई (मन्नू भंडारी), 6. ढाई आखर प्रेम का (मालती जोशी), 7. वापसी (उषा प्रियंवदा), 8. इमाम साहब (नासिरा शर्मा), 9. सलाम (ओमप्रकाश वाल्मीकि), 10. छप्पन तोले का करधन (उदय प्रकाश)। **कविता** : तोड़ती पत्थर, जागो फिर एक बार (सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'), कालीदास से, यह तुम थी (नागार्जुन), कहाँ तो तय था चिरागाँ, हो गई है पीर पर्वत-सी (दुष्यन्त कुमार), रोटी और संसद, बीस साल बाद (सुदामा पांडेय 'धूमिल'), मारे जायेंगे, प्रजापति (राजेश जोशी)।

978 81 250 3536 7 2011 128 पृष्ठ ₹ 125.00

संप्रेषणमूलक व्यावसायिक हिंदी

साहित्य के साथ-साथ भाषा के अनुप्रयोगात्मक रूपों का अध्ययन आज प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में हो रहा है। प्रयोजनमूलक हिंदी की सभी प्रयुक्तियां पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो रही हैं। बाज़ार और मीडिया आज की दो बड़ी सत्ताएं हैं। इन दोनों क्षेत्रों में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं ने अपनी क्षमताओं को साबित किया है।

संप्रेषणमूलक व्यावसायिक हिंदी वाणिज्य-व्यापार तथा मीडिया की प्रयुक्ति के विविध आयामों का विवेचन करती है। इस पुस्तक में कार्यालयी हिंदी के विविध पहलुओं यथा—भाषा शिक्षण, प्रयोजनमूलक भाषा, वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी, वाणिज्य व्यापार का भाषिक प्रकार्य, व्यावसायिक संप्रेषण, बैंकिंग में हिंदी का प्रयोग, लेखाकार्य, बहीखाता लेखन आदि का सम्यक् परिचय शामिल है।

वाणिज्य व्यापार और मीडिया लेखन की जानकारी को भी इसमें दिया गया है। वाणिज्य व्यापार में मीडिया की भूमिका तथा विविध मीडिया लेखनों का भी परिचय दिया गया है। वाणिज्य व्यापार के कई अंगों की भाषा अंग्रेज़ी है; इसलिए अनुवाद आज की अनिवार्य आवश्यकता है। इस पुस्तक में व्यावसायिक अनुवाद, बैंकिंग अनुवाद तथा मीडिया अनुवाद की व्याप्ति, स्वरूप तथा समस्याओं का संक्षिप्त विवेचन है।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना। 1. भाषा और भाषा शिक्षण, 2. प्रयोजनमूलक भाषा : तात्पर्य एवं स्वरूप, 3. वाणिज्य-व्यवसाय और हिंदी, 4. व्यावसायिक संप्रेषण, 5. वाणिज्य-व्यापार : लेखन पक्ष, 6. लेखाकार्य और बहीखाता लेखन, 7. बैंकिंग और हिंदी भाषा, 8. वाणिज्य-व्यवसाय और मीडिया, 9. अनुवाद : स्वरूप, भेद और मीडिया, 10. बैंकिंग अनुवाद : स्वरूप और समस्याएँ, 11. मीडिया अनुवाद : स्वरूप और समस्याएँ, 12. वित्त-तथा व्यवसाय-संबंध विषयक निबंध लेखन। परिशिष्ट, व्यवसाय तथा बैंक शब्दावली, लेखाकर्म प्रथा बहीखाता की शब्दावली, संदर्भ ग्रंथ सूची।

978 81 250 4115 3 2010 200 पृष्ठ ₹ 350.00

आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श e-book

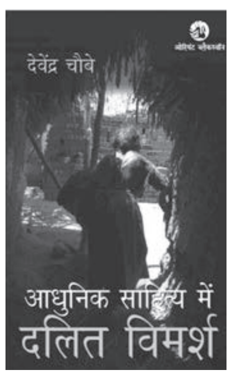

पिछले कुछ वर्षों में हिंदी में विचार विमर्श की दुनिया बदली है। **आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श** दलित साहित्य को लेकर उठ रहे सवालों के बहाने विचार-विमर्श की इसी नई दुनिया को समझने और गति देने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इस पुस्तक में पिछले बीस-तीस वर्षों में हिंदी में लिखित दलित साहित्य की गहन पड़ताल के बहाने करीब डेढ़ सौ वर्षों के साहित्य एवं विचारधारा की दुनिया में हुई बहसों से टकराने एवं संवाद करने की गहरी चेतना दिखलाई पड़ती है। प्रसिद्ध दलित लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि का मानना है कि यह पुस्तक दलित विमर्श में अंतर्निहित विचार और सरोकारों के साथ ही हिंदी साहित्य में उभरे दलित साहित्य के जीवन मूल्यों से जिस नई ऊर्जा का विस्तार हुआ है, उसे भी बेहतर ढंग से सामने रखती है।

देवेंद्र चौबे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान के भारतीय भाषा केंद्र में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों *में समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, कथाकार अमृतलाल नागर* (आलोचना), *कुछ समय बाद (कहानी संग्रह), साहित्य का नया सौंदर्यशास्त्र, चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य, विश्व साहित्य : चुनिंदा रचनाएँ, समकालीन चीनी कहानियाँ* (संपादन) आदि प्रमुख हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, भूमिका। **भाग एक** : परंपरा 1. आधुनिक समाज में साहित्य और उसके वास्तविक पाठक, 2. आधुनिक साहित्य में विचारात्मक संघर्ष और हाशिये का समाज, 3. स्वीकृत परंपराएँ और दलित अस्मिताओं का प्रतिरोध, 4. नए संघर्ष का चरित्र; **भाग दो** : अवधारणा 5. साहित्य में उत्तर-आधुनिक दलित-विमर्श, 6. दलित साहित्य की वैचारिक संरचना, 7. दलित पाठ : कुछ सवाल, 8. दलित साहित्य : एक उत्तर-आधुनिक विचार-विमर्श; **भाग तीन** : आत्मकथा 9. साहित्य में उत्कृष्टता और पवित्रता का सवाल, 10. कथा-आत्मकथा का एशियाई संदर्भ; **भाग चार** : कहानी 11. साहित्य में यथार्थ की उपस्थिति और दलित कहानी का यथार्थ-I, 12. साहित्य में यथार्थ की उपस्थिति और दलित कहानी का यथार्थ-II, 13. ज्ञान, संस्थान और दलित जीवन, 14. दलित कहानी की जमीन, 15. हाशिये की अवधारणा, दलित साहित्य और कहानी की दुनिया, 16. दलित मजदूर, हिंदी कहानी और आज का समाज; **भाग पाँच** : उपन्यास 17. हिंदी में उपन्यास लेखन की परंपरा और दलित उपन्यास का यथार्थ; **भाग छह** : कविता 18. दलित कविता का समाजशास्त्र; **भाग सात** : आलोचना 19. आलोचना का अर्थ और हिंदी की दलित आलोचना; **भाग आठ** : पत्रकारिता 20. हिंदी पत्रकारिता में दलित-विमर्श और बाबासाहेब अंबेडकर; उपसंहार 21. क्या दलित साहित्य हिंदी का नया पाठ है? परिशिष्ट I आधुनिक साहित्य में दलित-विमर्श का इतिहास, परिशिष्ट II संदर्भ-सूची। अनुक्रमणिका।

978 81 250 3791 0 2009 268 पृष्ठ ₹ 575.00

भाषा, साहित्य और संस्कृति

भाषा, साहित्य और संस्कृति की संकल्पनाओं की समझ की आवश्यकता तथा इनके अंतर्संबंधों के महत्त्व की उपयोगिता एक विद्यार्थी के लिए आज के सामाजिक परिवेश में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह विश्वविद्यालयों के स्नातक पाठ्यक्रम को दृष्टि में रखकर तैयार की गई है। प्रस्तुत पुस्तक में तीन खंड हैं - भाषा, साहित्य और संस्कृति। तीनों ही खंडों में विविध विषयों पर दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित व अनुभवी प्राध्यापकों तथा हिंदी विद्वानों के आलेख हैं जो भाषा, साहित्य व संस्कृति के विविध पक्षों की व्याख्या करते हैं। ये तीनों ही विषय इतने व्यापक और गंभीर हैं कि अलग-अलग पुस्तकों की अपेक्षा रखते हैं किंतु विद्यार्थियों के स्तर, पाठ्यक्रम के स्वरूप तथा पुस्तक की आकार सीमा को ध्यान में रखते हुए विषय के प्रमुख बिंदुओं तक ही सीमित रहने का प्रयत्न किया गया है।

पुस्तक के संपादक **विमलेश कांति वर्मा** पीजीडीएवी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में हिंदी के एसोसिएट प्रोफेसर रह चुके हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिंदी पढ़ाते रहे हैं। उनके द्वारा लिखित अनेक रचनाएँ और लेख विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वे अनेक पुस्तकों के रचयिता भी हैं।

मालती, हिंदी, संस्कृत, मराठी और रूसी भाषा की विशेषज्ञ हैं। उन्होंने कालिंदी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) से प्राचार्या के पद से अवकाश ग्रहण किया। दिल्ली की विभिन्न अकादमिक समितियों में उनका योगदान रहा। वे दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालयों की बोर्ड ऑफ स्टडीज़ की सदस्य भी रह चुकी हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें और लेख भी लिखे हैं।

विषयानुक्रम : भाषा खंड : 1. भाषा, साहित्य और संस्कृति; 2. भाषा और संप्रेषण; 3. भाषा महत्त्वपूर्ण क्यों है? 4. भाषा कैसे काम करती है? 5. भाषा और लेखन; 6. भाषा और समाज; 7. भाषा-वैविध्य; 8. भारत : एक बहुभाषा-भाषी देश; 9. भारतीय भाषाएँ और हिंदी : अंतर्संबंधों की व्याख्या; 10. भारतीय संविधान और हिंदी; 11. द्विभाषिकता और बहुभाषिकता; 12. प्राचीन भारतीय लिपियाँ और देवनागरी वर्णमाला। **भारतीय साहित्य : भाग 1** : 13. रामायण-बालि वध प्रसंग/ वाल्मीकि, 14. महाभारत : द्रोणाचार्य का अर्जुन को ब्रह्मास्त्र देना/ वेदव्यास, 15. सिलप्पदिकारम् : दुःख की लड़ी/ इलंगो अडिहल, 16. मृच्छकटिक-संधिछेद/ शूद्रक, 17. बहुत कठिन है डगर पनघट की/ अमीर खुसरो, 18. 'बाजी रची' और 'तुझ बिन क्यों'/ नामदेव, 19. संतो देखत जग बौराना/ कबीर, 20. काहे रे बन खोजन जाई/ नानक, 21. वाख/ ललद्यद, 22. वैष्णव जन तो तेने कहिये/ नरसी मेहता, 23. तू दयालु, दीन हौं/ तुलसीदास, 24. मेरे तो गिरधर गोपाल/ मीराबाई, 25. हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी/ असदुल्ला खान मिर्जा गालिब, 26. स्त्री-पुरुष तुलना/ ताराबाई शिंदे, 27. काबुलीवाला/ रवीन्द्रनाथ टैगोर, 28. शतरंज के खिलाड़ी/ प्रेमचंद, 29. 'स्वतंत्रता का पल्लु' और पत्र : परलि सु. नेल्लैयप्प पिल्लै को/ सुब्रह्मण्य भारती, 30. वेंकटशामी का प्रणय/ मस्ति वेंकटेश आयंगर, 31. विधवा/ गुडिपाटि वेंकटन चलम्, 32. हुस्न भी था उदास/ फिराक गोरखपुरी, 33. मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न मांग, फैज अहमद फैज, 34. अंधे की धन्यता/ तकषी शिवशंकर पिल्लै, 35. छुईमुई/ इस्मत चुगताई, 36. वारिस शाह से!/ अमृता प्रीतम, 37. राग दरबारी/ श्रीलाल शुक्ल, 38. कालाहांडी/ जगन्नाथ प्रसाद दास, 39. एक अविस्मरणीय यात्र/ इन्दिरा गोस्वामी, 40. जूठन/ ओमप्रकाश वाल्मीकि, 41. कोई अच्छा-सा लड़का/ विक्रम सेठ, 42. लोकगीत। **भारतीय साहित्य : एक परिचय भाग 2** : 43. वाचिक साहित्य, 44. प्राचीन संस्कृत साहित्य की विशेषताएँ, 45. प्राचीन तमिल साहित्य की विशेषताएँ, 46. साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन-1, 47. साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन-2, 48. भाषा और राष्ट्रीय आंदोलन, 49. भारतीय साहित्य। **संस्कृति खंड** 50. भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं हिन्दी भाषा, 51. भारतीय संस्कृति के मूल आधार, 52. संस्कृति व 'पापुलर कल्चर' : अर्थ और स्वरूप, 53. पापुलर कल्चर/एक नई अवधारणा, 54. मूल्यों की कसौटी पर संस्कृति और अपसंस्कृति : निजी स्वतंत्रता और सामाजिक मर्यादा के प्रश्न, 55. मीडिया, संस्कृति और भूंडलीकरण, 56. भूमंडलीकरण और संस्कृति।

978 81 250 3792 7 2009 464 पृष्ठ ₹ 460.00

कथा सरिता

कथा सरिता दस कहानियों का संकलन है। मनुष्य में कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति बहुत पुरानी है। कहानी एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विधा है। कहानी आकार में लघु होते हुए भी प्रभावात्मकता की दृष्टि से विशिष्ट होती है। यह संकलन स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड के प्रोफेसर जोगेंद्र सिंह बिसेन द्वारा संपादित है। इन कहानियों के माध्यम से छात्रों का कहानी तथा कहानी के विभिन्न आंदोलनों से परिचय होगा।

विषयानुक्रम : 1. बंग महिला श्रीमती राजेंद्रबाला घोष : दुलाईवाली, 2. चंद्रधर शर्मा गुलेरी : उसने कहा था, 3. प्रेमचंद : सद्गति, 4. जैनेंद्र कुमार : पत्नी, 5. फणीश्वरनाथ रेणु : तीसरी कसम, उर्फ मारे गए गुलफाम, 6. मुक्तिबोध : पक्षी और दीमक, 7. निर्मल वर्मा : परिंदे, 8. कमलेश्वर : राजा निरबंसिया, 9. शिवप्रसाद सिंह : रेती, 10. मैत्रेयी पुष्पा : फैसला।

978 81 250 3538 1 2008 140 पृष्ठ ₹ 95.00

गद्य सागर

गद्य सागर पुस्तक गद्य की विविध विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन है। इसे बी.ए. तथा बी.एस.सी. के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है।

आधुनिक गद्य एक सागर की तरह असीम रूप से फैला हुआ है। उसके अंतर में कई तरह के रत्न समाए हुए हैं। प्रस्तुत संकलन में उनमें से कुछ ही रत्न बानगी स्वरूप प्रस्तुत हैं।

विषयानुक्रम : 1. निबंध : यज्ञ (महात्मा गांधी); आचरण की सभ्यता (सरदार पूर्णसिंह)। 2. ललित निबंध : अभी-अभी हूँ, अभी नहीं (विद्यानिवास मिश्र); हेमंत की संध्या (कुबेरनाथ राय)। 3. व्यंग्य : उधार मांगना भी एक कला है (बरसाने लाल चतुर्वेदी); हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (शरद जोशी)। 4. रेखाचित्र : बैजू मामा (रामवृक्ष बेनीपुरी); रामकली (श्रीराम शर्मा)। 5. संस्मरण : निराला भाई (महादेवी वर्मा); मेरा हमदम, मेरा दोस्त कमलेश्वर (राजेंद्र यादव)। 6. एकांकी : पृथ्वीराज की आंखें (डॉ. रामकुमार वर्मा); मम्मी ठकुराइन (डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल)। परिशिष्ट : विधा, रचनाकार और रचना।

978 81 250 3537 4 2009 136 पृष्ठ ₹ 125.00

अनुवाद एवं भाषांतरण : पाठ और अभ्यास

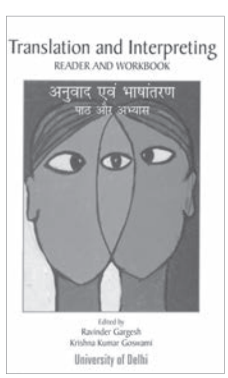

अनुवाद का महत्त्व तथा उसकी प्रासंगिकता हमारे दैनिक जीवन में गंभीरतर होती जा रही है। अतः विविध प्रकार के अनुवादों द्वारा प्रस्तुत संभावनाओं तथा चुनौतियों के प्रति जागरूकता वांछनीय है : चुनौतियाँ, द्विभाषिक तथा बहुसांस्कृतिक प्रसंगों में, भाषा-वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक अंतरों के रूप में प्रस्तुत हुई हैं। एक द्वि-भाषा पाठ्यपुस्तक के रूप में प्रस्तुत पुस्तक एक रीडर के साथ-साथ एक अभ्यास पुस्तिका भी है। इस रीडर में अनुवाद के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्षों से संबद्ध सामान्य समस्याओं तथा दृष्टिकोणों पर लेख अंग्रेज़ी और हिंदी, दोनों में दिए गए हैं। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य अनुवाद के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पहलुओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। पुस्तक दिल्ली विश्वविद्यालय के सद्यःनिर्धारित प्रोग्राम के एक व्यावहारिक पाठ्यक्रम के अनुरूप संरचित है।

रविंदर गर्गेश इस पुस्तक के संपादक मंडल के समन्वयक रहे हैं और वे दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग में अध्यापनरत हैं।

कृष्ण कुमार गोस्वामी प्रख्यात भाषाविद् हैं।

विषयानुक्रम : Hindi Reader 1. अनुवाद का स्वरूप और क्षेत्र, 2. अनुवाद के गुण एवं दायित्व 3. अनुवाद प्रक्रिया, 4. अनुवाद में पर्याय-निर्धारण, 5. अनुवाद के विविध रूप, 6. लिप्यंतरण, 7 अनुवाद : महत्त्व और प्रासंगिकता, 8. स्रोत भाषा बनाम लक्ष्य भाषा, 9. काव्यानुवाद की समस्याएँ, 10. कार्यालयी अनुवाद, 11. विज्ञापन की भाषा और उसका अनुवाद, 12. अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य, 13. मशीनी अनुवाद : भावनाएँ और सीमाएँ, 14. तत्काल भाषांतरण के विविध आयाम, 15. हिंदी-अंग्रेज़ी संरचना का अध्ययन, 16. प्रश्नावली।

English Reader

1. What is Translation?, 2. The Process of Translation, 3. The Qualities of a Translator, 4. Language Varieties in Translation, 5. On Equivalence (Text and Culture), 6. Types of Translation, 7. Transliteration, 8. The Significance and Relevance of Translation, 9. Translation of Poetry, 10. Translation Dynamics and Language Development with Special Reference to Hindi Translation, 11. Communication, Mass Media and the Challenges of Translation, 12. Translation and Advertisement, 13. Translating Advertisements : Some Problems, 14. Translation and Comparative Literature, 15. Machine Translation (Possibilities and Limitations), 16. Interpretation, 17. Study of the Structures of English and Hindi, 18. Discussion Points.

Workbook

1. Technical Terms/पारिभाषिक शब्दावली, 2. Phrases/वाक्यांश, 3. Idioms and Proverbs/ मुहावरे और लोकोक्तियाँ, 4. Sentence/वाक्य, 5. Translation/अनुवाद, 6. Oral Translation/ मौखिक अनुवाद, 7. One Text Many Translations/ मूल एक अनुवाद अनेक। Bibliography/संदर्भिका।

978 81 250 3207 6 2007 284 पृष्ठ ₹ 485.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

गद्यसुमन और काव्यामृत

गद्यसुमन और काव्यामृत संकलन सोलापुर विश्वविद्यालय के बी.ए. भाग एक के 'हिंदी ऐच्छिक' पाठ्यक्रम पर आधारित है। इसे यू.जी.सी. के निर्देशानुसार तैयार किया गया है। प्रस्तुत संकलन में गद्य-पद्य की विविध विधाओं का समावेश हुआ है तथा प्रतिष्ठित साहित्यकारों की प्रतिनिधि रचनाओं को स्थान दिया गया है। ये रचनाएँ विद्यार्थियों का भाषिक तथा साहित्यिक सौंदर्य से परिचय कराती हैं। प्रस्तुत संकलन विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता और उनके स्तर के अनुकूल है।

विषयानुक्रम : गद्यसुमन

1. प्रायश्चित / भगवतीचरण वर्मा, 2. शिवाजी का सच्चा रूप / सेठ गोविंददास, 3. नाखून क्यों बढ़ते हैं? / आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, 4. जीवन सार / प्रेमचंद, 5. जेल में विवाह / यशपाल, 6. रूपा की आजी / रामवृक्ष बेनीपुरी, 7. बैलगाड़ी से यात्रा / श्रीलाल शुक्ल।

काव्यामृत

1. कर्मवीर / अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', 2. एकता/ मैथिलीशरण गुप्त, 3. बीती विभावरी जाग री! / जयशंकर प्रसाद, 4. पुष्प की अभिलाषा / माखनलाल चतुर्वेदी, 5. ग्राम युवती / सुमित्रानंदन पंत, 6. वह तोड़ती पत्थर / सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', 7. जाग तुझको दूर जाना / महादेवी वर्मा, 8. यह दीप अकेला / अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), 9. बौनों की दुनिया / गिरिजा कुमार माथुर, 10. सिंदूर तिलकित भाल / नागार्जुन, 11. एक आशीर्वाद / दुष्यंत कुमार, 12. रोटी और संसद / धूमिल।

978 81 250 3373 8 2007 88 पृष्ठ ₹ 125.00

साहित्य सागर

साहित्य सागर संकलन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के हिंदी अभ्यास मंडल द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्धारित संकेतों को ध्यान में रखते हुए प्रथम वर्ष हिंदी की द्वितीय भाषा के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है। इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि यह पाठ्यपुस्तक अहिंदीभाषी और ग्रामीण परिक्षेत्र के स्तर के अनुकूल अधिक से अधिक छात्रों में राष्ट्रभाषा के प्रति रुचि जगाने वाली बन पड़े। कहानियों के चयन में ऐतिहासिक क्रम और साहित्यिक मूल्यों की जहाँ रक्षा करने की कोशिश की गई है, वहीं पद्य के क्षेत्र की अधुनातन काव्य लेखन की धाराओं से परिचित करवाते हुए बोझिलता और दुरूहता से बचने का प्रयास किया गया है।

विषयानुक्रम : गद्य विभाग 1. एक टोकरी भर मिट्टी / माधव राव सप्रे, 2. दुलाईवाली / बंग महिला श्रीमती राजेंद्रबाला घोष, 3. बड़े घर की बेटी / प्रेमचंद, 4. हार की जीत / सुदर्शन, 5. परदा / यशपाल, 6. इमाम साहब / नासिरा शर्मा, 7. खून का रिश्ता / भीष्म साहनी, 8. रसप्रिया / फणीश्वरनाथ रेणु, 9. बयान / कमलेश्वर, 10. बकुल! फिर आना : मालती जोशी, 11. भोलाराम का जीव / हरिशंकर परसाई, 12. नेलकटर / उदय प्रकाश। **पद्य विभाग** 1. मैथिलीशरण गुप्त : दोनों ओर प्रेम पलता है; प्रियतम! तुम श्रुति पथ से आये। 2. जयशंकर प्रसाद : ले चल वहाँ भुलावा देकर; आह! वेदना मिली विदाई। 3. माखनलाल चतुर्वेदी : बदरी थम-थमकर झर री; बेटी की विदा। 4. रामधारीसिंह दिनकर : जनता जगी हुई है; समर शेष है। 5. हरिवंशराय बच्चन : ओ पावस के पहले बादल; इस पार, उस पार। 6. भवानी प्रसाद मिश्र : नया तूर्य; कमल के फूल।

978 81 250 3262 5 2007 120 पृष्ठ ₹ 125.00

हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास

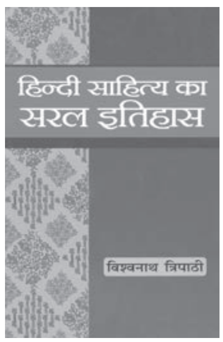

हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास में सरल और सुबोध भाषा में हिंदी साहित्य के इतिहास का अद्यावधि ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है। इतिहास के चार काल-खंडों के अलावा इसमें स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य की अलग से विवेचना की गई है, जिसमें हिंदी साहित्य पर हाल के वर्षों में भूमंडलीकरण, दलित-चेतना, नारी-चेतना, उत्तर-आधुनिकता जैसी अत्याधुनिक प्रवृत्तियों का प्रभाव परिलक्षित हुआ है। इसमें हर काल-खंड के प्रतिनिधि हिंदी रचनाकारों और उनकी प्रतिनिधि रचनाओं का सम्यक परिचय उपलब्ध है।

साहित्य और इतिहास का परस्पर संबंध विषय की विवेचना में कभी भी लेखक की दृष्टि से ओझल नहीं होता। विशेषकर मध्यकाल के साहित्य पर मध्यकालीन भारत के इतिहास से संबंधित नवीनतम जानकारी के आलोक में विचार किया गया है। पुस्तक की संक्षिप्तता इसकी विशिष्टता है जो पुस्तक को परीक्षोपयोगी भी बनाती है।

विश्वनाथ त्रिपाठी को हिंदी साहित्य और उसके इतिहास के अध्ययन एवं अध्यापन का लंबा अनुभव रहा है। प्रस्तुत पुस्तक इसका प्रमाण है। वे गोकुलचंद्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार, डॉ. रामविलास शर्मा सम्मान और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (साहित्य सम्मान) से सम्मानित हो चुके हैं।

विषयानुक्रम : आमुख; विषय-प्रवेश। 1. आदिकाल : सामाजिक स्थिति, सिद्ध कवि, नाथ कवि, जैन मतावलंबी कवि, वीरगाथा काव्य, वीरगाथाकाल के अन्य कवि, सामान्य विशेषताएँ। 2. भक्तिकाल : भक्ति के उदय का सामाजिक आधार, भक्ति की धाराएँ : विभिन्न संप्रदाय, सूफ़ी साधना, अन्य मत, भक्ति साहित्य के रूपात्मक स्रोत, निर्गुण काव्य : ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा या सूफ़ी काव्य-धारा, निर्गुण काव्य की सामान्य विशेषताएँ, राम-भक्ति धारा, कृष्ण-भक्ति धारा, अन्य कृष्ण-भक्त कवि, कृष्ण-भक्ति काव्य की विशेषताएँ, हिंदी भक्ति काव्य की विशेषताएँ। 3. रीतिकाल : सामान्य परिचय, रीतिकाल के प्रमुख कवियों का परिचय, रीति सिद्ध कवि, प्रमुख रीतिमुक्त कवि, रीतिकाल की सामान्य विशेषताएँ, रीतिकाल के आधुनिक अवशेष। 4. आधुनिक काल : पूर्वाभास, खड़ी बोली गद्य का विकास, भारतेंदु-युग का साहित्य, भारतेंदु-युग के प्रमुख रचनाकार, भारतेंदुयुगीन चेतना का विकास : द्विवेदी-युग, गांधी-युग का साहित्य : यथार्थ और स्वप्न की अभिव्यक्ति, प्रमुख आलोचक/ छायावाद/राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं शक्ति का काव्य/ छायावादोत्तर काव्य/प्रगतिशील काव्य। 5. स्वातंत्र्योतर हिंदी साहित्य : सामान्य परिचय, भूमंडलीकरण, दलित-चेतना, नारी-चेतना, उत्तर-आधुनिकता, इतिहास का अंत, प्रगतिशील काव्य-धारा, सहायक ग्रंथ।

978 81 250 3233 5 2007 196 पृष्ठ ₹ 275.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

योग

प्राणायाम

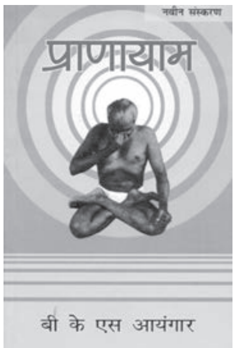

प्राणायाम श्वसन की यौगिक कला है जो संवेगों का नियंत्रण करके साधक को स्थिरता, एकाग्रता और मन की शांति प्रदान करती है—ऐसे गुण जिनका आज हमारे जीवन में अभाव है। प्राणायाम प्रत्येक योग के लिए आवश्यक है किंतु इसकी तकनीकों को जानना आसान नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक श्री आयंगार की अंग्रेज़ी पुस्तक *लाइट ऑन प्राणायाम* के हिंदी अनुवाद का नया संस्करण है। इसमें श्री आयंगार ने सरल और सुबोध भाषा में 200 चित्रों के माध्यम से प्राणायाम के 14 आधारभूत प्रकारों का पूर्णरूपेण और सविस्तार विश्लेषण किया है। इन चित्रों के आधार पर बिना प्रत्यक्ष गुरु के निर्देश के, प्राणायामों का अभ्यास किया जा सकता है।

इसमें प्राणायाम के सिद्धांत, कला और तकनीकों का विवेचन है तथा योग के विभिन्न पक्षों के साथ प्राणायाम का समन्वय दिखाया गया है। इसमें आत्म-विजय में सहायक ध्यान और शवासन की भी चर्चा की गई है। इसमें योग दर्शन की व्यापक भूमिका दी गई है और सहायक विषय नाड़ियाँ, चक्र एवं बीज मंत्र के बारे में भी विवेचन है।

उत्साही अभ्यासकों के लिए 82 श्रृंखलाबद्ध अवस्थाओं वाला 200 सप्ताहों का एक उत्कृष्ट और परिपूर्ण अभ्यासक्रम दिया गया है। इन अवस्थाओं को सरल संदर्भ के लिए तालिकाबद्ध कर दिया गया है। ये तालिकाएँ ही इस पुस्तक की विशिष्टता है। प्रस्तुत पुस्तक प्राणायाम पर पूर्ण और शिक्षाप्रद है तथा विश्वभर में एक व्यावहारिक निर्देशिका के रूप में प्रयोग की जा रही है।

बी. के. एस. आयंगार को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

मराठी, तमिल, तेलुगु में भी उपलब्ध

978 81 250 3645 6 **352 पृष्ठ** **₹ 575.00**

महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों पर आलोक-भाष्य

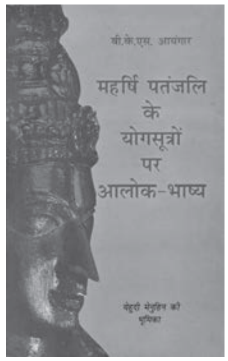

इस अद्भुत संस्करण में योग के विश्व-भर में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक बी.के.एस. आयंगार का (योग-) सूत्रों का अनुवाद और भाष्य सम्मिलित है। विषय के प्रति अपने विवेक तथा अनुभव की संपदा से उन्होंने पाठकों को समृद्ध किया है। परिणामतः भारतीय दर्शन के विद्यार्थी तथा योग के अभ्यासियों के लिए यह ग्रंथ सहायक, उपगम्य और अपार मूल्य का है।

महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों पर आलोक भाष्य श्री आयंगार की प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक *लाइट ऑन दि योग-सूत्राज़* का उत्कृष्ट हिंदी रूपांतर है। आज जितने भी प्रकार के योग चलन में हैं, वे सब 'योगसूत्र' पर आधारित हैं। 'योगसूत्र' दो हज़ार वर्ष से भी पहले विद्यमान एक भारतीय मुनि पतंजलि द्वारा निर्मित सूत्रों का संग्रह है और आज भी एक प्रामाणिक ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठित है। ये सूत्र सबसे प्राचीन हैं और आज भी परिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक हैं, जिनमें मानव-चिति तथा मानव-चैतन्य का अध्ययन है। इनमें पतंजलि मानव-अस्तित्व की पहेली का वर्णन करते हैं। वे बताते हैं कि योगाभ्यास के द्वारा हम स्वयं का रूपांतरण कैसे करें, मन और भाव पर स्वामित्व कैसे प्राप्त करें और आध्यात्मिक विकास में आने वाले विघ्नों पर कैसे विजय प्राप्त करें। इस प्रकार हमें योग के लक्ष्य 'कैवल्य' को प्राप्त करना है। सांसारिक इच्छाओं तथा कर्मों के बंधन से मुक्ति तथा परमात्मा से युक्ति (योग-मिलन) ही कैवल्य है।

बी. के. एस. आयंगार 1936 से योग के एक प्रखर और प्रभावशाली गुरु रहे हैं। 1952 में येहुदी मेनुहिन जैसे मनीषी उनके शिष्य बने और तबसे श्री आयंगार पाश्चात्य जगत् में कीर्ति के शिखर पर पहुँच गए। इंग्लैंड, जर्मनी, केनिया तथा अन्य देशों में श्री आयंगार नियमित रूप से जाते हैं, उनके प्रमुख शिष्यों में स्वर्गीय महारानी एलिजाबेथ (बेल्जियम), क्लिफर्ड, कर्जन, कृष्णमूर्ति तथा डॉ. जी.एस. पाठक जैसे महामना हैं।

विषयानुक्रम : दो शब्द (येहुदी मेनुहिन); महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों की सूची; प्रस्तावना; **परिचय** : समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद **योगसूत्र** : समाधिवाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद; **उपसंहार** परिशिष्ट 1 : योगसूत्रों का विषयशः क्रम परिशिष्ट 2 : सूत्रों की अंतरबद्धता; परिशिष्ट 3 : सूत्रों की कोशक्रमशः सूची; परिशिष्ट 4 : संक्षेप में योग; तालिका एवं चित्र सूची।

978 81 250 1722 6 **416 पृष्ठ** **₹ 225.00**

योगदीपिका

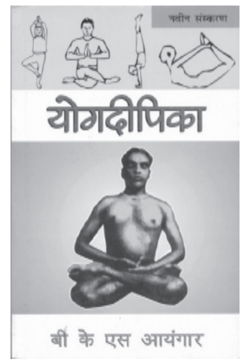

इस पुस्तक में 200 से भी अधिक आसनों और 14 प्राणायाम प्रकारों का विस्तृत विवेचन है। लगभग 600 चित्र हैं, जिनके आधार पर बिना प्रत्यक्ष गुरु के निर्देश के आसनों और प्राणायामों का अभ्यास किया जा सकता है। इनमें से अधिकतर आसनों के चित्र इससे पहले कहीं किसी पुस्तक में उपलब्ध नहीं हैं। नाड़ी, चक्र, कुंडलिनी के विवेचन के साथ-साथ जहाँ-तहाँ विभिन्न आसनों, प्राणायामों आदि की व्याख्याएँ पतंजलि के आधार पर की गई है। परिशिष्ट में उन-उन रोगों के निवारक व्यायाम- प्रकारों का निर्देश तो किया ही गया है, साथ ही साथ उत्साही अभ्यासकों के लिए 300 सप्ताहों का एक उत्कृष्ट और परिपूर्ण अभ्यासक्रम निर्धारित किया गया है।

बी. के. एस. आयंगार 1936 से योग के एक प्रखर और प्रभावशाली गुरु थे। 1952 में येहुदी मेनुहिन जैसे मनीषी उनके शिष्य बने और तबसे श्री आयंगार पाश्चात्य जगत् में कीर्ति के शिखर पर पहुँच गए। इंग्लैंड, जर्मनी, केनिया तथा अन्य देशों में श्री आयंगार नियमित रूप से जाते हैं, उनके प्रमुख शिष्यों में स्वर्गीय महारानी एलिजाबेथ (बेल्जियम), क्लिफर्ड, कर्जन, कृष्णमूर्ति तथा डॉ. जी.एस. पाठक जैसे महामना हैं। बी.के.एस. आयंगार को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

मराठी, तमिल, तेलुगु में भी उपलब्ध

978 81 250 3644 9 **400 पृष्ठ** **₹ 550.00**

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

राजनीति विज्ञान

भारतीय राजव्यवस्था (छठा संस्करण)

यह पाठ्यपुस्तक संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) एवं विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों की सिविल सेवा परीक्षा (प्रारंभिक एवं मुख्य) के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसके अतिरिक्त यह पाठ्यपुस्तक स्नातक एवं परास्नातक के उन विद्यार्थियों के लिए भी अत्यधिक उपयोगी है, जो भारतीय संविधान एवं शासन प्रणाली को सरल एवं सटीक रूप में समझना चाहते हैं। इस पुस्तक में दी गई नवीनतम जानकारी इसे इस विषय की एक परिपूर्ण पुस्तक बनाती है।

राजेश मिश्रा, मेवाड़ विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की मानद उपाधि से सम्मानित हैं एवं वर्तमान में दिल्ली स्थित सरस्वती आई.ए.एस. संस्थान के निदेशक हैं। वे पिछले 24 वर्षों से राजनीति विज्ञान का अध्यापन कर रहे हैं। उनकी लेखन में गहरी रुचि रही है। उनके द्वारा लिखित अन्य पुस्तकों में *भारतीय विदेश नीति* और *राजनीति विज्ञान : एक समग्र अध्ययन* शामिल हैं।

विषयानुक्रम : आभार, भूमिका। भाग-1 भारतीय संविधान का ऐतिहासिक आधार; **भाग-2** भारतीय संविधान की विशेषताएं; **भाग-3** संघ एवं राज्यों के कार्य एवं उत्तरदायित्व; **भाग-4** संवैधानिक ढांचा; **भाग-5** संघ सरकार की संरचना, संगठन एवं प्रकार्य; **भाग-6** न्यायपालिका की संरचना एवं कार्य;

भाग-7 राज्य सरकार; **भाग-8** संवैधानिक निकाय; **भाग-9** सांविधिक निकाय; **भाग-10** अन्य संवैधानिक उपबंध; **भाग-11** मंत्रालय एवं दबाव समूह; **भाग-12** भारतीय संवैधानिक योजना की अन्य देशों की संवैधानिक योजनाओं के साथ तुलना; **भाग-13** शासन; **भाग-14** वर्तमान राजनीतिक मुद्दे।

978 93 5442 644 5 2024 632 पृष्ठ ₹ 699.00

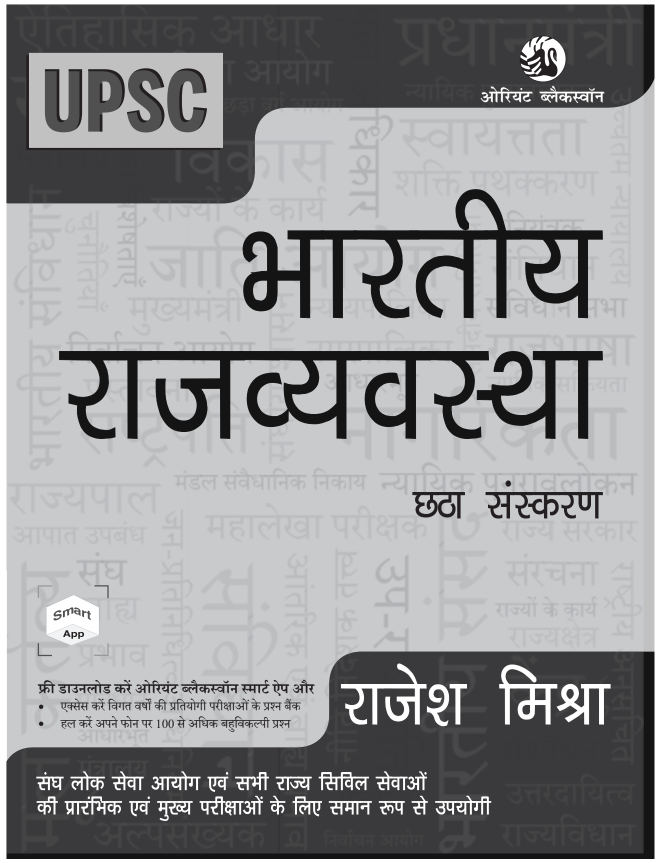

राजनीति सिद्धांत : अवधारणाएँ और विमर्श

राजनीतिक सिद्धांत हमें मानवीय अस्तित्व तथा सामूहिक जीवन से जुड़े प्रश्नों के बारे में तर्कसंगत ढंग से सोचने और समझने के लिए प्रेरित करते हैं। पारंपरिक रूप से राजनीतिक सिद्धांत का संबंध स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार, नागरिकता आदि जैसे महत्त्वपूर्ण विचार, अवधारणाओं एवं उनके बीच संबंधों की बेहतर समझ को विकसित करने से रहा है। चूंकि राजनीति के सिद्धांत पर वैचारिक प्रवचनों का प्राचीन ग्रीक काल से लेकर समकालीन समय तक गहरा विरोध रहा है, इस पुस्तक में 'शास्त्रीय और समकालीन अध्ययन' के परिप्रेक्ष्य में इन अवधारणाओं की प्रतिस्पर्धी समझ, औचित्य एवं महत्त्व को दर्शाया गया है।

राजनीति सिद्धांत : अवधारणाएँ एवं विमर्श पुस्तक एनईपी के नवीनतम स्नातक पाठ्यक्रम के अनुरूप लिखी गई है। यह स्नातकोत्तर छात्रों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक को लिखने के क्रम में इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है कि अमूर्त अवधारणाओं को सरल, हिंदी भाषा में उचित उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया जाए। यह पुस्तक पाठकों को न केवल राजनीतिक सिद्धांत की मूल अवधारणाओं से बल्कि महत्त्वपूर्ण समकालीन बहसों से भी परिचित कराने में सहायक होगी। पुस्तक सामाजिक और राजनीतिक प्रथाओं के महत्त्वपूर्ण और चिंतनशील विश्लेषण और व्याख्या पर केंद्रित है और स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार, लोकतंत्र जैसी अवधारणाओं की जटिल समझ को एक स्पष्ट और बोधगम्य परिचय प्रदान करती है।

संजीव कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, राजनीति विज्ञान विभाग में प्रोफेसर हैं। वे पिछले 18 वर्षों से राजनीति सिद्धांत, भारतीय राजनीतिक चिंतन, पश्चिमी राजनीतिक दर्शन जैसे विषयों को पढ़ा रहे हैं। उनके लेख कई पुस्तकों और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। उन्होंने *गांधी एंड दि कंटेम्परेरी वर्ल्ड* पुस्तक का संपादन किया है।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना। **इकाई 1 — 1. स्वतंत्रता** प्रस्तावना; नकारात्मक और सकारात्मक स्वतंत्रता; सकारात्मक स्वतंत्रता की विवेचना; जे.एस. मिल के विचार; समानता के एक आयाम के रूप में स्वतंत्रता : रोनाल्ड ड्वॉर्किन की व्याख्या; व्यक्तिगत स्वायत्तता का

सिद्धांत क्या है?; व्यक्तिगत स्वायत्तता का सामाजिक महत्त्व : जोसफ राज का सिद्धांत; आलोचना। **2. स्वतंत्रता, सशक्तिकरण और स्वराज** प्रस्तावना, स्वतंत्रता पर दृष्टिकोण; स्वराज; महात्मा गांधी की स्वराज की अवधारणा; स्वराज के स्तंभ। **3. भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार** प्रस्तावना; उदारवादी-लोकतांत्रिक मूल्यों में भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता; अभिव्यक्ति और भाषण की स्वतंत्रता पर जॉन स्टुअर्ट मिल के विचार; भारतीय संविधान और भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार; मीडिया और भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार; भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता : तार्किक सीमाएं और प्रासंगिकता; द्वेष अथवा घृणित भाषण और अभिव्यक्ति और भाषण की स्वतंत्रता। **इकाई 2 — 4. समानता** प्रस्तावना; समानता की अवधारणा का विकास; अरस्तू और प्राचीन यूनान में समानता की समझ; थॉमस हॉब्स और प्राकृतिक समानता; रूसो के विचार में सामाजिकता और असमानता में संबंध; कार्ल मार्क्स एवं समानता की मार्क्सवादी समझ; अलेक्सी डे टॉक्विल के विचारों में लोकतंत्र और समानता के संबंध; समानता की आवश्यकता क्यों?; वितरणात्मक समानता किन बातों पर आधारित होनी चाहिए?; भारत में सकारात्मक कार्यवाही। **5. समतावाद** स्वतंत्रता पर दृष्टिकोण; मुक्ति के रूप में स्वतंत्रता; मुक्तिदायी आदर्शों के रूप में स्वतंत्रता; मुक्ति की मार्क्सवादी अवधारणा; स्वराज; स्वराज और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन; महात्मा गांधी की स्वराज की अवधारणा; व्यक्ति में स्वराज; अर्थव्यवस्था में स्वराज; स्वराज के स्तंभ। **6. सकारात्मक कार्यवाही** प्रस्तावना; सकारात्मक कार्यवाही और भेदभाव; हमें सकारात्मक कार्यवाही की नीतियों पर नैतिक पक्ष की आवश्यकता क्यों है?; समानता और सकारात्मक कार्यवाही; अवसर की समानता और सकारात्मक कार्यवाही; न्याय और सकारात्मक कार्यवाही। **इकाई 3 — 7. न्याय** प्रस्तावना; न्याय की अवधारणा; रॉल्स का न्याय का सिद्धांत; विशेष पूर्वताक्रम; रॉल्स के न्याय के सिद्धांत के आगे तथा आलोचनात्मक प्रतिक्रिया; समुदायवादी समीक्षा; रॉबर्ट नोजिक; वैश्विक न्याय और पोगे की आलोचना; नारीवादी समीक्षा; मार्क्सवादी समीक्षा। **8. वैश्विक न्याय** प्रस्तावना; जॉन रॉल्स : दि लॉ ऑफ पीपल्स; विश्ववाद और वैश्विक न्याय; वैश्विक न्याय की समस्याएं : समतावाद और प्रभुसत्ता; वैश्विक न्याय की समकालीन प्रासंगिकता। **9. राजनीतिक बाध्यता** प्रस्तावना; राजनीतिक बाध्यता की अवधारणा; ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में राजनीतिक बाध्यता; सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत; सहमति का सिद्धांत; उपयोगितावादी सिद्धांत; प्राकृतिक कर्तव्य का सिद्धांत; राजनीतिक बाध्यता का निष्पक्षता का सिद्धांत; कृतज्ञता का सिद्धांत; राजनीतिक बाध्यता का सदस्यता और संस्थानों का सिद्धांत; राजनीतिक अराजकता; राजनीतिक बाध्यता और राजनीतिक अवज्ञा; समसामयिक विमर्श : राजनीतिक बाध्यता के सिद्धांतों की बहुलता; राजनीतिक बाध्यता की अवधारणा का आलोचनात्मक अध्ययन। **इकाई 4 — 10. अधिकार** प्रस्तावना; अधिकार का विचार; अधिकार : ऐतिहासिक मूल्यांकन; समसामयिक विमर्श; नागरिक अधिकार तथा राजनीतिक अधिकार; कानूनी अधिकारों का सिद्धांत; कानूनी अधिकारों का अवधारणात्मक अध्ययन; कानूनी अधिकारों का अधिकारी कौन हो सकता है?; नैतिक अधिकारों का सिद्धांत; मानव अधिकार; अधिकार एवं कर्तव्य। **11. मानवाधिकार : सार्वभौमिकता बनाम सांस्कृतिक सापेक्षवाद** भूमिका; मानवाधिकारों की सैद्धांतिक समझ; मानवाधिकारों का उदभव् एवं ऐतिहासिक संदर्भ; मानवाधिकारों की उत्पत्ति के तीन चरण; क्या मानवाधिकार सार्वभौमिक हैं?; **12. नागरिकता** प्रस्तावना; नागरिकता की समझ; नागरिकता की अवधारणा का उद्भव एवं विकास; नागरिकता की रोमन अवधारणा; उदारवादी नागरिकता : सार्वभौमिक नागरिकता और अधिकार; 20वीं शताब्दी में नागरिकता की संकल्पना; नागरिकता और समकालीन चुनौतियाँ। **13. बहुसंस्कृतिवाद** प्रस्तावना; बहुसंस्कृतिवाद की अवधारणा; बहुसंस्कृतिवाद क्या है?; बहुसंस्कृतिवाद एवं विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण; आइरिस मैरियन यंग : विभेदीकृत नागरिकता एवं अधिकार; अंतर (विभेद) की राजनीति और समूह अधिकार; विभेदीकृत नागरिकता; विल किमलिका : सांस्कृतिक अधिकारों का उदारवादी सिद्धांत; विल किमलिका : समूह विभेदीकृत अधिकार; गुरप्रीत महाजन : विविधता, बहुलता एवं भेदभाव; बहुसंस्कृतिवाद की आलोचना; भीखू पारेख : गैर-पश्चिमी बहुसंस्कृतिवाद; ब्रयान बैरी : समतावादी उदारवाद। **इकाई 5 — 14. राज्य** प्रस्तावना; आदर्शवादी दृष्टिकोण; प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण; संगठनात्मक दृष्टिकोण; अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण; राज्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; बहुलवादी राज्य; पूँजीवादी राज्य; लेवियाथन राज्य; पितृसत्तात्मक राज्य; राज्य के प्रमुख सिद्धांत; उदारवादी दृष्टिकोण; मार्क्सवादी दृष्टिकोण; गांधीवादी दृष्टिकोण; राज्य की भूमिका; मौजूदा परिदृश्य में राज्य। **15. लोकतंत्र** प्रस्तावना; लोकतंत्र की अवधारणा; लोकतंत्र का इतिहास; आधुनिक लोकतंत्र : प्रक्रियात्मक लोकतंत्र का विचार; प्रतिनिधित्व और भागीदारी; सहभागिता लोकतंत्र; विमर्शी लोकतंत्र; विमर्शी लोकतंत्र की चुनौतियाँ। **16. शक्ति** प्रस्तावना; शक्ति का शास्त्रीय आयाम; शक्ति की अभिकरण अवधारणा; उत्तर-संरचनावादी- फूको। **17. जेंडर** प्रस्तावना; सेक्स/जेंडर-नारीवादी अध्ययन; उदार नारीवाद और जेंडर; जेंडर के उदार विचार को चुनौती : उग्र नारीवाद; उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण; जेंडर और अन्य अस्मिताएं। अनुक्रमणिका।

978 93 5442 521 9 2023 256 पृष्ठ ₹ 365.00

आपके कानून आपके अधिकार

यह पुस्तक दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान के 'आपके कानून आपके अधिकार' पेपर के अनुसार तैयार की गई है। यह पुस्तक लॉ के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। लोकतांत्रिक समाज के लिए कानून एक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य पहलू है जिसमें राज्य द्वारा स्वतंत्रता, समानता और मानवीय गरिमा की सुरक्षा का आश्वासन दिया जाता है। कानून अधिकारों और कर्तव्यों का स्रोत होते हैं। यह पाठ्यपुस्तक मुख्य रूप से भारत के कानून और आपराधिक न्याय प्रणाली से संबंधित है, जिसमें लिंग, जाति, वर्ग और विकलांगता के आधार पर होने वाले भेदभाव को रोकना और उनका सशक्तीकरण, समान अवसर, सूचना का अधिकार, उपभोक्ता अधिकार संरक्षण एवं ग्रामीण रोज़गार गारंटी जैसे मुद्दों को भी संबोधित किया गया है। डिजिटलीकरण के माध्यम से आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने की प्रक्रिया के साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना और राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना जैसी कई सरकारी योजनाओं की जानकारी भी पाठ्यपुस्तक में शामिल है। पुस्तक में जो विषय सम्मिलित किए गए हैं, वे हैं : कानून का शासन और भारतीय न्यायिक व्यवस्था; आपराधिक न्याय प्रशासन से संबंधित कानून; सहभागिता और अवसर की समानता; विकलांगजन : कानून व अधिकार; सूचना का अधिकार; उपभोक्ता के अधिकार; वन आदिवासी और जनजातीय अधिकार; ग्रामीण रोज़गार गारंटी; एवं सामाजिक सुरक्षा और पहचान दस्तावेजों तक पहुँच। पुस्तक में कानूनों में बदलाव संबंधी नवीनतम सूचनाओं को भी शामिल किया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पारिभाषिक शब्दावली और प्रश्न बैंक भी दिए गए हैं।

सीमा माथुर राजनीति विज्ञान में पीएच.डी. हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज में राजनीति विज्ञान विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

एन. सुकुमार राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना, प्राक्कथन, आभार, संकेताक्षर, पारिभाषिक शब्दावली। **1. कानून का शासन और भारतीय न्यायिक व्यवस्था** परिचय; कानून का शासन : कानून का शासन और भारतीय संविधान; भारतीय आपराधिक न्याय व्यवस्था; आपराधिक न्याय प्रणाली के घटक। भारतीय न्यायिक व्यवस्था : सर्वोच्च न्यायालय; सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना; सर्वोच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र; सर्वोच्च न्यायालय और न्यायिक पुनर्विलोकन; उच्च न्यायालय; अधीनस्थ न्यायालय। न्यायालयों पर बढ़ता बोझ और वैकल्पिक न्याय व्यवस्था : न्यायाधिकरण; लोक अदालतें; न्याय पंचायत; परिवार न्यायालय; रात्रि अदालतें; मोबाइल कोर्ट; फास्ट ट्रैक कोर्ट; स्पेशल कोर्ट; निष्कर्ष। **2. आपराधिक न्याय प्रशासन से संबंधित कानून** आपराधिक न्याय प्रणाली : अर्थ एवं उद्देश्य; अपराध; आपराधिक न्याय प्रक्रिया : मुख्य विशेषताएं; प्रथम सूचना रिपोर्ट। आपराधिक न्याय प्रशासन में पुलिस की भूमिका : शिकायत; जांच-पड़ताल; सुनवाई; गिरफ़्तारी; जमानत; सजा; निष्कर्ष। **3. लिंग, जाति, वर्ग आधारित भेदभाव और समानता** जेंडर : घरेलू हिंसा, बलात्कार तथा यौन उत्पीड़न के ख़िलाफ महिलाओं का संरक्षण; घरेलू हिंसा; विवाह संबंधी अपराध; बालिकाओं पर होने वाले अत्याचार; महिलाओं तथा बालिकाओं का व्यापार; बलात्कार; कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न; कानूनी सुरक्षा; जाति : अस्पृश्यता निषेध कानून और अत्याचार के विरुद्ध संरक्षण; दलितों को संवैधानिक संरक्षण; छुआछूत का अंत तथा अत्याचारों के खिलाफ संरक्षण; अनुसूचित जाति व जनजाति (अत्याचारों की रोकथाम) अधिनियम, 1989; संवैधानिक संरक्षण : कितने प्रभावी; वर्ग : न्यूनतम मजदूरी संबंधी विधियां; भारत में श्रम संबंधी कानून; स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की स्थिति; न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948; श्रमिक संघ कानून, 1926; भारत में सामाजिक सुरक्षा; बालश्रम और संविधान; बालश्रम प्रथा उन्मूलन हेतु सरकार द्वारा अपनाए गए उपाय; निष्कर्ष। **4. विकलांगता : भागीदारी एवं अवसर की समानता** भूमिका; विकलांग विमर्श के प्रमुख सिद्धांत : विकलांगता का चिकित्सीय सिद्धांत; विकलांगता का समाजवादी सिद्धांत; विकलांगजन और भारतीय कानून : 1. विक्षिप्तता अधिनियम, 1912; 2. मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 1987; 3. भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम, 1992; 4. निःशक्तजन अधिनियम, 1995; 5. राष्ट्रीय न्यास कानून, 1999; 6. विकलांगजन नीति 2006; 7. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016; विकलांगजन और उनकी कानूनी परिभाषा; विकलांगता संबंधी शब्दावली और उस पर बहस; विकलांगजन और भारत में जनगणना; विकलांगता प्रमाण पत्र; विकलांगजन और आरक्षण नीति; निष्कर्ष। **5. सशक्तिकरण : सूचना का अधिकार** सूचना का अधिकार : वैश्विक परिदृश्य; भारतीय परिदृश्य; सूचना का अधिकार 2005; सूचना का अधिकार : आशय; सूचना का अधिकार : अधिकार क्षेत्र एवं व्यापकता; सूचना का अधिकार : गैर-सरकारी संगठन; सूचना हेतु आवेदन प्रक्रिया; सूचना प्राप्ति की अवधि; सूचना आवेदन निरस्त होने के कारण; सूचना का अधिकार : अपील

तथा शिकायत की व्यवस्थाएँ; सूचना का अधिकार : व्यावहारिक अनुभव; सूचना का अधिकार : लोकतांत्रिक शासन के उपकरण के रूप में; सूचना का अधिकार : कार्यान्वयन में बाधाएं; सूचना का अधिकार (संशोधन) विधेयक, 2019; निष्कर्ष। **6. उपभोक्ता अधिकार** उपभोक्ता संरक्षण आंदोलन; उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 : उपभोक्ता संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 15 मार्च, 2013; उपभोक्ता संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2019; उपभोक्ता की परिभाषा; वस्तुएं की परिभाषा; सेवाएं की परिभाषा; उपभोक्ताओं के अधिकार; शिकायतकर्ता और शिकायतें; उपभोक्ता विवाद निवारण एजेंसी; उपभोक्ता सुरक्षा परिषद; जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (जिला आयोग); राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (राज्य आयोग); राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (राष्ट्रीय आयोग); उपभोक्ता शिकायत निवारण प्रक्रिया; शिकायत दर्ज करने का तरीका; उपभोक्ताओं को उपलब्ध राहत; निष्कर्ष। **7. वनवासी और जनजातीय अधिकार** वनवासी और आदिवासी जनजातियां परिभाषा; भारत में वनवासी और जनजातियां : प्रकार; आदिम जातियां; वनवासी और जनजातियों के अधिकार : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; संवैधानिक और संस्थागत वनवासी और जनजातीय अधिकार; संस्थागत प्रबंध; प्रावधान (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम, 1996 (पेसा); राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिकरण; पैरा विधिक स्वयंसेवक; अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989; जनजातीय कार्य मंत्रालय; राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग; राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति फाउंडेशन और विकास निगम; वन अधिकार कानून, 2006; वनवासी और आदिवासी जनजातियों की समस्याएं; आदिवासी महिलाओं के संपत्ति अधिकार; निष्कर्ष। **8. ग्रामीण रोज़गार गारंटी** परिचय; ग्रामीण जनशक्ति कार्यक्रम : सूखा प्रभावित क्षेत्र विकास परियोजना; काम के बदले अनाज कार्यक्रम; ट्राइसेम; राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम; ग्रामीण भूमिहीन रोज़गार गारंटी; जवाहर रोज़गार योजना; रोज़गार आश्वासन योजना; जवाहर ग्राम समृद्धि योजना; स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोज़गार योजना; संपूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना; नेशनल फूड फॉर वर्क प्रोग्राम; राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना; ग्रामीण स्वयं रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान; ग्रामीण रोज़गार सृजन कार्यक्रम; प्रधानमंत्री श्रम पुरस्कार योजना; महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (मनरेगा); अधिनियम के प्रमुख प्रावधान; उपलब्धियां; मनरेगा की आलोचना; निष्कर्ष। **9. सामाजिक सुरक्षा और पहचान दस्तावेजों तक पहुंच** सामाजिक सुरक्षा योजनाएं : राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विकलांगता पेंशन योजना; राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना; अन्नपूर्णा योजना; राष्ट्रीय मातृत्व लाभ परियोजना; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना; एकीकृत वृद्धजन कार्यक्रम; राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना; पहचान संबंधी दस्तावेज : मतदाता पहचान पत्र; मतदाता पहचान पत्र के लिए आवेदन प्रक्रिया; आधार कार्ड; ड्राइविंग लाइसेंस; पैन कार्ड; राशन कार्ड; निष्कर्ष। संदर्भ ग्रंथ सूची, महत्त्वपूर्ण प्रश्न, अनुक्रमणिका।

978 93 5442 013 9 2021 240 पृष्ठ ₹ 395.00

समकालीन राजनीतिक सिद्धांत

समकालीन राजनीतिक सिद्धांत दो दशकों से अधिक वर्षों के अध्ययन एवं अध्यापन का प्रतिफल है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तरों के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी भाषा में इस तरह की पुस्तक की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। यह पुस्तक इस कमी को पूरा करने का एक सफल प्रयास है। भाषा की सरलता और विचारों की स्पष्टता इस पुस्तक की विशेषताएँ हैं। विषयवस्तु को विद्यार्थियों के अनुकूल अद्यतन बनाने का भरसक प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों से लेकर अंतिम दशकों तक की अवधि में विकसित और चर्चित सिद्धांतों एवं विचारधाराओं को समेटने का प्रयास किया गया है। इसमें व्यवहारवाद और उत्तर-व्यवहारवाद, राजनीतिक सिद्धांत का पतन और उसका पुनरुत्थान सहित विचारधारा का अंत, उत्तर-आधुनिकता, नारीवाद, पारिस्थितिकीवाद, सामुदायिकवाद, बहुसंस्कृतिवाद और इतिहास का अंत जैसे नए विषयों का समावेश किया गया है। इसी प्रकार मार्क्सवादी सिद्धांत में मार्क्स, लेनिन और माओ त्से-तुंग के साथ-साथ ग्राम्शी, सार्त्र और अल्थूसर जैसे नव-मार्क्सवादी विचारकों पर भी चर्चा की गई है। ऐसा विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए श्रेष्ठ रूप से उपयोगी सिद्ध होगी तथा राजनीतिक सिद्धांत की परंपरा और उसकी विविधता से उनका परिचय हो सकेगा।

करुणेश प्रताप मिश्र राजनीति विज्ञान के गहरे अध्येता हैं। राजनीतिक सिद्धांत और दर्शन उनकी विशेष रुचि के क्षेत्र हैं। उन्होंने 'फ्रांसीसी मार्क्सवाद' पर शोध कार्य किया है। उनके अनेक लेख सामाजिक विज्ञान की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की दो लघु शोध परियोजनाओं को भी पूरा किया है। तथ्यों की प्रामाणिक प्रस्तुति, अवधारणाओं का स्पष्टता के साथ विश्लेषण और भाषा की सहजता उनके लेखन की विशेषताएँ हैं। संप्रति वे शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कटनी (मध्य प्रदेश) में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन एवं आभार। 1. विषय-प्रवेश 2[I]. **राजनीतिक सिद्धांत : अर्थ, प्रकृति एवं महत्त्व** राजनीतिक क्या है?; सिद्धांत का अर्थ; राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ; राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक विचारधारा; राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति; आदर्शात्मक राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति; राजनीतिक सिद्धांत का महत्त्व। 2[II]. **शास्त्रीय परंपरा का महत्त्व और उसकी व्याख्या की समस्या** शास्त्रीय परंपरा का महत्त्व : हम शास्त्रीय ग्रंथों को क्यों पढ़ते हैं?; शास्त्रीय ग्रंथ : अर्थ की व्याख्या यानी 'इंटरप्रेटेशन' की समस्या। 3. **व्यवहारवाद एवं उत्तर-व्यवहारवाद** व्यवहारवाद; व्यवहारवाद का अर्थ; व्यवहारवाद के पूर्व राजनीति विज्ञान विषय की स्थिति; आर.एफ. बेंटले का योगदान; ग्राहम वालास का योगदान; व्यवहारवाद की मूल मान्यताएँ; व्यवहारवाद : उपलब्धियाँ, व्यवहारवाद : सीमाएँ; उत्तर-व्यवहारवाद। 4. **राजनीतिक सिद्धांत का पतन** डेविड ईस्टन के विचार; तथ्य और मूल्य; नैतिक सापेक्षवाद; ऐतिहासिक परिस्थितियाँ; अल्फ्रेड कोबाँ के विचार; राजनीतिक सिद्धांत के पतन के बाह्य कारण; लोकतंत्र का सैद्धांतिक संकट; राजनीतिक सिद्धांत के पतन के आंतरिक कारण; दांते जरमीनो के विचार; सिद्धांत का अर्थ; ट्रेसी और विचारधारा; अगस्त कॉम्ते का प्रत्यक्षवाद; तार्किक प्रत्यक्षवाद; विचारधारात्मक अवसानवाद की पराकाष्ठा : कार्ल मार्क्स; मानव-प्रकृति पर मार्क्स के विचार; सिद्धांत और व्यवहार की एकता; धर्म और दर्शन वास्तविक नहीं भ्रम हैं; विचारधारा, वैज्ञानिकता पर बल। 5. **राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान** लियो स्ट्रॉस; माइकेल ऑकशॉट; एरिक वोगेलिन; बरट्रेंड डि जोवेनेल; राज्य की शक्ति-विस्तार की आलोचना; सामान्य शुभ की अवधारणा; राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति; राजनीतिक सिद्धांत के पहलू; हन्ना एरेंट; श्रम, कार्य और क्रिया; सार्वजनिक और निजी क्षेत्र; क्रिया का सिद्धांत; परंपरागत राजनीतिक चिंतन की आलोचना; वैज्ञानिक पद्धति की आलोचना; आधुनिकता के संकटों की पहचान; इसायाह बर्लिन; जॉन रॉल्स; रॉल्स का न्याय सिद्धांत। 6. **विचारधारा का अंत** एडवर्ड शिल्स के विचार; रेमंड एरन के तर्क; एस.एम. लिपसेट के विचार; डेनियल बेल के विचार; आलोचनाएँ। **7. मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्धांत** (I) शास्त्रीय मार्क्सवाद; तरुण मार्क्स और परिपक्व मार्क्स का विवाद और अलगाव का सिद्धांत; द्वंद्वात्मक भौतिकवाद; ऐतिहासिक भौतिकवाद; एंगिल्स और ऐतिहासिक भौतिकवाद; पूँजीवादी व्यवस्था का शोषणकारी स्वरूप : अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत; राज्य का स्वरूप और उसकी भूमिका; वर्ग संघर्ष का सिद्धांत; समाजवादी व्यवस्था : सर्वहारा वर्ग की तानाशाही; साम्यवाद : विकास की अंतिम अवस्था। (II) रूढ़ मार्क्सवाद : लेनिन, स्टालिन और माओ त्से-तुंग; लेनिन (1870-1924 ई.) का योगदान; रूस की आर्थिक स्थिति; रूस में मार्क्सवाद का विकास; स्टालिन का योगदान; मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ त्से-तुंग। (III) नव-मार्क्सवाद : ग्राम्शी, सार्त्र और अल्थूसर; अंतोनियो ग्राम्शी (1891-1937 ई.), बुद्धिजीवियों की भूमिका; राजनीतिक दल; आधिपत्य की अवधारणा; विचारधारा; राज्य और नागरिक समाज; क्रांति की रणनीति; समाजवादी व्यवस्था; सार्त्र का अस्तित्ववादी मार्क्सवाद; मार्क्सवाद : आधुनिक विश्व का दर्शन; मार्क्सवाद के व्याख्याकारों की आलोचना; मनुष्य स्वतंत्र कर्ता के रूप में; अभाव; श्रृंखला से संस्था तक; लुईस अल्थूसर का संरचनात्मक मार्क्सवाद; मार्क्सवाद के लिए कैपिटल पढ़िए; ज्ञानमीमांसात्मक विच्छेद; मार्क्सवादी दर्शन; प्रैक्टिस की अवधारणा; आर्थिक रूपांतरणवाद का खंडन; विज्ञान और विचारधारा; ऐतिहासिक भौतिकवाद; 1968 ई. की क्रांति और अल्थूसर; दर्शन की अवधारणा में बदलाव; राज्यतंत्र की अवधारणा। (IV) मार्क्सवाद की प्रासंगिकता का सवाल। **8. स्वतंत्रतावाद** स्वतंत्रतावाद के प्रकार; स्वतंत्रतावाद और शास्त्रीय उदारवाद स्वतंत्रतावाद और आधुनिक उदारवाद; स्वतंत्रतावाद और नव-उदारवाद; फ्रेडरिक अगस्त हैक : ज्ञान की समस्या और स्वतंत्रता; ज्ञान का स्वरूप और उसकी समस्या समाज : अनायास व्यवस्था; स्वतंत्र बाज़ार व्यवस्था : एकमात्र विकल्प; सामाजिक न्याय की आलोचना; स्वतंत्रता की अवधारणा; स्वतंत्रता का अर्थ स्वतंत्रता और कानून का शासन; व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राज्य; उदारवादी लोकतंत्र की आलोचना; आदर्श संविधान; संवैधानिक न्यायालय; रॉबर्ट नॉजिक : अल्पतम राज्य; अधिकार एवं न्याय; व्यक्ति के अधिकारों का नैतिक आधार : व्यक्ति स्वयं साध्य है, दूसरों का साधन नहीं; आत्म-स्वामित्व का तर्क; अल्पतम राज्य, अदृश्य हाथ द्वारा राज्य का निर्माण; राज्य के कार्य; नॉजिक का न्याय सिद्धांत; न्याय के हकदारी सिद्धांत और अंतिम परिणाम पर आधारित न्याय सिद्धांत; स्वतंत्रता प्रतिमानों को उलट देती है; विल्ट चेम्बरलेन का तर्क; करारोपण बाध्यकारी श्रम की तरह है; स्वतंत्रता और समानता परस्पर-असंगत हैं; नॉजिक का कल्पनालोक (यूटोपिया)। **9. उत्तर-आधुनिकता** आधुनिकता का उदय : बेकन, डेकार्ट, कांट, वेबर और मार्क्स; आधुनिकता के संकटों की पहचान : रूसो, नीत्शे और फ्रायड; उत्तर-आधुनिकता : उत्पत्ति; उत्तर-आधुनिकता : अर्थ; ल्योतार : महावृत्तांतों का अंत; जेम्सन : वृद्ध पूँजीवाद का सांस्कृतिक तर्क; ज्याँ बॉड्रिलार्ड : सूचना समाज; मिशेल फूको : ज्ञान और शक्ति का विमर्श; जॉक देरिदा : विखंडन उत्तर-आधुनिक संस्कृति एवं समाज; उत्तर-आधुनिक अवस्था में राजनीति में परिवर्तन। **10. नारीवाद** नारीवाद की उत्पत्ति और विकास; नारीवाद की पहली धारा; नारीवाद की दूसरी धारा; नारीवाद के प्रमुख मुद्दे; नारीवाद के विभिन्न रूप; नारीवाद की तीसरी धारा। **11. बहुसंस्कृतिवाद** बहुसंस्कृतिवाद : उत्पत्ति और विकास; बहुसंस्कृतिवाद : अर्थ; उदारवादी विचारधारा और भेदभाव; चार्ल्स टेलर — मान्यता की राजनीति; सांस्कृतिक विविधता की रक्षा कैसे?; बहुसंस्कृतिवाद की आलोचना; उदारवादियों द्वारा आलोचना;

नारीवादियों द्वारा आलोचना; मार्क्सवादियों द्वारा आलोचना। **12. सामुदायिकवाद** समुदाय का महत्त्व; न्याय की सामुदायिक अवधारणा; व्यक्ति के अधिकार और सामान्य शुभ; सामुदायिकवादी राजनीति; सामुदायिकवाद : मूल्यांकन। **13. पारिस्थितिकीवाद** पारिस्थितिकीवाद : अर्थ; पारिस्थितिकीवाद और पर्यावरणवाद में अंतर; पारिस्थितिकीवाद : उत्पत्ति एवं विकास; पारिस्थितिकी की अवधारणा। **14. इतिहास का अंत** विश्वव्यापी इतिहास; आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान : समरूप ऐतिहासिक विकास का कारक; पूँजीवादी व्यवस्था : सर्वाधिक उपयुक्त अर्थव्यवस्था इतिहास की आर्थिक व्याख्या पर्याप्त नहीं; हीगल एक उदारवादी दार्शनिक; स्वामी और दास : द्वंद्वात्मक संबंध; दासों की प्रगतिशील भूमिका; स्वतंत्रता का आदर्श; उदारवादी लोकतांत्रिक राज्य : हीगल का सार्वभौम समरूप राज्य; डेनियल बेल की आलोचना। **15. उपसंहार।** पारिभाषिक शब्दावली, महत्त्वपूर्ण चिंतकों की सूची, शब्द-अनुक्रमणिका।

978 93 5287 988 5 2020 424 पृष्ठ ₹ 495.00

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन राजनीति विज्ञान पाठ्यक्रम के ''आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन'' पेपर को आधार बनाकर तैयार की गई है।

यह पुस्तक कुछ प्रमुख भारतीय राजनीतिक चिंतकों व उनके प्रतिनिधि चिंतनों से संबंधित है। पुस्तक में शामिल किए गए हैं : राममोहन राय के अधिकार संबंधी विचार, रमाबाई की जेंडर संबंधी संकल्पना, विवेकानंद की आदर्श समाज की अवधारणा, गांधी के स्वराज संबंधी आग्रह, बाबासाहेब अंबेडकर की सामाजिक न्याय संबंधी सोच, टैगोर के राष्ट्रवाद को लेकर उनके तर्क-वितर्क, सावरकर की हिंदुत्व के प्रति उनकी अभिव्यक्ति, इकबाल के समुदाय विषयक विचार, नेहरू का धर्म-निरपेक्षता जनित चिंतन एवं लोहिया की समाजवाद संबंधी सोच। पुस्तक में कुल 11 पाठ हैं। विद्यार्थियों के सहज विषय-प्रवेश हेतु पारिभाषिक शब्दावली दी गई है जिससे पुस्तक सरल व बोधगम्य बन गई है।

विजय कुमार वर्मा, पिछले 21 सालों से स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाएँ ले रहे हैं। *संयुक्त राष्ट्र एवं वैश्विक संघर्ष* उनकी प्रकाशित पुस्तकों में से है। संप्रति, वे राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

अखिलेश पाल, ईश्वर सरन पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में *फेडरेलिज़्म एंड डेमोक्रेटिक प्रोसेस इन इंडिया* एवं *गांधी मार्ग की विश्वव्यापकता : सिद्धांत एवं व्यवहार* हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका। पारिभाषिक शब्दावली।

1. विषय-प्रवेश : प्राचीन भारत में राजनीतिक चिंतन; मध्यकालीन भारत में राजनीतिक चिंतन; आधुनिक भारत में राजनीतिक चिंतन; संदर्भ-ग्रंथ। 2. राजा राममोहन राय : अधिकार, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; राजनीतिक विचार; सामाजिक विचार; आर्थिक विचार; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 3. पंडिता रमाबाई : जेंडर, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; पंडिता रमाबाई के जेंडर एवं महिला शिक्षा संबंधी विचार; द हाई-कास्ट हिंदू वीमेन में महिलाओं का वर्णन; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 4. स्वामी विवेकानंद : आदर्श समाज, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; विवेकानंद के चिंतन का आधार; दार्शनिक एवं धार्मिक चिंतन; आदर्श समाज का विचार; सामाजिक विचार; राजनीतिक विचार; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 5. महात्मा गांधी : स्वराज, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; गांधी के प्रेरणा स्रोत; गांधी के दर्शन के नैतिक व आध्यात्मिक आधार; स्वराज की अवधारणा; ग्राम : गणराज्यों का संघ; राजनीतिक स्वराज; सामाजिक स्वराज : सहयोग एवं सहनशीलता का आदर्श; आर्थिक स्वराज; नैतिक स्वराज; गांधी के अन्य महत्त्वपूर्ण सिद्धांत; निष्कर्ष : गांधी की प्रासंगिकता; संदर्भ-ग्रंथ। 6. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर : सामाजिक न्याय, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; सामाजिक न्याय का विचार; राजनीतिक विचार; अंबेडकर और राष्ट्रवाद; अंबेडकर और लोकतंत्र; भारतीय लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक स्थितियां; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 7. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर : राष्ट्रवाद की आलोचना, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; टैगोर का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण; राष्ट्रवाद; टैगोर एवं गांधी; स्वतंत्रता; अंतर्राष्ट्रवाद; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 8. मुहम्मद इकबाल : समुदाय, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; समुदाय एवं राजनीतिक विचार; धर्मतंत्र; इस्लामी सार्वभौमवाद; पाश्चात्य सभ्यता के विषय में इकबाल के विचार; एक प्रगतिवादी धार्मिक पुनर्जागरणवादी; पाकिस्तान पर विचार; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 9. वीर वी. डी. सावरकर : हिंदुत्व, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; हिंदुत्व की अवधारणा; सामाजिक विचार; आर्थिक विचार; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 10. पंडित जवाहरलाल नेहरू : धर्म-निरपेक्षता, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं; नेहरू : धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा; धर्मनिरपेक्षता का आधार एवं मूल बिंदु; राजनीतिक विचार; नेहरू : राष्ट्रवाद तथा अंतर्राष्ट्रवाद; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 11. डॉ. राममनोहर लोहिया : समाजवाद, जीवन, शिक्षा एवं उपलब्धियां; महत्त्वपूर्ण रचनाएं लोहिया का समाजवादी चिंतन; सामाजिक विचार; भाषा संबंधी विचार; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ, शब्द-अनुक्रमणिका।

978 93 5287 560 3 2019 272 पृष्ठ ₹ 395.00

आधुनिक राजनीतिक दर्शन

आधुनिक राजनीतिक दर्शन राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई है। यह पुस्तक विश्वविद्यालय के स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। सरल हिंदी भाषा में इतने विस्तार से आधुनिक राजनीतिक दर्शन और उससे जुड़े चिंतन को प्रस्तुत करने वाली यह एकमात्र पुस्तक है।

यह पुस्तक पाश्चात्य राजनीतिक विचारकों की धारणाओं, विविध दार्शनिकों और उनके आधुनिक संदर्भों पर विचार करती है। साथ ही यह विचार-विमर्श, मूल्यांकन एवं तर्क-वितर्क की क्षमता भी विकसित करती है। पुस्तक में नौ अध्याय हैं—1. आधुनिकता और उसके विभिन्न संदर्भ, 2. रूमानीवाद, 3. रूसो : रूमानीवादी, 4. मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट : प्रथम नारीवादी, 5. सामाजिक उदारवादी, 6. जॉन स्टुअर्ट मिल : उदारवादी समाजवादी, 7. रेडिकल्स, 8. कार्ल मार्क्स : रेडिकल, 9. एलेक्जेंड्रा कोलनताई : रेडिकल नारीवादी। इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि इसमें मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट और एलेक्जेंड्रा कोलनताई जैसी नारीवादी विचारकों के दर्शन पर विस्तार से चर्चा की गई है, जिस पर हिंदी में पठन सामग्री उपलब्ध नहीं है।

पुस्तक सरल और सहज शैली में लिखी गई है और विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पारिभाषिक शब्दावली एवं विभिन्न चिंतकों के नाम एवं तकनीकी शब्द अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों में दिए गए हैं। साथ ही विस्तृत संदर्भ ग्रंथ सूची भी दी गई है।

शुभ्रा परमार दिल्ली विश्वविद्यालय के भगिनी निवेदिता कॉलेज में राजनीति विज्ञान विभाग में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। उन्होंने *नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार* एवं *रवांडा : एथिनिक कॉन्फ्लिक्ट, जीनोसाइड एंड वूमन* पुस्तकें लिखी हैं।

विषयानुक्रम : आभार। समर्पण। विषय-प्रवेश। 1. आधुनिकता और उसके विभिन्न संदर्भ : आधुनिकता, आधुनिकता का व्यापक संदर्भ, आधुनिकता के विभिन्न संदर्भ, प्रबुद्धवाद के विभिन्न चरण, प्रबुद्धवाद की परिभाषा, इमैनुअल कांट एवं प्रबुद्धवाद, आधुनिकता और इससे संबंधित पुस्तकों के संदर्भ, निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 2. रूमानीवाद : रूमानीवाद की पृष्ठभूमि, पूर्व रूमानीवादी विचारधारा, रूमानीवाद का प्रथम चरण 1750-1805 तक, रूमानीवाद का द्वितीय चरण 1805-1830 तक, रूमानीवाद का तृतीय चरण 1830-1850 तक, नव रूमानीवाद 1850-1910 तक, रूमानीवाद की प्रमुख विशेषताएं, जीन जॉक रूसो, रूमानीवादी : मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट, निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 3. रूसो : रूमानीवादी, द डिस्कोर्स ऑन द इनइक्वालिटी, 1754, डिस्कोर्स ऑन पॉलिटिकल इकोनॉमी, 1758, सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत, स्थानीय एवं प्रत्यक्ष लोकतंत्र और स्वशासन, सामान्य इच्छा का सिद्धांत, सामान्य इच्छा : लोकतंत्र के लिए एक आधार, लोकतांत्रिक शासन : रूसो, लोकतांत्रिक शासन की शर्तें, निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 4. मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट : प्रथम नारीवादी, महिलाएं और पितृसत्तावाद, मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट : विंडीकेशन ऑफ़ द राईट्स ऑफ वीमेन, रूसो के शिक्षा संबंधी विचार पर मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट की आलोचना, महिलाओं के कानूनी अधिकार, महिला जीवन की उदारवादी धारणाएं, मैरी वुलस्टोनक्राफ़्ट के कट्टरपंथी विचार, वुलस्टोनक्राफ़्ट के आर्थिक उदारवाद पर विचार, निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 5. सामाजिक उदारवाद, संदर्भ एवं टिप्पणियां। 6. जॉन स्टुअर्ट मिल : उदार समाजवादी, जॉन स्टुअर्ट मिल और महिलाओं के मताधिकार, कंसीडरेशंस ऑन रिप्रिजेंटेटिव गवर्नमेंट, 1861, समकालीन नारीवादियों में मिल के विचारों का महत्त्व, मिल द्वारा जेरेमी बेंथम के उपयोगितावाद के सिद्धांत का संशोधन, युटीलिटेरियनिज्म (उपयोगितावाद), निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 7. रेडिकल्स, कार्ल मार्क्स : एक रेडिकल विचारक। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 8. कार्ल मार्क्स : रेडिकल, कार्ल मार्क्स के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत, अलगाव का सिद्धांत, ऐतिहासिक भौतिकवाद, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, भौतिकवाद संबंधी अन्य सिद्धांत, मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत, मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत, हेगेल का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष के सिद्धांत का आलोचनात्मक मूल्यांकन, निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। 9. एलेक्जेंड्रा कोलनताई : रेडिकल नारीवादी, एलेक्जेंड्रा कोलनताई का राजनीतिक जीवन, कोलनताई के महिला संबंधी विचार, कोलनताई : द सोशल बेसिस ऑफ़ द वीमेन

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

क्वेश्चन (1909), रूस में विभिन्न महिला संगठन और उनके लक्ष्य, कोलनताई का कार्यरत युवाओं को एक पत्र, कोलनताई : पंखवाले और बिना पंखवाले एरोज की व्याख्या, पंखहीन एरोज के नुकसान, प्रेम-कॉमरेडशिप, सर्वहारा वर्ग के प्यार के आदर्श, एरोज का भविष्य क्या होगा?, कैथी पोर्टर द्वारा लिखित पुस्तकें, एलेक्जेंड्रा कोलनताई और लेनिन के बीच असहमति, निष्कर्ष। संदर्भ एवं टिप्पणियां। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट I. पारिभाषिक शब्दावली, II. चिंतकों के नाम (अंग्रेज़ी वर्णमाला के अनुसार), III. चिंतकों के नाम (हिंदी वर्णमाला के अनुसार), IV- अवधारणाएं/तकनीकी शब्द। शब्द-अनुक्रमणिका।

978 93 5287 635 8 2019 240 पृष्ठ ₹ 425.00

भारत में राजनीतिक प्रक्रिया

भारत में राजनीतिक प्रक्रिया राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई है। इस पुस्तक का मूल उद्देश्य हिंदी भाषा में अध्ययन एवं अध्यापन हेतु प्रामाणिक तथा स्तरीय पठन सामग्री उपलब्ध कराना है। यह प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी निश्चित रूप से लाभकारी होगी।

प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों को यह बताने का प्रयास करती है कि किस तरह राजनीतिक प्रक्रिया संवैधानिक और कानूनी नियमों से कहीं आगे बढ़ गई है। यह आधुनिक राजनीतिक सत्ता के कार्यान्वयन एवं विरोधाभासी आयामों से परिचय कराती है। पुस्तक में तेरह अध्याय हैं- 1. समकालीन भारत में राजनीतिक प्रक्रिया : मुद्दे और चुनौतियाँ, 2. राजनीतिक दल और दलीय प्रणाली, 3. निर्वाचन आयोग एवं चुनाव सुधार, 4. भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्त्व : वर्ग, जाति, जेंडर एवं धर्म, 5. क्षेत्रीय आकांक्षाएँ : अलगाव की राजनीति और समायोजन, 6. धर्म एवं राजनीति : अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक सांप्रदायिकता, 7. भारत में धर्मनिरपेक्षता : सिद्धांत, व्यवहार एवं विवाद, 8. जाति, वर्ग और पितृसत्ता, 9. भारतीय राजनीति और जाति, 10. सकारात्मक कार्यवाही की नीतियाँ : जाति और वर्ग, 11. सकारात्मक कार्यवाही व महिलाएँ, 12. भारतीय लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य और कल्याणकारी शासन प्रणालियाँ, 13. भारतीय राज्य का दमनकारी स्वरूप।

पुस्तक सरल और सहज शैली में लिखी गई है और विद्यार्थियों की सुविधा के लिए वृहत् पारिभाषिक शब्दावली भी दी गई है।

अभय प्रसाद सिंह 20 वर्षों से राजनीति विज्ञान में स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं। वे एम.फिल. और पीएच.डी. के शोधार्थियों का दिशा निर्देशन भी करते हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में शामिल हैं - *भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र; भारत में उपनिवेशवाद; भारत में राष्ट्रवाद; समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन; राष्ट्रवाद का भारतनामा तथा शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ*। संप्रति, वे पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

कृष्ण मुरारी शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापन करते हैं। उन्होंने *राजनीतिक समाजशास्त्र* (सहलेखन में) तथा *शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ* एवं *भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र* (सहसंपादन में) पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, पारिभाषिक शब्दावली। 1. समकालीन भारत में राजनीतिक प्रक्रिया-मुद्दे और चुनौतियाँ : भूमिका, राजनीतिक दल, दलीय प्रणाली, भारतीय राजनीति व निर्वाचन आयोग, क्षेत्रवाद बनाम संघवाद, सांप्रदायिकता एवं धर्मनिरपेक्षता, चुनावी राजनीति में जाति एवं विकास, राज्य की विकासवादी प्रकृति सामाजिक आंदोलन, निष्कर्ष। 2. राजनीतिक दल और दलीय प्रणाली : भूमिका, राजनीतिक दलों का वैचारिक आधार, भारत में प्रमुख राजनीतिक दल, राजनीतिक परिवर्तन की पड़ताल : दलों की बढ़ती संख्या, दलीय प्रणाली, भारत में दलीय व्यवस्थाएं, गठबंधन की राजनीति और भारत का उत्तरोत्तर संघात्मीकरण, भारतीय राज्यों में दलीय प्रणालियां, निष्कर्ष। 3. निर्वाचन आयोग एवं चुनाव सुधार : भूमिका, संवैधानिक प्रावधान, राज्य निर्वाचन आयोग, निर्वाचन आयोग की भूमिका : विभिन्न चरण, चुनाव सुधार, न्यायपालिका एवं चुनाव प्रक्रिया, समकालीन बहस, चुनौतियाँ, निष्कर्ष। 4. भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्त्व : वर्ग, जाति, जेंडर एवं धर्म : भूमिका, मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्त्व, निष्कर्षात्मक अवलोकन। 5. क्षेत्रीय आकांक्षाएं : अलगाव की राजनीति और समायोजन : भूमिका, भारत में क्षेत्रीय आकांक्षाओं की प्रकृति, क्षेत्रीय आकांक्षाओं के विविध स्वरूप, भाषायी कारक, आर्थिक कारक, राजनीतिक कारक, धार्मिक कारक, संजातीय एवं सांस्कृतिक कारक, अलगाव की राजनीति, पंजाब का मुद्दा, पूर्वोत्तर का मुद्दा, जम्मू एवं कश्मीर का मुद्दा, संघीय व्यवस्था और विविधता का समायोजन, जनजाति स्वायत्त परिषद्, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परंपरागत वन अधिकार अधिनियम (FRA) 2006, पूर्वोत्तर राज्यों के लिए नीतिगत पहल, संवैधानिक संस्थाओं की भूमिका, क्षेत्रीय आकांक्षाओं के समायोजन संबंधित सुझाव, निष्कर्ष। 6. धर्म और राजनीति : अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक सांप्रदायिकता : भूमिका, धर्म और राजनीति के बीच संबंध, भारत में सांप्रदायिकता, सांप्रदायिकता के कारण, भारत में सांप्रदायिकता के प्रकार, निष्कर्ष। 7. भारत में धर्मनिरपेक्षता : सिद्धांत एवं व्यवहार : भूमिका, वैश्विक स्तर पर धर्मनिरपेक्षता की अवधारणाएं, भारत में धर्म निरपेक्षता, संविधान सभा एवं धर्मनिरपेक्षता का प्रश्न, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार, भारतीय राजनीति में धर्मनिरपेक्षता : राजनेताओं का दृष्टिकोण, भारतीय राजनीति में धर्म एवं धर्मनिरपेक्षता : एक संक्षिप्त विवरण, भारतीय धर्मनिरपेक्षता की आलोचना, राजीव भार्गव का दृष्टिकोण एवं आलोचनाओं का जवाब, अमर्त्य सेन के विचार, निष्कर्ष। 8. जाति, वर्ग और पितृसत्ता : भूमिका, जाति का अर्थ, जाति और उप जाति, राजनीति के माध्यम से जाति गतिशीलता, वर्ग की अवधारणा, भारत में नवीन मध्यम वर्ग की भूमिका, जाति और वर्ग, पितृसत्ता, पितृसत्ता : नारीवाद अवधारणा, रेडिकल नारीवाद की आलोचना, भारतीय समाज में पितृसत्ता, शोषण से लेकर सशक्तीकरण तक का सफर, निष्कर्ष। 9. भारतीय राजनीति और जाति : भारत में जाति का प्रश्न : औपनिवेशिक काल की पृष्ठभूमि, भारतीय संविधान में जातिगत समानता और सामाजिक न्याय का प्रश्न, समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में जाति, राजनीति और जाति का अंतर्संबंध, निष्कर्ष। 10. सकारात्मक कार्यवाही की नीतियां : जाति और वर्ग : भूमिका, सामाजिक न्याय के आधार, भारत में सकारात्मक कार्यवाही की नीति, संविधान सभा और सकारात्मक कार्यवाही, लाभार्थियों की पहचान का मुद्दा : जाति या वर्ग, आरक्षण : अवसर, अधिकार और सम्मान, सकारात्मक कार्यवाही : एक वैश्विक अनुभव, सकारात्मक कार्यवाही और न्यायपालिका, सकारात्मक कार्यवाही : मूल्यांकन एवं निष्कर्ष। 11. सकारात्मक कार्यवाही व महिलाएं : भूमिका, महिलाओं संबंधी संवैधानिक प्रावधान, महिलाओं संबंधी अन्य महत्त्वपूर्ण कानून, 73वां तथा 74वां संवैधानिक संशोधन अधिनियम-1922, महिला अधिकारों का हनन, घरेलू हिंसा अधिनियम 2006, महिलाएं व मानव अधिकार, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग व महिलाएं, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा उठाए गए सकारात्मक कदम, महिला आयोग व उसकी सीमाएं, महिलाएं व सरकारी नीतियां, गैर-सरकारी संस्थाएं व महिलाएं, सकारात्मक कार्यवाही : कुछ तथ्य, निष्कर्ष। 12. भारतीय लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य और कल्याणकारी शासन प्रणालियां : भूमिका, लोकतांत्रिक राज्य, कल्याणकारी राज्य, विकासात्मक राज्य, मूल्यांकन। 13. भारतीय राज्य का दमनकारी स्वरूप : भूमिका, स्वतंत्र भारत में दमनकारी कानून, राजनीतिक संस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में भारतीय राज्य, भारत का संविधान और दमनकारी कानून व्यवस्था, सत्ता का दमनचक्र, निवारक-नजरबंदी कानून, निरोध एवं गिरफ़्तारी से संरक्षण (अनुच्छेद-22), आतंरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) 1971, टाडा, सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून, 1958, पोटा और फिर पोटो का आगमन, गैर-कानूनी गतिविधि (निरोधक) अधिनियम (संशोधित) 2008 (युपा), महाराष्ट्र कंट्रोल ऑफ ऑर्गनाइज्ड क्राइम एक्ट (मकोका), पंजाब में दमनकारी कानून, भारतीय राज्य का दमनकारी स्वरूप, प्रेस की आज़ादी, दमन के कुछ अन्य क्षेत्र, हिंसा के अन्य क्षेत्र, निष्कर्ष। संदर्भिका, अनुक्रमणिका।

978 93 5287 637 2 2019 296 पृष्ठ ₹ 425.00

राजनीति विज्ञान : एक समग्र अध्ययन (सातवाँ संस्करण)

UGC (NET/JRF) प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

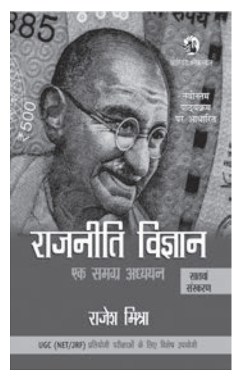

यू.जी.सी. के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित यह पाठ्यपुस्तक यू.जी.सी. नेट.जे.आर.एफ. एवं अन्य प्रवेश परीक्षाओं के लिए उपयोगी है। यह उच्चतर शिक्षा आयोग द्वारा संचालित परास्नातक एवं स्नातक स्तर की प्रवक्ता परीक्षा के लिए भी अत्यंत कारगर है। इसके अतिरिक्त यह पाठ्यपुस्तक स्नातक एवं परास्नातक के विद्यार्थियों के लिए भी अत्यधिक उपयोगी है, जो राजनीति विज्ञान को सरल एवं सटीक रूप में समझना चाहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक के परिष्कृत एवं परिवर्द्धित सातवें संस्करण में कई नए खंड जोड़े गए हैं, जैसे- भारत की विदेश नीति, भारत में राजनीतिक संस्थाएं, भारत में राजनीतिक प्रक्रिया, लोक प्रशासन, भारत में शासन विधि तथा लोक नीति इत्यादि। इससे पुस्तक पाठ्यक्रमानुसार संपूर्ण हो गई है।

राजेश मिश्रा, मेवाड़ विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की मानद उपाधि से सम्मानित हैं एवं वर्तमान में दिल्ली स्थित सरस्वती आई.ए.एस. संस्थान के निदेशक हैं। वे पिछले 24 वर्षों से राजनीति विज्ञान का अध्यापन कर रहे हैं। उनकी लेखन में भी गहन रुचि रही है। उनके द्वारा लिखित अन्य पुस्तकों में *भारतीय राजव्यवस्था* और *भारतीय विदेश नीति भूमंडलीकरण के दौर में* शामिल हैं।

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

विषयानुक्रम : सातवें संस्करण की भूमिका, आभार। **भाग-1 : राजनीतिक अवधारणाएँ** 1. स्वतंत्रता, 2. समानता, 3. न्याय, 4. अधिकार, 5. शक्ति, 6. लोकतंत्र, 7. नागरिकता, 8. विचारधारा, 9. उदारवाद, 10. अनुदारवाद, 11. समाजवाद, 12. मार्क्सवाद, 13. नारीवाद, 14. पारिस्थितिकीवाद, 15. समुदायवाद, 16. उत्तर-आधुनिकतावाद।

भाग-2 : राजनीतिक विचारक 1. कन्फ्यूशियस, 2. प्लेटो, 3. अरस्तू, 4. मैकियावेली, 5. थॉमस हॉब्स, 6. जॉन लॉक, 7. जे. जे. रूसो, 8. बेंथम, 9. जे.एस. मिल, 10. हीगल, 11. टी.एच. ग्रीन, 12. कार्ल मार्क्स, 13. ग्रामशी, 14. लेनिन, 15. माओ, 16. रॉबर्ट नॉजिक, 17. मेरी वोल्स्टोनक्राफ़्ट, 18. हन्ना आरेंट, 19. फ्रांज फैनन, 20. जॉन रॉल्स।

भाग-3 : भारतीय राजनीतिक विचारक 1. धर्मशास्त्र, 2. कौटिल्य, 3. अगानासुत्त, 4. अरबिंदो घोष, 5. महात्मा गांधी, 6. विनायक दामोदर सावरकर, 7. बाबासाहेब अम्बेडकर, 8. जयप्रकाश नारायण, 9. एम.एन. रॉय, 10. जियाउद्दीन बरनी, 11. कबीर, 12. पंडिता रमाबाई, 13. बाल गंगाधर तिलक, 14. स्वामी विवेकानंद, 15. रवीन्द्रनाथ टैगोर, 16. पेरियार ई.वी. रामास्वामी, 17. मोहम्मद इकबाल, 18. जवाहरलाल नेहरू, 19. राममनोहर लोहिया, 20. दीनदयाल उपाध्याय।

भाग-4 : तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण 1. तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागम, 2. उपनिवेशवाद तथा विउपनिवेशीकरण, 3. राष्ट्रवाद, 4. राज्यों के सिद्धांत, 5. राजनीतिक शासन प्रणालियां, 6. संविधान तथा संविधानवाद, 7. लोकतांत्रिकरण, संक्रमण तथा समेकन, 8. विकास, 9. शक्ति की संरचना, 10. निर्वाचन पद्धतियां, 11. राजनीतिक दल एवं दलीय प्रणाली, 12. सामाजिक आंदोलन एवं नव सामाजिक आंदोलन, 13. गैर-सरकारी संगठन एवं नागरिक समाज।

भाग-5 : अंतर्राष्ट्रीय संबंध 1. अंतर्राष्ट्रीय संबंध के अध्ययन के उपागम, 2. युद्ध तथा संघर्ष, 3. संघर्ष तथा शांति, 4. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शक्ति, 5. शक्ति संतुलन, शांति और सुरक्षा, 6. राष्ट्रीय सुरक्षा की बदलती अवधारणा, 7. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रीय हित, 8. संयुक्त राष्ट्र संघ, 9. अंतर्राष्ट्रीय संबंध की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, 10. क्षेत्रीय संगठन, 11. समसामयिक चुनौतियाँ।

भाग-6 : भारतीय विदेश नीति 1. भारत की विदेश नीति पर दृष्टिकोण, 2. भारत की विदेश नीति में निरंतरता एवं बदलाव, 3. प्रमुख शक्तियों के साथ भारत के संबंध, 4. बहुध्रुवीय विश्व के साथ भारत के संबंध, 5. पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध, 6. समसामयिक चुनौतियाँ।

भाग-7 : भारत में राजनीतिक संस्थाएं 1. भारतीय संविधान का निर्माण, 2. संवैधानिक विकास, 3. संविधान सभा, 4. संविधान का दर्शन, 5. भारत में संविधानवाद, 6. संघीय कार्यपालिका, 7. संसद, 8. न्यायपालिका, 9. राज्यों में कार्यपालिका तथा विधानमंडल, 10. भारत में संघवाद, 11. निर्वाचन प्रक्रिया तथा निर्वाचन आयोग, 12. स्थानीय शासन संस्थाएं, 13. संवैधानिक तथा सांविधिक निकाय।

भाग-8 : भारत में राजनीतिक प्रक्रियाएं 1. राज्य, अर्थव्यवस्था तथा विकास, 2. उदारीकरण की प्रक्रिया, 3. पहचान की राजनीति, 4. सामाजिक आंदोलन, 5. भारत में जेंडर और राजनीति, 6. राजनीतिक दलों की विचारधारा और सामाजिक आधार, 7. चुनाव और चुनावी राजनीति।

भाग-9 : लोक प्रशासन 1. लोक प्रशासन : अर्थ तथा विकास, 2. लोक प्रशासन के सिद्धांत एवं अवधारणाएं, 3. संगठन के सिद्धांत एवं नियम, 4. संगठन का प्रबंधन।

भाग-10 : भारत में शासन विधि तथा लोक नीति 1. शासन, सुशासन तथा लोकतंत्रीय शासन, 2. उत्तरदायित्व तथा नियंत्रण, 3. सुशासन के सांस्थानिक तंत्र, 4. योजना तथा विकास, 5. सामाजिक-आर्थिक विकास के उपकरण के रूप में लोक नीति। महत्त्वपूर्ण पुस्तकें।

978 93 5287 844 4 2019 800 पृष्ठ ₹ 825.00

राजनीति सिद्धांत की समझ

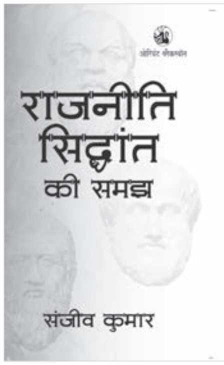

राजनीति सिद्धांत की समझ दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विषय के ऑनर्स प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम के अनुरूप लिखी गई है। यह पुस्तक उन सभी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी होगी जहाँ यह पाठ्यक्रम लागू है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले प्रतिभागी भी इससे निश्चित ही लाभान्वित होंगे।

यह पुस्तक ''सिद्धांत निर्माण'' तथा ''राजनीति'' संबंधी विविध संभावनाओं को समझने का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को राजनीति सिद्धांत की प्रमुख अवधारणाओं एवं परंपराओं से अवगत कराना है। राजनीति सिद्धांत के क्षेत्र में जहाँ अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य एवं शोध हो रहे हैं वहीं राजनीति विज्ञान के अध्ययन का दायरा भी व्यापक हुआ है। आज इस क्षेत्र में उभर रही नई चुनौतियों जैसे-लोकतंत्र, स्वतंत्रता, न्याय, जेंडर, समानता आदि की जानकारी होना युवाओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। पुस्तक में इन सभी विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

पुस्तक में सम्मिलित पाठ हैं–राजनीति क्या है : ''राजनीतिक'' का सिद्धांतीकरण; राजनीतिक सिद्धांत के उपागम : ऐतिहासिक, आदर्शमूलक तथा अनुभवजन्य; उदारवादी परंपरा; मार्क्सवादी परंपरा; अराजकतावादी परंपरा; रूढ़िवादी परंपरा; नारीवादी परंपरा; उत्तर-आधुनिक परंपरा; लोकतंत्र की अवधारणा का इतिहास; प्रक्रियात्मक लोकतंत्र; प्रतिनिधित्व एवं सहभागिता व विमर्शी लोकतंत्र। इस पुस्तक में राजनीति सिद्धांत जैसे जटिल विषय को विद्यार्थियों के लिए सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

संजीव कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग में प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना, भूमिका। 1. राजनीति क्या है : ''राजनीतिक'' का सिद्धांतीकरण, 2. राजनीतिक सिद्धांत के उपागम : ऐतिहासिक, आदर्शमूलक तथा अनुभवजन्य, 3. उदारवादी परंपरा, 4. मार्क्सवादी परंपरा, 5. अराजकतावादी परंपरा, 6. रूढ़िवादी परंपरा, 7. नारीवादी परंपरा, 8. उत्तर-आधुनिक परंपरा, 9. लोकतंत्र की अवधारणा का इतिहास, 10. प्रक्रियात्मक लोकतंत्र, 11. प्रतिनिधित्व एवं सहभागिता, 12. विमर्शी लोकतंत्र। शब्द अनुक्रमणिका।

978 93 5287 495 8 2019 256 पृष्ठ ₹ 350.00

जाति की समझ : महात्मा बुद्ध से बाबासाहेब अम्बेडकर और उनके बाद

जाति की समझ जाति और जाति विरोधी आंदोलनों के ऐतिहासिक महत्त्व के मुद्दे की विशिष्ट विद्वता के साथ

गहरी जाँच करती है और विषय पर जानकारी भी देती है। पुस्तक भारतीय परंपरा को हिंदूवाद के समान और हिंदूवाद को ब्राह्मणवाद के समान मानने की आलोचना करती है, जो वेदों को भारतीय संस्कृति का आधार ग्रंथ मानते हैं और भारतीय सभ्यता का सार आर्य विरासत में खोजते हैं। यह दर्शाती है कि किस तरह धर्मनिरपेक्ष लोग भी ब्राह्मणवादी दर्शन में कैद रहते हैं। इसलिए एक ऐसी वैकल्पिक परंपरा पर दृष्टि डाली गई है जो दलित आंदोलनों से पनपी है, जो भारतीय समाज और इतिहास को इस तरीके से देखे जाने पर सवाल उठाती है। सरल एवं पठनीय शैली में लिखी इस पुस्तक में लेखिका ने बताया है कि कैसे दलित राजनीति और दलित विज़न के लिए 'दलित' शब्द से आगे जाने की जरूरत है, और कैसे यह शब्द जाति के श्रेणीकृत पदानुक्रम में सबसे शोषित और दमित वर्ग का प्रतीक बन गया है। हिंदूवाद के प्रभुत्व के साथ-साथ पुस्तक बौद्धधर्म और रूढ़िवादी भक्ति के रूप में प्रतिरोध और विद्रोह की आक्रामक प्रवृत्तियों का वर्णन करती है, जो कि आरंभिक नारीवादियों के पितृसत्ता विरोध के रूप में सामने आया और दलित कार्यकर्ताओं का व्यापक अतिवाद- फुले और पेरियार, रमाबाई और ताराबाई से लेकर कबीर, तुकाराम और अम्बेडकर और महात्मा बुद्ध तक में दिखाई दिया। यह पुस्तक उन विभिन्न प्रयासों की सफलताओं और असफलताओं का ब्यौरा देती है, जिनका लक्ष्य हिंदूवाद और इसकी जातिगत विचारधारा के दमनकारी रूप को खत्म कर, नए रास्तों को दिखाना है। यह दलित राजनीति के तर्क को भी दर्शाती है और बढ़ते हिंदूवाद के विकल्प के रूप में, बहुजन समाज पार्टी के उदय को भी दिखाती है। यह पुस्तक दलित, जाति अध्ययन और राजनीति के विद्यार्थियों के लिए इस विषय पर एक बहुमूल्य सामग्री सिद्ध होगी।

गेल ओम्वेट अमेरिकी मूल की भारतीय समाजशास्त्री और मानवाधिकार कार्यकर्त्ता थीं। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया, बर्कले से समाजविज्ञान में पीएच.डी. की है। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में से प्रमुख हैं-*अम्बेडकर टुवर्ड्स एन एनलाइटेन इंडिया, दलित विज़न, अंडरस्टैंडिंग कास्ट* एवं *कल्चरल रिवोल्ट इन इंडियन सोसायटी*। वे डॉ. अम्बेडकर चेयर फॉर सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट, और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में पूर्व प्रोफेसर रह चुकी हैं।

विषयानुक्रम : परिचय। 1. भारत की दो महान परंपराएं और हिंदूवाद का निर्माण, 2. हिंदू धर्म से पहले : बौद्ध धर्म के सिद्धांत, 3. हिंदूवाद से पूर्व : भक्ति की अनुरागमयी धारा, 4. ब्राह्मणवादी शोषण के रूप में हिंदू धर्म : जोतिबा फुले, 5. पितृसत्ता के रूप में हिंदूवाद : रमाबाई, ताराबाई और प्रारंभिक नारीवादी, 6. आर्य विजय के रूप में हिंदूवाद : 1920 के दशक के दलित अतिवादी, 7. प्रतिक्रांति के रूप में हिंदूवाद : बी.आर. अम्बेडकर, 8. दिल्ली शासन के रूप में हिंदू धर्म : पेरियार एवं राष्ट्रीय प्रश्न, 9. स्वतंत्र भारत : ब्राह्मणवादी

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

समाजवाद, ब्राह्मणवादी भूमंडलीकरण, 10. हिंदूवाद सामंतवादी पिछड़ेपन के रूप में दलित पैंथर, 11. दलित राजनीति का तर्क, 12. बहुजन समाज पार्टी का उदय, निष्कर्ष : सीता का श्राप, शम्बुक की चुप्पी। संदर्भ ग्रंथ सूची, संस्तुत पुस्तकें, अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 93 5287 264 0   2018   144 पृष्ठ   ₹ 525.00

भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र

भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई है। इस पुस्तक का मूल उद्देश्य हिंदी भाषा में अध्ययन एवं अध्यापन हेतु प्रामाणिक तथा स्तरीय पठन सामग्री उपलब्ध कराना है। यह प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी निश्चित रूप से लाभकारी होगी।

प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों को यह बताने का प्रयास करती है कि जब संविधान की रचना की गई थी उस समय से लेकर आज तक संवैधानिक संस्थानों में कितना बदलाव आ चुका है। किस तरह संविधान के दायरे में रहते हुए भी कुछ संस्थाएं शक्तिशाली हो गई हैं और कुछ की स्थिति कमज़ोर हुई है। पुस्तक में चर्चित विषय हैं–भारतीय लोकतंत्र और संविधानवाद, संवैधानिक विकास का इतिहास एवं संविधान-निर्माण, भारतीय संविधान का दर्शन, भारत में मौलिक अधिकार और निदेशक सिद्धांत, विधानमंडल-संसद, संघीय कार्यपालिका-राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री, सर्वोच्च न्यायालय, भारत में संघवाद, ग्रामीण स्थानीय स्वशासन के रूप में पंचायत और समकालीन भारत में नगर प्रशासन। पुस्तक सरल और सहज शैली में लिखी गई है और विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पारिभाषिक शब्दावली भी वृहत् रूप से दी गई है।

अभय प्रसाद सिंह 20 वर्षों से राजनीति विज्ञान में स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं। वे एम.फिल. और पीएच.डी. के शोधार्थियों का दिशा निर्देशन भी करते हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में शामिल हैं–*भारत में उपनिवेशवाद, भारत में राष्ट्रवाद, समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन, राष्ट्रवाद का भारतनामा* तथा *शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ*। संप्रति, वे पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

कृष्ण मुरारी शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापन करते हैं। उन्होंने *राजनीतिक समाजशास्त्र* (सहलेखन में) तथा *शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ* (सहसंपादन में) पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, पारिभाषिक शब्दावली। 1. भारतीय लोकतंत्र और संविधानवाद : भूमिका, संविधान सभा और संविधानवाद, संसदीय संप्रभुता एवं संविधानवाद कार्यपालिका एवं संविधानवाद, न्यायपालिका और संविधानवाद, चुनाव आयोग एवं संविधानवाद, संघवाद एवं संविधानवाद, स्थानीय स्वशासन और संविधानवाद, निष्कर्ष। 2. संवैधानिक विकास का इतिहास एवं संविधान-निर्माण : संवैधानिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्वतंत्र भारत का संविधान निर्माण। 3. भारतीय संविधान का दर्शन : भूमिका, संविधान सभा, संविधान का दर्शन एवं संविधान सभा, संविधान एवं इसकी आवश्यकता, संविधान का दर्शन : एक सैद्धांतिक विश्लेषण, भारतीय संविधान की प्रस्तावना : मूल दर्शन, निष्कर्ष। 4. मूल अधिकार और निदेशक और नीति सिद्धांत : भूमिका, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मूल अधिकार, भारत में अनुमानित अधिकार, राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत, नीति निदेशक सिद्धांतों का क्रियान्वयन, मूल अधिकारों और नीति निदेशक तत्त्वों में अंतर, मूल अधिकारों एवं निदेशक सिद्धांतों के मध्य संबंध एवं टकराव। 5. विधानमंडल-संसद : भूमिका, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संसदीय व्यवस्था बनाम अध्यक्षीय व्यवस्था, संसद की संरचना, संसद और इसके सदस्यों के विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां, संसद का सत्र, स्थगन, सत्रावसान और विघटन, संसद की शक्तियां और कार्य प्रणाली, संसदीय समितियां, राज्य सभा और लोक सभा में संबंध, संसद और न्यायपालिका के बदलते संबंध, संसद की भूमिका और स्थिति में ह्रास। 6. संघीय कार्यपालिका- राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री : भूमिका, राष्ट्रपति, राष्ट्रपति की सेवा की शर्तें एवं हटाने की विधि, राष्ट्रपति की शक्तियां, आपातकालीन शक्तियों की आलोचना, आपातकालीन व्यवस्थाओं के पक्ष में तर्क, राष्ट्रपति की वास्तविक पद-स्थिति, संसदीय सरकार, भारत में संसदीय सरकार की विशेषताएं, नीति निर्माण प्रक्रिया में राजनीतिक दलों की भूमिका, प्रधानमंत्री, प्रधानमंत्री के कार्य तथा शक्तियां, प्रधानमंत्री की स्थिति, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री, निष्कर्ष। 7. भारतीय न्यायपालिका- सर्वोच्च न्यायालय : भूमिका, सर्वोच्च न्यायालय की संरचना एवं स्वायत्तता, सर्वोच्च न्यायालय की अधिकारिता एवं शक्ति, सर्वोच्च न्यायालय : न्यायिक पुनर्विलोकन की शक्ति, न्यायिक पुनर्विलोकन और संविधान के 'मौलिक ढांचा' का सिद्धांत, जनहित याचिका एवं न्यायिक सक्रियतावाद, निष्कर्ष। 8. भारत में संघवाद : भूमिका, भारतीय संघवाद, भारतीय संघवाद : ऐतिहासिक संदर्भ, स्वतंत्र भारत में संघवाद, भारतीय संघवाद की विशेषताएं, भारतीय संघवाद की बहुस्तरीय सांस्थानिक संरचना, एन.आई.टी.आई. आयोग, नीति आयोग के उद्देश्य, भारतीय संघवाद का केंद्रीकृत स्वरूप, संघवाद का बदलता स्वरूप, सरकारिया आयोग, पुंछी आयोग की रिपोर्ट, निष्कर्ष। 9. ग्रामीण स्थानीय स्वशासन के रूप में पंचायत : भूमिका, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संविधान सभा और पंचायत पर वाद-विवाद, स्वतंत्र भारत में पंचायत, पंचायत की संवैधानिक रूपरेखा, पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार अधिनियम), केंद्र प्रायोजित योजनाएं और ग्राम पंचायतें, पंचायत की चुनौतियाँ। 10. समकालीन भारत में नगर प्रशासनः भूमिका, स्वतंत्रता से पूर्व भारत में नगर प्रशासन, स्वतंत्र भारत में नगर प्रशासन, 74वां संविधान संशोधन अधिनियम (1992), नगर प्रशासन : संवैधानिक प्रावधान, नगरपालिकाओं की संरचना, नगर निगम, नगरपालिका, जिला योजना समिति (अनुच्छेद-243यघ), स्थानीय नगरीय संस्थाओं की समस्याएं और चुनौतियाँ, शहरी विकास योजनाएं, दिल्ली नगर निगम, मुंबई नगर निगम, चेन्नई नगर निगम, बेंगलुरु महानगर निगम, निष्कर्ष। संदर्भिका, अनुक्रमणिका।

978 93 5287 465 1   2018   272 पृष्ठ   ₹ 475.00

शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ

यह इस विषय पर लिखित अपनी तरह की एकमात्र पुस्तक है। स्नातक पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई इस पुस्तक का मूल उद्देश्य हिंदी भाषा में इस विषय पर अध्ययन एवं

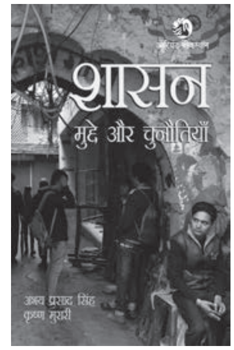

अध्यापन हेतु प्रामाणिक तथा स्तरीय पठन सामग्री उपलब्ध कराना है।

यह पुस्तक भारत में शासन के समक्ष आने वाली विविध समस्याओं और उनके समाधान के लिए बनाई जाने वाली रणनीतियों पर चर्चा करती है। पुस्तक में बारह अध्याय हैं, जिनमें भारत में संवृद्धि एवं विकास विमर्श : शासन से सुशासन; भारत में विकास के बदलते आयाम; सुशासन द्वारा लोकतंत्र का सुदृढ़ीकरण; मानव-पर्यावरण संबंध; पारिस्थितिकीय शासन; लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, स्थानीय स्वशासन; जनसहभागिता और शासन आदि शामिल हैं। सार्वजनिक सेवा प्रदायगी; ई.शासन; भारत में नागरिक चार्टर और सूचना का अधिकार और भारत में सुशासन की पहल : कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों पर चर्चा द्वारा यह समझाने की कोशिश की गई है कि किस तरह से आज के दौर में पर्यावरण सुरक्षा और सरकारी सेवाओं तक लोगों की पहुंच बनाने के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कॉर्पोरेट जगत किस तरह से सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत विकास कार्यों में अपनी भूमिका निभा रहा है। पुस्तक में भोजन के अधिकार, डिजिटल इंडिया, शिक्षा का अधिकार और सूचना का अधिकार जैसे विषयों पर नवीनतम जानकारी दी गई है।

हालांकि यह पुस्तक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत राजनीति विज्ञान विषय के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई हैं, यह पुस्तक अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी निश्चित रूप से लाभकारी होगी।

अभय प्रसाद सिंह 20 वर्षों से राजनीति विज्ञान में स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं। वे पीएच.डी. के शोधार्थियों का दिशा निर्देशन भी करते हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में शामिल हैं - *भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र, भारत में उपनिवेशवाद, भारत में राष्ट्रवाद, समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन, राष्ट्रवाद का भारतनामा* तथा *शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ*। संप्रति, वे पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

कृष्ण मुरारी शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापन करते हैं। उन्होंने *राजनीतिक समाजशास्त्र* (सहलेखन में) तथा *शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ* एवं *भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र* (सहसंपादन में) पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका, पारिभाषिक शब्दावली। 1. **संवृद्धि एवं विकास, विमर्श : शासन से सुशासन** लोकतंत्र, शासन एवं सुशासन; सहभागिता, जवाबदेही और पारदर्शिता; संवृद्धि, पर्यावरण शासन एवं सतत विकास, कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर); संदर्भ-ग्रंथ। 2. **भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय राज्य** राजनीतिक

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

उदारवाद और राज्य; व्यापारिक/वाणिज्यिक उदारवाद और राज्य; वैश्वीकरण, क्षेत्रीय एकीकरण, और राज्य; सरकार से शासन की ओर; संदर्भ-ग्रंथ। 3. **भारत में विकास के बदलते आयाम** विकास : विमर्श, मतभिन्नता और क्रियान्वयन; वैकल्पिक विकास रणनीतियां नव उदारवादी आर्थिक व्यवस्था की समीक्षा; शासनतंत्र और विकास : पारस्परिक प्रभाव; समीक्षात्मक निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 4. **सुशासन द्वारा लोकतंत्र का सुदृढ़ीकरण** सुशासन का उद्भव; संस्थागत परिवर्तन; लोकतांत्रिक शासन के सिद्धांत; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 5. **मानव-पर्यावरण संबंध** विकास और पर्यावरण : संबंध; मानव-पर्यावरण संबंध पर विभिन्न दृष्टिकोण; आधुनिक विज्ञान, पूंजीवादी विकास और पर्यावरण त्रसदी; उपनिवेशवाद, विज्ञान और विकास; वैश्विक पर्यावरण प्रशासन : समस्याएं और संभावनाएं; भारत में पर्यावरण नीति; पर्यावरणीय समस्याएं भारत में पर्यावरण आंदोलन; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। 6. **सतत मानव विकास एवं पारिस्थितिकीय शासन, सतत विकास** भूमंडलीय पारिस्थितिकी शासन से संबंधित संस्थाएं एवं मुद्दे; भारत में पर्यावरण संबंधी संवैधानिक प्रावधान; भारत में पर्यावरण शासन तथा नागरिक समाज की सहभागिता; पर्यावरण शासन तथा निजी क्षेत्र; पर्यावरण एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक; सामुदायिक सहभागिता एवं पर्यावरण शासन; उपभोक्तावाद व वैश्विक पर्यावरण शासन; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। **7. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और भारत में स्थानीय स्वशासन** आज़ादी के बाद स्थानीय स्वशासन; नगरीय स्थानीय सरकार; विकेंद्रीकरण एवं सुशासन; मूल्यांकन; संदर्भ-ग्रंथ। **8. जनसहभागिता और शासन, जनसहभागिता का आशय** जनसहभागिता की प्रकृति; जनसहभागिता की आवश्यकता; जनसहभागिता हेतु साधन; सहभागिता के विभिन्न मॉडल/तकनीक; नव लोक प्रशासन व जनसहभागिता; भारत में जनसहभागिता से संभव हुए कुछ प्रयास; जनसहभागिता में बाधाएं; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। **9. सार्वजनिक सेवा प्रदायगी** सार्वजनिक सेवा प्रदायगी : अर्थ व संदर्भ; नौकरशाही व सार्वजनिक सेवा प्रदायगी; भारत में सार्वजनिक सेवा प्रदायगी : संस्थागत प्रयास; सार्वजनिक सेवा प्रदायगी में सुधार हेतु मॉडल; सार्वजनिक सेवा प्रदायगी : चुनौतियां, सुधार एवं समाधान; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। **10. ई-शासन** शासन एवं सुशासन; ई-शासन; ई-शासन के आयाम; ई-शासन की विशेषताएं; भारत में ई-शासन; कंप्यूटरीकृत ग्रामीण सूचना प्रणाली परियोजना; डिजिटल इंडिया कार्यक्रम; निष्कर्ष; संदर्भ-ग्रंथ। **11. भारत में नागरिक चार्टर और सूचना का अधिकार** नागरिक चार्टर; सूचना का अधिकार; सूचना के अधिकार का उद्भव : एक वैश्विक परिदृश्य; सूचना का अधिकार : एक सैद्धांतिक विमर्श; भारत में सूचना का अधिकार : संवैधानिक और कानूनी पृष्ठभूमि; मजदूर किसान शक्ति संगठन; परिवर्तन : एक स्वयंसेवी संस्था; सूचना का अधिकार : फायदे और व्यावहारिक अनुभव; सूचना का अधिकार : कमियां और चुनौतियाँ; उपसंहार; संदर्भ-ग्रंथ। **12. भारत में सुशासन की पहल : कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व** कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व : सैद्धांतिक आयाम एवं व्याख्या; कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व : आवश्यकता एवं महत्ता; आर्थिक संवृद्धि बनाम सामाजिक दायित्व; भारतीय परिप्रेक्ष्य में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व; कंपनी अधिनियम, 2013; कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व : व्यावहारिक चुनौतियाँ। संदर्भ-ग्रंथ सूची, अनुक्रमणिका।

978 93 5287 202 2 2018 280 पृष्ठ ₹ 410.00

भारतीय शासन, संवैधानिक लोकतंत्र और राजनीतिक प्रक्रिया

यह पुस्तक बी.ए. प्रोग्राम और बी.ए. ऑनर्स (राजनीति विज्ञान) के विद्यार्थियों के लिए स्नातक पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। प्रस्तुत पुस्तक में शामिल विषय हैं : भारतीय राजनीति के अध्ययन के उपागम; भारतीय राज्य की प्रकृति; भारतीय संविधान का दर्शन; मौलिक अधिकार और नीति निदेशक सिद्धांत; विधायिका; कार्यपालिका; न्यायपालिका; संघवाद; आपातकालीन प्रावधान; भारत में विकेंद्रीकरण का इतिहास; पंचायती राज; नगरीय स्वशासन; राज्यों का पुनर्गठन; भारत में बहुदलीय व्यवस्था का युग; मतदान व्यवहार; पूर्वोत्तर भारत और कश्मीर; सेकुलरवाद की अवधारणा; भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता; अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के बीच बहस; भारतीय राजनीति में जाति; वर्ग और पितृसत्ता; भारत में सकारात्मक कार्यवाही; भारत में सामाजिक आंदोलन; महिला आंदोलन; पर्यावरण आंदोलन; किसान आंदोलन; भारतीय राज्य का विकासात्मक आयाम; भारतीय राज्य का कल्याणकारी आयाम; भारतीय राज्य का दमनात्मक आयाम आदि। पुस्तक के निर्माण में विभिन्न शोध प्रबंधों एवं ग्रंथों की सहायता ली गई है।

तपन बिस्वाल दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग में राजनीति विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। पिछले तीन दशकों से वे स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं। उन्होंने एम.फिल. और पीएच.डी. के शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी किया है। हिंदी और अंग्रेज़ी में प्रकाशित उनकी प्रमुख रचनाएं हैं : *अंतर्राष्ट्रीय संबंध* (अंग्रेज़ी और हिंदी में), *तुलनात्मक राजनीति* (अंग्रेज़ी और हिंदी में), *गवर्नेंस एंड सिटीजनशिप, मानवाधिकार, जेंडर एवं पर्यावरण*, और *घाना : राजनीतिक एवं संवैधानिक विकास।* संप्रति, वे शारदा यूनिवर्सिटी में अध्यापन कार्यभार संभाल रहे हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका, आभार, शब्दावली। **इकाई 1 : भारतीय राजनीति के उपागम एवं भारतीय राज्य की प्रकृति** 1. भारतीय राजनीति के अध्ययन के उपागम; 2. भारतीय राज्य की प्रकृति; **इकाई 2 : संविधान सभा एवं भारतीय संविधान** 3. भारतीय संविधान का दर्शन; 4. मौलिक अधिकार और राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत; **इकाई 3 : संस्थागत कार्य एवं सरकार के अंग** 5. विधायिका; 6. कार्यपालिका; 7. न्यायपालिका; **इकाई 4 : संघवाद एवं विकेंद्रीकरण** 8. संघवाद; 9. भारतीय संविधान में आपातकाल का प्रावधान; 10. भारत में विकेंद्रीकरण; 11. पंचायती राज : ग्रामीण शासन में मुद्दे; 12. नगरीय स्वशासन : नगरपालिका व नगर निगम; **इकाई 5 : राजनीतिक दल, दलीय व्यवस्था एवं मतदान व्यवहार के निर्धारक** 13. कांग्रेसी व्यवस्था; 14. भारत में बहुदलीय व्यवस्था का युग; 15. भारत में मतदान व्यवहार तथा उसके निर्धारण तत्त्व; **इकाई 6 : क्षेत्रीय आकांक्षाएं** 16. पूर्वोत्तर भारत और कश्मीर में क्षेत्रीय आकांक्षाएं : समस्या एवं समाधान; 17. राज्यों का पुनर्गठन; **इकाई 7 : धर्म एवं राजनीति** 18. सेकुलरवाद पर बहस; 19. भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता; 20. अल्पसंख्यक तथा बहुसंख्यक के बीच बहस; **इकाई 8 : शक्ति संरचना एवं भारत में सकारात्मक कार्यवाही** 21. भारतीय राजनीति में जाति; 22. वर्ग और पितृसत्ता; 23. भारत में सकारात्मक कार्यवाही : जाति, वर्ग और जेंडर; **इकाई 9 : सामाजिक आंदोलन** 24. भारत में सामाजिक आंदोलन : सैद्धांतिक पहलू; 24(i). श्रमिक आंदोलन; 24(ii). कृषक आंदोलन; 24(iii). पर्यावरणवाद : एक सामाजिक आंदोलन; 24(iv). दलित आंदोलन; 24(v). महिला आंदोलन; **इकाई 10 : विकास की रणनीतियां एवं भारतीय राज्य की बदलती प्रकृति** 25. भारतीय राज्य का विकासात्मक आयाम : नियोजित अर्थव्यवस्था और नव उदारवाद; 26. भारतीय राज्य का कल्याणकारी आयाम; 27. भारतीय राज्य का दमनकारी आयाम। संदर्भ-ग्रंथ सूची, शब्द-अनुक्रमणिका।

978 93 8639 269 5 2017 592 पृष्ठ ₹ 575.00

राष्ट्रवाद का भारतनामा : भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद

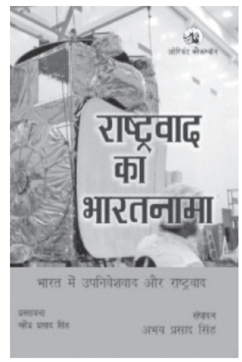

वर्तमान दौर में राष्ट्रवाद एक चर्चित विषय बन गया है। देश-विदेश में राष्ट्रवाद से संबंधित विभिन्न शोध किए जा रहे हैं। उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद राजनीति विज्ञान के हर पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग भी है, इसी बात को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। यह अपनी तरह की एकमात्र पुस्तक है जिसमें राष्ट्रवाद से संबंधित नवीनतम चर्चाओं को शामिल किया गया है। यह राष्ट्रवाद की अवधारणा को ऐतिहासिक, साहित्यिक, बौद्ध ग्रंथों और शास्त्रीय संदर्भ में प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में उपनिवेशवाद से पहले, उपनिवेशवाद के दौरान और उपनिवेशवाद के बाद भारत में राष्ट्र निर्माण से संबंधित समग्र अवलोकन निहित है। पुस्तक में अनेक अध्याय हैं जिनमें राष्ट्रवाद की विभिन्न संकल्पनाओं, राष्ट्रवाद के विभिन्न उपागमों, भारत में अंग्रेज़ों के आगमन, औपनिवेशिक भारत की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था, उद्योग और व्यापार पर प्रभाव, सभ्यता मिशन, जनगणना, औपनिवेशिक शिक्षा, कृषक, जनजातीय तथा मजदूर आंदोलन, 1857 का विद्रोह, सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन, राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरण, महात्मा गांधी और राष्ट्रीय जनआंदोलन, समाजवादी विकल्प, जातिगत चेतना और भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता जैसे अहम् विषयों को समेकित कर उनका विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

यह पुस्तक राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए तो अनिवार्य है ही साथ ही इतिहास और उन सभी पाठकों के लिए भी उपादेय सिद्ध होगी जो राष्ट्रवाद की चर्चा में शामिल होते हैं।

अभय प्रसाद सिंह पिछले 20 सालों से दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज में राजनीति शास्त्र विभाग में बी.ए. के विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कक्षाएं लेते हैं। वे एम.फिल. और पीएच.डी. के शोधार्थियों का दिशा निर्देशन भी करते हैं। इनकी हिंदी और अंग्रेज़ी में कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं। इनकी ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें *भारत में उपनिवेशवाद, भारत में राष्ट्रवाद* और *समकालीन भारत में*

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन हैं।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना : आधुनिक भारतीय राज्य की विकासवादी पृष्ठभूमि : महेंद्र प्रसाद सिंह; विषय प्रवेश : समकालीन विश्व में राष्ट्रवाद का दर्शन एवं राजनीति : अभय प्रसाद सिंह। 1. राष्ट्र की संकल्पना-I : शास्त्रीय ग्रंथों में, 2. राष्ट्र की संकल्पना-II : बौद्ध ग्रंथों में, 3. राष्ट्र की संकल्पना-III: भारतीय साहित्य में, 4. राष्ट्र की संकल्पना-IV: ऐतिहासिक अनुशीलन में; 5. राष्ट्रवाद के विभिन्न उपागम : भारत के संदर्भ में : राष्ट्रवाद : एक आधुनिक संकल्पना, भारतीय राष्ट्रवाद के अध्ययन के प्रमुख उपागम, कैंब्रिज या साम्राज्यवादी स्कूल, मूल्यांकन, राष्ट्रवादी स्कूल, मार्क्सवादी स्कूल, मूल्यांकन, सबआल्टर्न उपागम; 6. भारत में अंग्रेज़ों का आगमन : औपनिवेशिक शासन की शुरुआत : अंग्रेज़ी सत्ता का सुदृढ़ीकरण, साम्राज्यवादी शासन : औचित्यता के प्रयास, नागरिक प्रशासन, कानून की स्थापना : संस्थागत प्रयास; 7. औपनिवेशिक भारत में आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था : कृषि पर उपनिवेशवाद का प्रभाव; 8. ब्रिटिश शासन का उद्योग एवं व्यापार पर प्रभाव : ब्रिटिश शासन : उद्योग, वित्त और व्यापार पर प्रभाव, जूट उद्योग, सूती कपड़ा उद्योग, लोहा और इस्पात उद्योग, द कैंब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, भारत में उद्योग और व्यापार — भारतीय औद्योगिक पूँजीपति वर्ग का विकास; 9. अंग्रेज़ों का सभ्यताकरण मिशन : सभ्यताकरण का औचित्य, साम्राज्यवादी विचारधारा : उपयोगितावादी एवं मिशनरी, आधुनिक शिक्षा एवं मिशनरी, ब्रिटिश शासन में राजनीति, कानून, धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति; 10. ब्रिटिश भारत में जनगणना : जनगणना सर्वेक्षण : आरंभिक चरण (1780-1870), आधुनिक जनगणना प्रक्रिया का विकास (1871-1901 तक), 1901 के पश्चात् (1901-1941); 11. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका, समाज सुधार आंदोलन और महिला प्रश्न; 12. औपनिवेशिक शिक्षा, नव-मध्यम वर्ग व नागरिकता : भूमिका, भारत में औपनिवेशिक शिक्षण का तात्विक आधार, शिक्षा तथा मध्यम वर्ग का निर्माण, औपनिवेशिक नागरिक को परिभाषित करने वाले लक्षण, दलित वर्ग एवं अंग्रेज़ी शिक्षण; 13. कृषक, जनजातीय तथा मजदूर आंदोलन : कृषक आंदोलन की पृष्ठभूमि, प्रारंभिक ब्रिटिश भारत में कृषक विद्रोह, जनजातीय विद्रोह : 1857-1947 तक, जनजातीय आंदोलन : स्वतंत्रता के बाद, मजदूर आंदोलन; 14. 1857 का विद्रोह : 1857 के विद्रोह के अध्ययन के उपागम, राष्ट्रवादी उपागम, साम्राज्यवादी उपागम, मार्क्सवादी उपागम, अभिजातवर्गीय उपागम, उपाश्रित वर्गीय उपागम, दलित उपागम, विद्रोह के कारण, विद्रोह का प्रसार/प्रभाव क्षेत्र, विद्रोह की प्रकृति, विद्रोह में विभिन्न वर्गों की भूमिका, विद्रोह का दमन, असफलता के कारण, विद्रोह के परिणाम, विद्रोह का महत्त्व; 15. राष्ट्रीय पुनर्जागरण : सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन : प्रमुख हिंदू धर्म सुधार, ब्रह्म समाज एवं राजाराम मोहन राय, प्रार्थना समाज, आर्य समाज और स्वामी दयानंद सरस्वती, विवेकानंद और रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी एवं ऐनी बेसेंट, राष्ट्रीय जागरण और मुस्लिम समाज सुधार, अहमदिया आंदोलन और मिर्जा गुलाम अहमद, अलीगढ़ आंदोलन और सर सैयद अहमद खान, मुहम्मद इकबाल, आत्मसम्मान आंदोलन, सुधार-विरोध (पुनरुत्थानवाद) की राजनीति, उन्नीसवीं सदी में हिंदुओं में सामाजिक सुधार तथा उसकी समीक्षा; 16. राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरण : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, नरमपंथी : मुद्दे एवं कार्यक्रम, नरमपंथी विरोध और विधायिका, नरमपंथियों की सफलता? गरमपंथी एवं स्वदेशी, स्वदेशी आंदोलन की रचनात्मकता, सशस्त्र क्रांतिकारी और उनकी गतिविधियां, राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी, स्वतंत्रता आंदोलन में मुसलमानों का योगदान, बहावी आंदोलन (1820-1870), सांप्रदायिक चेतना और मुस्लिम लीग का गठन; 17. महात्मा गांधी और राष्ट्रीय जनआंदोलन : असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि, असहयोग आंदोलन 1920-22), नागरिक अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, आलोचनात्मक मूल्यांकन; 18. राष्ट्रवादी आंदोलन : समाजवादी विकल्प : समाजवादी विकल्प : कांग्रेस समाजवादी व साम्यवादी, खिलाफत और असहयोग आंदोलन; 19. भारतीय राष्ट्र : जातिगत चेतना : प्राचीन भारत में ब्राह्मण विरोधी चेतना, मध्यकाल में भक्ति आंदोलन और जातिगत चेतना, अंग्रेज़ी राज में जातिगत चेतना, औपनिवेशिक भारत में ब्राह्मण विरोधी चेतना, उत्तर-औपनिवेशिक भारत में जाति के हितों का प्रश्न, अंबेडकर और गांधी, अछूतानंद और दलित चेतना, जगजीवन राम, उत्तर-औपनिवेशिक भारत की राजनीति में जाति की भूमिका; 20. भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता : द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और विभाजन : सांप्रदायिकता पर इतिहास लेखन, आधुनिक भारत में सांप्रदायिकता का उदय एवं विकास, भारत में मुस्लिम एवं हिंदू सांप्रदायिकता का उद्भव, हिंदू सांप्रदायिकता का उदय, हिंदू-मुस्लिम एकता लखनऊ समझौता 1916, हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता, हिंदू-मुस्लिम एकता का पुन : प्रयास, जिन्ना की 14 सूत्री मांगें, उग्रवादी सांप्रदायिकता का दौर, द्वि-राष्ट्र का सिद्धांत, माउंटबेटन योजना और भारत का विभाजन, विभाजन : अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य विभाजन पर इतिहासलेखन, द्वि-राष्ट्र सिद्धांत : एक विमर्श। परिशिष्ट I. संदर्भिका, II. स्मरणीय व्यक्तित्व, III. पारिभाषिक शब्दावली, IV. प्रमुख घटनाओं का विवरण, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5889 2 2017 524 पृष्ठ ₹ 525.00

नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार

बदलते समय के साथ समाज में फेमिनिज़्म और जेंडर से जुड़े मुद्दों पर विचार और प्रतिक्रियाएँ बदलती नज़र आ रही हैं। इसमें भारतीय नारीवाद के समृद्ध इतिहास का एक अमूल्य सिंहावलोकन है। यह विस्तार से नारीवादी विचारधाराओं के सिद्धांतों और पितृसत्तात्मकता, जेंडर, ट्रांसजेंडर, लिंग असमानता, लिंग और जेंडर में मतभेदी विचारों इत्यादि पर चर्चा करती है। इस पुस्तक के माध्यम से लिंग और जेंडर से जुड़ी सामाजिक पहचान को समझाने का प्रयास किया गया है। समकालीन मुद्दों को चित्रित करने वाली यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगी।

शुभ्रा परमार दिल्ली विश्वविद्यालय के भगिनी निवेदिता कॉलेज में राजनीति विज्ञान विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इन्होंने *रवांडा : एथिनिक कॉनफ़्लिक्ट जीनोसाइड एंड वूमन* पुस्तक लिखी है।

विषयानुक्रम : भूमिका, शब्द संक्षेप। 1. नारीवादी बौद्धिक सूत्र, सेक्स और जेंडर मैरी वोलस्टोनक्राफ़्ट ''ए विंडीकेशन ऑफ राइट्स ऑफ वूमेन 1792''; जॉन स्टुअर्ट मिल ''महिलाओं की अधीनता'' 1869; सिमोन डी बूवा ''सेकंड सेक्स'' 1949; केट मिलेट-सेक्सुअल पॉलिटिक्स 1970; नारीवाद के विकास के चरण; पहली लहर नारीवाद 1792-1963; दूसरी लहर नारीवाद 1963-1980; तीसरी लहर नारीवाद 1980-आज तक; सेक्स/लिंग और जेंडर; ट्रांसजेंडर; लिंग संवेदीकरण; जेंडर बजटिंग; निष्कर्ष। 2. पितृसत्ता और नारीवाद, पितृसत्ता का अर्थ; पितृसत्ता की अवधारणा : शक्ति और शोषण के रूप में; भारत में पितृसत्ता की निजी और सामाजिक अवधारणा। 3. नारीवादी सिद्धांत : उदारवादी, मार्क्सवादी, कट्टरपंथी, उत्तर आधुनिक उदारवादी नारीवादी विचारधारा; आमूलचूल परिवर्तनवादी या रेडिकल नारीवाद; मार्क्सवादी नारीवाद; समाजवादी नारीवाद; उत्तर आधुनिक नारीवाद; सांस्कृतिक नारीवाद; इकोफ़ेमिनिज़्म; ग्रीन बेल्ट आंदोलन; कालानारीवाद/ब्लैक नारीवाद; उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद; महिलाओं के लिए कांच की छत की अवधारणा; निष्कर्ष। 4. पश्चिम में नारीवाद की उत्पत्ति : फ्रांस, ब्रिटेन एवं अमेरिका नारीवाद उत्पत्ति और विकास; फ्रांस में नारीवाद; ब्रिटेन में नारीवाद; अमेरिका में नारीवाद; चिकाना नारीवाद। 5. समाजवादी देशों में नारीवाद : चीन, क्यूबा, भूतपूर्व सोवियत संघ और अफ्रीका चीन में नारीवाद; प्रमुख चीनी नारीवादी; क्यूबा में नारीवाद; दि फेडरेशन ऑफ क्यूबन वूमेन; सोवियत रूस में नारीवाद; अफ्रीकी नारीवाद; अरब में नारीवाद; संयुक्त राष्ट्र संघ और महिलाओं पर सम्मेलन। 6. भारत में महिला आंदोलन का इतिहास, भारत में महिलाओं की स्थिति का इतिहास; भारत में पहली नारीवादी लहर 1850 से 1915 तक; भारत में दूसरी नारीवादी लहर 1915 से 1947 तक; बाबा साहेब अंबेडकर और महिला आंदोलन; गांधीजी और महिला आंदोलन; भारत में तीसरी नारीवादी लहर 1947 से आज तक; स्वतंत्रता के पश्चात् प्रमुख महिला आंदोलन; महिला एवं बाल विकास मंत्रालय; राष्ट्रीय महिला आयोग ; केस अध्ययन; निष्कर्ष। 7. पारंपरिक इतिहास लेखन और नारीवादी आलोचनाएं, आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति; भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति; भारत में महिला उद्यमिता; भूमंडलीकरण एवं नवीन महिला मध्यम वर्ग; भारतीय महिला के समक्ष चुनौतियां। 8. समकालीन भारत में परिवार-मातृवंशीय और पितृवंशीय प्रथाएं, परिवार में महिलाएं; समकालीन भारत में परिवार : पितृवंशीय और मातृवंशीय प्रथाएं; मातृवंश या मातृवंशीय; भारत में दलित महिलाएं; दलित महिलाओं संबंधी सिफारिशें; राजनीति में महिलाओं की भूमिका; महिला और प्रशासन; भारत में गैर-सरकारी संगठन और महिलाएं; नवीन महिला आंदोलन और नागरिक समाज; निष्कर्ष। 9. परिवार में जेंडर संबंध : उपभोग के पैटर्न, संपत्ति का अधिकार, महिलाएं और गृहस्थ जीवन; पारिवारिक विषयों में निर्णय लेने का अधिकार; घरेलू कार्यों में पति द्वारा सहयोग; पति के व्यवसाय के संदर्भ में घरेलू कार्यों में पति द्वारा महिलाओं को सहयोग; महिलाओं के विभिन्न अवसरों पर सामाजिक जीवन में भागीदारी; परंपरागत सामाजिक- धार्मिक विश्वासों के अनुरूप आचरण की अपेक्षा; परिवार में लिंग संबंध; परिवार एवं परिवार के संघर्षों में महिलाओं और पुरुषों के संदर्भ; महिलाओं की घरेलू हिंसा से सुरक्षा; भारतीय परिवार संस्था में बदलाव; समकालीन भारत में परिवार संरचना। 10. महिलाएं और कार्य, महिलाओं के दृश्य कार्य : अर्थ; भारत में महिलाओं के दृश्य कार्य; भारत में महिलाओं के अदृश्य कार्य; महिलाओं की उत्तरजीविता की रणनीतियां; सेक्स का काम, सेक्स वर्कर, सेक्स ट्रैफिकिंग; यौन तस्करी; भारत में वेश्यावृत्ति से संबंधित कानून; उपाय; कॉल गर्ल; सरोगेसी; सरोगेसी के प्रकार; मीडिया में महिलाओं की छवि; निष्कर्ष। 11. महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, निष्कर्ष। 12. भारत में महिला सशक्तीकरण, भारत सरकार और महिला सशक्तीकरण; महिला शिक्षा संबंधी कार्यक्रम और नीतियां; प्रमुख सरकारी योजनाएं; भारतीय महिला न्यायमूर्ति/न्यायाधीश; बैंकिंग, प्रबंधन, निदेशक के क्षेत्र में भारतीय महिलाएं; भारत की महान महिला वैज्ञानिक; केस अध्ययन : इरोम शर्मिला चानू; केस अध्ययन जागोरी (Jagori); केस अध्ययन : प्रभाव स्वसहायता समूह : अकोला गांव; भारत की कुछ प्रसिद्ध महिला खिलाड़ी; अन्य क्षेत्रों में भारत की सुप्रसिद्ध महिलाएं; भारत के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण पर केस अध्ययन; केस अध्ययन : स्व कार्यरत महिला एसोसिएशन 'सेवा'; स्वश्री महिला सेवा सहकारी बैंक सेवा : केस अध्ययन; श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ : एक केस अध्ययन; आशा : मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता; आशा के महत्त्वपूर्ण कार्य : निष्कर्ष। परिशिष्ट : I. रवांडा महिला सशक्तीकरण (Rwanda's Women Empowerment) : एक केस स्टडी; II. नारीवादी संबंधी : महत्त्वपूर्ण जानकारी; III. नारीवादी संबंधी घटना, क्रमावली (I) भारत संबंधी (II) विश्व संबंधी। अनुक्रमणिका।

978 81 250 6048 2 2015 296 पृष्ठ ₹ 540.00

समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन

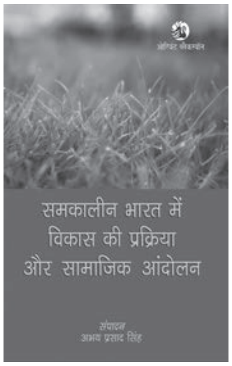

समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन इस विषय पर लिखित अपनी तरह की एकमात्र और अनूठी पुस्तक है। राजनीति विज्ञान पर वैसे तो कई पुस्तकें उपलब्ध हैं, परंतु स्वतंत्र भारत में विकास की प्रक्रिया को विहंगम दृष्टि से लेखनीबद्ध करने का यह ऐसा प्रयास है जिसमें विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलनों के उतार-चढ़ाव के विस्तारित आयाम पर समग्रता से विचार करने की पहल की गई है। दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रम में ऐसे विषय को स्थान देकर उल्लेखनीय कदम उठाया है। यह पुस्तक न केवल राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के परीक्षार्थियों के लिए बल्कि आम पाठकों के लिए एक संग्रहणीय पुस्तक है।

इस पुस्तक में पाँच इकाइयाँ हैं। आरंभ की तीन इकाइयाँ – समकालीन विकास प्रक्रिया से संबंधी रणनीतियां और सामाजिक संरचनाओं पर उसके प्रभावों से संबंधित है। इसमें स्वतंत्र भारत में विकास की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों, जैसे— योजनागत विकास, भूमंडलीकरण और श्रम, विशेष आर्थिक क्षेत्र भारत में नव-मध्यम वर्ग, भूमि सुधार, हरित क्रांति, नक्सलवाद, कृषि संकट तथा भारतीय किसानों पर इसके प्रभाव का विवेचन किया गया है। पुस्तक की चौथी इकाई सामाजिक और नव सामाजिक आंदोलनों के संदर्भ में है। इसके अंतर्गत किसान-महिला-आदिवासी-दलित तथा पर्यावरण आंदोलन, नागरिक स्वतंत्रता आंदोलन एवं मानव अधिकार आंदोलन तथा जनवादी अधिकार आंदोलन पर चर्चा की गई है। पाँचवीं इकाई में भोजन का अधिकार, मनरेगा, शिक्षा का अधिकार और सूचना का अधिकार जैसे नवीनतम अधिकार विषयक सरोकारों से संबंधित विषयों पर जानकारी दी गई है।

अभय प्रसाद सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम निर्माण समिति के सदस्य हैं। उनकी राजनीति शास्त्र विषय से जुड़ी प्रकाशकीय गतिविधियों में सहभागिता रहती है। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में *भारत में उपनिवेशवाद, भारत में राष्ट्रवाद* प्रमुख हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के बी.ए. और एम.ए. के विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, विषय प्रवेश, शब्दावली संक्षेपण **इकाई I स्वतंत्र भारत में विकास** : 1. समकालीन भारत में नियोजित विकास और उदारीकरण, **इकाई II विकास रणनीति का सामाजिक संरचना पर प्रभाव** : 2. भूमंडलीकरण एवं श्रमिक, 3. विशेष आर्थिक क्षेत्र, 4. भारत में नव मध्यम वर्ग, **इकाई III कृषि विकास रणनीति का सामाजिक संरचना पर प्रभाव** : 5. भारत में भूमि सुधार आंदोलन, 6. भारत में हरित क्रांति, 7. नक्सलवाद : वंचना, विकास और माओवादी चुनौती, 8. कृषि संकट तथा भारतीय किसानों पर इसका प्रभाव, **इकाई IV समकालीन सामाजिक आंदोलन** : 9. किसान आंदोलन, 10. नव-सामाजिक आंदोलन, 11. महिला आंदोलन, 12. भारत में आदिवासी आंदोलन, 13. दलित आंदोलन, 14. भारत में आदिवासी आंदोलन, 15. भारतीय नागरिक स्वतंत्रता एवं जनवादी अधिकार आंदोलन, 16. भारत में नागरिक स्वतंत्रता और मानवाधिकार आंदोलन, **इकाई V समकालीन अधिकार विषयक सरोकार**, 17. भोजन का अधिकार : सैद्धांतिक एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य, 18. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोज़गार गारंटी अधिनियम, 19. शिक्षा का अधिकार, 20. भारत में सूचना अधिकार। संदर्भ सूची, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5944 8 2015 464 पृष्ठ ₹ 550.00

भारत में उपनिवेशवाद

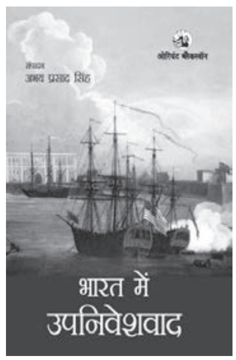

भारत में उपनिवेशवाद मूलतः राजनीतिशास्त्र के विद्यार्थियों की जरूरतों को केंद्रित कर लिखी गई है। यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी निश्चय ही लाभकारी होगी। इस पुस्तक में पाँच इकाइयाँ हैं : पहली इकाई 'साम्राज्यवाद एवं राष्ट्रवाद' में पूंजीवाद के विकास की संक्षिप्त पृष्ठभूमि सहित उपनिवेशवाद के उदारवादी, मार्क्सवादी एवं उत्तर उपनिवेशवादी परिप्रेक्ष्यों का विश्लेषण है। दूसरी इकाई 'भारत में औपनिवेशिक शासन की स्थापना' में भारत में अंग्रेज़ों के क्रमिक आधिपत्य का विवरण है। अंग्रेज़ व्यापार करने आए थे लेकिन अपने साम्राज्य का विस्तार पूरे भारत पर कर लिया। तीसरी इकाई 'अर्थव्यवस्था एवं समाज' में व्यापार एवं उद्योग पर ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रभाव और वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन है। चौथी इकाई 'संस्कृति एवं समाज' औपनिवेशिक विचारधारा, जनगणना एवं जेंडर के प्रश्न से संबंधित है। इसमें उपयोगितावादियों एवं मिशनरी विद्वानों के सभ्यताकरण मिशन की औपनिवेशिक विचारधारा के विभिन्न फलकों एवं अंतःपृष्ठों को उकेरने का प्रयास किया गया है। पाँचवीं इकाई 'औपनिवेशिक नागरिक का शिक्षण एवं नव मध्यम वर्ग' में उल्लेख है कि औपनिवेशिक शिक्षा का लक्ष्य भारतीय सामाजिक वर्गों में से एक ऐसे वर्ग का विकास करना था, जो औपनिवेशिक शासन व्यवस्था की वैधता का आधार हो। छठी एवं अंतिम इकाई 'प्रारंभिक भारतीय प्रतिरोध' में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख कृषक एवं आदिवासी आंदोलनों का व्यापक परीक्षण किया गया है। 1857 के विद्रोह में इतिहास लेखन के कुछ अनछुए पहलुओं का भी विश्लेषण है।

अभय प्रसाद सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज में राजनीति शास्त्र विभाग में सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, विषय प्रवेश, **इकाई 1 : साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद** 1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व उपनिवेशवाद के प्रमुख परिप्रेक्ष्य, **इकाई 2 : भारत में औपनिवेशिक शासन की स्थापना** 2. ब्रिटिश शक्ति का सुदृढ़ीकरण : नागरिक प्रशासन एवं कानून की स्थापना, **इकाई 3 : अर्थव्यवस्था और समाज** 3. कृषि एवं पारिस्थितिकी पर प्रभाव तथा वि-औद्योगीकरण विमर्श, 4. ब्रिटिश अर्थव्यवस्था : उद्योग एवं व्यापार की स्थिति, **इकाई 4 : संस्कृति और समाज** 5. सभ्यताकरण लक्ष्य की औपनिवेशिक विचारधारा, 6. सामुदायिक स्वरूपण : जनगणना एवं गणना, 7. उपनिवेशवाद और जेंडर प्रश्न, **इकाई 5 : शिक्षण** 8. उपनिवेशिक नागरिक का शिक्षण, 9. ब्रिटिश शिक्षा एवं नए मध्यम वर्ग का उदय, **इकाई 6 : प्रारंभिक भारतीय प्रतिरोध** 10. ब्रिटिश भारत में कृषक एवं जनजातीय प्रतिरोध, 11. 1857 का विद्रोह। परिशिष्ट, संदर्भिका, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5435 1 2014 220 पृष्ठ ₹ 425.00

भारत में राष्ट्रवाद

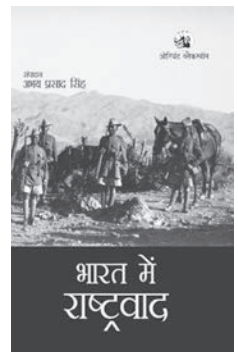

भारत में राष्ट्रवाद मूलतः राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियों की जरूरतों को केंद्रित कर लिखी गई है। यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी निश्चय ही लाभकारी होगी। भारतीय राष्ट्रवाद से संबंधित इतिहासलेखन की परंपराओं में कैंब्रिज, राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी एवं सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्यों को भी यह पुस्तक विश्लेषित करती है। इसमें भारत में उन्नीसवीं सदी में हुए सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन और राष्ट्रीय जागरण तथा औपनिवेशिक भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा से लाभान्वित नवोदित शहरी मध्यम वर्ग की भूमिका रेखांकित है। यह राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान जनमानस की भावनाओं को वैचारिक आधार प्रदान करने में उदारवादी एवं संविधानवादियों की भूमिका तथा विभिन्न जन आंदोलनों के माध्यम से गांधीजी की लोकप्रियता तथा राष्ट्रवादी आंदोलन में उनकी निर्णायक भूमिका का उल्लेख करती है। यह आंदोलन भक्तिकाल से शुरू होकर विभिन्न पड़ावों को पार करते हुए राजा राममोहनराय, दयानंद सरस्वती तथा ईश्वरचंद्र विद्यासागर के सुधारवादी आंदोलन के रूप में सामने आया। इसमें राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका, जाति का प्रश्न और ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोध के साथ ही 1857 के विद्रोह के उपरांत कृषक, जनजातीय तथा मजदूर आंदोलनों की प्रवृत्ति तथा स्वरूप में आए बदलाव की भी चर्चा की गई है।

इस पुस्तक में भारत में वामपंथ के उदय के संबंध में यह स्थापना दी गई है कि वामपंथ कोई आकस्मिक घटना या मॉस्को से संचालित विदेशी षड्यंत्र का परिणाम न होकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संचालित आंदोलन से असंतुष्ट युवाओं, किसानों, श्रमिकों एवं क्रांतिकारी संगठनों के वैचारिक मतभेद का परिणाम था। भारतीय राजनीति में औपनिवेशिक काल में सांप्रदायिकता संबंधी राजनैतिक

कारकों की ऐतिहासिकता के विश्लेषण में 'फूट डालो और राज करो' और मुस्लिम लीग की स्थापना आदि जैसे साम्राज्यवादी राजनीतिक हथकंडों का उल्लेख किया गया है।

अभय प्रसाद सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज में राजनीति शास्त्र विभाग में अध्यापनरत हैं। उनकी राजनीति शास्त्र विषय से जुड़ी प्रकाशकीय गतिविधियों में सहभागिता रहती है। उन्होंने ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा प्रकाशित *भारत में उपनिवेशवाद* पुस्तक का संपादन किया है।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन, विषय प्रवेश। **इकाई 1 : भारत में राष्ट्रवाद के विभिन्न उपागम** 1. भारत में राष्ट्रवाद के अध्ययन के विभिन्न उपागम; **इकाई 2 : उन्नीसवीं सदी में सुधारवाद एवं सुधारवाद विरोध** 2. उन्नीसवीं सदी के प्रमुख सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन; **इकाई 3 : राष्ट्रवादी राजनीति एवं इसके सामाजिक आधार का विस्तार** 3. राष्ट्रीय आंदोलन के पड़ाव और विभिन्न विचारधाराएं, 4. गांधी एवं जन लामबंदीकरण, 5. समाजवादी विकल्प : कांग्रेस समाजवादी एवं साम्यवादी; **इकाई 4 : सामाजिक आंदोलन** 6. राष्ट्रीय आंदोलन में महिला भागीदारी और उसका प्रभाव, 7. जाति का प्रश्न : ब्राह्मण विरोधी राजनीति, 8. भारत में सामाजिक आंदोलन : कृषक, जनजातीय तथा मजदूर आंदोलन; **इकाई 5 : विभाजन एवं स्वतंत्रता** 9. भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता एवं द्वि-राष्ट्र का सिद्धांत और विभाजन पर समझौता। संदर्भ सूची, परिशिष्ट, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5436 8 2014 244 पृष्ठ ₹ 425.00

भारतीय राजव्यवस्था और शासन

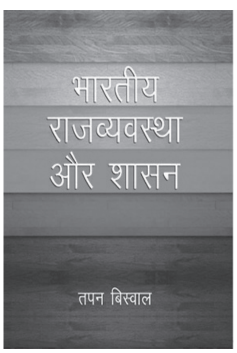

भारतीय राजव्यवस्था और शासन पुस्तक संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) और राज्य लोक सेवा आयोग (पीएससी) जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। यह पुस्तक राष्ट्रीय और प्रांतीय दोनों स्तरों की प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक की विषयवस्तु में शामिल हैं : भारत में संवैधानिक विकास; मौलिक अधिकार; केंद्रीय कार्यकारिणी; संघीय विधायिका; न्यायपालिका; राज्य कार्यकारिणी; भारत में संघवाद; भारत में पंचायती राज; भारत में दल-व्यवस्था; लोकतंत्र तथा चुनाव प्रक्रिया; संवैधानिक प्राधिकरण; संघ प्रदेशों तथा अधिग्रहीत प्रदेशों का प्रशासन; भाषाएं; संवैधानिक संशोधन; जम्मू व कश्मीर राज्य; नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था); लोक नीति; अधिकार संबंधी मुद्दे; विशेष दर्जे के राज्य।

यह पुस्तक संघ लोक सेवा आयोग और सिविल सेवा के भावी उम्मीदवारों की प्रवृत्ति में आते बदलावों के गहन अध्ययन और अनुसंधान का परिणाम है। यह देश के भावी शीर्ष नौकरशाहों की मूल्यांकन की प्रकृति तथा उनके मानसिक स्तर को समझते हुए उसी की प्रतिक्रिया के तौर पर लिखी गई है। प्रतियोगी परीक्षाओं के वर्तमान पैटर्न में "लोक नीति" विषय को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। एक संपूर्ण अध्याय इसी पर केंद्रित रखा गया है जिसमें लोक नीति का अर्थ, संरचना, परिभाषाएं, प्रक्रिया, उद्देश्य, इत्यादि से लेकर नीति कार्यान्वयन के प्रशासनिक-विधायी पक्ष, व्यवधान, लोक नीति के महत्त्व, उसके अध्ययन सहित सभी मुख्य बिंदुओं को समाहित किया गया है।

इस पुस्तक के विषय-क्षेत्र के प्रत्येक अध्याय को सतर्कता के साथ तैयार किया गया है। भारतीय राजव्यवस्था (इंडियन पॉलिटी) के अलावा शासन (गवर्नेंस) एक कोर एरिया के रूप में उभर रहा है जिससे नीति-निर्माण की प्रक्रिया में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है तथा शासन (गवर्नेंस) नागरिकों की बढ़ती जरूरतों के प्रति पूरी निष्ठा से उत्तरदायी और जिम्मेदार हो गया है।

तपन बिस्वाल दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग में राजनीति विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर रहे हैं। पिछले लगभग तीन दशकों से वे स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ाते रहे हैं। उन्होंने एम.फिल. एवं पीएच.डी. के शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी किया है।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना; आभार। 1. भारत में संवैधानिक विकास, 2. मौलिक अधिकार, 3. केंद्रीय कार्यकारिणी, 4. संघीय विधान, 5. न्यायपालिका, 6. राज्य कार्यकारिणी, 7. भारत में संघवाद, 8. भारत में पंचायती राज, 9. भारत में दल व्यवस्था, 10. लोकतंत्र तथा चुनाव प्रक्रिया, 11. संवैधानिक प्राधिकरण, 12. संघ प्रदेशों तथा अधिगृहीत प्रदेशों का प्रशासन, 13. भाषाएं, 14. संवैधानिक संशोधन, 15. जम्मू व कश्मीर राज्य, 16. नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था), 17. लोक नीति, 18. अधिकारों से संबंधित मुद्दे, 19. विशेष दर्जे के राज्य। संदर्भ ग्रंथ-सूची।

978 93 8639 271 8 2017 468 पृष्ठ ₹ 575.00

राजनीतिक समाजशास्त्र : 21वीं सदी के बदलते संदर्भ में

राजनीतिक समाजशास्त्र : 21वीं सदी के बदलते संदर्भ में पुस्तक लंबे और गहन अध्ययन और शोध का परिणाम है। हिंदी भाषा-भाषी छात्रों के बीच हिंदी में राजनीतिक समाजशास्त्र जैसे अपेक्षित नए विषय पर एक स्तरीय पुस्तक की कमी लंबे समय से अनुभव की जा रही थी। यह पुस्तक उसी दिशा में किया गया एक प्रयास है।

पुस्तक में व्यवहारवाद, संरचनावाद, व्यवस्था विश्लेषण, प्रकार्यात्मक उपागम एवं मार्क्सवाद और अंततः विज्ञान एवं इतिहास के विकल्प या उनके एकीकरण की विशद व्याख्या प्रस्तुत की गई है। पुस्तक में फ्रांस की क्रांति से लेकर उन्नीसवीं सदी की क्रांतियों और सतत चलते संघर्षों में संघर्ष और स्थैर्य की संभावनाओं पर आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण, विशेषतः आसियान और सार्क के योगदान और भारत एवं चीन के एशिया के विकास में योगदान पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। ये चार अध्याय बहुधा राजनीतिक समाजशास्त्र की पुस्तकों में नहीं मिलते, पुस्तक में इनका समावेश राजनीतिक समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को विषय का समग्र ज्ञान एक जगह उपलब्ध कराने में सहायक होगा। राजनीतिक विकास, राजनीतिक संस्कृति, नौकरशाही, राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिक संचार, जनमत और यहाँ तक कि चुनावी व्यवहार की अवधारणाएँ और इनके अंतर्संबंधों पर भी चर्चा की गई है।

एल. एन. शर्मा निवर्तमान, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर और पटना विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष रह चुके हैं। उनके द्वारा लिखित और प्रकाशित पुस्तकों में शामिल हैं : *ए न्यू ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स* एवं *इंडियन प्राइम मिनिस्टर : ऑफिस एंड पावर*। **कृष्ण मुरारी** दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापनरत हैं। वे *भारतीय लोकतंत्र एवं शासन व्यवस्था* पुस्तक के सह-लेखक हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका। 1. विषय-प्रवेश : 1.1 दार्शनिक पृष्ठभूमि, 1.2 समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, 1.3 राजनीतिक समाजशास्त्र के उद्भव की पृष्ठभूमि, 1.4 राजनीतिक समाजशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र और इसका विकास, 1.5 राजनीतिक समाजशास्त्र एवं राजनीति के समाजशास्त्रीय अध्ययन में अंतर, 1.6 राजनीतिक समाजशास्त्र की चुनौतियाँ एवं प्रासंगिकता; 2. राजनीतिक समाजशास्त्र के विभिन्न उपागम : 2.1 व्यवहारवाद बनाम संरचनावाद, 2.2 व्यवस्था उपागम एवं संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण, 2.3 मार्क्सवादी उपागम, 2.4 विज्ञान एवं इतिहास; 3. शक्ति, प्रभाव, सत्ता और औचित्य की अवधारणाएँ : 3.1 प्रभाव, 3.2 शक्ति, 3.3 सत्ता, 3.4 औचित्य, राजनीतिक समाजशास्त्र; 4. सामाजिक स्तरों (शक्तियों) का राजनीतिकरण : 4.1 जाति, 4.2 वर्ग, 4.3 धर्म और सांप्रदायिकता, 4.4 भारतीय राजनीति और नस्ल समस्या, 4.5 भारतीय राजनीति और भाषा; 5. राजनीतिक शक्ति का अभिजनवादी सिद्धांत एवं वंचित वर्ग की स्थिति : 5.1 अभिजनवादी सिद्धांत का विश्लेषण, 5.2 अभिजन एवं लोकतंत्र, 5.3 अभिजनवादी सिद्धांत का मूल्यांकन; 6. राजनीति का समूह सिद्धांत : 6.1 समूह सिद्धांत का विश्लेषण, 6.2 भारत में हित समूह; 7. राजनीतिक दल और राजनीतिक व्यवस्था : 7.1 राजनीतिक दल : विचारधारा एवं शक्ति, 7.2 राजनीतिक दलों का समाजशास्त्र, 7.3 दल के संसदीय बनाम गैर-संसदीय भाग, 7.4 अल्पतंत्र और समर्थक-अन्वेषी तंत्र, 7.5 दलीय व्यवस्था प्रकार एवं कार्य, 7.6 भारत में दलीय व्यवस्थाएँ; 8. आधुनिकीकरण, राजनीतिक विकास और राजनीतिक संस्कृति : अंतर्संबंध : 8.1 आधुनिकीकरण के प्रतिमान, 8.2 आधुनिकीकरण की विशेषताएँ, 8.3 राजनीतिक विकास, 8.4 आधुनिकीकरण एवं राजनीतिक विकास का अंतर्संबंध, 8.5 राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा; 9. नौकरशाही, लोकतंत्र एवं समाज : इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियों के संदर्भ में : 9.1 नौकरशाही : मैक्स वेबर के आदर्श प्रतिमान, 9.2 वेबर के नौकरशाही के आदर्श प्रतिमान का मूल्यांकन, 9.3 नौकरशाही की बुद्धिमत्तावान निरपेक्षता, 9.4 नौकरशाही और समाज; 10. नवीन सामाजिक आंदोलन : 10.1 नारीवाद, 10.2 बाल विकास आंदोलन, 10.3 बुजुर्ग और समाज, 10.4 दलितवाद, 10.5 अल्पसंख्यकों के विकास के लिए आंदोलन, 10.6 पर्यावरणवाद, अनुक्रम, राजनीतिक समाजशास्त्र; 11. जनमत, राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक सहभागिता तथा मतदान प्रक्रिया : 11.1 जनमत : अर्थ, 11.2 राजनीतिक समाजीकरण तथा जनमत निर्माण, 11.3 राजनीतिक

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

सहभागिता, 11.4 चुनाव प्रक्रिया तथा सुधार, 11.5 भारत में चुनाव सुधार; 12. राजनीतिक संचार : 12.1 राजनीतिक संचार : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य; 13. दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण और भारत तथा चीन की भूमिका : 13.1 भारत-पाकिस्तान, चीन और भारत की भूमिका; 14. वैश्वीकरण, असमानता, अस्थिता, राजनीतिक सामाजिक परिवर्तनों और क्रांति के बीच सहमति की खोज : 14.1 राजनीतिक परिवर्तन एवं क्रांति, 14.2 राजनीतिक परिवर्तन और क्रांति में अंतर, 14.3 सहमति प्राप्ति के उपाय। शब्दावली, परिशिष्ट, अनुक्रमाणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 5483 2 2014 344 पृष्ठ ₹ 450.00

आज का भारत : अर्थ और समाज

इस पुस्तक को बी.ए. के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखा गया है। साथ ही यह पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी अत्यंत उपयोगी और लाभप्रद है। इस पुस्तक में जिन विषयों की चर्चा और विश्लेषण किया गया है, वे हैं : स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की मूलभूत विशेषताएं; स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास की रणनीति; प्रमुख आर्थिक समस्याएं और सार्वजनिक नीति : गरीबी, बेरोज़गारी, खाद्य असुरक्षा और क्षेत्रीय असमानता; वर्तमान आर्थिक नीति के महत्त्वपूर्ण घटक : वित्तीय, व्यापार तथा बुनियादी संरचना; सामाजिक क्षेत्र का बदलता स्वरूप : शिक्षा एवं स्वास्थ्य नीति के संदर्भ में; भारत के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति : सूचना प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन; बदलता सामाजिक ढांचा : ग्रामीण भारत में वर्ग एवं जाति के बदलते रिश्ते; औद्योगिक वर्ग का उत्थान तथा शहरी जीवन का बदलता स्वरूप; और सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक : सार्वभौम शिक्षा, वयस्क मताधिकार, सामाजिक आंदोलन व जनसंचार माध्यम। पुस्तक की भाषा सरल एवं बोधगम्य है। जटिल तथ्यों का सहज प्रस्तुतीकरण पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य बनाता है।

बासुकी नाथ चौधरी दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में राजनीति शास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। **युवराज कुमार** दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग में यूजीसी पोस्ट डॉक्टरल फैलो रह चुके हैं। संप्रति वे दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज के राजनीति शास्त्र विभाग में अध्यापनरत हैं। ये दोनों ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा प्रकाशित *भारतीय शासन और राजनीति* के सहसंपादक भी हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन। 1. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की मूलभूत विशेषताएं; 2. स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास की रणनीति : उदारीकरण और राज्य की भूमिका; 3. प्रमुख आर्थिक समस्याएं और सार्वजनिक नीति : गरीबी, बेरोज़गारी, खाद्य सुरक्षा और क्षेत्रीय असमानता; 4. वर्तमान आर्थिक नीति के महत्त्वपूर्ण घटक : वित्तीय, व्यापार तथा बुनियादी संरचना; 5. सामाजिक क्षेत्र का बदलता स्वरूप : शिक्षा एवं स्वास्थ्य नीति के संदर्भ में; 6. भारत के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति : सूचना प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन; 7. बदलता सामाजिक ढांचा : ग्रामीण भारत में वर्ग एवं जाति के बदलते रिश्ते, औद्योगिक वर्ग, मध्यम वर्ग का उत्थान तथा शहरी जीवन का बदलता रूप; 8. सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक : सार्वभौम शिक्षा, वयस्क मताधिकार, सामाजिक आंदोलन व जनसंचार माध्यम। अनुक्रमणिका।

978 81 250 5173 2 2013 208 पृष्ठ ₹ 385.00

आज का भारत : राजनीति और समाज

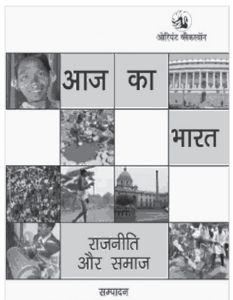

आज का भारत विश्व शक्ति बनने की दिशा में प्रयासरत है। उदारवाद ने भारतीय समाज को नवीन ऊर्जा एवं संभावनाओं को स्वर्णिम भविष्य दिया, जिसकी गूँज आज सुनाई पड़ रही है। सरकार की नीतियों एवं जनमानस की बढ़ती आकांक्षा कभी माओवाद, कभी सिविल सोसायटी, कभी महिला मुक्ति आंदोलन तो कभी अन्ना के भ्रष्टाचार उन्मूलन आंदोलन के रूप में दिखाई देती है। इस प्रक्रिया में राजनैतिक दल भले कमज़ोर दिखते हों, परंतु लोकतंत्र की गरिमा व गौरव और भी मजबूती के साथ स्थापित होता है। निःसंदेह कल का भविष्य भारत का भविष्य होगा, क्योंकि हमारी 65 प्रतिशत आबादी युवा है।

आज का भारत : राजनीति और समाज पुस्तक को बी.ए. के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखा गया है। साथ ही यह पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी अत्यंत उपयोगी और लाभप्रद है।

इस पुस्तक में कुल नौ अध्याय हैं : पहला, भारत में व्यावसायिक संरचना एवं सामाजिक गतिशीलता की प्रवृत्ति; दूसरा, नई सामाजिक शक्तियों का उदय : दलित, जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग आंदोलन, सामाजिक न्याय तथा प्रतिनिधित्व; तीसरा, समकालीन भारतीय महिला आंदोलन; चौथा, भारत में लोकतंत्र एवं संसदीय व्यवस्था; पाँचवाँ, भारत में दलीय व्यवस्था : एकदलीय प्राधान्य व्यवस्था से बहुदलीय व्यवस्था और गठबंधन की राजनीति; छठा, भारत में धर्मनिरपेक्षता, अल्पसंख्यक अधिकार और राष्ट्रवाद से संबंधित समकालीन विवाद; सातवाँ, भारतीय संघ एवं लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण; आठवाँ, लोक प्रशासन का बदलता स्वरूप एवं भारत में निगमनात्मक शासन तथा अंतिम, शीतयुद्ध के बाद के काल के वैश्विक रणनीति वातावरण में भारत की सुरक्षा और विदेश नीति।

बासुकी नाथ चौधरी दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में राजनीति शास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। **युवराज कुमार** दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग में यूजीसी पोस्ट डॉक्टरल फैलो रह चुके हैं। संप्रति वे दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज के राजनीति शास्त्र विभाग में अध्यापनरत हैं। आप दोनों ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा प्रकाशित *भारतीय शासन और राजनीति* के सहसंपादक भी हैं।

विषयानुक्रम : प्राक्कथन। 1. भारत में व्यावसायिक संरचना एवं सामाजिक गतिशीलता की प्रवृत्ति, 2. नई सामाजिक शक्तियों का उदय, 3. समकालीन भारतीय महिला आंदोलन, 4. भारत में लोकतंत्र एवं संसदीय व्यवस्था, 5. भारत में दलीय व्यवस्था, 6. भारत में धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता, अल्पसंख्यक अधिकार और राष्ट्रवाद से संबंधित समकालीन विवाद, 7. भारतीय संघ एवं लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, 8. लोक प्रशासन का बदलता स्वरूप एवं भारत में निगमनात्मक शासन, 9. उत्तर शीतयुद्ध काल के वैश्विक रणनीतिक वातावरण में भारत की सुरक्षा और विदेश नीति। अनुक्रमणिका।

978 81 250 5132 9 2013 220 पृष्ठ ₹ 375.00

भारत में राजनीति (दूसरा संस्करण)

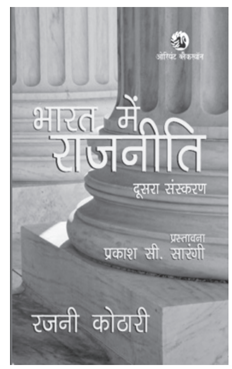

भारत में राजनीति एक प्रमुख भारतीय समाजशास्त्री के बहुवर्षीय अनुसंधान और मनन का परिणाम है। इसमें भारत की राजनीति और समाज की तमाम जटिलताओं का सम्यक प्रतिपादन किया गया है। पश्चिमी देशों में विकसित आधुनिकतम राजनीतिक धारणाओं तथा सिद्धांतों का परीक्षण भारत के संदर्भ में किया गया है और भारत जैसे नवीन राष्ट्रों की राजनीति का विश्लेषण करने में ये धारणाएँ और सिद्धांत किस तरह सक्षम हैं, इसका विवेचन भी किया गया है। यह लेखक की अंग्रेज़ी पुस्तक *पॉलिटिक्स इन इंडिया* का हिंदी अनुवाद है।

पुस्तक की सामान्य स्थापनाएँ हैं : राजनीति की स्वतंत्र सत्ता, भारतीय समाज में परिवर्तन लाने में शासन की सक्रिय भूमिका, भारतीय राजनीति की अपनी अलग शैली, जो पश्चिमी ढांचे के वर्गहितों के समुच्चयीकरण और आर्थिक शक्तियों की सार्वभौमता के मार्क्सवादी ढांचे, दोनों से भिन्न है, इसके सांस्थानिक विश्लेषण की जिसमें एक दल की प्रधानता का मुख्य स्थान है, देश में आने वाले संकटों की चुनौती से राजनीति और शासन की कार्यप्रणाली में होने वाले बड़े परिवर्तन, लोकतांत्रिक पद्धति और राज्य की मुख्य नीतियों की सफलता के बारे में आशावादी दृष्टिकोण।

रजनी कोठारी स्वतंत्र भारत के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण बुद्धिजीवी हुए हैं। वे सेंटर फॉर दि स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटी (CSDS) के संस्थापक सदस्य थे।

प्रकाश सी. सारंगी हैदराबाद विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर हैं।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना। 1. सैद्धांतिक विवेचन, 2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, 3. आधुनिकता की ओर, 4. संस्था निर्माण, 5. पार्टी प्रणाली और गठजोड़, 6. सामाजिक ढांचा, 7. राजनैतिक संस्कार और सामाजिकीकरण, 8. राजनीतिक संस्थानों का निर्माण

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

और राष्ट्रीय एकता, 9. विकास की राजनीतिमूलक अर्थनीति, 10. अंतर्राष्ट्रीय स्थिति, 11. भविष्य।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 5133 6 2013 368 पृष्ठ ₹ 575.00

भारतीय शासन और राजनीति

भारतीय शासन और राजनीति स्नातक, स्नातकोत्तर के छात्रों तथा सिविल सेवा की प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर लिखी गई है।

यह पुस्तक स्वतंत्रता की पूर्व संध्या से लेकर वर्तमान तक के विभिन्न पहलुओं को निष्पक्ष रूप से विवेचित करने का प्रयास करती है। अध्ययन की दृष्टि से विषयवस्तु को पाँच भागों में बाँटा गया है। पहला भाग स्वतंत्रता आंदोलन एवं राष्ट्रवाद के विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोणों और राज्य की प्रकृति की विवेचना करता है। दूसरा भाग शासन की संवैधानिक संरचना एवं उसकी कार्यप्रणाली, संसद से लेकर स्थानीय स्वशासन एवं राष्ट्रपति से लेकर पंचायत प्रमुख तक की संवैधानिक शक्ति एवं कार्यपद्धति की जानकारी देता है। इसी भाग में भारतीय संसद तथा संसदीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियों का अध्ययन, भारतीय न्यायपालिका की न्यायिक सक्रियता के माध्यम से समाजपरिवर्तन की भूमिका, प्रशासन, लोक प्रशासन, नवीन प्रशासन तथा प्रशासन के भारतीय संदर्भ में विकास के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों का अध्ययन भी किया गया है। तीसरा भाग भारतीय राजनैतिक दलों, दलीय पद्धति के साथ दबाव समूहों, किसान, मजदूर, दलित एवं स्त्री आंदोलनों की भी समीक्षा करता है। चौथा भाग विकास एवं उससे जुड़ी नीतियों को समझने का प्रयास है। यह विकास से जुड़ी समस्याओं के अलावा कृषि एवं उद्योग नीति के साथ-साथ विकास को विदेश नीति एवं पर्यावरण जैसे प्राकृतिक संदर्भों में भी विश्लेषित करता है। पाँचवाँ भाग वनवासियों के अधिकार तथा मानवाधिकार से जुड़ी समस्याओं और समाधानों के साथ इस पुस्तक को एक विशेष दर्जा दिलाता है क्योंकि इन विषयों को अलग से सम्मिलित किया गया है।

बासुकी नाथ चौधरी दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में राजनीति शास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। **युवराज कुमार** दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग में यूजीसी पोस्ट डॉक्टरल फैलो रह चुके हैं। संप्रति वे दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज के राजनीति शास्त्र विभाग में अध्यापनरत हैं। आप दोनों ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा प्रकाशित *आज का भारत : अर्थ और समाज* एवं *आज का भारत : राजनीति और समाज* के सहसंपादक भी हैं।

विषयानुक्रम : खंड-I 1. स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत के सामने समस्याएं, 2. संविधान सभा : भारतीय राज्य व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में, 3. भारतीय संविधान : मौलिक अधिकार, राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत तथा मौलिक कर्तव्य, 4. भारतीय राज्य की प्रकृति : निर्धारित तत्त्व व अवधारणाएं, 5. सामाजिक संरचना व लोकतांत्रिक प्रक्रिया; परिप्रेक्ष्य रुझान व चुनौतियां; **खंड-II** 6. संघात्मक संरचना और प्रणाली : केंद्र-राज्यों के मध्य तनाव व खिचाव के कारण, 7. भारतीय संघ में राज्य पुनर्गठन नीति, 8. भारतीय संसद, 9. भारत का राष्ट्रपति एवं संघीय कार्यपालिका, 10. भारतीय न्यायपालिका : न्यायिक समीक्षा तथा न्यायिक सक्रियता, 11. राज्य सरकारें और उनकी कार्य प्रणाली, 12. स्थानीय स्वशासन, 13. प्रशासन की प्रकृति तथा राजनैतिक एवं विकास प्रक्रिया में इसकी भूमिका, 14. संवैधानिक संशोधन : सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन; **खंड-III** 15. भारतीय दलीय व्यवस्था : राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दल, 16. भारत में दबाव समूह, 17. भारत में निर्वाचन : राजनीति और मतदान व्यवहार, 18. भारत में किसान, मजदूर एवं जनजातीय आंदोलन, 19. भारत में महिला आंदोलन, 20. दलित आंदोलन; **खंड-IV** 21. अल्प विकास की समस्याएं : गरीबी, अशिक्षा, क्षेत्रीय असंतुलन तथा पर्यावरण अवनति, 22. भारत की पर्यावरण नीतियां, 23. विकास की रणनीति, 24. राष्ट्रीय एकीकरण, 25. विकास प्रक्रिया एवं विदेश नीति, 26. भारत और मानव अधिकार; **खंड-V** 27. पर्यावरण संबंधी प्रमुख चिंताएं और वनवासियों के अधिकार, परिशिष्ट।

978 81 250 4184 9 2011 584 पृष्ठ ₹ 595.00

विधायिका और न्यायपालिका : संसद तथा राज्य विधान-मंडलों से संबंधित न्यायिक निर्णय

भारत के संविधान में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के सुव्यवस्थित तथा सुचारु ढंग से कार्य करने हेतु उनके बीच शक्तियों का बंटवारा किया गया है। यह न्यायपालिका को संविधान के उपबंधों तथा विधायिका द्वारा पारित विधियों (कानूनों) की व्याख्या करने की शक्ति भी प्रदान करता है। पिछले कुछ वर्षों में विधायिका और न्यायपालिका, परिपक्व और गतिशील तथा लोकतंत्र के ढांचे को और अधिक मजबूत बनाने के लिए अपने-अपने क्रियाकलापों के क्षेत्रों में कुछ हद तक स्वायत्त संस्थाओं के रूप में विकसित हुई हैं। यद्यपि इन्होंने अत्यंत संयम और जिम्मेदारी के साथ कार्य किया है तथापि, संविधान के अधीन अपनी स्वायत्तता तथा स्वतंत्रता की रक्षा करने के वैध सरोकार के कारण दोनों में समय-समय पर मतभेद होते रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद असंख्य अवसरों पर इस तरह के मामले न्याय-निर्णयन के लिए न्यायालय के पास आए हैं। **विधायिका और न्यायपालिका** भारत में संसद और राज्य विधान-मंडलों की शक्तियों, विशेषाधिकारों एवं उन्मुक्तियों की चर्चा करती है। यह भारतीय संविधान के अनुसार विधान-मंडलों को प्राप्त स्वायत्तता के निर्धारण में स्वतंत्र न्यायपालिका की भूमिका के वर्णन के साथ-साथ ही उच्च न्यायालयों एवं उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णयों का विस्तृत विवरण भी देती है।

प्रख्यात न्यायविद् **उपेन्द्र बक्शी** द्वारा लिखित महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना भारतीय संविधान के जन्म की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रदान करती है। उन्होंने बताया है कि यूनाइटेड किंगडम के हाऊस ऑफ कॉमन्स को प्राप्त शक्तियों, विशेषाधिकार एवं उन्मुक्तियों से संविधान निर्माता कितने प्रभावित थे। उन्होंने इस रोचक तथ्य की ओर भी ध्यान दिलाया है कि अब तक दाखिल केसों में अधिकतर स्वयं विधायकों द्वारा ही किए गए हैं, और उन्हें शक्तियों, विशेषाधिकारों एवं उन्मुक्तियों की जरूरत क्यों है।

पुस्तक दो खंडों में है। खंड-। संसद और राज्य विधान-मंडल से संबंधित उपबंधों की न्यायिक व्याख्याओं के माध्यम से विधि के विकास का पुनः कथन है। यह मुख्यतः उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय तथा राज्यों द्वारा विहित विधि के सिद्धांतों को संक्षिप्त रूप में अर्थात् विधि की वर्तमान स्थिति को प्रस्तुत करता है। खंड-2 में न्यायिक निर्णयों का संक्षिप्त सार है। संसद और राज्य विधान-मंडलों से संबंधित उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण विनिर्णयों का इस पुस्तक में समावेश है।

इस विधिक सूचना के संग्रह का उद्देश्य विधान मंडलों को प्राप्त शक्तियों, विशेषाधिकारों एवं उन्मुक्तियों के संबंध में वर्तमान स्थिति की स्पष्ट समझ विकसित करना है। यह पुस्तक विधायकों, संविधान विशेषज्ञों, न्यायविदों, राजनीति विज्ञान और विधि के विद्यार्थियों के लिए बहुमूल्य स्रोत सिद्ध होगी।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना, प्राक्कथन; आभार; परिचय। **खंड 1 : न्यायिक निर्णयों का विश्लेषण** 1. संसद् और राज्य विधान मंडलों की शक्तियां, विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां; 2. सदस्यों की शक्तियां, विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां; 3. सत्र, सत्रवसान और विघटन; 4. गिरफ़्तार/निरुद्ध रहते हुए सदस्यों का सदन के सत्र में उपस्थित होने का अधिकार; 5. सदन द्वारा प्रक्रिया के संकल्पों को चुनौती देने वाली रिट याचिकाएं; 6. सभापति/अध्यक्ष के विनिश्चयों को चुनौती देने वाली रिट याचिकाएं; 7. संसद् और राज्य विधान-मंडल के सदस्यों की अर्हताएं और निरर्हताएं; 8. दल परिवर्तन निरोधी विधि (दसवीं अनुसूची); 9. त्यागपत्र, हटाना तथा स्थान रिक्त करना; 10. शपथ या प्रतिज्ञान; 11. सदन में मतदान; 12. विधेयकों का पुरःस्थापन और पारित करना; 13. सदन या सदनों या राष्ट्रपति/राज्यपाल का संभाषण और संदेश; 14. विधान-मंडल की शक्तियों का न्यायपालिका के साथ विरोध; विवाद्यकों की विषय-वार सूची (अंग्रेज़ी वर्णानुक्रम में) **खंड 2 : न्यायिक निर्णयों का सार** : संबंधित लेखों की सूची (खंड 1), विवाद्यकों की अनुक्रमणिका, सामान्य अनुक्रमणिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 4193 1 2011 492 पृष्ठ ₹ 2150.00

समकालीन भारत : एक परिचय

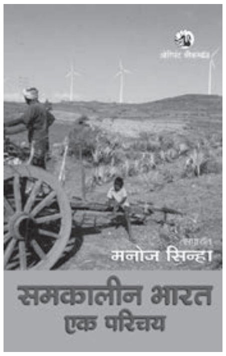

समकालीन भारत : एक परिचय पुस्तक के अंतर्गत वर्तमान वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं प्रभाव के संदर्भ में समकालीन भारत की अर्थव्यवस्था, राजनीति एवं समाज के समीक्षात्मक विश्लेषण पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। पुस्तक में कुल सत्रह अध्याय हैं। पहले दो अध्याय समकालीन भारत की भूमिका तैयार करते हैं। अगले चार अध्याय अर्थशास्त्र से संबद्ध हैं जिनमें समकालीन भारत की अर्थव्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। इसके बाद के पाँच अध्यायों में समकालीन भारत का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। इन्होंने यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक परिवर्तन बहुत दूर तक एक राजनीतिक मुद्दा है। अंतिम छह अध्याय समकालीन भारत की राजनीतिक स्थिति का मूल्यांकन करते हैं। इनमें भारत में जनतंत्र की प्रकृति, दलीय व्यवस्था, संघवाद, लोक प्रशासन की बदलती प्रकृति और बदलते वैश्विक सामरिक परिप्रेक्ष्य में भारत पर चर्चा की गई है। साथ ही समकालीन भारत में धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता और अल्पसंख्यक अधिकार पर व्यापक विश्लेषण किया गया है।

यह पुस्तक भारतीय विश्वविद्यालयों के स्नातक पाठ्यक्रमों हेतु लिखी गई है। अतः इसकी विषय-वस्तु का अध्ययन एवं विश्लेषण स्नातकोत्तर एवं प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए भी लाभदायक होगा।

मनोज सिन्हा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए., एम.फिल. और पीएच.डी. करने के उपरांत यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया, बर्कले (अमेरिका) से अमेरिकन पॉलिटिक्स कोर्स किया। संप्रति, वे दिल्ली विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट कॉलेज के प्रिंसिपल हैं।

विषयानुक्रम : 1. नव स्वतंत्र भारत : आर्थिक परिप्रेक्ष्य 1.1 ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन व्यवस्था का स्वरूप, 1.2 औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था और उसका प्रभाव; **2. स्वतंत्र भारत में विकास की रणनीति** 2.1 स्वतंत्र भारत की औपनिवेशिक पृष्ठभूमि, 2.2 उपनिवेशवाद एवं भारतीय अर्थव्यवस्था का अल्पविकास, 2.3 भारत में नियोजित विकास की रणनीति, 2.4 भारत में नियोजित विकास संबंधी पहल, 2.5 नेहरू-महलनोबिस संवृद्धि रणनीति, 2.6 नेहरू-महलनोबिस संवृद्धि रणनीति का मूल्यांकन, 2.7 उत्तर-नेहरूवादी नियोजित विकास रणनीति, 2.8 नवीन विकास रणनीति; **3. प्रमुख आर्थिक समस्याएं और नीतियां** 3.1 खाद्य सुरक्षा, 3.2 भारत में खाद्य सुरक्षा, 3.3 भारतीय खाद्य नीति, 3.4 सार्वजनिक वितरण प्रणाली, 3.5 सार्वजनिक वितरण प्रणाली की आलोचना, 3.6 मूल्यांकन एवं निष्कर्ष, 3.7 क्षेत्रीय असंतुलन, 3.8 क्षेत्रीय असंतुलन के कारण, 3.9 योजना युग में विकास की प्रकृति, 3.10 गरीबी 3.11 गरीबी के कारण, 3.12 गरीबी उन्मूलन के लिए कार्य-योजना, 3.13 सापेक्ष एवं निरपेक्ष गरीबी, 3.14 बेरोज़गारी, 3.15 भारत में बेरोज़गारी की प्रकृति और, 3.16 बेरोज़गारी के प्रतिकूल प्रभाव, 3.17 बेरोज़गारी की समस्या के समाधान के उपाय; **4. वर्तमान आर्थिक नीति व आर्थिक सुधार** 4.1 आर्थिक सुधारों से पहले की नीतियां, 4.2 आर्थिक सुधारों की जरूरत, 4.3 नई आर्थिक नीति के तत्त्व, 4.4 आर्थिक सुधारों की मुख्य विशेषताएं, 4.5 उदारीकरण, 4.6 निजीकरण, 4.7 भूमंडलीकरण, 4.8 वित्तीय सुधार; **5. सामाजिक क्षेत्र की प्रकृति** 5.1 शिक्षा संबंधी लोकनीति, 5.2 उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण, 5.3 स्वास्थ्य की सरकारी नीति; **6. भारत के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति** 6.1 वैज्ञानिक नीति संकल्प 1958, 6.2 विज्ञान और प्रौद्योगिकी : पंचवर्षीय योजनाएं, 6.3 कृषि, 6.4 अंतरिक्ष, 6.5 ऊर्जा, 6.6 पर्यावरण, 6.7 स्वास्थ्य, 6.8 सूचना, 6.9 सुरक्षा; **7. बदलती सामाजिक संरचना** 7.1 औपनिवेशिक ग्रामीण समाजों में जाति और वर्ग के आपसी संबंध, 7.2 उत्तर औपनिवेशिक राज्य व ग्रामीण समाजों में आपसी संबंध और सामाजिक परिवर्तन, 7.3 पेशेवर वर्ग और ग्रामीण समाज, 7.4 भूमंडलीकरण के दौर में : समकालीन भारतीय ग्रामीण समाजों में जातीय-वर्गीय संरचनात्मक संघर्ष, 7.5 उपसंहार; **8. बदलती सामाजिक संरचना** 8.1 भारत में मध्य वर्ग और सामाजिक परिवर्तन, 8.2 मध्य वर्ग का अर्थ व परिभाषा : एक ऐतिहासिक विमर्श, 8.3 समकालीन भारत में नव मध्य वर्ग के निर्धारक तत्त्व और विशेषताएं, 8.4 औपनिवेशिक भारत में मध्य वर्ग का उदय, 8.5 भारतीय राजनीति में मध्य वर्ग की भूमिका एवं प्रभुत्व, 8.6 मध्य वर्ग के राजनीतिक आंदोलन और उनके बीच आपसी संघर्ष, 8.7 दलित मध्य वर्ग का विस्तारीकरण और शैली, 8.8 समकालीन भारत की शहरी जीवन शैली में परिवर्तन, 8.9 समकालीन भारत में नव औद्योगिक वर्ग; **9. सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक** 9.1 सार्वभौम प्रारंभिक शिक्षा, 9.2 सार्वभौम वयस्क मताधिकार, 9.3 जन-संचार साधन, 9.4 सामाजिक आंदोलन; **10. सामाजिक गतिशीलता एवं व्यावसायिक संरचना** 10.1 सामाजिक गतिशीलता क्या है?, 10.2 परंपरागत भारतीय समाज, 10.3 सामाजिक संरचना एवं कार्य विभाजन, 10.4 भारत में जाति व्यवस्था, 10.5 1947 के बाद का भारत, 10.6 भारतीय नौकरशाही का चरित्र, 10.7 संरक्षणात्मक भेदभाव एवं सामाजिक गतिशीलता, 10.8 भूमंडलीकरण एवं व्यावसायिक संरचना; **11. नई सामाजिक शक्तियों का उद्भव** 11.1 दलित आंदोलन, 11.2 अन्य पिछड़े वर्गों/जातियों का आंदोलन, 11.3 आदिवासी आंदोलन, 11.4 महिला आंदोलन, 11.4 महिला आंदोलन के मुख्य मुद्दे, 11.5 सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व का सवाल; **12. भारत में जनतंत्र : प्रकृति और कार्य** 12.1 जनतंत्र का अर्थ व परिभाषा, 12.2 स्वतंत्र भारत में जनतंत्र : कार्य और प्रकृति, 12.3 भारतीय जनतंत्र का ढांचा, 12.4 संघीय व्यवस्था, 12.5 संसदीय व्यवस्था : एक परिचय, 12.6 संसद के कार्य एवं शक्तियां, 12.7 भारतीय राजनीति : एक भूलभुलैया, 12.8 राज्य-समाज संबंधों की द्वंद्वात्मकता, 12.9 भारत में लोकतंत्र के आर्थिक-सामाजिक आयाम, 12.10 सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हेतु सरकार द्वारा उठाए गए कदम, 12.11 1991 के बाद से आर्थिक उदारीकरण का युग; **13. भारत में दलीय व्यवस्था : एकदलीय प्राधान्य व्यवस्था से बहुदलीय व्यवस्था की ओर** 13.1 दलीय व्यवस्था, 13.2 भारत में दलीय व्यवस्था का विकास, 13.3 भारतीय दलीय व्यवस्था का बदलता स्वरूप : एकदलीय प्राधान्य व्यवस्था से बहुदलीय व्यवस्था की ओर, 13.4 भारतीय दलीय व्यवस्था : समस्याएं एवं संभावनाएं, 13.5 गठबंधन की राजनीति : लक्ष्य एवं प्रदर्शन 13.6 1989 से अब तक; **14. भारत में धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता एवं अल्पसंख्यक अधिकार** 14.1 धर्मनिरपेक्षता, 14.2 भारत में धर्मनिरपेक्षता, 14.3 भारत में सांप्रदायिकता, 14.4 अल्पसंख्यक अधिकार, 14.5 भारत में राष्ट्रवाद पर समकालीन बहस; **15. भारतीय संघवाद एवं स्थानीय शासन** 15.1 भारतीय संघवाद का संक्षिप्त इतिहास, 15.2 भारतीय संघवाद की प्रकृति, 15.3 भारतीय संघ की कार्य प्रणाली, 15.4 संघ-राज्य संबंध राजनीतिक और वित्तीय आयाम, 15.5 लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, 15.6 भारत में विकेंद्रीकरण का उद्भव एवं विकास, 15.7 पंचायती राज; **16. भारत में लोक प्रशासन की बदलती प्रकृति** 16.1 लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में विकास, 16.2 भारत में लोक प्रशासन की बदलती प्रकृति, 16.3 प्रशासन की सिमटती हुई भूमिका, 16.4 सुशासन की अवधारणा, 16.5 ई-प्रशासन 16.6 भारत में कंपनी प्रशासन; **17. बदलते वैश्विक सामरिक परिप्रेक्ष्य में भारत** 17.1 भारत की विदेश नीति, 17.2 भारत-अमेरिका संबंध, 17.3 एशियाई सुरक्षा व्यवस्था में भारत व पड़ोसी देश (सार्क), 17.4 भारत-चीन संबंध।

978 81 250 4461 1 2011 408 पृष्ठ ₹ 495.00

गांधी अध्ययन (दूसरा संस्करण)

गांधी अध्ययन दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. ऑनर्स के समवर्ती पाठ्यक्रम (concurrent syllabus) 'रीडिंग गांधी' पर आधारित है। पुस्तक को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग में, गांधी के विचारों की ग्रांथिक व सांदर्भिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है जो प्रमुखतः पाश्चात्य विचारकों के अध्ययन की पुनर्समीक्षा है। दूसरे भाग में, **हिन्द स्वराज** पर विस्तृत चर्चा की गई है जिसे इस पुस्तक की विशेषता माना जा सकता है। तीसरे और अंतिम भाग में, गांधी के सामाजिक-आर्थिक दर्शन की व्याख्या की गई है। कुल मिलाकर, यह पुस्तक गांधी से संबंधित पांडित्यपूर्ण लेखों का संग्रह है।

यह इस पुस्तक का दूसरा संस्करण है। दूसरे संस्करण की विशेषता इसके तीन नए अध्याय–गांधी चिंतन : उदय, एक वैकल्पिक आधुनिकता एवं गांधीवाद की प्रासंगिकता हैं जो कि पाठ्यक्रम के हिसाब से इस पुस्तक को पूर्णता प्रदान करते हैं।

मनोज सिन्हा दिल्ली विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट कॉलेज के प्रिंसिपल हैं। उनकी अन्य पुस्तकों में ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा प्रकाशित *प्रशासन एवं लोकनीति* भी शामिल है। गांधी अध्ययन दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेजों में संप्रति अध्यापनरत प्राध्यापकों द्वारा लिखित लेखों का संकलन है। मनोज सिन्हा ने इस संकलन का संपादन किया है।

विषयानुक्रम : भूमिका, पाठ्यक्रम। 1. ग्रंथ अध्ययन : तथ्यगत एवं संदर्भगत; 2. टेरेंस बॉल के व्याख्या सिद्धांत; 3. क्विंटन स्किनर की व्याख्या पद्धति; 4. हिन्द स्वराज : विषय और संदर्भ; 5. हिन्द स्वराज और एंथनी जे. परेल; 6. गांधी : आधुनिकता एवं सत्याग्रह तथा भीखू पारेख; 7. राष्ट्रवाद; 8. सांप्रदायिक एकता एवं गांधी; 9. गांधी : नारी विषयक दृष्टिकोण; 10. गांधी की दृष्टि में अस्पृश्यता; 11. गांधी और पर्यावरण; 12. गांधी चिंतन : उदय 13. एक वैकल्पिक आधुनिकता; 14. गांधीवाद की प्रासंगिकता। परिशिष्ट; संदर्भिका; अनुक्रमणिका।

978 81 250 4023 1 2010 240 पृष्ठ ₹ 395.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

हिंद स्वराज

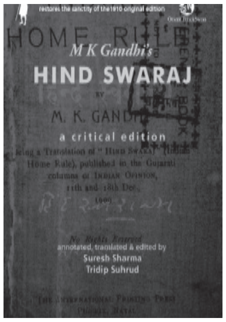

यह पुस्तक 1909 में महात्मा गांधी द्वारा मूल रूप से गुजराती में लिखी गई पुस्तक का हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद है। यह आधुनिक सभ्यता संबंधी संवाद है। पुस्तक में 1910 के अंग्रेज़ी अनुवाद को पुनः प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इसमें मूल गुजराती का वैकल्पिक अनुवाद और पाद टिप्पणियाँ भी दी गई हैं।

सुरेश शर्मा एक इतिहासकार और मानवशास्त्री हैं।

त्रिदीप सुहृद एक राजनीतिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक इतिहासकार हैं।

विषयानुक्रम : प्रस्तावना 1. कॉंग्रेस और उसके कार्यभारी, 2. बंग-भंग, 3. अशान्ति और असंतोष, 4. स्वराज क्या है?, 5. इंग्लैंड की स्थिति, 6. सुधार दर्शन, 7. हिन्दुस्तान क्यों गया?, 8. हिन्दुस्तान की दशा, 9. हिन्दुस्तान की दशा—रेलगाड़ी, 10. हिन्दुस्तान की दशा—हिन्दू-मुसलमान, 11. हिन्दुस्तान की दशा—वकील, 12. हिन्दुस्तान की दशा—डॉक्टर, 13. सच्चा सुधार क्या है?, 14. हिन्द कैसे छूटे?, 15. इटली और हिन्द, 16. गोला-बारूद, 17. सत्याग्रह-आत्मबल, 18. शिक्षा, 19. कलयंत्र, 20. छुटकारा।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 3918 1 2010 208 पृष्ठ ₹ 1425.00

गांधी : करिश्मा के परंपरागत आधार

महात्मा गांधी के जादुई असर के पीछे जो पारंपरिक विशिष्टताएँ थीं, यह पुस्तक उन्हीं का लेखा-जोखा है। इस पुस्तक का महत्त्व सिर्फ यही नहीं है कि यह गांधी-वाङ्मय के अध्येताओं के लिए उपयोगी है, बल्कि यह भी कि यह समाजशास्त्रीय और राजनीतिक सिद्धांत के प्रति विशिष्ट योगदान है।

978 81 250 1594 9 128 पृष्ठ ₹ 45.00

लोक प्रशासन

लोक प्रशासन : सिद्धांत एवं व्यवहार

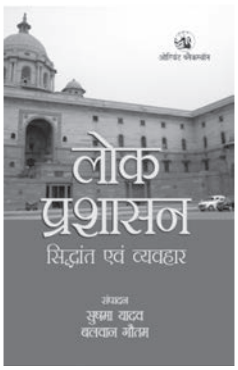

लोक प्रशासन : सिद्धांत एवं व्यवहार इस विषय पर लिखी गई सर्वाधिक अर्वाचीन एवं विशिष्ट पुस्तक है।

प्रस्तुत पुस्तक लोक प्रशासन के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं का विस्तार से विवेचन करती है। यह एक समग्र पुस्तक है जिसमें लोक प्रशासन के अर्थ, क्षेत्र, प्रकृति, विकास, उपागम, सिद्धांत, संरचना से लेकर लोक नीति तक का वर्णन किया गया है। इसमें विकास प्रशासन, शहरी एवं ग्रामीण स्थानीय प्रशासन, वित्त प्रशासन, समाज कल्याण संबंधी प्रशासन, विकेंद्रीकरण और प्रशासन, वैश्वीकरण और भारतीय प्रशासन, कार्मिक प्रशासन जैसे समकालीन विषयों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक में उपनिवेश काल से लेकर वर्तमान समय तक भारत में नौकरशाही के विकास का विश्लेषण किया गया है। यह पुस्तक लोक प्रशासन के क्षेत्र में हुए नवीनतम विकास जैसे नीति आयोग की स्थापना और प्रशासनिक सुधारों पर विस्तार से चर्चा करती है।

यह पुस्तक लोक प्रशासन जैसे जटिल विषय को सरल एवं स्पष्ट तरीके से पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास करती है। यह पुस्तक लोक प्रशासन के विद्यार्थियों एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रतिभागियों के लिए भी निश्चित रूप से लाभदायक होगी।

सुषमा यादव वर्तमान में BPSM यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर हैं। वे इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की वाइस चांसलर रहीं। इससे पूर्व वे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में प्रोफेसर, डॉ. अंबेडकर चेयर इन सोशल जस्टिस का पदभार संभाल चुकी है। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में *भारतीय राज्य : उत्पत्ति एवं विकास, केंद्र-राज्य संबंध, रोल ऑफ प्लानिंग* एवं *जेंडर इश्यू इन इंडिया : रिफलेक्शन* प्रमुख हैं। उनके अनेक लेख देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। **बलवान गौतम** रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्हें अध्यापन का लंबा अनुभव है।

विषयानुक्रम : भूमिका। **अध्याय 1 लोक प्रशासन : एक परिचय** : लोक प्रशासन के विभिन्न आयाम, लोक प्रशासन का मूल्याधारित आयाम : जॉन रॉल्स के विचार, सार्वजनिक चयन दृष्टिकोण, भारत में लोक प्रशासन, लोक प्रशासन एवं उदारीकरण / वैश्वीकरण, सुशासन। **अध्याय 2 लोक प्रशासन : अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र एवं विकास** : अर्थ एवं परिभाषा, लोक प्रशासन की प्रकृति : विविध दृष्टिकोण, लोक प्रशासन : कला अथवा विज्ञान, लोक प्रशासन का क्षेत्र, लोक प्रशासन का महत्त्व एवं भूमिका, विकसित एवं विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका, विकसित देशों में लोक प्रशासन की विशेषताएं, लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन, लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन में समानताएं, लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन में असमानताएं। **अध्याय 3 लोक प्रशासन के उपागम** : भूमिका, लोक प्रशासन के अध्ययन के उपागम, 1. शास्त्रीय या संगठनात्मक या परंपरावादी दृष्टिकोण, 2. मानव संबंध उपागम, हॉथोर्न प्रयोग के परिणाम, 3. समकालीन उपागम, नवीन लोक प्रबंध दृष्टिकोण। **अध्याय 4 प्रशासन के सिद्धांत** : प्रशासनिक सिद्धांत, परंपरागत सिद्धांत, हेनरी फेयोल : प्रबंधन सिद्धांत, आलोचनात्मक समीक्षा, लूथर गुलिक तथा उर्विक, मूनी एवं रैले की विचारधारा, वैज्ञानिक प्रबंध, आलोचनात्मक समीक्षा, नौकरशाही/प्रशासकीय सिद्धांत, वेबर का प्रतिमान, आलोचनात्मक समीक्षा, मार्क्स की विचारधारा, पारिस्थितिक रूपरेखा सिद्धांत, मानव संबंध सिद्धांत, व्यवहारवादी दृष्टिकोण, भागीदारी प्रबंध, क्रिस अर्गिरिस, आलोचनात्मक मूल्यांकन। **अध्याय 5 विकास प्रशासन** : संकल्पनात्मक विश्लेषण : प्रस्तावना, विकास प्रशासन की उत्पत्ति, फेरल हेडी और प्रशासनात्मक स्वरूप, विकास प्रशासन : एक संकल्पना, विकास प्रशासन : बदलता स्वरूप, आलोचना, निष्कर्ष। **अध्याय 6 लोक प्रशासन के नए आयाम** : नव लोक प्रशासन, आलोचनात्मक विश्लेषण, लोक प्रबंधन पर डेविड ओसबोर्न एवं गैब्लर के विचार, नव लोक प्रबंधन पर क्रिस्टोफर हुड के विचार, आलोचनात्मक विश्लेषण, लोक चयन सिद्धांत, लोक चयन सिद्धांत की विशेषताएं, लोक चयन सिद्धांत के लक्षण, आलोचनात्मक विश्लेषण, नारीवादी सिद्धांत, निगमित शासन/कॉरपोरेट शासन, निगमित शासन के सिद्धांत, कैडबरी समिति की सिफारिशें, मेरियन किंग समिति की सिफारिशें, कुमार मंगलम बिड़ला समिति, निगमित शासन की विशेषताएं, निगमित शासन की रूपरेखा, लोक प्रशासन एवं नागरिक समाज, राज्य एवं नागरिक समाज, नागरिक समाज की विशेषताएं, नागरिक समाज एवं शासन, सुशासन, अर्थ एवं परिभाषाएं, भारत में सुशासन : लोक-प्रशासन का पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य, पर्यावरणीय सदाचार या नैतिकता, विकास एवं पर्यावरण, अर्थ चार्टर, पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए निर्मित आचार संहिता या निर्देशक सिद्धांत, इलेक्ट्रॉनिक शासन, ई-गवर्नेंस से लाभ, ई-गवर्नेंस के उद्देश्य, ई-गवर्नमेंट के विकास की अवस्थाएं, ई-शासन की चुनौतियां, भारत में ई-गवर्नेंस : एक अवलोकन, भारतीय राज्यों में ई-गवर्नेंस परियोजनाएं, नागरिक-अधिकार पत्र, चार्टर के उद्देश्य, भारत में नागरिक अधिकार-पत्र। **अध्याय 7 लोक प्रशासन** : कुछ विशिष्ट आयाम : बदलती अवधारणाएं, नवीन लोक प्रशासन का विकास, विकास के भिन्न-भिन्न चरण, तुलनात्मक लोक प्रशासन, तुलनात्मक लोक प्रशासन का अर्थ, तुलनात्मक लोक प्रशासन के क्षेत्र में विकास, विकास प्रशासन, आधुनिक लोक प्रशासन के संबंध में विकास प्रशासन की भविष्यवाणियां, विकास प्रशासन की पूर्वापेक्षाएं, आलोचना, निष्कर्ष, नव लोक प्रबंधन, विशेषताएं, नव लोक प्रबंधन : एक नवीन अवधारणा, नव लोक प्रबंधन : उत्पत्ति, नव लोक प्रबंधन : मुख्य विशेषताएं, नव लोक प्रबंधन : रुझान, रणनीति, नव लोक प्रबंधन तंत्र : एक मूल्यांकन, निष्कर्ष। **अध्याय 8 संगठन के सिद्धांत** : पदसोपान, विशेषताएं, पदसोपान प्रणाली के गुण, आलोचना, आदेश की एकता, आदेश की एकता सिद्धांत के गुण, आलोचना, समग्रीकरण बनाम असमग्रीकरण, एकीकृत या समग्रीकरण संगठन, विश्रृंखलित संगठन, एकीकृत प्रणाली के गुण, एकीकृत व्यवस्था के दोष, लाभ, नियंत्रण का क्षेत्र, अर्थ, विशेषताएं, नियंत्रण के क्षेत्र का महत्त्व, क्षेत्र की सीमा, ग्रेकुनास सिद्धांत, नियंत्रण की सीमा के निर्धारक तत्त्व, केंद्रीकरण बनाम विकेंद्रीकरण, विकेंद्रीकरण और प्रत्यायोजन, केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण के निर्धारक तत्त्व, केंद्रीकरण के गुण, केंद्रीकरण के दोष, विकेंद्रीकरण के प्रकार, विकेंद्रीकरण के लाभ, विकेंद्रीकरण के दोष, मूल्यांकन, सत्ता, सत्ता के प्रकार, सत्ता के अनिवार्य तत्त्व, सत्ता के वैधानिक तत्त्व, सत्ता के व्यावहारिक तत्त्व, सत्ता के स्रोत, उत्तरदायित्व, समन्वय, समन्वय की आवश्यकता, समन्वय के प्रकार, समन्वय की विधियां, समन्वय में बाधाएं, समन्वय और सहयोग, प्रत्यायोजन, प्रत्यायोजन के प्रकार, प्रत्यायोजन की विधियां, प्रत्यायोजन के अवरोध, प्रत्यायोजन की सीमाएं, पर्यवेक्षण, प्रतिवेदन, निरीक्षण, पर्यवेक्षक कौन है। **अध्याय 9 संगठन की संरचना** : मंत्रणा (स्टाफ) अभिकरण : अर्थ, वर्गीकरण एवं कार्य, स्टाफ का वर्गीकरण, स्टाफ के कार्य, स्टाफ का संगठन में स्थान, भारत में स्टाफ अभिकरण, मंत्रिमंडलीय समितियां, नीति आयोग, पृष्ठभूमि, उद्देश्य, संरचना, सूत्र अभिकरण, विभाग, भारत में विभागीय संगठन, आयोग, लोक निगम अथवा सार्वजनिक निगम, लोक-निगमों की विशेषताएं, लोक-निगमों का विकास, लोक-निगमों की स्थापना के उद्देश्य, लोक-निगमों के दोष, लोक-निगमों के प्रकार, भारत में लोक-निगमों पर नियंत्रण। **अध्याय 10 लोक नीति** : संकल्पनात्मक बोध : अर्थ एवं प्रकृति, लोक नीति के प्रमुख लक्षण, लोक प्रशासन में लोक नीति की उपादेयता, लोक नीति के प्रारूप, संस्थापरक प्रतिरूप, संवृद्धिवादी प्रतिरूप, मिश्रित अन्वीक्षण प्रतिरूप, समूह सिद्धांत/प्रतिरूप, अभिजनवादी प्रतिरूप, खेल सिद्धांत/प्रतिरूप, व्यवस्था सिद्धांत/प्रतिरूप, नीति-निष्पादन, नीति विश्लेषण एवं नीति विज्ञान, नीति निष्पादन में सरकारी संस्थाओं की भूमिका, नीति-निष्पादन में गैर-सरकारी अभिकरणों की भूमिका, नीति-मूल्यांकन, नीति मूल्यांकन के प्रकार, मूल्यांकन के तीन आयाम, मूल्यांकन की सीमाएं, नीति मूल्यांकन के अभिकरण, निष्कर्ष। **अध्याय 11 भारत में वित्त प्रशासन** : भारत में वित्त-प्रशासन का स्वरूप, वित्त-प्रशासन में बजट की भूमिका, बजट निर्माण प्रक्रिया, विभागीय अनुमानों की वित्त मंत्रालय द्वारा जांच, निर्माण में संसद की भूमिका, बजट का प्रस्तुतिकरण, सामान्य चर्चा, विभागीय समितियों द्वारा जांच, अनुदान की मांगों पर मतदान, विनियोग विधेयक, लेखानुदान, वित्त विधेयक, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के यंत्र के रूप में बजट, निष्पादन बजट, शून्य आधारित बजट, कार्यक्रम बजट, लक्ष्य आधारित बजट, परिणाम बजट, बजट पर नियंत्रण, नियंत्रक महालेखा परीक्षक, लोक लेखा समिति, प्राक्कलन समिति, भारत में संरचनात्मक समायोजन व बजट, निष्कर्ष। **अध्याय 12 नागरिक और प्रशासन** : सफल लोक प्रशासन के आधारभूत सिद्धांत, नागरिक और लोक प्रशासन के बीच अंतर्संबंध के तरीके, शोध नतीजे/परिणाम, सरकारी प्रयास, लोक प्रशासन किस सीमा तक 'लोक' है?, संस्थागत उपाय, लोकपाल, प्रोक्यूरेटर, प्रशासकीय न्यायालय, भारतीय परिदृश्य, सिटिजंस चार्टर, अन्य देशों के अनुभव, उपसंहार। **अध्याय 13 जन सहभागिता और विकास** : जन सहभागिता का अर्थ एवं परिभाषा, जन सहभागिता की प्रकृति, जन सहभागिता का विषय क्षेत्र, जन सहभागिता की मुख्य पद्धतियां, जन

सहभागिता हेतु आवश्यक कदम। **अध्याय 14 समाज कल्याण संबंधी प्रशासन** : कल्याणकारी नीतियां एवं कार्यक्रम, महिला और बाल विकास, बाल विकास, महिला विकास, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कल्याण, 1. संवैधानिक संरक्षण एवं संस्थागत उपाय, 2. कानूनी उपाय, 3. शैक्षणिक योजना, 4. आर्थिक योजनाएं जनजातीय कार्य, जनजातीय अंतर्योजना विधि, वित्तीय व्यवस्था, प्रशासकीय व्यवस्था, जनजातीय उपयोजना : कुछ सुझाव, समाज कल्याण एवं स्वैच्छिक संगठन, प्रभाव, उपसंहार। **अध्याय 15 विकेंद्रीकरण व प्रशासन** : विकेन्द्रीकरण का अर्थ, विकेंद्रीकरण का अर्थ, विकेंद्रीकरण के उद्देश्य, विकेंद्रीकरण के अध्ययन के उपागम, विकेंद्रीकरण के प्रकार, विकेंद्रीकरण का लाभ तथा आवश्यकताएं एवं दोष। **अध्याय 16 भारत में शहरी स्थानीय स्वशासन** : भारत में शहरी स्थानीय स्वशासन, भारत में शहरी संकलन की संख्या व जनसंख्या (1901-11), ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं स्वतंत्रता के बाद का काल, 74वां संविधान संशोधन, जिला योजना व महानगर योजना समिति, शहरी स्थानीय स्वशासन के समक्ष चुनौतियां/समस्याएं, निष्कर्ष। **अध्याय 17 ग्रामीण स्थानीय प्रशासन** : स्थानीय प्रशासन, संरचना एवं कार्य, ब्लॉक स्तर, जिला स्तर, पंचायती राज संस्थाएं एवं राजनीति, विकेंद्रीकरण एवं विकास। **अध्याय 18 प्रशासनिक सुधार** : संगठन तथा पद्धतियां, ओ. एंड एम. के कार्य प्रशासनिक सुधार : प्रक्रिया एवं बाधाएं, प्रशासनिक सुधार : बाधाएं, व्यवहार में प्रशासनिक सुधार, भारत में प्रशासनिक सुधार : प्रशासनिक सुधार की अनुशंसाएं, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रशासनिक सुधार। **अध्याय 19 वैश्वीकरण और भारतीय प्रशासन** : प्रस्तावना, वैश्वीकरण : एक अवधारणा, वैश्वीकरण और प्रशासन, वैश्वीकरण एवं भारतीय प्रशासन, निष्कर्ष। **अध्याय 20 भारत में नौकरशाही का विकास** : भारत में लोक सेवा का विकास, कॉर्नवालिस की लोक सेवा नीति, मैकाले समिति (1854) की सिफारिशें, एटकिंसन आयोग (1887) की सिफारिशें, लॉर्ड विस्काउंट ली आयोग (1923), स्वतंत्रता के बाद भारत में लोक सेवा, भारत में लोक सेवा की संरचना, भारत में लोक सेवकों की भर्ती प्रक्रिया, नौकरशाही से संबंधित संवैधानिक प्रावधान, अखिल भारतीय सेवाओं की आलोचना। **अध्याय 21 कार्मिक प्रशासन** : नौकरशाही, विकासशील समाजों में कार्मिक प्रशासन एवं लोक सेवा, लोक सेवा की भूमिका, वर्गीकरण : पदवर्गीकरण तथा पदक्रम वर्गीकरण, पदवर्गीकरण के लाभ, भारत में कार्मिक प्रशासन, वर्गीकरण, भर्ती प्रक्रिया, सेवा के भीतर से अथवा पदोन्नति द्वारा भर्ती के लाभ, दोष, सीधी भर्ती के लाभ, योग्यताएं, प्रशिक्षण, उद्देश्य, औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रशिक्षण, सेवाकालीन प्रशिक्षण, प्रशिक्षण के प्रकार, भारत में सिविल सेवकों के लिए प्रशिक्षण, प्रशिक्षण का प्रभाव, पदोन्नति, अर्थ, पदोन्नति के सिद्धांत, 1. वरिष्ठता का सिद्धांत, वरिष्ठता सिद्धांत की विशेषताएं, योग्यता का सिद्धांत, भारत में पदोन्नति, वेतन तथा सेवा शर्तें, वेतन संबंधी सिद्धांत, राजनैतिक कार्यपालिका के साथ संबंध, प्रशासनिक आचार संहिता, प्रशासनिक आचार संहिता, आचार संहिता, चुनौतियां एवं समाधान। संदर्भ ग्रंथ सूची, अनुक्रमणिका।

978 81 250 5947 9 2015 576 पृष्ठ ₹ 610.00

प्रशासन एवं लोकनीति

भारतीय विश्वविद्यालयों के राजनीति विज्ञान के छात्रों तथा संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य सिविल सेवा परीक्षा के अभ्यर्थियों के लिए यह अत्यंत उपयोगी पुस्तक है। यह पुस्तक प्रशासन एवं लोकनीति से जुड़े महत्त्वपूर्ण व संवेदनशील मुद्दों, सरोकारों, संरचनाओं व प्रक्रियाओं को लोक प्रशासन के सैद्धांतिक ढांचे के अंतर्गत व्यावहारिक दृष्टि से समझने का एक प्रयास है। यह वैश्वीकरण की

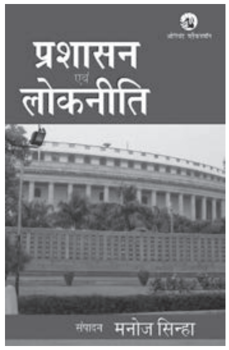

मौजूदा प्रणाली के संदर्भ में प्रशासन एवं नीति का समालोचनात्मक विवरण प्रस्तुत करती है। विश्वविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रमों के अनुरूप तथा अध्ययन एवं विवेचन की सुविधा की दृष्टि से यह पुस्तक तैयार की गई है।

मनोज सिन्हा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए., एम.फिल. और पीएच.डी. करने के उपरांत यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलीफोर्निया, बर्कले (अमेरिका) से अमेरिकन पॉलिटिक्स कोर्स किया। संप्रति, वे दिल्ली विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट कॉलेज के प्रिंसिपल हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका, **1. अनुशासन के रूप में लोक प्रशासन** 1.1 अर्थ एवं परिभाषा; लोक प्रशासन की प्रकृति लोक प्रशासन का क्षेत्र; लोक प्रशासन का महत्त्व; विकासशील समाजों में लोक प्रशासन के लक्षण; नीति विज्ञान के रूप में लोक प्रशासन; लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन; लोक प्रशासन का संक्षिप्त विकास; लोक प्रशासन के अध्ययन के प्रमुख उपागम; लोक प्रशासन के आधुनिक तुलनात्मक उपागम। **2. प्रशासनिक सिद्धांत** शास्त्रीय उपागम—हेनरी फेयोल; लूथर गुलिक और लिंडल उर्विक; स्टाफ का सिद्धांत, वैज्ञानिक प्रबंध—फ्रेडरिक टेलर; नौकरशाही उपागम-मैक्स वेबर; मानवीय संबंधात्मक उपागम-एल्टन मेयो; हाथोर्न प्रयोग; मेयो एवं टेलरः तुलनात्मक अध्ययन-समानताएं; असमानताएं; निर्णय निर्धारण : हर्बर्ट साइमन। **3. विकास प्रशासन** विकास प्रशासन शब्द का विकास; विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास में अंतर; विकास प्रशासन : अर्थ; विकास प्रशासन की विशेषताएँ; विकास प्रशासन की प्रकृति; विकास प्रशासन के विभिन्न आयाम; विकास प्रशासन का क्षेत्र; विकास प्रशासन की राजनीति; विकास प्रशासन के अध्ययन के देशकालिक आयाम; टिकाऊ या धारित विकास। **4. लोकनीति का बोध** लोकनीति का अर्थ एवं प्रकार; लोक प्रशासन में नीति निर्माण की प्रासंगिकता; नीति निर्माण की प्रक्रिया—भारत में नीति निर्माण; नीति क्रियान्वयन; नीति मूल्यांकन; लोकनीति का महत्व। **5. समसामयिक विकास** नवीन लोक प्रबंधन; नवीन लोक प्रबंधन की कार्यनीतियाँ; नवीन लोक प्रबंधन के कार्यान्वयन में कठिनाइयाँ; डिजिटल शासन का अभ्युदय; लोकतांत्रिक-प्रशासनिक नीति; लोकतांत्रिक परिदृश्य एवं नवीन लोक प्रबंधन सुधार; नवीन लोक प्रबंधन : आउटपुट लोकतंत्र की ओर; नवीन लोक प्रबंधन के बाद; ज्वाइंट-अप गवर्नमेंट तथा होल ऑफ गवर्नमेंट; नवीन लोक प्रबंधन तथा भारत में डिजिटल अभिशासनकृभारत में ई.गवर्नेंस; लोक प्रशासन एवं लोकनीति में सु-शासन; भारत में सु-शासन। **6. लोकतंत्रीकरण, विकेंद्रीकरण और सामाजिक सुरक्षा** लोकतंत्र का विकास एवं अर्थ; विकेंद्रीकरण; ग्रामीण प्रशासन; 73वें संविधान संशोधन की विशेषताएँ; शहरी प्रशासन; 74वें संविधान संशोधन की विशेषताएं; कार्यात्मक विकेंद्रीकरण; वित्तीय विकेंद्रीकरण; सामाजिक प्रशासन और सामाजिक सुरक्षा; कमज़ोर वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा। **7. नागरिक, नीति और प्रशासन** सफल प्रशासन के मानदंड; प्रशासन में उत्तरदायित्व या जवाबदेही; लोक प्रशासन में गैर-सरकारी संगठन तथा नागरिक सहभागिता; जन शिकायत निवारण हेतु प्रशासनिक व्यवस्था - विभागीय नियंत्रण; सामान्य कानूनी प्रावधान; लेखा परीक्षण; केंद्रीय सतर्कता आयोग; भारतीय ओम्बुड्समैन : लोकपाल एवं लोकायुक्त; लोकायुक्त एवं उपलोकायुक्त; सूचना का अधिकार; सूचना के अधिकार का महत्त्व; सूचना का अधिकार और विकेंद्रीकृत शासन। संदर्भिका, अनुक्रमणिका।

978 81 250 4052 1 2010 324 पृष्ठ ₹ 450.00

भारतीय प्रशासन

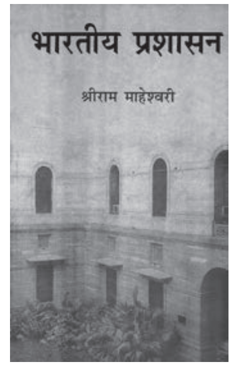

भारतीय प्रशासन भारत में प्रचलित संपूर्ण प्रशासनिक तंत्र और उसकी कार्यप्रणाली का विशद परिचय है। यह पुस्तक भारत में केंद्रीय, राज्य और स्थानीय सरकारों की व्यापक कार्यप्रणाली का विशद वर्णन और विवेचन प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में जिन विषयों का समावेश किया गया है, वे इस प्रकार हैं : केंद्रीय सरकार की संरचना, मंत्रिमंडल सचिवालय और प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक सेवाओं में भर्ती, प्रशिक्षण और भ्रष्टाचार, प्रशासनिक सुधार, केंद्रीय सरकार में संगठन एवं प्रणाली, सार्वजनिक उपक्रमणों के प्रशासन, सामान्यवादी और विशेषज्ञ के मध्य संबंध, योजना आयोग और राष्ट्रीय विकास परिषद्, केंद्र-राज्य संबंध, जिला प्रशासन, पंचायती राज व्यवस्था आदि। इनके अतिरिक्त इसमें अनेक प्रतिवेदनों के निष्कर्षों का सार भी सम्मिलित किया गया है।

श्रीराम माहेश्वरी लोक-प्रशासन विषय के अध्यापन और लेखन में विशिष्ट और लोकप्रिय रहे हैं। अवकाश ग्रहण करने से पहले वे भारतीय लोक-प्रशासन संस्थान में राजनीति विज्ञान और लोक-प्रशासन के प्रोफेसर रहे। उन्होंने इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनके अनेक लेख भारतीय और विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वे इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च के 'नेशनल फेलो' भी रहे हैं।

विषयानुक्रम : भूमिका। केंद्रीय सरकार 1. भूमिका। 2. संरचना, 3. मंत्रिमंडल सचिवालय एवं प्रधानमंत्री कार्यालय, 4. सचिवालय, 5. गृह मंत्रालय, 6. कार्मिक मंत्रालय : कार्मिक जन शिकायतें एवं पेंशन मंत्रालय, 7. वित्त मंत्रालय, 8. रक्षा मंत्रालय, 9. विदेश मंत्रालय, 10. योजना आयोग एवं राष्ट्रीय विकास परिषद्, 11. कार्यपालिका अभिकरण, 12. सामान्यवादी एवं विशेषज्ञ, 13. कार्य प्रक्रिया, 14. संवैधानिक सत्ताधिकारी, 15. मंत्री-सचिव संबंध, 16. सलाहकार समितियां, 17. सार्वजनिक उपक्रमण, 18. लोक सेवाएँ, 19. अखिल भारतीय सेवाएँ, 20. भारतीय प्रशासनिक सेवा, 21. केंद्रीय सिविल सेवाएँ, 22. सिविल सेवकों के लिए प्रशिक्षण, 23. सिविल सेवा में सुधार, 24. केन्द्र सरकार में संगठन एवं प्रणाली, 25. भारत में केंद्र-राज्य संबंध, 26. केंद्र-राज्य संबंध व्यवस्था : संस्थागत रचना, 27. केन्द्र-राज्य संबंध, 28. उत्तर-पूर्वी परिषद, 29. प्रशासनिक भ्रष्टाचार, 30. प्रशासनिक न्यायाधिकरण, 31. प्रशासन में उत्तर या जवाबदेही 32. लेखा-परीक्षण, 33. प्रशासनिक सुधार। **राज्य सरकार** 34. राज्य सचिवालय, 35. राजस्व बोर्ड, 36. संभागीय प्रशासन 37. जिला (या जनपद) प्रशासन, 38. राज्य लोक सेवा। **स्थानीय सरकार** 39. ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय सरकार, 40. पंचायती राज। संदर्भिका।

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

978 81 250 1989 3 2000 600 पृष्ठ ₹ 660.00

संस्कृत

महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों पर आलोक-भाष्य

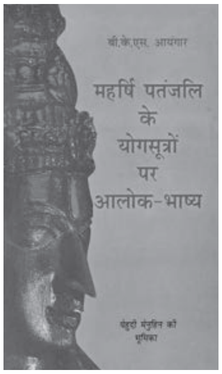

इस अद्भुत संस्करण में योग के विश्व-भर में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक बी.के. एस. आयंगार का (योग-) सूत्रों का अनुवाद और भाष्य सम्मिलित है। विषय के प्रति अपने विवेक तथा अनुभव की संपदा से उन्होंने पाठकों को समृद्ध किया है। परिणामतः भारतीय दर्शन के विद्यार्थी तथा योग के अभ्यासियों के लिए यह ग्रंथ सहायक, उपगम्य और अपार मूल्य का है। **महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों पर आलोक भाष्य** आयंगार की प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक *लाइट ऑन द योग-सूत्राज़* का उत्कृष्ट हिंदी रूपांतर है।

आज जितने भी प्रकार के योग चलन में हैं, वे सब 'योगसूत्र' पर आधारित हैं। 'योगसूत्र' दो हज़ार वर्ष से भी पहले विद्यमान एक भारतीय मुनि पतंजलि द्वारा निर्मित सूत्रों का संग्रह है और आज भी एक प्रामाणिक ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठित है। ये सूत्र सबसे प्राचीन हैं और आज भी परिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक हैं, जिनमें मानव-चिति तथा मानव-चैतन्य का अध्ययन है। इनमें पतंजलि मानव-अस्तित्व की पहेली का वर्णन करते हैं। वे बताते हैं कि योगाभ्यास के द्वारा हम स्वयं का रूपांतरण कैसे करें, मन और भाव पर स्वामित्व कैसे प्राप्त करें और आध्यात्मिक विकास में आनेवाले विघ्नों पर कैसे विजय प्राप्त करें। इस प्रकार हमें योग के लक्ष्य 'कैवल्य' को प्राप्त करना है। सांसारिक इच्छाओं तथा कर्मों के बंधन से मुक्ति तथा परमात्मा से युक्ति (योग-मिलन) ही कैवल्य है।

बी.के.एस. आयंगार 1936 से योग के एक प्रखर और प्रभावशाली गुरु रहे। 1952 में येहुदी मेनुहिन जैसे मनीषी उनके शिष्य बने और तबसे आयंगार पाश्चात्य जगत् में कीर्ति के शिखर पर पहुँच गए। इंग्लैंड, जर्मनी, केनिया तथा अन्य देशों में आयंगार नियमित रूप से जाते थे, उनके प्रमुख शिष्यों में स्वर्गीय महारानी एलिजाबेथ (बेल्जियम), क्लिफर्ड, कर्जन, कृष्णमूर्ति तथा डॉ. जी.एस. पाठक जैसे महामना हैं।

विषयानुक्रम : दो शब्द (येहुदी मेनुहिन); महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों की सूची; प्रस्तावना; **परिचय** : समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद; योगसूत्र : समाधिवाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद; **उपसंहार** परिशिष्ट 1. योगसूत्रों का विषयशः क्रम; परिशिष्ट 2. सूत्रों की अंतरबद्धता; परिशिष्ट 3. सूत्रों की कोशक्रमशः सूची; परिशिष्ट 4. संक्षेप में योग; तालिका एवं चित्र सूची।

978 81 250 1722 6 | 416 पृष्ठ | ₹ 225.00

संस्कृत-हिंदी-इंग्लिश शब्दकोश

इस अद्वितीय विपुलकाय त्रिभाषा कोश में शब्दों का संचयन विभिन्न कोशों से न किया जाकर प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों से किया गया है और दुरूह शब्दों के अर्थ-विवरण में प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों एवं टीकाकारों की उक्तियों को उद्धरणस्वरूप दिया गया है।

भारत के वरिष्ठ विश्वविद्यालयों में संस्कृत-पाली-प्राकृत भाषाओं के विभागाध्यक्ष पद पर आसीन हो सतत अध्यापन एवं शोधकार्य करते रहने के फलस्वरूप लेखक ने भारत के छात्रों एवं अध्यापकों की आवश्यकताओं का अतुलगहन परिज्ञान प्राप्त किया था। प्रस्तुत इतिहास इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अनेक विश्वविद्यालयों एवं सरकारी समितियों के उन्नायक सभासद होने के नाते लेखक का स्कूलों, विद्यालयों, एवं विश्वविद्यालयों की संस्कृत पाठावलि के निर्माण में महत्त्वपूर्ण अंशदान रहता था। पंजाब सरकार एवं पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से शोधार्थ, ऑक्सफोर्ड भेजे जाने पर लेखक ने 1937 में उस विश्वविद्यालय से अत्यंत सम्मान के साथ डी.फिल. की उपाधि प्राप्त की थी। संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में उनकी पचहत्तर के लगभग रचनाएं भारत एवं विदेशों में प्रचलित हैं— उनका, *भारतीय संविधान का हिंदी अनुवाद* इन्हीं रचनाओं में से एक है - इसे उन्होंने स्वयं महात्मा गांधी एवं पं. जवाहरलाल नेहरू के सम्मिलित आदेश पर किया था।

978 81 250 0647 3 | 1975 | 708 पृष्ठ | ₹ 1150.00

संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास

संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास में वैदिक एवं पश्चवैदिक दोनों ही रचनाओं का आर्थिक विश्लेषण हुआ है। वैदिक एवं औपनिषदिक तत्त्व पर आपकी पहुँच प्रगल्भ एवं प्रामाणिक है; संस्कृत के मूर्धन्य कवि कालिदास आदि पर उनकी लेखनी अमृतासार में बह निकली है। सुबन्धु, बाण एवं दंडी के विश्लेषण में इन महाकवियों के पद-पदार्थ को उसी जैसा हिन्दी-पद-पदार्थ मिल गया है; शब्दतत्त्व पर लेखक की लेखनी इस तत्त्व के फल में जा लगी है; फिर दर्शन तत्त्व-नामक संदर्भ में तो स्वयं भारतीय दर्शन अपनी कहानी कहता दीख पड़ता है।

भारत के वरिष्ठ विश्वविद्यालयों में संस्कृत-पाली- प्राकृत भाषाओं के विभागाध्यक्ष पद पर आसीन हो सतत अध्यापन एवं शोधकार्य करते रहने के फलस्वरूप लेखक ने भारत के छात्रों एवं अध्यापकों की आवश्यकताओं का अतुल गहन परिज्ञान प्राप्त किया था। प्रस्तुत इतिहास इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अनेक विश्वविद्यालयों एवं सरकारी समितियों के उन्नायक सभासद होने के नाते लेखक का स्कूलों, विद्यालयों, एवं विश्वविद्यालयों की संस्कृत पाठावलि के निर्माण में महत्त्वपूर्ण अंशदान रहता था। पंजाब सरकार एवं पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से शोधार्थ, ऑक्सफोर्ड भेजे जाने पर लेखक ने 1937 में उस विश्वविद्यालय से अत्यंत सम्मान के साथ डी.फिल. की उपाधि प्राप्त की थी। संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी में उनकी पचहत्तर के लगभग रचनाएं भारत एवं विदेशों में प्रचलित हैं।

विषयानुक्रम : 1. प्रस्तावना, 2. वैदिक वाघ्मय, 4. ब्राह्मण, 5. आरण्यक, 6. उपनिषद् के कल्पसूत्र, 7. यजुर्वेद के कल्पसूत्र, सामवेद के कल्पसूत्र, अथर्ववेद के कल्पसूत्र, धर्मसूत्र, 8. वेदाघग : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, 9. अनुक्रमणियां : ङ्ग्वेदीय अनुक्रमणी, यजुर्वेदीय अनुक्रमणी, सामवेदीय अनुक्रमणी, अथर्ववेदीय अनुक्रमणी, 10. वेद का काल, 11. आर्ष काव्य : (1) रामायण, विषय, मूल स्रोत, प्रक्षिप्त अंश, रचनाकाल, रामायण का भारतीय जीवन पर साहित्य पर प्रभाव; रामायण की विविध व्याख्याएं, (2) महाभारत, महाभारत की तीन अवस्थाएं, संस्करण, विषय-सामग्री, महाभारत में आख्यान, महाभारत के मूल स्रोत, रचनाकाल, भगवद्गीता, रामायण और महाभारत : एक तुलनात्मक दृष्टि, 12. पुराण : संप्रति उपलब्ध पुराण, पुराणों के रचयिता, रचनाकाल, पुराणों का प्रतिपाद्य विषय, संक्षिप्त परिचय, पुराणों का महत्त्व, 13. तन्त्र-साहित्य : तन्त्र-साहित्य तथा वैदिक साहित्य, स्वरूप, प्राचीनता, रचना स्थान, साहित्य, आगम-साहित्य, प्रत्यभिज्ञा-साहित्य, संहिता-साहित्य, तन्त्र-साहित्य, 14. आर्षकाव्योत्तर काव्य, 15. बौद्ध संस्कृत साहित्य, 16. महाकाव्य : महाकाव्यों का संक्षिप्त परिचय, कालिदास, भारवि, भट्टि, कुमारदास, माघ, श्रीहर्ष, कम प्रसिद्ध महाकाव्य, 17. रूपक-साहित्य, 18. गीतिकाव्य, गीतिकाव्य का उद्भव एवं विकास, (क) श्रृंगारिक गीतिकाव्य, कालिदास, भर्तृहरि, अमरु, बिल्हण, जयदेव, गोवर्धनाचार्य, धोयी, पंडितराज जगन्नाथ, अन्य श्रृंगारिक गीतिकाव्य, (ख) धार्मिक गीतिकाव्य, (ग) सुभाषितसंग्रह, 19. ऐतिहासिक काव्य, ऐतिहासिक काव्य का उद्भव एवं विकास, बाणभट्ट, वाक्पतिराज, पद्मगुप्त अथवा परिमल, बिल्हण, कल्हण, गौण ऐतिहासिक काव्य, 20. गद्य-साहित्य : सुबन्धु, बाणभट्ट, दंडी, कादम्बरी और दशकुमारचरित पर एक दृष्टि, अन्य गद्यकार, 21. नीतिकथा, लोककथा, 22. चम्पू, 23. नीतिकाव्य, 24. शास्त्रीय साहित्य, 25. व्याकरण : पाणिनी, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, जयादित्य और वामन, पश्चवर्ती वैयाकरण, व्याकरण की शाखाएं, सांप्रदायिक व्याकरण, 26. छन्द शास्त्र अध्ययन, 27. कोश, 28. कामशास्त्र, 29. चिकित्सा-शास्त्र, 30. राजनीति, 31. ज्योतिष, फलित ज्योतिष, गणित, 32. विविध शास्त्र, 33. धर्मशास्त्र, 34. अलंकार-शास्त्र और नाट्य-शास्त्र, 35. दर्शन।

978 81 250 1210 8 | 1975 | 498 पृष्ठ | ₹ 150.00

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.

कन्नड़

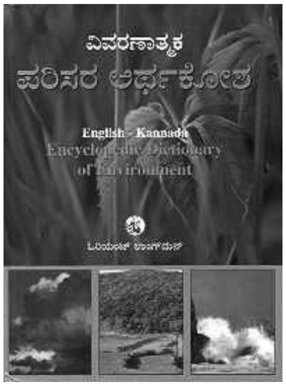

ISBN	Author	Title	Price
978-81-7371-921-9	Nicole Ostrowsky	The Agenda of the Apprentice Scientist	₹ 595
978-81-250-2371-5	Shailaja R.	Dictionary/Encyclopedia on Environment	₹ 675

मराठी

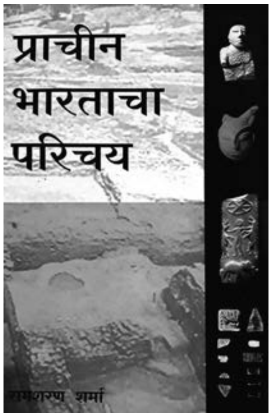

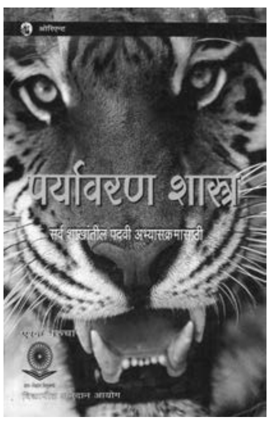

ISBN	Author	Title	Price
978-81-250-3518-3	Aruna Pendase and Uttara Sahasrabuddhe	Antarrashtriya Sambandh: Sheetyuddhottar va Jagtikeekaranache Rajkarn	₹ 495
978-81-250-1978-7	B. K. S. Iyengar	Pranayam Deepika (Revised)	₹ 510
978-81-250-3042-3	Ramsharan Sharma	Pracheen Bharatacha Parichay	₹ 475
978-81-250-4059-0	Board of Editors	Shalaka Marathi Pathyapustak	₹ 165
978-93-5287-287-9	Parag Parobo (author), Sripad Puranik (translator)	Bhartachi Pahili Lok Sattak Kranti	₹ 895
978-81-250-4282-2	Raghunath Kshirsagar	Dnyandeep Part 1	₹ 110
978-81-250-3208-3	Erach Bharucha (author), Siddhivinayak Barve (translator)	Paryavaranacha Shastra	₹ 440

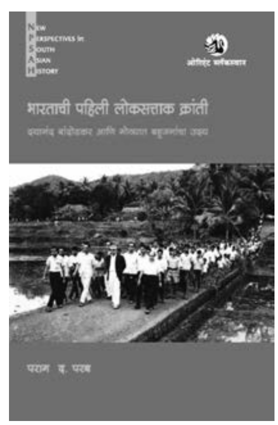

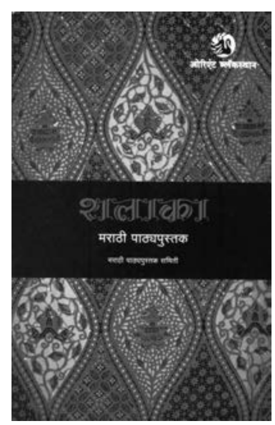

ओडिया

ISBN	Author	Title	Price
978-81-250-4183-2	Bipan Chandra	Adhunik o Bharat Itihas (Odia)	₹ 425
978-81-250-6291-2	Ganesh Devy (Series Editor), D.P. Pattanayak, Mahendra Kumar Mishra (Editors)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan: Odishara Bhasha Samooh	₹ 4940

तमिल

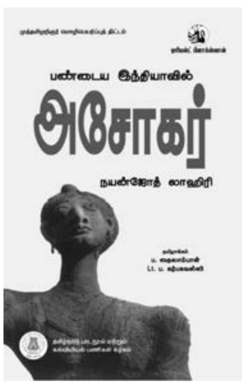

ISBN	Author	Title	Price
978-93-5442-393-2	Ganesh Devy (Series Editor), V. Gnansundaram, K. Rangan (Editors)	Makkal Nokkil Inthiya Mozikal Alavayvu: Tamiz Nattu Mozikal	₹ 6600
978-93-5442-384-0	Kanakalatha Mukund	Tamiznattil Aarambakaala Kaalaniya Arasu 1700–1835: Marapuvazi Samudaayamum Kovilgalum	₹ 1025
978-93-5442-874-6	Muchkund Dubey	Intiyavin Ayaluravuk Kolkai: Maarum Ulagattirku Mukamkottuthkal	₹ 1530
978-93-5442-386-4	Nayanjot Lahiri	Pandaiya Indiyavil Asokar	₹ 1525

तेलुगु

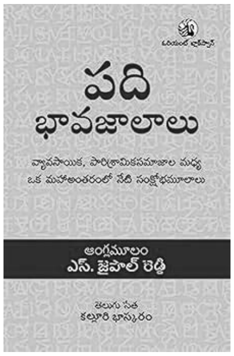

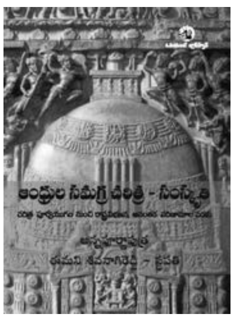

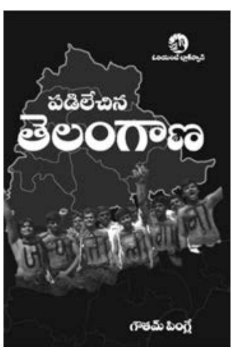

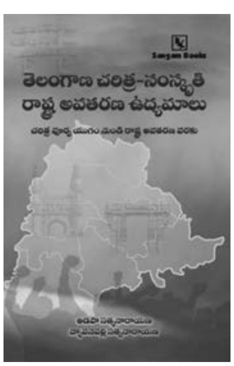

ISBN	Author	Title	**Price**
978-81-250-0825-5	A. Mohan Reddy	Wanaparthy Samsthanamu: Telugu Sahitya Seva	₹ 90
978-81-7370-457-4	Adapa Satyanaryana and Dyavanapalli Satyanarayana	Telangana Charitra: Samskruthi Rashtra Avatharana Udyamaalu	₹ 525
978-81-250-1677-9	B. K. S. Iyengar	Sachitra Yogadeepika	₹ 425
978-81-250-6286-8	Board of Studies	Bilingual Bridge Course Material	₹ 48
978-93-5442-161-7	Ganesh Devy (Series Editor), Volga and Kalpana Kannabiran (Editors)	Vibha Prabhatamulu: Telugu Pragatisheela Sahitya Gavaksham	₹ 475
978-81-250-5954-7	Gautam Pingle	Padilechina Telangana	₹ 450
978-93-5287-616-7	K. Krishna Reddy	Bharatha Desa Charitra: Adhunik Yugam (2nd edition)	₹ 460
978-93-5287-615-0	K. Krishna Reddy	Bharatha Desa Charitra: Madhya Yugam (2nd edition)	₹ 460
978-93-5287-617-4	K. Krishna Reddy	Bharatha Desa Charitra: Pracheen Yugam (2nd edition)	₹ 460
978-81-250-1353-2	M. Bapuji	Prabhutva Palana Siddhantaalu	₹ 325
978-81-250-0258-1	Nadeem Hasnain	Bharateeya Girijanulu	₹ 190
978-81-250-1599-4	Nadeem Hasnain	Bharateeya Maanava Vignana Shastramu	₹ 275
978-81-250-1036-4	Prathapa Reddy	Andhrula Sanghika Charitramu	₹ 425
978-93-90122-31-8	S. Jaipal Reddy	Padi Bhavajaalalu: Vyavasayika, Paarisraamika Samajala Madya oka Maha Antharamlo neti Sankshobha Mulaalu	₹ 695
978-0-86311-114-3	S. R. Rao	Purana Kathalu: Astikudu Janamejayadu	₹ 15
978-0-86311-113-6	S. R. Rao	Purana Kathalu: Hiranyakshudu Hiranyakasipudu	₹ 15
978-0-86311-116-7	S. R. Rao	Purana Kathalu: Kacha Devayanilu/Ruru Pramadv	₹ 15
978-0-86311-117-4	S. R. Rao	Purana Kathalu: Manasa Devi	₹ 10
978-0-86311-115-0	S. R. Rao	Purana Kathalu: Sati-Uma	₹ 15
978-0-86311-112-9	S. R. Rao	Purana Kathalu: Savitri Satyavanulu-Markandey	₹ 15
978-01-0106-936-6	Sivanagi Reddy Emani and N. V. S. Ravi Kumar	Samagra Andhurla Charitra: Samskruthi Charithara Purvayugam nunchi Rashtra Vibhajana, Ananthara Parinamala Varaku	₹ 495

लेखक-अनुक्रमणिका

आज़ाद, अबुल कलाम, 11
आज़ाद, रोहित, 6
आयंगार, बी. के. एस., 30, 48

ओम्वेट, गेल, 36

कुमार, युवराज, 42–43
कुमार, संजीव, 31, 36
कोठारी, रजनी, 42

खन्ना, मीनाक्षी, 13
खुटे, डिश्वर नाथ, 9
खेड़ा, रीतिका, 6

गर्गेश, रविंदर, 17, 28
गोस्वामी, कृष्ण कुमार, 17
गोस्वामी, के. के., 28
गौतम, बलवान, 46

चक्रवर्ती, रणवीर, 12
चक्रवर्ती, शौविक, 6
चन्द्र, विपिन, 10
चन्द्र, सतीश, 10
चौबे, देवेंद्र, 27
चौधरी, बासुकी नाथ, 42–43

दास, बिक्रम के., 17
देव, अर्जुन, 15
देवी, गणेश, 20

परमार, शुभ्रा, 34, 39
पाल, अखिलेश, 34
पाल, आभा रूपेन्द्र, 9

फारुकी, एन. आर., 12
बंद्योपाध्याय, शेखर, 11
बक्शी, उपेन्द्र, 43
बरेडिया, एस. एस., 19
बिस्वाल, तपन, 5, 38, 41
बुच, एम. एन., 25
भरुचा, इराक, 23

माथुर, सीमा, 32
माहेश्वरी, श्रीराम, 47
मिश्र, करुणेश प्रताप, 33
मिश्रा, राजेश, 4, 31, 35
मुरारी, कृष्ण, 22, 35, 37, 41
मेनन, दिलीप एम., 14

यादव, सुषमा, 46

रमणी, श्रीनिवासन, 6
रिज़वी, सैयद नजमुल रज़ा, 10
रेड्डी, सी. राममनोहर, 7

लिल्हारे, अजब लाल, 19

वर्मा, विजय कुमार, 4, 34
वर्मा, विमलेश कांति, 27

शर्मा, एल. एन., 22, 41
शर्मा, रामशरण, 15
शर्मा, सुरेश, 45
श्रीधरन, ई., 13
श्रीवास्तव, नीरज, 14

सदाशिवन, एस., 17
सारंगी, प्रकाश सी., 42
सिन्हा, दीपा, 6
सिन्हा, मनोज, 44, 47
सिंह, अभय प्रसाद, 35, 37–38, 40–41
सिंह, उपिंदर, 14
सिंह, ओम प्रकाश, 9
सुकुमार, एन., 32
सुब्रमण्यण, लक्ष्मी, 12
सुहृद, त्रिदीप, 45
सूर्यकांत, 18, 48

हुसैन, मुजतबा, 22

पुस्तक-अनुक्रमणिका

1857 का विद्रोही जगत् : पूरबी उत्तर प्रदेश में, 10

अंतर्राष्ट्रीय संबंध (द्वितीय संस्करण), 4
अनुवाद एवं भाषांतरण : पाठ और अभ्यास, 17, 28
अभिनव हिंदी पाठ्यपुस्तक, 26

आज का भारत : अर्थ और समाज, 42
आज का भारत : राजनीति और समाज, 42
आज़ादी की कहानी, 11
आधार पर ऐतराज: आलाकमान के हाथ बिग डाटा, 6
आधुनिक भारत का इतिहास—ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित, 10
आधुनिक भारत का सांस्कृतिक इतिहास, 14
आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, 34
आधुनिक राजनीतिक दर्शन, 34
आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श, 27
आपके कानून आपके अधिकार, 32

इतिहास-लेख : एक पाठ्यपुस्तक, 13
एक्स्प्रेसवे टु इंग्लिश, 17

ओरियंट ब्लैकस्वॉन विश्व एटलस (लघु संस्करण), 24

कथा सरिता, 28
कहानी संकलन तथा व्यावहारिक हिंदी, 26

गद्य तरंग, 26
गद्य सागर, 28
गद्यसुमन और काव्यामृत, 29
गांधी अध्ययन (दूसरा संस्करण), 44
गांधी : करिश्मा के परंपरागत आधार, 45
ग्रामीण-नगरीय समाजशास्त्र, 20

घुमन्तू है, चोर नहीं—आदिवासी मौन पर विमर्श, 19

जाति की समझ : महात्मा बुद्ध से बाबासाहेब अम्बेडकर और उनके बाद, 36

तुलनात्मक राजनीति : संस्थाएं और प्रक्रियाएं, 5

दिल्ली : प्राचीन इतिहास, 14

नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार, 39

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिरुचि, 19

पर्यावरण अध्ययन : स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यपुस्तक—ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित (तीसरा संस्करण), 23
पर्यावरण संबंधी चेतना और नगर नियोजन, 25
पलासी से विभाजन तक और उसके बाद : आधुनिक भारत का इतिहास (दूसरा संस्करण), 11
प्रशासन एवं लोकनीति, 47
प्राचीन भारत : प्रागैतिहासिक काल से 300 ईस्वी तक, 9
प्राणायाम, 30
प्रारंभिक भारत का परिचय, 15

फ्रेंच-हिंदी शब्दकोश, 17

बस्तर : राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, 9

भारत का इतिहास—1707 से 1857 तक, 12
भारत ग्रामीण विकास रिपोर्ट 2012–13, 8
भारत ग्रामीण विकास रिपोर्ट 2013 | 14, 7
भारत में उपनिवेशवाद, 40
भारत में राजनीतिक प्रक्रिया, 35
भारत में राजनीति (दूसरा संस्करण), 42
भारत में राष्ट्रवाद, 40
भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र, 37
भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, 20
भारतीय इतिहास का आदिकाल—प्राचीनतम पर्व से 600 ईस्वी तक, 12
भारतीय प्रशासन, 47
भारतीय राजव्यवस्था और शासन, 41
भारतीय राजव्यवस्था (छठा संस्करण), 31
भारतीय विदेश नीति : भूमंडलीकरण के दौर में (चौथा संस्करण), 4
भारतीय शासन और राजनीति, 43
भारतीय शासन, संवैधानिक लोकतंत्र और राजनीतिक प्रक्रिया, 38
भारतीय समाज, 20
भारतीय समाजशास्त्र के अग्रणी चिंतक, 21
भाषा, साहित्य और संस्कृति, 27

मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, 13
मध्यकालीन भारत : प्रशासन, समाज एवं संस्कृति, 14
मध्यकालीन भारत : राजनीति , समाज और संस्कृति—ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित, 10
महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों पर आलोक-भाष्य, 30, 48

योगदीपिका, 30

राजनीतिक समाजशास्त्र : 21वीं सदी के बदलते संदर्भ में, 22, 41
राजनीति विज्ञान : एक समग्र अध्ययन (सातवाँ संस्करण), 35
राजनीति सिद्धांत : अवधारणाएँ और विमर्श, 31
राजनीति सिद्धांत की समझ, 36
राष्ट्रवाद का भारतनामा : भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, 38

लोक प्रशासन : सिद्धांत एवं व्यवहार, 46

विधायिका और न्यायपालिका : संसद तथा राज्य विधान-मंडलों से संबंधित न्यायिक निर्णय, 43
विमुद्रीकरण और काला धन, 7

शासन : मुद्दे और चुनौतियाँ, 37

संगम एटलस—प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए (द्वितीय संस्करण) ओरियंट ब्लैकस्वॉन स्मार्ट ऐप सहित, 24
संप्रेषणमूलक व्यावसायिक हिंदी, 27
संयुक्त राष्ट्र एवं वैश्विक संघर्ष, 4
संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास, 48
संस्कृत-हिंदी-इंग्लिश शब्दकोश, 18, 48
समकालीन भारत : एक परिचय, 44
समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन, 40
समकालीन राजनीतिक सिद्धांत, 33
समकालीन विश्व का इतिहास 1890-2008, 15
समाजशास्त्र परिचय, 21
समाजशास्त्रीय चिंतन के आधार, 21
समाजशास्त्रीय विचार, 22
साथ से विकास तक—दावे या छलावे?, 6
सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियां, 21
साहित्य धारा, 26
साहित्य सरिता, 27
सूफ़ीवाद : कुछ महत्त्वपूर्ण लेख, 12

हिंदी गद्य-पद्य संग्रह 1–2, 26
हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, 29

आगामी हिंदी ई-बुक्स

OBBN	Author	Title
978-0-30106-879-4	Gail Omvedt	*Jaati Ki Samajh: Mahatma Buddh se Babasaheb Ambedkar aur Unke Baad*
978-0-30106-895-4	Ganesh Devy	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Bhahsa ka Svatva, Volume 1, Part 1*
978-0-30106-902-9	Series editor: Ganesh Devy, M. Sreenathan (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Andaman aur Nicobar Dweepsamooh ki Bhashayen*, Volume 2, Part 1
978-0-30106-891-6	Series editor: Ganesh Devy, A. Usha Devi, and Chandra Sekhar Reddy (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Andhra Pradesh ki Bhashayen*, Volume 3 (AP), Part 1
978-0-30106-892-3	Series editor: Ganesh Devy, A. Usha Devi, and Chandra Sekhar Reddy (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Telangana ki Bhashayen*, Volume 3 (TS), Part 1
978-0-30106-890-9	Series editor: Ganesh Devy, Vibha S. Chauhan (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Bihar ki Bhashayen*, Volume 6, Part 1
978-0-30106-883-1	Series editor: Ganesh Devy, Chitta Ranjan Kar (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Chhattisgarh ki Bhashayen*, Volume 7, Part 1
978-0-30106-894-7	Series editor: Ganesh Devy, Madhavi Sardesai, and Damodar Mauzo (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Goa ki Bhashayen*, Volume 8, Part 1
978-0-30106-901-2	Series editor: Ganesh Devy, Kanji Patel (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Gujarat, Diu-Daman aur Dadra–Nagar Haveli ki Bhashayen*, Volume 9, Part 1
978-0-30106-887-9	Series editor: Ganesh Devy, Roop Krishen Bhat, and Omkar N. Koul (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Haryana ki Bhashayen*, Volume 10, Part 1
978-0-30106-882-4	Series editor: Ganesh Devy, Tobdan (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Himachal Pradesh ki Bhashayen*, Volume 11, Part 1
978-0-30106-889-3	Series editor: Ganesh Devy, Omkar N. Koul (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Jammu aur Kashmir ki Bhashayen*, Volume 12, Part 1
978-0-30106-884-8	Series editor: Ganesh Devy, Ramnika Gupta, and Prabhat Kumar Singh (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Jharkhand ki Bhashayen*, Volume 13, Part 1
978-0-30106-904-3	Series editor: Ganesh Devy, Rajeshwari Maheshwaraiah, and H. M. Maheshwaraiah (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Karnataka ki Bhashayen*, Volume 14, Part 1
978-0-30106-881-7	Series editor: Ganesh Devy, Damodar Jain (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Madhya Pradesh ki Bhashayen*, Volume 16, Part 1
978-0-30106-905-0	Series editor: Ganesh Devy, Arun Jakhade (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Maharashtra ki Bhashayen*, Volume 17, Part 1
978-0-30106-893-0	Series editor: Ganesh Devy, K. Nipuni Mao (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Manipur ki Bhashayen*, Volume 18, Part 1
978-0-30106-897-8	Series editor: Ganesh Devy, Esther Syiem (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Meghalaya ki Bhashayen*, Volume 19, Part 1
978-0-30106-898-5	Series editor: Ganesh Devy, D. Kuolie (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Nagaland ki Bhashayen*, Volume 21, Part 1
978-0-30106-899-2	Series editor: Ganesh Devy, L. Ramamoorthi, and G. Ravishankar (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Puducherry ki Bhashayen*, Volume 23, Part 1
978-0-30106-888-6	Series editor: Ganesh Devy, Omkar N. Koul, and Roop Krishen Bhat (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Punjab ki Bhashayen*, Volume 24, Part 1
978-0-30106-886-2	Series editor: Ganesh Devy, Madan Meena, and Suraj Rao (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Rajasthan ki Bhashayen*, Volume 25, Part 1
978-0-30106-903-6	Series editor: Ganesh Devy, Balaram Pandey (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Sikkim ki Bhashayen*, Volume 26, Part 1
978-0-30106-900-5	Series editor: Ganesh Devy, Sukhendu Debbarma (ed.)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Tripura ki Bhashayen*, Volume 28, Part 1
978-0-30106-880-0	Series editor: Ganesh Devy, Badri Narayan, and Rama Shanker Singh (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Uttar Pradesh ki Bhashayen*, Volume 29, Part 1
978-0-30106-885-5	Series editor: Ganesh Devy, Uma Bhatt, and Shekhar Pathak (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Uttarakhand ki Bhashayen*, Volume 30, Part 1
978-0-30106-896-1	Series editor: Ganesh Devy, Tanmoy Bhattacharya, Nisha Grover, and Surinder P. K. Randhawa (eds)	Bharatiya Bhasha Lok Sarvekshan (PLSI): *Bharatiya Sanketik Bhashayen*, Volume 38, Part 1
978-0-30106-907-4		*OBS Learners Dictionary of Modern English*
978-0-30106-906-7	N. R. Farooqi	*Sufivaad: Kuchh Mahattvapurn Lekh*

Orient BlackSwan

How to Order

Choose any of these options:

- Write to the Orient BlackSwan office closest to you
- Fax your order to (040) 2766 2115
- Our books are also available with leading booksellers in the country
- E-mail your order to info@orientblackswan.com
- Use the Order Form below
- Prices are subject to change without prior notice

ORDER FORM

*Name*____

*Address*____

____

____

____

________________________ *Pin*________________________

Telephone ____________________ *Fax*________________________

*Email*____

ISBN	Title	Price	Copies

Method of Payment

Enclose a cheque/Demand Draft in favour of Orient Blackswan Private Limited

for Rs ________________*

Please mail this form to the nearest Orient BlackSwan branch or contact your bookseller. You could also:

- visit us at www.orientblackswan.com
- Fax your order to (040) 2766 2115
- Email your order to info@orientblackswan.com

*Postage and handling charges extra

Cut along the perforated line

Prices updated on 20-01-2025. These prices are subject to change without notice.